
UNIVERSITY OF TORONTO
3 1761 00099812 0

श्रीः ।

कामरत्नम् ।

योगेश्वरश्रीयुतगौरीपुत्रनित्यनाथविरचितम् ।

मुरादाबादनिवासीश्रीयुतपण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृत-

भाषाटीकासमलंकृतम् ।

तच्च

खेमराज श्रीकृष्णदास इत्यनेन

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणयन्त्रालये

मुद्रयित्वाप्रकाशितम् ।

शके १८१९, संवत् १९५४.

प्रस्तावना।

उस सर्व्व शक्तिमान् परब्रह्म परमात्माको कोटिशः धन्यवादहै जिसने इस असार संसार सागरमें नाना विद्वान् पुरुष रत्न उत्पन्न कियेहैं जिन्होंने लौकिक जीवोंके उपकारार्थ व्याकरण, वैद्यक, ज्योतिषादि अनेक विषयके ग्रंथ निर्माण कियेहैं–

उन्हीं महाशयोंकी गणनामें एक यह श्रीयुत योगेश्वर गौरीपुत्र नित्यनाथजी भीहैं जिन्होंने परमअद्भुत यह कामरत्न ग्रंथ निर्मित कियाहै वास्तवमें लोकोपकार हित यह ग्रंथ तो अद्वितीयही है। संसारमें यावत् आवश्यकीय प्रयोग मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, वशीकरण स्तंभनादिकहैं सबकी विधि सविस्तर इसमें लिखीहै इसके सिवाय सर्व व्याधि निवारण चिकित्सा और यंत्र मंत्र तंत्रादि सब पदार्थोंसहित कल्पवृक्ष इव अभीष्टदायकहै अब और विशेष हम क्या प्रशंसा करैं अवलोकनसे सब वृत्त ज्ञात होगा-

यहपरमोपयोगी ग्रंथ हमको श्री त्रिविक्रम मिश्र स्टूडेण्ड मेडिकल कालिज आगरा द्वारा प्राप्त हुआहै, हमने श्री पं० ज्वालाप्रसाद जी मिश्र द्वारा इसका सरल भाषानुवाद कराय स्वयन्त्रालयमें मुद्रितकर प्रकाशितकिया है-आशाहै कि पाठक गण उक्त हमारे हितैषियोंको धन्यवाद देतेहुए हमारे परिश्रमको सफल करैंगे।

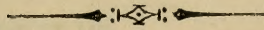
आप सज्जनोंका कृपापात्र--

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना--बंबई.

श्रीः ।

अथ कामरत्नको अनुक्रमणिका ।



इत्यनुक्रमणिकासमाप्ता ।

विज्ञप्ति।

जो तोलका प्रमाण इस ग्रन्थ में आगया है उस का प्रमाण इस प्रकार है
चार जौकी एक चौंटली वा रत्ती होती है ॥
छः रत्तीका एक माशा वा धान्यक होता है॥
चारमाशेका एक शाण वा टंक कहते हैं ॥
दो टंकका एक कोल कहाता है ॥ (आठमासे)
दो कोलका एक कर्ष तोला होता है ॥
दोकर्षका आधापल होता है इसे शुक्ति कहते हैं ॥
दो पलकी एक प्रसृति होती है ॥ (८ तोले)
दो प्रसृतिकी एक अंजली और उसीको कुडव कहते हैं ॥ (१६ तोले
इस प्रकार परिभाषा समझनी चाहिये ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना–मुंबई.

श्रीगणेशाय नमः ।

कामरत्नम् ।

भाषाटीकासहितम् ।

श्रीगुरुचरणकमलेभ्योनमः ।

यस्येश्वरस्यविमलंचरणारविंदंसंसेव्यतेविबुध
सिद्धमधुव्रतेन ॥ निर्वाणसूचकगुणाष्टक
वर्गपूर्णंतंशंकरंसकलदुःखहरंनमामि ॥ १ ॥

दोहा—गौरीशंकरपदकमल, प्रेमसहितहियलाय ॥
कामरत्नभाषातिलक, बहुविधिलिखतबनाय ॥ १ ॥
श्रीगणेशमंगलकरन, हरनसकलभयशूल ॥
द्विजज्वालाप्रसादपर, सदारहहुअनुकूल ॥ २ ॥

जिन ईश्वरके निर्मल चरणारविंद देवता सिद्धभ्रमरके समान ासना करते रहतेहैं जिनके गुणानुवाद स्मरणसे मुक्ति होजातीहै ऽन अष्टमूर्ति वेदपूर्ण सम्पूर्ण दुःखहरनेवाले शंकरको मैं नमस्कार करताहूं ॥ १ ॥

कामरत्नमिदंचित्रंनानातन्त्रार्णवान्मया ॥
वश्यादियक्षिणीमंत्रसाधनान्तंसमुद्धृतम् ॥ २ ॥
वश्याकर्षणकर्म्माणिवसन्तेयोजयेत्प्रिये ॥

यह विचित्र कामरत्ननामक ग्रंथ अनेक सागररूप ग्रंथोंसे संग्रह रके वशीकरणसे प्रारंभकर यक्षिणी मंत्रके साधन पर्यन्त उद्धृत याहै । हे पार्वती ! वशीकरण और आकर्षण कर्म वसन्त ऋतुमें े चाहिये ॥ २ ॥

ग्रीष्मेविद्वेषणंकुर्य्यात्प्रावृषिस्तंभनंतथा ॥३॥
शिशिरेमारणञ्चैवशांतिकंशरदिस्मृतम् ॥

ग्रीष्मऋतुमें विद्वेषण, वर्षाऋतुमें स्तंभन, शिशिरमें मारण शरदमें शान्तिकर्म ॥ ३ ॥

हेमन्तेपौष्टिकंकुर्य्यादुक्तंकर्मविशारदः ॥ ४ ॥
वसन्तेचैवपूर्वाह्णेग्रीष्मेमध्याह्नउच्यते ॥

हेमन्तमें पुष्टिकर्म, इन कर्मोंके जाननेवालोंको करने चाहिये, दुपहरसें पहले वसन्त मध्याह्नमें ग्रीष्म ॥ ४ ॥

वर्षाज्ञेयापराह्णस्तुप्रदोषेशिशिरस्तथा ॥५॥
अर्द्धरात्रेशरत्कालेउषाहेमन्तउच्यते ॥

तीसरे प्रहरको वर्षा, प्रदोषमें शिशिर आधीरातमें शरद, उषः-काल (चारघडीके तडके) में हेमन्तऋतु जान्नी उचितहै ॥५॥

ऋतवःकथिताह्येतेसर्वेएवक्रमेणतु ॥ ६ ॥
तद्विहीनानसिद्धयन्तिप्रयत्नेनापिकुर्वतः ॥

यह क्रमसे ऋतुओंका वर्णन कियाहै, कालके विनायत्न करने परभी मंत्रसिद्धिको प्राप्त नहीं होते ॥ ६ ॥

अनन्यकरणात्तेहिध्रुवंसिद्ध्यंतिनान्यथा ॥ ७ ॥
इतिवश्यादिकर्मणामृतुनिर्णयः ॥

और अपने कालमें करनेसे वे सिद्ध होतेहैं, इसमें सन्देह नहीं७ इति ऋतुनिर्णयः ।

वशीकरणकर्माणिसप्तम्यांसाधयेद्बुधः॥
तृतीयायांत्रयोदश्यांतथाकर्षणकर्मवै ॥ ८॥

चतुर पुरुषको उचितहै कि, सप्तमीमें वशीकरण कर्मका साधन करै, तीज और तेरसके दिन आकर्षण कर्म करना चाहिये ॥ ८ ॥

---

१ दशम्यां ।

उच्चाटनंद्वितीयायांषष्ठ्यांचैवप्रकारयेत् ॥
स्तम्भनञ्चचतुर्दश्याञ्चतुर्थ्याम्प्रातिपद्यापि ॥ ९ ॥

दोयज और छठको उच्चाटन कर्म करै चौथ और चौदसको
तंभनकर्म करै तथा पड़वाको भी स्तम्भ न करै॥ ९ ॥

मोहनन्तुनवम्याञ्चतथाष्टम्यांप्रयोजयेत् ॥
द्वादश्याम्मारणञ्चैवमेकादश्यान्तथैवच ॥ १० ॥

नौमी और अष्टमीको मोहनकर्म करै एकादशी द्वादशीको
मारण कर्म करना चाहिये ॥ १० ॥

पञ्चम्याम्पौर्णमास्याञ्चयोजयेच्छांतिकादिकम् ॥
सर्वविद्याप्रसिद्ध्यर्थंतिथयःकथिताःक्रमात् ॥ ११ ॥

पंचमी और पौर्णमासीको मारण कर्म करना चाहिये, यह
तिथि सर्व विद्याओंकी प्रसिद्धिके निमित कहीहै ॥ ११ ॥
इति तिथिनिर्णयः ।

अथवाराः ।

शुक्रेलक्ष्मीःशनौवश्यंरवौमारणकर्मच ॥
उच्चाटनंबुधेभौमेविद्वेषादिशुभम्भवेत् ॥ १२ ॥

चन्द्रवारमें लक्ष्मी, शनिको वशीकरण, रविवारको मारण
बुधको उच्चाटन, मंगलको विद्वेषणकर्म शुभ होताहै ॥ १२ ॥

स्तंभनंमोहनञ्चैववशीकरणमुत्तमम् ॥
माहेन्द्रेवारुणेचैवकर्त्तव्यमिहसिद्धिदम् ॥ १३ ॥

स्तंभन मोहन और उत्तम वशीकरण माहेन्द्रववारुण मंडलमें
करनेसे सिद्धिका देनेवालाहै ॥ १३ ॥

विद्वेषोच्चाटनम्वह्निवायुयोगेनकारयेत् ॥
ज्येष्ठाचैवोत्तराषाढाअनुराधाचरोहिणी ॥ १४ ॥

विद्वेषण और उच्चाटन अग्नि और वायुके योगमें करावै, ज्येष्ठा उत्तराषाढा अनुराधा रोहिणी ॥ १४ ॥

माहेन्द्रंमण्डलस्थाचप्रोक्ताकर्मप्रसिद्धिदा ॥
स्यादुत्तराभाद्रपदामूलाशतभिषातथा ॥१५॥

यह माहेन्द्र मण्डलमें स्थितहुए कर्म सिद्धिके देनेवालेहैं उत्तरा भाद्रपद, मूल, शतभिषा ॥ १५ ॥

पूर्वाभाद्रपदाश्लेषाज्ञेयावारुणमध्यगाः ॥
पूर्वाषाढाचतत्कर्म्मसिद्धिदाशम्भुनास्मृताः ॥१६॥

पूर्वा भाद्रपदा, आश्लेषा, यह वारुणमण्डलके मध्याचारी कहातेहैं, और इसीप्रकार शिवजीने पूर्वाषाढको कर्मसिद्धिका देनेवाला कहाहै

स्वातीहस्तोमृगशिराश्चित्राचोत्तरफाल्गुनी ॥
पुष्यःपुनर्वसुर्वह्निमण्डलस्थाःप्रकीर्त्तिताः ॥ १७ ॥

स्वाती हस्त मृगाशिर चित्रा उत्तरा फाल्गुनी पुष्य पुनर्वसु यह वह्निमण्डलमें स्थितहैं ॥ १७ ॥

अश्विनीभरणीचित्राधनिष्ठाश्रवणोमघा ॥
विशाखाकृत्तिकापूर्वाफाल्गुनीरेवतीतथा ॥ १८ ॥

अश्विनी भरणी आर्द्रा धनिष्ठा श्रवण मघा विशाखा कृत्तिका पूर्वाफाल्गुनी रेवती ॥ १८ ॥

वायुमण्डलमध्यस्थास्तत्तत्कर्म्मप्रसिद्धिदाः ॥
शांतिकंपौष्टिकञ्चैवआभिचारिककर्म्मच ॥ १९ ॥

यह वायुमण्डलमें स्थितहुए उन उन कर्मोंकी सिद्धि देनेवालेहैं, शान्ति पुष्टि और अभिचार कर्म इन्होंमें सिद्ध होते हैं ॥ १९ ॥

इति महेन्द्रादिनिर्णयः ।

तर्जन्यादिसमारूढंकुर्याद्यत्नाक्रमंसुधीः ॥
तथांगुष्ठासमारूढासर्वकर्मशुभेतदा ॥ २० ॥

तर्जनी (अँगूठेके निकटकी) अंगुली आदि द्वारा यथाक्रमसे करै, और अंगुष्ठसे सब शुभकर्म प्रयोग करने चाहिये ॥ २० ॥

इति अंगुलीनिर्णयः ।

अथ मूलिकाग्रहण विधिः ।

विधिमंत्रसमायुक्तमौषधंसफलंभवेत् ॥
विधिमंत्रविहीनंतुकाष्ठवद्भेषजंभवेत् ॥ २१ ॥

विधिपूर्वक मंत्रद्वारा लाईहुई औषधी सफल होतीहै और विधि तथा मंत्रकेविना लाईहुई औषधी काठकी समान होतीहै ॥ २१ ॥

एकान्तेतुशुभारण्येतिष्ठत्येवयदौषधम् ॥
कार्यसिद्धिर्भवेत्तेनवीर्यमस्तिचतत्रवै ॥ २२ ॥

जो औषधी एकान्तमें अच्छे वनमें स्थित होतीहै उससे कार्य-सिद्धि होतीहै कारण कि उसमें बल रहताहै ॥ २२ ॥

वल्मीककूपरथ्यातरुतलदेवालयश्मशानेषु ॥
जाताविधिनाविहिताओषधयःसिद्धिदानस्युः २३॥

बाँबी कूर्पर (कोहनी) वृक्षके नीचेकी देवालय श्मशान्में उत्पन्न हुई औषधी विधिपूर्वक लाई हुईभी सिद्धि देनेवाली नहीं होती।२३।

जलजीर्णमग्निकवलितमकालजातकृमिक्षतशरीरञ्च
न्यूनन्तथाधिकंवाद्रव्यमद्रव्यञ्जगुर्भिषजः ॥ २४ ॥

जलसे गलीहुई अग्निसे जलीहुई अकालमें उत्पन्नहुई कृमिसे खाई हुई बहुत थोडी तथा अधिक औषधी (द्रव्य) होनेपरभी, नहीं होनेकेसमानहै, ऐसा विद्वान कहतेहैं ॥ २४ ॥

भूतादियुक्तमभ्यर्च्यगिरीशंप्रातरुत्थितैः ॥
श्राद्धैरुपासितैर्वापिसंग्राह्यंसर्वमौषधम् ॥२५॥

प्रातःकाल उठकर भूतादिके सहित शिवका पूजनकर शुद्धव्रतादिसे युक्तहो सम्पूर्ण औषधियोंको ग्रहणकरना चाहिये ॥ २५ ॥

इत्येवंसर्वमूलानांविधिमंत्रश्चकथ्यते ॥
आदौवृक्षस्यमूलञ्चगत्वातमऽभिमंत्रयेत् ॥ २६ ॥

इस प्रकारसे सब मूलोंकी विधि और मंत्रको कहतेहैं—पहले वृक्ष मूलमें जाकर उसको अभिमंत्रित करै ॥ २६ ॥

वेतालाश्चपिशाचाश्चराक्षसाश्चसरीसृपाः ॥
अपसर्पन्तुतेसर्वेवृक्षादस्माच्छिवाज्ञया ॥ २७ ॥
ततोनमस्कारः ॥

यह मंत्रहै कि वेताल पिशाच राक्षस सरीसृप शिवकी आज्ञासे सब इस वृक्षसे दूरहों ॥ २७ ॥

ॐनमस्तेऽमृतसम्भूतेब्रह्मवीर्य्यविवर्द्धिनि ॥
बलमायुश्चमेदेहिपापान्मेत्राहिदूरतः ॥ २८ ॥

अमृतसे उत्पन्न ब्रह्म वीर्यकी बढानेवाली बल और आयु मुझेदो और दूरसेही पापोंसे मेरी रक्षाकरो ॥ २८ ॥

ततःखननम् ॥येनत्वांखनतेब्रह्मायेनत्वांखनतेभृगुः ।
येनहीन्द्रोथवरुणोयेनत्वामपचक्रमे ॥ २९ ॥

यह कहकर खोदे जिसकारण कि तुमको ब्रह्मा और भृगुजीने खोदाहै, जिसकारण कि तुमको इन्द्र और वरुणने खोदाहै ॥ २९ ॥

तेनाहंखनयिष्यामिमंत्रपूतेनपाणिना ॥
मापातेमानिपतितेमातेतेजोन्यथाभवेत् ॥ ३० ॥

इसीकारण मंत्रसे पवित्र हाथोंसे मै तुमको खनन करताहूं, खोदने और उखाड़नेमें तुम्हारा तेज अन्यथा न हो ॥ ३० ॥

अत्रैवतिष्ठकल्याणिममकार्य्यकरीभव ॥
ममकार्य्यैंकृतेसिद्धेततस्स्वर्गंगमिष्यसि॥ ३ १ ॥

हे कल्याणी! यहीं स्थित होकर तुम हमारा कार्य करो मेरे कार्यकी सिद्धि होनेसे फिर तुम्हारा स्वर्गमें गमन होगा ॥ ३१ ॥

ॐह्रींचण्डेहूंफट्स्वाहा ॥
अनेनमंत्रेणादित्यवारेपुष्यनक्षत्रेवापुष्यार्केयोगेवासर्वाःओषधीरुत्पाटयेत् । ॐह्रींक्षौंफट्स्वाहा ॥
अनेनमूलिकांछेदयेत् । इतिमूलिकाग्रहणविधिः ॥
ॐवनदण्डेमहादण्डायस्वाहा ॥
ॐ शू(सूत्री)द्रींकपालमालिनीस्वाहा ॥
प्रत्येकंसप्तधाजप्त्वावन्दाग्राह्याततःकार्य्यसिद्धिः ॥
इतिवन्दाग्रहणविधिः ॥
इत्येवंसर्वविद्यानांसिद्धयेऋतुनिर्णयम् ॥
कथितंचात्रयत्नेनमूलिकाग्रहणादिकम् ॥ ३२ ॥

"ओंह्रीं चण्डेहूं फट् स्वाहा" इस मंत्रसे रविवारके दिन पुष्य नक्षत्र अर्कयोगमें सम्पूर्ण औषधी उखाडै, "ओंह्रींक्षौं फट् स्वाहा" इस मंत्रसे मूलिका छेदनकरे (इति मूलिका ग्रहणकी विधि) "ओंवन दण्डे महादण्डायस्वाहा ओंशूंद्री कपालमालिनी स्वाहा" यह प्रत्येक सातवार जपकर वन्दाग्रहणकरै तौ कार्यकी सिद्धि हो (इतिवंदाग्रहणमंत्रः) इसप्रकार सब विद्याओंकी सिद्धिमें ऋतुका निर्णयहै यह यत्नपूर्वक मूलग्रहणादिकी विधि कहीहै ॥ ३४ ॥

अथवशीकरणम् । तत्रसर्वजनवशीकरणम् ॥
वर्णानामुत्तमम्वर्णंमंत्रस्थानान्तथैवचम् ॥
ॐकाराशिरसंचापिऔंकाराशिरसन्ततः ॥ ३३ ॥

अधोभागेचरेफश्चदत्वामंत्रंसमुद्धरेत् ॥
निरामिषान्नभोक्ताचजप्तव्योमन्त्रउत्तमः ॥ ३४ ॥

प्रथम सम्पूर्णजनोंको वशकरनेकी विधि, जो वर्गोंमें उत्तम वर्णहै वही मंत्रका स्थानहै, ओंकार शिरके स्थानमें और दूसरे क प व लिखकर अधोभागमें रेफदेकर मंत्रका उद्धार करै मांसरहित अन्न खाकर मंत्रको जपै ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

क्रोंप्रोंव्रोंअनेनमंत्रेणअसाध्यमपिराजानंपुत्रमित्राश्चबांधवाः । यन्मेगोत्रसमुत्पन्नाःपशवोयेचसर्वतः ॥ ३५ ॥

"क्रों प्रों व्रों" इसमंत्रसे असाध्य राजा पुत्र मित्र बांधव जो अपने गोत्रमेंहैं और जो पशु प्राय है ॥ ३५ ॥

तेसर्वेवशतांयांतिसहस्रार्द्धस्यजापनात् ॥
पृष्ट्वादृष्ट्वाचयेसाध्यागृहीत्वानामतत्रवै ॥ ३६ ॥

वे ५०० मंत्र जपकरनेसे सब वशीभूत होजातेहैं उनसाध्योंसे पूछकर तथा देखकर उनकेनाम लेकर सिद्ध करै ॥ ३६ ॥

इत्यादिकंसर्वमंत्रंग्राह्यंभक्त्यागुरोस्तदा ॥
सिध्यंतिसर्वकार्य्याणिनान्यथासिद्धिभाग्भवेत् ३७

सम्पूर्ण मंत्र भक्तिपूर्वक गुरुसे ग्रहण करने चाहियें तौ सबकार्य सिद्धि होतेहैं अन्यथा कार्यसिद्धि नहीं होती ॥ ३७ ॥

---

१ "ओं ह्रीं क्लीं कलिकुण्डस्वामिनि अमृतवक्त्र अमुकं जम्भयमोहय स्वाहा" यह मंत्र इक्कीसबार जपनेसे सिद्धि होतीहै १ उद्भ्रान्त पत्र मजीठ कुंकुम तगर यह समान ले खान पान और स्पर्शमें देनेसे वशी करताहै। पुष्यनक्षत्रमें सिंहीकी मूल लाय कमरमें बांधनेसे जगत्प्रिय होता है। कृष्णचतुर्दशीमें स्मशानसे महानीललावै २ उसे उखाड नरतेलसे अंजन करनेसे लोक वशीभूत होताहै। अथवा इसीकी मूल अपने वीर्यसे अंजनकरेतो लोकवशमें होताहै। ३ अथवा इसीकी मूल हाथमें बांधनेसे सर्व प्रिय होताहै। चन्द्रवारपुष्पनक्षत्रमें ब्रह्मदंडीकी मूल लाय ४ अंजन करनेसे सब जीव वशमें होतेहैं। उल्लूके नेत्र घीकुवार वंशलोचन ५ इसके अञ्जनसे लोक वशीभूत होतेहैं "ओंनमो महा यक्षिणि अमुकं वशमानय स्वाहा" इसमंत्रको दश सहस्रजपनेसे सिद्धि होतीहैं।

ॐनमःकटविकटघोररूपिणीस्वाहा ॥
अनेनमंत्रेणसप्ताभिमंत्रितंभुक्तपिंडं
यस्यनाम्नासप्ताहंस्वाद्यतेसध्रुवमेववश्योभवति ॥
ॐवश्यमुखीराजमुखिस्वाहा ॥
अनेनसप्तधामुखप्रक्षालनात्सर्वैवश्याभवन्ति ॥
ॐराजमुखिवश्यमुखिस्वाहा ॥
ॐवामहस्तेतैलंसंस्थाप्यअनामिकयात्रिधा
आमंत्र्यपुनर्मूलमंत्रंत्रिधापठित्वामुखकेशादौविलेपयेत्।
प्रातःकालेशय्यायांस्थित्वातदासर्वैजनावश्याभवन्ति ॥
व्याघ्रोपिनखादति ॥
ॐचामुण्डेजय२स्तम्भय२जंभय२मोहय २
सर्वसत्वानमस्वाहा अनेनपुष्पाण्य
भिमंत्र्ययस्मैदीयतेसवश्योभवति ॥
एकचित्तस्थितोमंत्रीमंत्रंजप्त्वाऽयुत त्रयम् ॥
ततःक्षोभयतेलोकान्दर्शनादेवसाधकः ॥३८॥

"ओंनमः कट विकट घोर रूपिणी स्वाहा" इस मंत्रसे सातवार अभिमंत्रितकर भोजनपिण्डको जिसका नाम लेकर बराबर सात दिनतक खाय वह अवश्य वशमें हो जाताहै "ओंवश्यमुखी राजमुखी स्वाहा" इस मंत्रको पढ़ सातवार मुख धोनेसे सब वशमें हो जातेहैं "ओंराजमुखि वश्यमुखि स्वाहा" बायें हाथमें तेल लेकर कन अंगुलीसे तीन वार अभिमंत्रितकर फिर मूलिका को तीनवार पढ़कर मुख और केशादिमें लगावे प्रातःकाल शय्यामें स्थित होकर लगावै तब सब मनुष्य वशमें होते हैं व्याघ्रभी

उसको नहीं खाता मंत्र यहहै "ओंचामुण्डे जय २ स्तम्भय २ जंभय २ मोहय २ सर्व सत्वा नमस्स्वाहा" इस मंत्रसे पुष्प अभिमंत्रित करकै जिसको दियाजाय वह वशीभूत हो जाताहै मंत्र जपने-वाला स्थिर चित्त होकर बीससहस्र मंत्रजप करकै अपनै दर्शनसेही लोकोंको क्षुभितकर सकताहै ॥ ३८ ॥

भूताख्यवटमूलञ्चजलेनसहघर्षयेत् ॥
विभूत्यासंयुतंमन्त्रंतिलकंलोकवश्यकृत् ॥ ३९ ॥

शाखोटवृक्षकी जड़ यत्नसे घिसकर विभूतिके सात तिलक लगावै तौ लोक वशीभूत होजातेहैं ॥ ३९ ॥

पुष्येपुनर्नवामूलंकरेसप्ताभिमंत्रितम् ॥
बध्वासर्वत्रपूज्यःस्यान्मंत्रस्त्वत्रैवकथ्यते ॥ ४० ॥
ऐरंडंक्षोभयभगवतित्वंस्वाहा ॥
मंत्रमिममुक्तयोगस्यपूर्वमयुतद्वयजपेत्ततःसिद्धिः ॥
अपामार्गस्यमूलन्तुपेषयेद्रोचनेनच ॥
ललाटेतिलकंकुर्य्याद्वशीकुर्य्याज्जगत्रयम् ॥ ४१ ॥

पुष्य नक्षत्रमें पुनर्नवाकी जड़को हाथमें सातवार अभिमंत्रितकर बांधै तौ सर्वत्र पूजित होताहै वह मंत्र यहहै "ऐरंडंक्षोभय भगवतित्वं स्वाहा" यहमंत्र १०००० जपनेसे सिद्धि होतीहै अपामार्ग (चिरचिटे) की जड़को गोरोचनके साथ पीसले इसका तिलक मस्तकमें करनेसे त्रिलोकीको अपने वशमें करसकताहै ॥ ४१ ॥

ॐ नमःकन्दर्पशरविजालिनिमालिनीसर्वलो
कवशंकरीस्वाहा ॥
इतिमंत्रमुक्तयोगस्याष्टोत्तरसहस्रंजपेत्ततःसिद्धिः ॥
कृष्णपक्षेचतुर्दश्यामष्टम्यांवाउपोषितः ॥
बलिन्दत्वासमुद्धृत्यसहदेवींसचूर्णयेत् ॥ ४२ ॥

"ॐनमः कन्दर्पशर विजालिनि मालिनि सर्व लोकवशंकरी स्वाहा" यह मंत्र कथितयोगमें १०८ वार जपनेसे सिद्धि होतीहै कृष्ण पक्षकी चौदस और अष्टमीको व्रत रहकर बलि देकर सहदेईकी जड़को उखाड़के चूर्ण करै ॥ ४२ ॥

ताम्बूलेनतुतच्चूर्णंदत्तंवश्यकरंध्रुवम् ॥
स्नानेलेपेचतच्चूर्णयोज्यंवश्यकरम्भवेत् ॥ ४३ ॥

पानमें रखकर जिसको दीजाय वह अवश्य वशीभूत होजाताहै, और इसीका चूर्ण स्नानीय जलमें मिलाकर न्हानेसे अथवा शरीरमें लेपनकरनेसे वश्यता होतीहै ॥ ४३ ॥

रोचनासहदेवीभ्यांतिलकंलोकवश्यकृत् ॥
शिरसाधारयेत्तच्चचूर्णंसर्वत्रवश्यकृत् ॥ ४४ ॥

गोरोचन और सहदेई मिलाकर तिलक करनेसे लोकवशीभूत होतेहैं और उसका चूर्ण शिरपर धारणकरनेसे लोक वशीभूत होतेहैं ॥ ४४ ॥

मुखेक्षिप्त्वाचतन्मूलंकटयांवध्वाचकामयेत् ॥
यांनारींसाभवेद्वश्यामंत्रयोगेनकथ्यते ॥ ४५ ॥
ॐनमोभगवतीमातंगेश्वरीसर्वमुखरंजिनि
सर्वेषांमहामायेमातंगीकुमारिकेहलहलजिह्वे
सर्वलोकवशंकरीस्वाहा ॥
सहस्रंजप्त्वाउक्तयोगानांसिद्धिः ॥
श्वेतापराजितामूलंचंद्रग्रस्ते(मृगऋक्षे)समुद्धतम् ॥
रंजिताक्षोनरस्तेनवशीकुर्य्याज्जगत्रयम् ॥ ४६ ॥
तन्मूलंरोचनायुक्तंतिलकेनजगद्वशम् ॥
ग्राह्यंकृष्ण(शुक्ल) त्रयोदश्यांश्वेतगुंजीयमूलकम् ४७

उसको अन्यस्त्रियोंकेद्वारा जिसके मुखमें डालदे या कमरमें मन्त्रयोगसे बाँधदे वह स्त्री वशमें होजातीहै मंत्र यहहै " ॐनमो भगवति मातंगेश्वरि सर्वमुखरंजिनि सर्वेषां महामाये मातंगी कुमारिके हल हल जिह्वे सर्वलोक वशंकरी स्वाहा " सहस्र मंत्र जपकरनेसे ऊपरकहे योगकी सिद्धि होतीहै श्वेत विष्णुक्रान्ताकी जड़ चन्द्रग्रहणमें उखाड़कर लावै उसको पीसकर आंखोंमें आंजनेसे त्रिलोकी वशमें होतीहै, और इसीकी जड़का गोरोचनकेसाथ तिलक लगानेसे जगत् वशमें होताहै कृष्ण-पक्षकी त्रयोदशीके दिन सफेद चौंटलीकी जड़को लावै४५।४६।४७

ताम्बूलेनप्रदातव्यंसर्वलोकवशंकरम् ॥
शिलालारोचनतन्मूलंवारिणातिलकेकृते ॥ ४८ ॥

उसको ताम्बूलकेसाथ देनेसे सबलोक वशीभूत होतेहैं, शिवा और गोरोचन इनको जलकेसाथ घिसकर तिलक लगानेसे ॥४८॥

संभाषणेनसर्वेषांवशीकरणमुत्तमम् ॥
स्वर्णेनवेष्टितंकृत्वातेनैवतिलकेकृते ॥ ४९ ॥
दृष्टमात्रेवशंयातिनारीवापुरुषोपिवा ॥
ॐवज्रांकिरणेशिवेरक्षभवेममाद्यअमृतंकुरु२स्वाहा
इमंमंत्रमुक्तयोगेनांसहस्रजपेत्ततःसिद्धिः ॥ ५० ॥
हृत्पादचक्षुर्नासानांमलंपूगेप्रदापयेत् ॥ ५१ ॥
तत्पूगंखाद्यतेयेनयावज्जीवंवशोभवेत् ॥ ५२ ॥

जिसकेसाथ संभाषण करै वह वशमें होसकताहै तथा स्वर्णसेवेष्टितकर इसका तिलक करनेसे नारी या पुरुष कोई हो देखतेहीवशीभूत होजाताहै, मंत्र यहहै"ॐवज्रकिरणो शिवे रक्षभवेममाद्याअमृतं कुरुकुरु स्वाहा" हृदयचरण अंक नासिकाका मैल पूग(सुपारी)में किंचित्भी देनेसे खानेवाला जीवनपर्यन्त उसके वशमें होजाताहै ॥४९॥ ॥ ५० ॥ ५१॥ ५२ ॥

---

१ अथवा हल हल । २ ग्राह्यं शुक्लचतुर्दश्यां श्वेतगुंजीय मूलकम्। ताम्बूलेन प्रदातव्यं सर्वलोक वशंकरम् ॥ इत्यस्यैतदुत्तरंपाठः अन्यत्र ।

मंत्राभिमंत्रितंकृत्वादण्डेन्दीवरमूलकम् ॥
रोचनाभिस्ताम्रपात्रेदृष्ट्वानेत्रद्वयांजनात् ॥ ५३ ॥

नील कमलकी जड़ मंत्रसे अभिमंत्रित करकै गोरोचन सहित ताम्र पात्रमें पीसकर दोनों नेत्रोंमें आंजनेसे ॥ ५३ ॥

प्रियोभवतिसर्वेषांदृष्टमात्रेनसंशयः ॥
तन्मूलंमधुसंयुक्तंललाटेतिलकेकृते ॥ ५४ ॥

देखतेही वह मनुष्य सबका प्यारा होजाताहै इसमें सन्देह नहीं और इसीकी जड़का सहतके साथ तिलक लगानेसे ॥ ५४ ॥

ताम्बूलेवाप्रदातव्यंवशीकरणमुत्तमम् ॥
तन्मूलंरंजनोत्थंवामूलंपिष्ट्वाप्रयोजयेत् ॥ ५५ ॥

वा ताम्बूलके साथ देनेसे उत्तम वशीकरण होजाताहै तथा नील कमलकी जड़ तिरिच्छ की जड़ पीसकर प्रयोगकरै ॥ ५५ ॥

ताम्बूलेनतुतद्भुक्तेध्रुवंवश्यंसमानयेत् । पिंगलायैनमः ।
अनेनमंत्रेणाभिमंत्र्योक्तयोगान्साधयेत् ।

रक्तगृध्रोभयंनेत्रंनेत्रंवाकृष्णपेचकम् ॥
कृष्णपेचिकमाहृत्यतत्तैलेनप्रदीपकम् ॥ ५६ ॥
कृत्वाचमधुनालिप्त्वावर्त्तिकज्जलपातने ॥
तेननेत्रांजनंकृत्वात्रैलोक्यंवशमानयेत् ॥ ५७ ॥

लाल गृध्रके दोनों नेत्र और काले उल्लूका नेत्र लेकर काले उल्लूको लाकर उसे तेलसे प्रदीप्त करकै और सब प्रकार सावधानी करकै उसको सहतसे लपेटकर बत्ती बनाय काजर पारै उसका काजर नेत्रोंमें लगानेसे त्रिलोकी वशमें करसकताहै ॥ ५७॥

देवदालीवसिद्धार्थंगुटिकाःकारयेद्बुधः ॥
मुखेनिःक्षिप्यसर्वेषांप्रियोभवतिनान्यथा ॥५८॥
भृङ्गमूलंमुखेक्षिप्त्वासर्वैस्संपूजितोभवेत् ॥
रोहिण्यांवटवन्दाकंसङ्ग्राह्यंधारयेत्करे ॥ ५९ ॥

देवदाली (घघरबेल) सरसों इनका गुटका बनाकर मुखमें रखनेसे सबका प्रिय होताहै इसमें संदेह नहीं, भांगरेकी जड़ मुखमें डालकर सर्वत्र पूजित होताहै रोहिणीनक्षत्रमें वटके बन्देको संग्रहकर हातमें धारण करै ॥ ५९ ॥

वश्यंकरोतिसकलंविश्वामित्रेणभाषितम् ॥
कुङ्कुमन्तगरंकुष्टंहरितालंसमंत्रयम् ॥ ६० ॥

वह सबको वशीभूत करसकताहै ऐसा विश्वामित्रने कहाहै केशर (कश्मीरमें उत्पन्न) तगर कूठ हरिताल इनको बराबर लेकर॥ ६०॥

अनामिकायारक्तेनतिलकंलोकवश्यकृत् ॥
विष्णुक्रांताशुभाभृंगीश्वदंष्ट्रा(ण्डा)मूलरोचनाम् ६॥

कनऊंगलीके रक्तकेसाथ तिलक करनेसे सबलोक वशीभूत होजातेहैं विष्णुक्रान्ता भांगरा गोखरूकी जड़ गोरोचन ॥ ६१ ॥

पिष्ट्वातुवटिकांकृत्वातिलकंवशकृत्परम् ॥
पुष्योद्धृतंश्वेतभानुमूलंमूत्रैरजाभवैः ॥ ६२ ॥

इन सबको पीसकर गोली बनाले इनका तिलक करनेसे लोकवशीभूत होजातेहैं पुष्यनक्षत्रमें श्वेतमन्दारकी जड़ लेकर तथा जवासा यह अजामूत्रसे ॥ ६२ ॥

वटिकांकारयेत्प्राज्ञस्तिलकेनजगद्वशम् ॥
अजारक्तेनतन्मूलंपुष्यार्केपेषयेद्बुधः ॥ ६३ ॥

वटी बनाकर उसका तिलक करनेसे सब जगत् वशीभूत होजाताहै और भेडके रुधिरकेसाथ मन्दारकी जड़ पुष्यनक्षत्रमें पीसनेसे ६३

कज्जलंपातयित्वातुचक्षुषीरञ्जयेन्नरः ॥
त्रैलोक्यंवशतांयातिदृष्टमात्रेनसंशयः ॥ ६४ ॥

उसमें काजर डालकर जो मनुष्य नेत्रोंमें लगावै तो देखतेही त्रिलोकी वशमें होजातीहै इसमें सन्देह नहीं ॥ ६४ ॥

मूलन्तुश्रवणाऋक्षेपिंडीतगरसंभवम् ॥
संग्राह्यंधारयेद्वश्यंकुरुतेसकलंजगत् ॥ ६५ ॥

श्रवण नक्षत्रमें पुष्करमूलकी जड़ लेकर तगर मिलाकर धारण करै तो सम्पूर्ण जगत् वशमें होजाताहै ॥ ६५ ॥

कृष्णापराजितामूलंपुष्येणोद्धृत्यचूर्णयेत् ॥
गोघृतेनसमालोड्यकज्जलंधारयेद्बुधः ॥ ६६ ॥

कृष्णकान्ताकोयलकी जड़ पुष्यनक्षत्रमें लाकर चूर्ण करै उसमें गौका घृत मिलाकर कज्जल धारण करै ॥ ६६ ॥

तेनैवाञ्जितमात्रेणवशीकुर्य्याज्जगत्रयम् ॥
पुत्रजीवकपत्रंचतिलकंरोचनायुतम् ॥ ६७ ॥

उसके आंजने मात्रसेही त्रिलोकी वशमें हो जाती है, जिये पोते वृक्षके कोमल पत्तोंको पीसकर उसमें गोरोचन मिलाकर तिलक करनेसे ॥ ६७ ॥

प्रियोभवतिसर्वेषांनरःकृत्वाललाटके ॥
श्वेतापराजितामूलंतथाश्वेतजवाग्रजा (जयाल(श्व)योः)६८

इस मस्तकके तिलकके दर्शन करतेही सब मनुष्य इसको प्यार करने लगतेहैं, श्वेत विष्णुक्रान्ताकी जड़ तथा श्वेत गुड़हर ॥ ६८ ॥

नासाग्रेतिलकंकृत्वावशीकुर्य्यान्नसंशयः ॥ ६९ ॥

नासाके अग्र भागमें इन दोनोंका तिलक लगानेसे वशीकरण होताहै इसमें सन्देह नहीं ॥ ६९ ॥

मंजिष्ठतोयदवचाशितसूर्यमूलैः ॥
स्वीयाङ्गशोणितयुतैःसमकुष्ठकैश्च ॥
कृत्वाललाटफलकेतिलकंकृतज्ञोलोकत्रयंवशयति
क्षणमात्रकेन ॥ ७० ॥

मजीठ मोथा वच श्वेतआककी जड़ अपने शरीरका रुधिर इनकी बराबर कूठ लेकर इनका तिलक मस्तकपर करनेसे क्षण मात्रमें त्रिलोकी वशमें होती है ॥ ७० ॥

शम्भोर्ज्जलंचमधुकंचकृताञ्जलीच
हव्यंसमंनिजशरीरमलेनमिश्र (पिष्ट) म् ॥
आलेपभक्षणविधौतिलकेकृतेवा
योगोयमेवभुवनानिवशीकरोति ॥ ७१ ॥

शुद्धपारा सहत लज्जावन्ती हव्य और अपने शरीरका मल इनका लेपन भक्षण वा तिलक करनेसे सब भुवनोंको वशीभूत करसकताहै ॥ ७१ ॥

मूलंजटातगरमेषविषाभि (णि) (लि) कानां
पंचांगजंनिजशरीरमलंतथैव ॥
एकीकृतानिमधुनादिवसेकुजस्य
कुर्वंतिवक्रातिलकेनवशंजगन्ति ॥ ७२ ॥

रुद्रजटा तगर मेढासिंगी का पंचांग और अपने शरीरका मल इन सबको एकत्रकर मंगलके दिन तिलक लगानेसे त्रिलोकीको अपने वशमें कर सकताहै ॥ ७२ ॥

भृंगस्यपक्षयुगलंशुक (कुश) मांसयुक्तं
स्वानामिकारुधिरकर्णमलंस्वबीजम् ॥
एतानिलेपविधिनाप्यथभक्षणाद्वा
कुर्वंतिवश्यमखिलंजगदप्यकस्मात् ॥ ७३ ॥

भौंरेके दोनों पंख तोतेका मांस कनऊंगलीका रुधिर कानका मैल अपना वीर्य इनका लेप वा भक्षण करनेसे तत्काल जगत् वशमें होताहै इसमें सन्देह नहीं ॥ ७३ ॥

तालीशकुष्ठतगरैःपरिलिप्यवर्त्तिं
सिद्धार्थतैलसहितांदृढपट्टवस्त्राम् ॥
पुंसःकपालफलकेविनिपातितेनतेनां
जनेनवशतांकिलयातिलोकः ॥ ७४ ॥

तालीस कूठ तगर इनकालेप करके दृढ़ रेशमी कपड़ेकी बत्ती वनावै और सरसोंके तेलसे युक्तकर पुरुषके कपालमें कज्जल पाड़ नेत्रोंमें आंजे तो तिससेजन निश्चय वशीभूत होजाते हैं ।

गोरोचनापद्मपत्रंप्रियंगूरक्तचन्दनम् ॥
एकीकृत्यांजयेन्नेत्रंयंपश्यतिवशोभवेत् ॥ ७५ ॥

गोरोचन पद्मपत्र प्रियंगु लालचन्दन इनको एकत्र कर नेत्रोंमें आंजनेसे जिसे देखे वह वशमें हो जाताहै ॥ ७५ ॥ इति सर्वजन-वशी करणम् ।

अथ राजवशीकरणम् ।

कुंकुमश्चन्दनंश्चैवरोचनंशशिमिश्रितम् ॥
गवांक्षीरेणतिलकंराजवश्यकरंध्रुवम् ॥ ७६ ॥

कुमकुम चन्दन गोरोचन इनमे भीमसेनी कपूर मिलाकर गौके दूधसे युक्त कर तिलक करनेसे राजा अपने वशमें होजाताहै॥७६॥

ॐह्रींसःअमुकंमेवशमानयस्वाहा ॥
पूर्वमेवसहस्रंजप्त्वानेनमंत्रेणसप्ताभिमंत्रितांतिलकंकार्यम्
चंपकस्यतुवन्दाकंकरेबध्वाप्रयत्नतः ॥
संगृह्यभरणीऋक्षेपुष्यर्क्षेवाविधानतः ॥ ७७ ॥

"ओंह्रींसः अमुकंमे वशमानय स्वाहा" यह मंत्र सहस्र वार पहले जपकर फिर सातवार इन औषधियोंको अभिमंत्रितकर तिलक लगावै ॥ चम्पेके वन्देको यत्नपूर्वक भरणी नक्षत्रमें अथवा पुष्य नक्षत्रमें या विधानसे संग्रह करके हथमें बांधै ॥ ७७ ॥

राजानंतत्क्षणादेवमनुष्योवशमानयेत् ॥
करेसुदर्शनामूलंबध्वाराजप्रियोभवेत् ॥ ७८ ॥

राजाको दिखानेसे उसीसमय राजा वशमें होजाताहै अथवा सुदर्शनाकी जड़ हाथमें बांधनेसे राजाका प्यारा होताहै ॥ ७८ ॥ इति राजवशी करणम् ।

अथ स्त्रीवशीकरणम् ।

पुष्येपुष्पंचसंगृह्यभरण्यान्तुफलंतथा ॥
शाखांचैवविशाखायांहस्तेपत्रंतथैवच ॥ ७९ ॥

पुष्यनक्षत्रमें कालेधतूरेके फूल भरणीमें फल विशाखामें शाखा हस्तमें पत्ते ॥ ७९ ॥

मूलेमूलंसमुद्धृत्यकृष्णोन्मत्तस्यतत्क्रमात् ॥
पिष्टाकर्पूरसंयुक्तंकुंकुमंरोचनासमम् ॥ ८० ॥

मूलमें जड़ काले धतूरेकी लावै यह क्रमसे ग्रहणकर कपूर मिलाकर पीसे इसमें कुम कुमऔर गोरोचन मिलावै ॥ ८० ॥

तिलकेस्त्रीवशंयातियदिसाक्षादरुंधती ॥
काकजंघावचाकुष्ठंशुक्रशोणितमिश्रितम् ॥ ८१ ॥

इसका तिलक करनेसे कैसीभी स्त्रीहो वशमें होजातीहै चाहे साक्षात् अरुन्धती क्यों नहो काकजंघा (चौंटली) वच कूठवीर्य और अपना रूधिर मिलाकर ॥ ८१ ॥

तदत्तेभोजनेबालास्मशानेरोदितिसदा ॥
ॐनमोभगवतेरुद्रायॐचामुण्डेअमुकींवशमानयस्वा
हा ॥ उक्तयोगानामयमेवमंत्रः ॥ प्रातर्मुखन्तुप्रक्षा
ल्यसप्तवाराभिमंत्रितम्॥यस्यानाम्नापिबेत्तोयंसास्त्री
वश्याभवेद्ध्रुवम् ॥

खवा देनेसे स्त्री सदा श्मशानमें रोदनकरतीहै (ॐनमोभगवते रुद्राय चामुण्डे अमुकींमे वशमानय स्वाहा) ऊपर कहे योगका यह मंत्रहै सातवार मंत्र पढकर अपना मुख सातबार धोनेसे जिस स्त्रीका नाम लेकर जलपिये वह स्त्री अवश्य वशमे होजातीहै॥८२॥

ॐ नमःक्षिप्रकामिनींअमुकींमेवशमानयस्वाहा ॥
कृष्णापराजितामूलंताम्बूलेनसमायुतम् ॥
अवश्यायैस्त्रियैदद्याद्वश्याभवतिनान्यथा ॥
ॐ हूंस्वाहा । अनेनाभिमंन्त्र्यदद्यात् ॥ ९४ ॥

मंत्र यहहै "ओंनमः क्षिप्रकामिनी अमुकींमें वश मानय स्वाहा" काली अपराजिताकी जड़ पानके साथ जो अवश्या स्त्रीको देताहै वह अवश्या स्त्री वशमें हो जातीहै ओं हूं स्वाहा इस मंत्रसे उपरोक्त औषधि अभिमंत्रित करदे साध्य साधक का नाम लेकर सात वार अभिमंत्रित कर ॥ ९४ ॥

साध्यसाधकनाम्नातुकृत्वासप्ताभिमन्त्रितम् ॥
दीयतेकुसुमंयस्यैसावश्याभवतिध्रुवम् ॥ ९६ ॥

जिसको फूलदिये जांय वह अवश्या वशमें हो जातीहै ॥९५ ॥

सुसाधितोह्ययंमंत्रोऽवश्यंफलदायकः ॥
तस्मादेतत्प्रयत्नेनसाधयेन्मंत्रमुत्तमम् ॥ ९६ ॥

साधना करनेसे यह मंत्र अवश्य फलका देनेवाला होताहै इस कारण इस उत्तम मंत्रको यत्नसे साधे ॥ ९६ ॥

ॐ हूंस्वाहा॥विशाखायान्तुवन्दाकंमंगलेचसमाहरेत् ॥
हस्तेबध्वातुकुरुतेवशतांवरयोषिताम् ॥ ९७ ॥

ओं हूं स्वाहा विशाखा नक्षत्रमें और मंगलवारमें बन्दालाकर उसे हाथमें बांधकर श्रेष्ठ स्त्रियोंको अपने वशमें करताहै ॥ ९७ ॥

याते वज्राय स्वाहा इस मंत्रसे अभिमंत्रित कर बांधे ॥ प्रथम अंकके यंत्रको गोरोचनसे लिखकर देवदत्तके स्थानमें पृथ्वीमें गाडदे अर्थात् जिसे वशीभूत करनाहो उसके स्थानमें गाडे तौ वह वशमें हो जाता है ।

२ अंकका यंत्र गोरोचनसे भोज पत्र पर लिखकर वशमें होने वालेका नाम लिखकर सदा पुष्पवाले वृक्षके नीचे स्थापन करै सात रात्रिमें वशमें हो जाता है ।

३ अंकका यंत्र भोजपत्र परलालचन्दनसे लिखकर और वशमें होनेवालेका नाम लिखकर घीके बीचमें तीन रात्रितक स्थापन करनेसे वशीभूत हो जाताहै बीचमें उसका नाम लिखे ।

४ अंकके यंत्रको और वशमें होनेवालेके नामको कनिष्ठिका उंगलीके रुधिरसे गोरोचनसे लिखकर सहतके बीचमें स्थापनकरै वह अवश्य वशीभूत होजाताहै ।

५ अंकका यंत्र गोरोचनसे जिसके नामसहित्त लिखकर लाल डोरेसे लपेटकर हाथमें बांधे वह वशमें होजाताहै ।

६ अंकवाला यंत्र गोरोचनसे लिख बीचमें साध्यका नाम लिखकर घृत और सहतमें स्थापनकरै वह अपने वशमें होजाताहै।

ॐ पातेवज्रायस्वाहा। अनेनाभिमंत्र्यबंधयेत् ॥

कृष्णोत्पलंमधुकरस्यचपक्षयुग्मंमूलन्तथातगरजंसित काकजंघा।यस्याःशिरोगतमिदंविहितंविचूर्णंदासीभंवे ज्झटितिसातरुणंविचित्रम् ॥ ९८ ॥

काले कमल, भौंरेके दोनों पंख पुष्करमूल तगरश्वेत काकजंघा इन सबका चूर्णकर जिसके शिरपर डाले वह स्त्री झट दासी होजातीहै इसमें सन्देह नहीं ॥ ९८ ॥

सव्येनपाणिकमलेनरतावसानेयोरेतसानिजभवेनावि लासिनीनाम् ॥वामंविलंपतिपदंसहसैवयस्यावश्यैव साभवतिनात्रविकल्पभावः ॥ ९९ ॥

जो मनुष्य रतिके अन्तमें सव्य (बायें) हाथसे अपना वीर्य स्त्रीके वामचरणके तलुएमें मलताहै वह स्त्री उसके वशमें होजातीहै इसमें संदेह नहीं ॥ ९९ ॥

सिंधूत्थमाक्षिककपोतमलानिपिष्ट्वालिंगंविलिप्यतरु णींरमतेनरोयां।सान्यंनयातिपुरुषंमनसापिनूनंदासी भवेदितिमनोहरदिव्यमूर्त्तिः ॥ १०० ॥

जो मनुष्य सैंधानोंन सहत कबूतरकी बीटको पीसकर मदनांकुशमें लेपकर तरुणीसे रमण करताहै वह स्त्री मनसेभी दूसरे

पुरुषके पास नहीं जाती और सदैवकाल पुरुषकी दासी होजातीहै और मनोहर दिव्य मूर्ति मान्तीहै ॥ १०० ॥

गोरोचनाशिशिरदीधितिशंभुबीजैःकाश्मीरचन्दन युतैःकनकद्रवैश्च।लिप्त्वाध्वजंपरिरमत्यबलांनरोयां तस्याःसएवहृदयेमकुटत्वमेति ॥ १ ॥

गोरोचन कुमुद और पाराकेशर चन्दन धतूरेकारस इनको मदनांकुश पर लेपकर जो रमणकरै वह उसके हृदयसे क्षणमात्रको पृथक् नहीं होता ॥ १ ॥

पुष्येरुद्रजटामूलंमुखस्थंकारयेद्बुधः ॥
ताम्बूलादौप्रदातव्यंवश्याभवतिनिश्चितम् ॥ २ ॥

पुष्य नक्षत्रमें रुद्रजटा (शंकरजटा) की जड मुखमें धारणकर ताम्बूलादिमें जिसको दे वह वशमें होजातीहै ॥ २ ॥

तथैवपाटलामूलंताम्बूलेनतुवश्यकृत् ॥
त्रिपत्रभंडिकामूलंपिष्ट्वागात्रेतुसंक्षिपेत् ॥ ३ ॥

इसीप्रकार पाढलकी जड़ ताम्बूलके साथ देनेसे वशीभूत करती है वेल तथा मजीठकी जड पीसकर एक कणभी जिसके शरीरपर डालै ॥ ३ ॥

यस्यास्सावशतांयातिबिन्दुमात्रेणतत्क्षणात् ॥
स्वकीयकाममादायकामदेवंस्मरेत्पुनः ॥ ४ ॥

वह अवश्य वशमें होजाताहै इसमें सन्देह नहीं अपने वीर्यको लेकर कामदेवका स्मरण करै ॥ ४ ॥

तरुण्याहृदयेदत्तंतत्क्षणात्स्त्रीवशाभवेत् ॥
गिलित्वापारदंकिंचिद्रम्यतेनायिकायदि ॥ ५ ॥

प्राणान्तेपिचसानारीतंनरंनविमुञ्चति ॥
कामाक्रान्तेनचित्तेनमासार्द्धंजपतेनिशि ॥ ६ ॥

और तरुणीके हृदयमें रखनेसे तत्काल स्त्री वशमें होजाती है कुछेक शोधे पारेको निगलकर यदि स्त्रीके साथ रमण करै तो प्राणान्त पर्यन्त वह स्त्री उस पुरुषको नहीं छोडतीहै काम युक्त चित्त होकर रात्रिके समय जो पन्द्रह दिनतक जप करताहै ॥ ६ ॥

अवश्यंकुरुतेवश्यंप्रसन्नोविश्वचेटकः ॥ ७ ॥

तौ यह साधक विश्वभरको निश्चयही अपने वशीभूत कर सकता है ॥ ७ ॥

ऐंपिंस्थांक्लींकामपिशाचिनीशीघ्रं
अमुकींग्राहय२कामेनममरूपेणनखैर्विदारय २
द्रावय२स्नेहेनबंधय२श्रींफट्।अयुतद्वयेनसिद्धिः
नागपुष्पप्रियंगूचतगरंपद्मकेसरम् ॥
जटामांसींसमंनिम्बंचूर्णयेन्मंत्रवित्तमः ॥ ८ ॥

ऐं पिंस्थांक्लींकामपिशाचिनी शीघ्रं अमुकीं ग्राहय२कामेन ममरूपेण नखैर्विदारय विदारय विद्रावय २ स्नेहेन बंधय २ श्रींफट् ॥ दो वीस सहस्र जपकरनेसे सिद्धि होतीहै नागपुष्प प्रियंगु तगर पद्मकेशर जटामांसी इनके समान नीमकाचूर्ण लेना चाहिये ॥ ८ ॥

स्वाङ्गंतुधूपयेत्तेनभजतेकामवत्प्रियः ॥
ॐमूलीमूलीमहामूलीसर्वसंक्षोभयए
भ्यउपद्रवेभ्यःस्वाहा ॥ धूपमंत्रः ॥
पानीयस्यांजलीन्सप्तकृत्वाविद्यामिमांजपेत् ॥
सालंकारांनरःकन्यांलभतेमासमात्रतः ॥ १० ॥

इससे अपने अंगको धूपित करै तौ स्त्री कामदेवके समान अपने पतिको मानती है मंत्र यह है ॐ मूली मूली महा मूली सर्वं संक्षोभय२एभ्यउपद्रवे भ्यःस्वाहा यह धूपका मंत्रहै अंजलीमें जल लेकर इस विद्याको जपै तौ एक मासमें अलंकार युक्त स्त्रीको प्राप्त होताहै ॥ १० ॥

ॐविश्वावसुर्नामगंधर्वःकन्या नामाधिपतिस्सुरूपांसा
लंकृतांकन्यान्देहिनमस्तस्मैविश्वावसवेस्वाहा ॥
कन्यागृहेशालकाष्ठंक्षिपेदेकादशगुलम् ॥
ऋक्षेचपूर्वफाल्गुन्यांयस्तांकन्यांप्रयच्छति ॥ ११॥
इति स्त्रीवशीकरणम् ।

अथ पतिवशीकरणम् ।

खंजरीटस्यमांसन्तुमधुनासहपेषयेत् ॥
अनेनयोनिलेपेनपतिर्दासोभवेद्ध्रुवम् ॥ १२ ॥

ओं विश्वावसुर्नाम गंधर्वः कन्यानामधिपति स्वरूपां सालंकृतां कन्यां देहिनमस्तस्मै विश्वावसवे स्वाहा यह मंत्रहै । कन्याके घरमें ग्यारह अंगुलका शालकाष्ठ पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्रमें डालदे कन्या उसको स्वीकार करैगी ॥११॥ अथ पतिवशीकरणम् खंजरीटका मांस शहतके साथ पीस जो स्त्री अपनी योनिमें लेपन करै तौ उसका पति दासकीतरह वशमें होजाताहै ॥ १२ ॥

पंचांगंदाडिमंपिष्ट्वाश्वेतसर्षपसंयुतम् ॥
योनिलेपात्पतिन्दासंकरोत्यपिचदुर्भगा ॥ १३ ॥

श्वेत सरसोंके सहित दाडिमके पंचांग पीसकर योनिमें लेपन करनेसे दुर्भागिनिभी पतिको अपना दास करतीहै ॥ १३ ॥

कर्पूरंदेवदारुंचसक्षौद्रंपूर्ववत्फलम् ॥ १४ ॥

और इसी प्रकार कर्पूर देवदारू सहत यह पूर्ववत् फलके देनेवालेहैं ॥ १४ ॥

ॐकामकाममालिनीपतिंमेवशमानयठःठः ॥
उक्तयोगानांसप्ताभिमंत्रितेसिद्धिः ॥
रोचनामत्स्यपित्तंचपिष्ट्वापितिलकेकृते ॥
वामहस्तकनिष्ठायांपतिर्दासोभवेद्ध्रुवम् ॥ १५ ॥

(ओं काम कामिनीपतिमे वशमानय ठः ठः) सात वार उपरोक्त औषधियोंको अभिमंत्रितकर प्रयोग करै। गोरोचन मच्छीका पित्ता पीसकर तिलक करनेसे अर्थात् बायें हाथकी कनिष्ठिकाउंगलीसे तिलक लगानेसे निश्चय पति अपना दास होजाताहै ॥ १५ ॥

स्वशोणितंरोचनयातिलकंपतिवश्यकृत् ॥
चित्रकस्यतुपुष्पाणिमधुयुक्तानिकारयेत् ॥ १६ ॥

तथा अपने रुधिरमें गोरोचन मिलाय तिलक करनेसे पति अपने वशमें होजाताहै चीतेके फूल सहतके साथ मिलाकर ॥१६॥

खानेपानेप्रदातव्यंपतिवश्यकरंभवेत् ॥
भूर्जपत्रंचमधुनायोनिलेपेपतिर्वशः ॥ १७ ॥

अन्न वा पानमें देनेसे अवश्य पति अपने वशमें होजाताहै अथवा सहतमें भोजपत्र मिलाकर योनिमें लेप करनेसे पति अपने वशमें होजाताहै ॥ १७ ॥

जलौकसांमुखेदेयंशंबूशंखादिचूर्णकम् ॥
तच्चूर्णंतुसमागृह्यताम्बूलेनसमायुतम् ॥ १८ ॥

और शुद्ध पारा और शंखका चूर्ण लेकर ताम्बूलमें मिलाकर ॥ १८ ॥

दातव्यंस्वामिनेभोक्तुंवश्योभवतिनान्यथा ॥
गोरोचनानलदकुंकुमभावितायास्तस्याःसदैवकुरुतेति
लकंवशित्वम् ॥ वात्स्यायनेनबहुधाप्रमदाजनानां
सौभाग्यकृत्यसमयेप्रकटीकृतोसौ ॥ २० ॥

स्वामीको भोजनके निमित्त दे तौ अवश्य पति वशमें होजाताहै गोरोचन नलद (खस) कुमकुम इनको मिलाकर तिलक करनेसे वशीकरण होताहै यह वात्स्यायन ऋषिने स्त्रियोंकी सौभाग्य वृद्धिके निमित्त प्रगट कियाहै ॥ २० ॥

सम्भोगशेषसमयेनिजकान्तमेढ्रंयाकामिनिस्पृशति
वामपदाम्बुजेन ॥ तस्याःपतिस्सपदिविन्दतिदास
भावंगोणीसुतेनकथितःकिलयोगराजः ॥ २१ ॥
इतिपतिवशीकरणम् ।

इतिश्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेवशीकरणंनामप्रथमोद्देशः॥ १॥

सम्भोगके समय जो स्त्री अपने पतिकी ध्वजाको वामचरणसे छूतीहै उसका पति सदैव दास होजाताहै यह योगराज गोणी पुत्रने कहाहै ॥ २१ ॥ इति पतिव शीकरणम् ।

इति श्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्ने पंडित ज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीकायांवशीकरणंनामप्रथमोपदेशः ॥ १ ॥

अथाकर्षणम् ।

चतुर्थवर्णमाकृष्यद्वितीयवर्गसंस्थितम् ॥ कृत्वात्रि
विधहाइांतंतदन्तहेद्वितीयकम्॥अंकाराशिरसंकृत्वा

प्रत्यक्षरप्रजापनम् ॥ सहस्रार्द्धस्यजापेनफलंभवति शाश्वतम्॥ २ ॥

अथ आकर्षणम् चौथे वर्णसे तीसरेको संयुक्तकर अर्थात् भकार ऊकार हकारमें आकार हकारमें ऐकार ऊपर अनुस्वार लगाकर ओंकार प्रथम लगाकर पांचसे जप करनेसे पूर्ण फल होताहै ॥२॥

मन्त्र यह है ।

झं हां हां हां हें हें

मंत्र यह है भूं ३ हांहें मनुष्य असुर देवता यक्ष उरग राक्षस स्थावर जंगम यह सब इससे आकर्षित होतेहैं ॥ ३ ॥

मानुषासुरदेवाश्चसयक्षोरगराक्षसाः । स्थावराजंगमाश्चैव आकृष्टास्तेवरांगने ॥ हान्तेरेफंसमादाययकारस्तुविशेषतः ॥ अक्षरत्रितयंतच्चाद्विधाकृत्वाप्रजापयेत् ॥ ४ ॥

हकारके अन्तमें रेफ लगाकर और यकारसहित अक्षरको संयुक्त करकै दोप्रकारकर जपकरै ॥ ४ ॥

भक्ष्यद्रव्यंस्वहस्तेनकृत्वामंत्रविभावनम् ॥
दीयतेयस्यभक्ष्यन्तत्सर्वेषांप्राणिनांशुभे ॥ ६ ॥

और भक्षद्रव्यको अपने हाथमें लेकर उसमें मंत्रकी भावना करकै उसके भक्षणं करनेसे सबप्राणी ॥ ५ ॥

तेसर्वेंयत्रनीयन्तेतत्रगच्छंतितत्क्षणात् ॥
मन्त्रः । हरय २ हींकारेमंत्रयेत्पाशंहूंकारेवांकुशन्तथा । त्रिफलंवामगंपाशंदक्षिणेज्वालितांकुशम् ॥७॥

जहां लेजाओ वहीं तत्काल गमनकरने लगतेहैं,मंत्र यहहै हरय२

ह्रीं से पाशको अभिमंत्रितकर हूं से अंकुशको अभिमंत्रितकर, त्रिफल वाम और पासको, दक्षिण ओर प्रज्वलित अंकुशको ॥७॥

संध्याय स्वकरेमंत्रीततोमंत्रमिदंजपेत् ॥८॥

मंत्रवाला अपने हाथमें धारणकर, फिर इसमंत्रको जपै ॥ ८ ॥

ॐ ह्रींरक्षचामुण्डेतुरु २ अमुकीमाकर्षय २ ह्रीं अस्यमंत्रस्यपूर्वमेवायुतजपेसिद्धिः । ॐ चामुण्डे ज्वल । २ । प्रज्वल । २ । स्वाहा । अमुमंत्रं स्त्रियंदृष्ट्वाजपेत्तत्क्षणात्सास्त्रीपृष्ठतः समागच्छतिपूर्वमयुतंजपेत्ततस्सिद्धिः । आश्लेषायांसमादायअर्ज्जुनस्यतुवन्दाकम् । अजामूत्रेणसंपिष्यस्त्रीणांशिरसि दापयेत् । पुरुषस्यपशूनांवाक्षिपेदाकर्षणंभवेत् । साध्यावामपदस्थांतांमृत्तिकामाहरेत्ततः । कृकलासस्यरक्तेनप्रतिमांकारयेत्ततः । साध्यानामाक्षरंतस्यास्तद्रक्तैर्विलिखेद्धृदि ॥ ११ ॥

" ॐह्रींचामुण्डेतुरु २ अमुकी माकर्षय २ ह्रींहीं " प्रथम यह मंत्र १०००० वार जपनेसे पश्चात् सिद्धि होतीहै ॥ इसअगले मंत्रको स्त्रीको देखकर जपै तो तत्काल स्त्री उसके पीछे पीछे चलीआतीहै वह मंत्र यहहै ॐचामुण्डेज्वल २ प्रज्वल २ स्वाहा २ यह मंत्रभी प्रथम१००००जपनेसे सिद्धि होतीहै आश्लेषा नक्षत्रमें अर्जुन वृक्षसे वन्देको लावै,बकरीके मूत्रसे पीसकर जिस स्त्रीके शिरपर डालै अथवा जिस पुरुष वा पशुके ऊपर डालै वह तत्काल आकर्षित होजाता है,जिसका आकर्षण करना हो उसके वामचरणके नीचेकी मृत्तिका लाकर गिरगटकेरुधिरेसे उस मट्टीकापुतला बनावै और हृदयमें उसके रुधिरसे आकर्षणवाले प्राणीका नाम लिखै ॥ ११ ॥

मूत्रस्थानेचनिखनेत्सदातत्रैवमूत्रयेत् । अकर्षयेत्तु तांनारींशतयोजनसंस्थिताम् । सूर्य्यावर्त्तस्यमूल न्तुपंचम्यांग्राहयेद्बुधः । ताम्बूलेनसमन्दद्यात्स्वयमायातितत्क्षणात् । रतिकर्म्मकरौग्राह्यौभ्रमरौयत्नतो बुधैः । भिन्नौकृत्वादहेत्तौतुचिताकाष्ठैस्तयोःपुनः । वस्त्रेणबंधयेद्भस्मपृथग्वैपोटलीद्वयम् । तयोरेकमजाशृंगेदृढंबद्धापरीक्षयेत् ॥ १४ ॥

और मूत्रस्थानपर गाडकर सदा उसीस्थानमें मूत्रकरै, सौ-योजनपर स्थित हुईभी स्त्री आकर्षित होजातीहै, बुद्धिमान् पंचमीकेदिन सूर्यावर्त (शाकविशेषक्षुप) की जड़ लावै जिसको पानमें मिलाकर दे वह तत्काल पीछे२स्वयम् आजातीहै,जिस समय भौंरा भौंरी रतिकरतेहों उससमय उनको ग्रहण करके अलग करके चिता काष्ठमें उनको जलादे और उनकी भस्म पृथक् पृथक् वस्त्रमें ग्रहणकर पोटली बनाले उनमेंसे एकको बकरीके मेढासींगीमें दृढ बांधकर परीक्षाकरै ॥ १४ ॥

यांयांयातिचसामेषीसापृथग्गृह्यतेबुधैः । तद्भस्माशिरसिन्यस्तंक्षणादाकर्षयेत्स्त्रियः । अपरंरक्षयेद्वस्त्रेनोचेन्नायातिकामिनी । ॐ कृष्णवर्णायस्वाहा । इमंमंत्रं पूर्वमेकायुतंजपेत्ततउक्तयोगमाभिमंत्र्यसिद्धिः ॥ १६ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेआकर्षणंनामाद्वितीयोद्देशः ।

जिस जिसको वह स्पर्श करै उसकी पृथक् रक्षाकरै उस भस्म-को शिरपर डालनेसे तत्काल स्त्री आकर्षित होतीहै और दूसरीको वस्त्रमें रक्षाकरै नहीं तो स्त्री कादाचित् नहीं आवेगी "ॐकृष्णवर्णाय स्वाहा" इसमंत्रको १०००० जपनेसे उक्तयोगकी सिद्धि होतीहै १६

इति श्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेआकर्षणं नामाद्वितीयोपदेशः ।

अथंजयः। हकारंस्वरसंयुक्तंॐकारेणसुपूजितम् ॥
उंकारेणचसंपूज्यअग्रेफट्टविनियोजयेत् ॥ १ ॥

हकार स्वर संयुक्त ओंकारसे पूजित अर्थात् ॐकार युक्तकर अन्तमें फट् लगावै ॥ १॥

ॐ हुंफुट्। जेयाग्रेशतजापेनजितोभवतिनान्यथा ।
जेयनामहृदिन्यस्यचक्षुषातन्निमील्यच ॥ २ ॥

ॐहुंफट् जेय पुरुषके आगे सौ वार जपनेसे जीता ज़ाताहै इसमें सन्देह नहीं जो कोई हो नामको हृदयमें रखकर नेत्रसे उसको निरीक्षण करकै ॥ २ ॥

स्पृष्ट्वाचमंत्रजा(ता)पेनतत्क्षणाज्जितवानसौ ॥
गोजिव्हाशिखिमूलीवासुखेशिरसिसंस्थिता ॥ ३ ॥

और स्पर्शकर मंत्र जपनेसे यह तत्काल जीतलिया जाताहै गाजुवा चीता पुष्करमूल शिरपर रखनेसे और पुष्यनक्षत्रमें उखा-डकर लानेसे ॥ ३ ॥

कुरुतेसर्ववादेषुजयंपुष्येसमुद्धृता ॥
मार्गशीर्षस्यपूर्णायांशिखीमूलंसमुद्धरेत् ॥ ४ ॥

सब वादमें जय करतेहैं, मार्गशीर्षकी पूर्णमासीको शिखाकी मूल उखाडकर लावै ॥ ४ ॥

बाहौशिरसिवाधार्य्यंविवादेविजयोभवेत् ॥
गिरिकर्णींशमींगुंजांश्वेतवर्णांसमाहरेत् ॥ ५ ॥

भुजामें और शिरपर धारण करनेसे सब विवादमें जय प्राप्त करताहै, इसमें सन्देह नहीं, गिरिकर्णी (कोयल) शमी (झंड) श्वेत चौंटली इनको लेकर वन्देसे युक्तकर तिलक लगानेसे युद्धमें जयी होताहै ॥ ५ ॥

चन्दनेनान्वितंसर्वंतिलकेनजयीभवेत् ॥
कनकोर्कवटौवन्हिर्विद्रुमःपंचमःतथा ॥ ६ ॥

धतूरा आक वड चीता मूंगा ॥ ६ ॥

तिलकंकुरुतेयस्तुपश्येत्तंपञ्चधारिपुः ॥
कृष्णसर्पकपालेतुवसामृत्तिकयान्विते ॥ ७ ॥

इनका जो तिलक लगाता है उसको शत्रु पांच प्रकारसे देखताहै, अपनेसे पचगुना जानताहै काले सांपकी खोपडीमें युद्धकी मृतिका युक्तकर ॥ ७ ॥

सितगुंजांवपेत्तत्रतस्यामूलंसमाहरेत् ॥
कृततिलकंतदादृष्ट्वापश्येत्स्वंसंवृतंरिपुः ॥८ ॥

श्वेत चौंटली बोवे, उसकी जड़ लेकर तिलक करनेसे शत्रुको सब प्रकार रक्षित दिखाई देताहै ॥ ८ ॥

श्वगणैर्भक्ष्यमाणंचपतितंचततोभुवि ॥
औषधींसिंहिकानामतयाघृष्टोमहारसः ॥ ९ ॥

स्वयं चलते हुए भक्षण करनेसे जो पृथ्वीपर गिरै और सिंहक नाम औषधीहै उसका महारस घिसे ॥ ९ ॥

सिंहीकपर्दिकामध्येक्षेप्यस्तन्मूलसंयुतः ॥
विधायवदनन्तस्यालिक्थंकेनसमञ्चितम् ॥ १० ॥

उस सिंहिका (करेरी) को कौडीके बीचमें रखले कटेरीकी जडके सहित उसका मुख मोमसे बन्द करै ॥ १० ॥

तस्यांक्रास्थितायांतुसिंहवज्जायतेनरः ॥
रणेसजकुलेद्यूतेविवादेचापराजितः ॥ ११ ॥

उसके मुखमें स्थितहोनेसे यह मनुष्य सिंहके समान होजाताहै युद्धमें राजकुलमें जुए अथवा वादमें कहींभी पराजित नहीं होताहै ११

मदोन्मत्तोगजस्तस्यदर्शनेनपराङ्मुखः ॥
व्याघ्रीरसेनसंघृष्टःपारदोमूलसंयुतः ॥
पूर्ववत्साधयेद्व्याघ्रींफलंचैवतथाविधम् ॥ १२ ॥

उसे देखकर मदोन्मत्त हाथीभी पराङ्मुख होजाताहै व्याघ्री (कटेरी) के फलमें मूल सहित पारा घिसनेसे पूर्ववत् यह कटेरी जयकी प्राप्ति करतीहै इसमें सन्देह नहीं ॥ १२ ॥

करेसुदर्शनामूलंबद्धाराजकुलेजयी ॥
जयामूलंराजकुलेमुखसंस्थंजयप्रदम् ॥ १३ ॥

सुदर्शनाकी जड़ हाथमें बांधनेसे राजकुलमें जय प्राप्त होताहै और जया (जयन्ती) की जड़ मुखमें रखनेसे राज कुलमें जय प्राप्त होतीहै ॥ १३ ॥

आर्द्रायाम्वटवन्दाकंहस्तेबद्धाऽपराजितः ॥
तद्दक्षेचूतवन्दाकंगृहीत्वाधारयेत्करे ॥ १४ ॥

अर्द्रा नक्षत्रमें वटके वन्देको हाथमें बांधनेसे जयी होताहै इसीप्रकार आर्द्रामें आमका वन्दा हाथमें धारण करनेसे ॥ १४ ॥

संग्रामेजयमाप्नोतिजयांस्मृत्वाजयीभवेत् ॥
कोकानांनयनंवामंगुडलोहेनवेष्टयेत् ॥ १५ ॥

जहां जाय जय प्राप्त होताहै तथा जयन्ती को स्मरण करनेसे (रणमें) जय प्राप्त होताहै । कोकांका बायांनेत्र गुड और लोहेमें लपेटकर ॥ १५ ॥

मुखेप्रक्षिप्यचनरःसर्ववादेजयीभवेत् ॥
कृत्तिकाचविशाखाचभौमवारेणसंयुता ॥ १६ ॥

वह मुखपर लेपकरनेसे मनुष्य सम्पूर्ण वादोंमें जय प्राप्त

करताहै जब कृत्तिका और विशाखा नक्षत्रसे युक्त भौम वार होतौ ॥ १६ ॥

तद्दिनेघटितंशस्त्रंसंग्रामेजयदायकम् ॥
आपामार्गरसेनैवयानिशस्त्राणिलिप्यते ॥ १७ ॥

तिस दिनमें वनाहुआ शस्त्र संग्राममे जय दायक होताहै चिर चिटेके रसमें जितने शस्त्र लिप्त किये जांय ॥ १७ ॥

जायन्तेनातिसंग्रामेवज्रसाराणिनिश्चितम् ॥
पूर्वोक्तमंत्रराजेनसर्वाण्येताभिमंत्रयेत् ॥ १८ ॥

वे संग्राममें वज्रसारकी समान होजातेहैं इसमें सन्देह नहीं पूर्वोक्त मंन्त्रराज द्वारा सम्पूर्ण अस्त्रोंको अभि मंत्रित करै ॥१८॥

सर्वेषामुक्तयोगानांसिद्धिर्भवतितेध्रुवम् ॥
हस्तार्कलांगलीमूलंमूलमंत्राभिमंत्रितम् ॥ १९ ॥
तच्चूर्णोद्वर्त्तनान्मल्लोमल्लान्मोटयतेवहून्॥२०॥
मन्त्रःॐ नमोमहाबलपराक्रमसमस्तविद्याविशारद अमुकस्यभुजवलंबंधयबंधयदृष्टिंस्तम्भयस्तंभयश्रमानिधूनय२पातय२महीतलेहूं ॥ इतिविजयप्रकरणम् । अथ सौभाग्यम्॥पुष्योद्धृतंसितार्कस्यमूलेवामेतरेभुजे ।
वध्वासौभाग्यमाप्नोतिस्वामिनोदुर्भगापिसा ॥ २१ ॥

तौ निश्चय सम्पूर्ण योगोंकी सिद्धि होतीहै, हस्त नक्षत्रमें लांगली (कलिहारी) की जडको मूल मन्त्रसे अभि मंत्रित करकै उसके चूर्णको पहलवान शरीरमें मलकर दूसरे पहलवानको पछाड़ सक्ताहै मंत्र यह है " ॐनमो महाबल पराक्रम समस्त विद्या विशारद अमुकस्य भुजबलं बंधय बंधय दृष्टिं स्तंभय स्तंभय

श्रमानि धूनय २ पातय २ महीतलेहूं " इति विजय प्रकरणम् । थअ सौभाग्य प्रकरणम् श्वेत आककी जड़ पुष्य नक्षत्रमें उखाडकर दहिनी भुजामें बांधनेसे दुर्भगास्त्रीभी स्वामीसे सौभाग्यको प्राप्त होतीहै ॥ २१ ॥

रक्तचित्रकमूलन्तुसोमग्रस्तेसमुद्धृतम् ॥
क्षौद्रैःपिष्ट्वावटीःकुर्य्यात्तिलकैस्सुभगांगना ॥२२ ॥

चन्द्र ग्रहणमें रक्तचीतेकी जड उखाडकर शहतसे पीसकर तिलक लगानेसे सौभाग्य होताहै ॥ २२ ॥ इति सौभाग्यम् ॥

अथेश्वरादीनांक्रोधोपशमनम् ।

ॐ शांतेप्रशान्तेसर्वक्रुद्धोपशमनिस्वाहा । अनेनमंत्रेणत्रिसप्तधाजप्तेनमुखमार्जनात्क्रोधोपशमनोभवति । प्रसादपरोभवतिइतीश्वरादीनांक्रोधोपशमनम् अथगजनिवारणं॥गृहीत्वाशुभनक्षत्रेचूर्णयेत्तांछुछुन्दरीम् । तल्लेपेनगजोयातिदूरेणखलुसंमुखम् ॥ २३ ॥

ईश्वर आदिकोंका क्रोध शान्तकरना ॐ शान्ते प्रशान्ते सर्व क्रुद्धोपशमनिस्वाहा इस मंत्रसे सातवार जपकर मुखधोवै तो क्रोध शान्त होताहै । और प्रसाद करनेवाला होताहै इति॥

शुभ नक्षत्रमें ग्रहणकर छुछूंदरको भली प्रकार चूर्ण करै इसके लेप करनेसे देखतेही हाथी भाग जाता है ॥ २३ ॥

बिल्वपुष्पस्यचूर्णन्तुछुछुन्दर्याश्चतत्समम् ॥
तल्लिप्तांगंनरंदृष्ट्वादूरेगच्छतिकुंजरः ॥ २४ ॥

बेलके फूलका चूर्ण छुछुंदरके साथ शरीरके ऊपर लेप करनेसे हाथी दूरसे भागजाता है ॥ २४ ॥

मूलंमर्कटवल्याश्चवाहौवद्धंचमूर्द्धनि ।
दुष्टदंतिहरंदूरंयुद्धभावायतारये ॥ २५ ॥

कौंचकी जड़ बाहु और शिरपर बांधनेसे दुष्ट हाथी दूरसे भाग जाताहै ॥ २५ ॥

श्वेतापराजितामूलंहस्तस्थंवारयेद्गजम् ॥
मूलंत्रिशूल्यावक्त्रस्थंगजवश्यकरंध्रुवम् ॥ २६ ॥

इतिगजनिवारणम् ।

श्वेत विष्णुक्रान्ताकी जड हाथमें रखनेसे हाथी निवारण होताहै त्रिशूली (वेल) की जड मुखमें रखनेसे हाथी वशमें होजाताहै ॥ २६ ॥

अथ व्याघ्रनिवारणम् ।

मुखस्थंबृहतीमूलंहस्तस्थंव्याघ्रभीतिजित् ॥
ह्रींह्रींश्रींद्रौंद्रौंहिएति ॥
इत्यष्टाक्षरमंत्रेणलोष्ठंपठित्वाक्षिपेत् ॥
तदामुखंनचालयतिगंतुमशक्तः ॥
मूलंकृष्णचतुर्दश्यांग्राहयेल्लांगलीभवम् ॥
हस्तस्थंव्याघ्रसिंहादिभयहृत्परिकीर्तितम् ॥
इतिव्याघ्रनिवारणम् ॥

इतिश्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेविजयादिव्याघ्रनिवारणं नामतृतीयोपदेशः ॥ ३ ॥

इति गज निवारणम् ॥

अथ व्याघ्र निवारणम् ॥ कटेहरीकी जडको हाथमें वा मुखमें रखनेसे व्याघ्रका भय दूर होजाताहै ह्रीं ह्रीं श्रीं द्रौं द्रौं हि एति इस मंत्रसे आठवार मट्टीको पढकर व्याघ्रके ऊपर फेंके

तब न वह मुख चलासकैगा न चलसकैगा कृष्ण पक्षकी चौदसको कलिहारीकी जड ग्रहण करै वह हाथमें रखनेसेही सिंहव्याघ्रादिका भय दूर होजाताहै ।

इति व्याघ्रनिवारणम् ।

इति श्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्ने पण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्रकृत भाषाटीकायां विजयादि व्याघ्र निवारणंनाम तृतीयोपदेशः ॥ ३ ॥

अथ शत्रूणाम्मुखस्तम्भनम् ।

मेघनादस्यमूलन्तुमुखस्थंतारवेष्टितम् ॥
परवादीभवेन्मूकोऽथवायातिदिगन्तरम् ॥ १ ॥

नागरमोथा की जडको चांदीमें लपेटकर मुखमें रखनेसे वादी मूक होजायगा या दिशाओंके अन्तको चलाजायगा ॥ १ ॥

श्वेतगुंजोत्थितंमूलंमुखस्थंपुष्टतुंडजित् ॥
ॐह्रींरक्षचामुण्डेतुरुतुरुअमुकंवशमानयस्वाहा १

श्वेत चौंटलीकी जड़ मुखमें रखनेसे शत्रुको जीतताहै मंत्र यह है ॐह्रीं रक्षचामुण्डे तुरु ॥ २ ॥

अथचामुण्डामंत्रउक्तयोगयोस्सिद्धिकरः ॥
पुष्यार्कैमधुवन्दाकंगृहीत्वाप्रक्षिपेद्बुधः ॥
सभामध्येचसर्वेषांमुखस्तम्भःप्रजायते ॥ ३ ॥

अमुकं वशमानय स्वाहा यह चामुण्डाका मंत्र पढनेसे उक्त योगकी सिद्धि होतीहै पुष्यनक्षत्रमें महुएका वन्दाग्रहणकर सभाके बीचमें फेंकदेनेसे सबका मुख स्तम्भित होजाताहै ॥ ३ ॥

मूलंबृहत्यामधुकंपिष्ठानस्यंसमाचरेत् ॥
निद्रास्तम्भनमेतद्धिमूलदेवेनभाषितम् ॥ ४ ॥

इतिनिद्रास्तंभनम् ॥

अथ शस्त्रस्तम्भनम् ।

अंकुलीचजटापाठाविष्णुक्रांताचपाटली ॥
श्वेतापराजितापुंसांसहदेवीकाकजंघिका ॥
पुष्यार्क्षेणसमुद्धृत्यवक्त्रेशिरसिसंस्थिता ॥ ५ ॥
एकैकंवारयत्येवशस्त्रसंघट्टनेनृणाम् ॥ ६ ॥

कटेरीकी जड़ और मुलेठी इनको पीसकर नासलेनेसे निद्रा दूर होजातीहै यह मूलदेवने कहाहै इति निद्रास्तम्भनम् ॥ अथ शस्त्रस्तम्भनम् ॥ अंकुली रुद्रजटा पाठा विष्णुक्रान्ता पाटल श्वेतजयन्ती सहदेई काकजंघा यह पुष्य नक्षत्रमें उखाडकर मुखमें तथा शिरमें रखनेसे एक एक मनुष्यको निवारण कर सकताहै ॥ ६ ॥

बध्वातुव्याघ्रभूपालचौरशत्रुभयंजयेत् ॥
जांतीमूलंमुखेक्षिप्तंशत्रुस्तम्भनमुत्तमम् ॥ ७ ॥

चमेलीकी जडको बांधनेसे व्याघ्र राजा चोर और शत्रुका भय दूर होकर जय होतीहै और चमेलीकी जडको मुखमें रखनेसे शत्रुका स्तंभन होताहै ॥ ७ ॥

सूर्य्यस्यग्रहणेचेन्दोर्मूलंचोत्तरगोहरेत् ॥
पुंखायाःपाटलायावामुखस्थंकांडशस्त्रहृत् ॥ ८ ॥

सूर्यके ग्रहणमें अथवा चन्द्र के ग्रहणमें उत्तरकी ओर जाकर शुद्धतासे शरफोका अथवा लाल लोधकी जडको ग्रहणकरै तिसको मुखमें रखनेसे सम्पूर्ण शस्त्रसमूहको स्तंभन करसकताहै ॥ ८ ॥

कपित्थस्यचवन्दाकंकृत्तिकायांसमुद्धरेत् ॥
वत्क्रसंस्थंतदेवस्यात्खड्गस्तम्भकरम्परम् ॥ ९ ॥

कृत्तिका नक्षत्रमें कैथके वंदा को ग्रहण करकै मुखमें रखनेसे खड्गका स्तंभन होताहै ॥ ९ ॥

करेसुदर्शनामूलंबद्धास्त्रस्तम्भनम्भवेत् ॥
केतकीमस्तकेनेत्रेतालमूलंमुखस्थितम् ॥ १० ॥

हाथमें सुदर्शनाकी जड बांधनेसे शस्त्रोंका स्तंभन होजाताहै केतकी मस्तक नेत्रमें ताल मूल मुखमें ॥ १० ॥

खर्ज्जूरंचरणेहस्तेखड्गस्तम्भःप्रजायते ॥
एतानित्रीणिमूलानिचूर्णितानिघृतैःपिबेत् ॥ ११ ॥
त्र्यहंरात्रौततस्सर्वैर्यावज्जीवंनबाध्यते ॥
सर्वेषामुक्तयोगानांकुम्भकर्णःप्रसीदति ॥ १२ ॥

खर्जूरको रणमें हाथमें रखनेसे खड्गस्तंभित होजाताहै और इन तीनोंका मूल चूर्णकर घीके साथ पिवे तो रात दिन जीवन पर्य्यन्त स्तम्भन होताहै इन युक्त योगोंसे कुम्भकरण प्रसन्न होजाय ॥ १२ ॥

आयान्तंसैन्यकंशस्त्रसमूहंविनिवारयेत् ॥
ॐअहो!हा!कुम्भकर्णमहाराक्षसकैकसीगर्भसंभूतपरसैन्यंस्तम्भयमहाभगवान्रुद्रोज्ञापयतिस्वाहा । सर्वयोगानामष्टोत्तरंजपेत्सिद्धिः । वक्रीचक्रीतथावज्री त्रिशूलीमुशलीतथा । देहस्थासमरेपुंसांसर्वायुधनिवारिणी ॥ १३ ॥

गृहीतंशुभनक्षत्रेअपामार्गस्यमूलकम् ॥
लेपमात्रेणवीराणांसर्वशस्त्रनिवारणम् ॥ १४ ॥

आतीहुई शस्त्रसेनाको निवारण करसकताहै मंत्र यहहै ॐ अहो हा कुम्भकरण महा राक्षसके कैकसी कर्यागर्भसंभूतपरसैन्यंस्तम्भय

महा भगवान् रुद्रोज्ञापयतिस्वाहा सबयोगोंमें यह मंत्र एकसेआठ वार जपनेसे सिद्धि होतीहै चक्री चन्द्री वज्री त्रिशूली मुशली यह नाम देहमें स्थित समरमें पुरुषके सम्पूर्णायुध निवारण करनेवालेहै १३

चिरचिटेकी जड़ अच्छे नक्षत्रमें ग्रहण करनेसे इसके लेपमात्रसे चौरोंके सब शस्त्र निवारण होतेहैं ॥ १४ ॥

खर्ज्जूरीमुखमध्यस्थाकटिम्बद्धाचकेतकी ॥
भुजदण्डस्थितश्चार्क्कस्सर्वशस्त्रनिवारणः ॥ १५ ॥

खर्जूरी मुखमें स्थित करनेसे कमरके मध्यमें केतकी भुजदंडमें स्थित आक यह सब शस्त्रोंका निवारण करनेवाला है ॥ १५ ॥

पुष्यार्क्षेश्वेतगुंजायामूलमुद्धृत्यधारयेत् ॥
हस्तेकाण्डभयंनास्तिसङ्ग्रामेचकदाचन ॥ १६ ॥

पुष्यनक्षत्रमें श्वेत चौंटलीकी जड़ हाथमें धारणकरै तौ कदाचित् शस्त्रका भय नहो ॥ १६ ॥

त्रिलोहवेष्टितंकृत्वारसंवज्राभसंयुतम् ॥
वक्रस्थश्चकरस्थश्चसर्वायुधनिवारणम् ॥ १७ ॥

सोना चांदी तांबेके सहित रस वज्राभ वेष्टित करके मुखमें स्थित वा हाथमें स्थित सम्पूर्ण आयुधोंको निवारण करनेवालाहै १७॥

ब्रह्मदण्डीचकौमारीईश्वरीवैष्णवीतथा ॥
वाराहीवज्रिणीचान्द्रीमहालक्ष्मीस्तथैवच ॥ १८ ॥

ब्रह्मदण्डी कौमारी ईश्वरी वैष्णवी वाराही वज्रिणी चान्द्री महालक्ष्मी ॥ १८ ॥

एताश्चौषधयोदिव्यास्तथैतामातरःस्मृताः ॥

दृष्ट्वाकृत्वाकरेबध्वासर्वशस्त्रनिवारणी ॥ १९ ॥
इतिशस्त्रस्तम्भनम् ॥

यह दिव्यऔषधी और मातायें देखकर हाथमें बांधनेसे सब शस्त्रोंको निवारणकरनेवालीहै ॥ १९ ॥ इति अस्त्रस्तम्भनम् ॥

अथाग्निस्तम्भनम् ।

ॐशंकरहरहरअग्निस्तंभयस्तंभयअनेनाग्नौफूत्कारं दत्वाअग्निस्तंभयति ॥ जप्त्वाजटान्नरोदेवींतारांम-हिषमर्दिनीम्॥खदिरांगारमध्येतुप्रविष्टोसौनदह्यते२०।

ॐ शंकर हरहर अग्निस्तम्भय स्तम्भय (अनेनअग्नौफूत्कारं दत्वा अग्निस्तम्भयति इसमंत्रसे फूंक मारनेसे अग्नि थमजातीहै महिष मर्दिनी मंत्रसे १०००० जप करकै फिर खैरके अंगारोंमें घुसजानेसे भी यह मनुष्य नहीं जलताहै ॥ २० ॥

ॐमत्कटिंतच्छयघनेशेकटीयमनीयश्रीअलिप्यप्राय म्बुदीपेवशनरकीर्य्यमंत्रीक्रींफट् ॥ ॐक्रींमहिषवा हिनीजम्भयजंभय मोहय २ भेदय २ अग्निस्तंभ य २ ठः २ ॥ एतन्मंत्रद्वयंपूर्वमयुतंजपे त्तेनसिद्धिः ॥

ॐमत्कटि तच्छय घनेशे कटीय मनीय श्री अलिप्य प्रायम्बु-दीपे वश नरकीर्य्य मंत्री क्रींफट् ॥ ॐक्रीं महिषवाहिनी जम्भय भेदय भेदय अग्निस्तम्भय २ ठः एकमंत्र दो करकैप्रथम १०००

कुमारीशूरणंपिष्ट्वालिप्तहस्तोनरोभवेत् ॥
दीप्तांगारैस्ततोलोहैर्मन्त्रयुक्तैर्नदह्यते ॥ २१ ॥

जप करनेसे सिद्ध होजातीहै ॥ जो मनुष्य घीकुवार और जमी कंदको हाथमें लपेटले वह दीप्त अंगार और जलते हुए लोहेको हाँथमें उठासक्ताहै २१ ॥

करेसुदर्शनामूलंबध्वाग्निस्तंभनंभवेत् ॥
अत्रमंत्रलेखनंपश्चात् ॥ २२ ॥

अथ जलस्तंभनम्।

पद्मकंनामयद्द्रव्यंसूक्ष्मचूर्णन्तुकारयेत् ॥
वापीकूपतडागेषुनिःक्षिपेद्बंधयेज्जलम् ॥ २२ ॥

मंत्रभी पढै हाथमें सुदर्शनाकी जड बांधनेसे अग्नि स्तंभित होतीहै पूर्वमें लिखा मंत्र जानना ॥ अथ जलस्तम्भनम् ॥ जो पद्मकनाम द्रव्यहै उसको चूर्णकरले उसको बावडी कूपतडागमें डालनेसे जल थमजाताहै ॥ २२ ॥

ॐनमोभगवतेरुद्रायजलंस्तंभयस्तंभय ॥
ठःठःठःक्षणार्द्धेनघटंभिद्याज्जलंतत्रैवातिष्ठाति ॥२३॥

मंत्र ॐनमो भगवते रुद्रायजलं स्तंभय स्तंभय ठः ठःठःयह मंत्र पढकर क्षणार्धमें घटभेदित होनेसेभी जल उसमें स्थित रहताहै।२३।

देवदालीयमूलंतुमण्डूकरसंयोजितम् ॥
लेपयेद्धस्तपादौचजलस्तम्भनमुत्तमम् ॥ २४ ॥

घघर वेलकी जड़ मेडकके रसमें युक्तकर हाथपैरमें लपेटनेसे जलका स्तंभन होजाताहै ॥ २४ ॥

श्लेष्मातकस्यापिष्ठेनकर्त्तव्यंपादुकाद्वयम् ॥
गोधाचर्ममयंबद्धंकृत्वारूढोभवेज्जले ॥ २५ ॥

दोनों खडाऊंपर लसोंढेको पीस लपेटकर गायके चर्मका वन्धनकर जलमें चलसकताहै ॥ २५ ॥

श्लेष्मातकफलंचूर्णमर्दयित्वालिपेद्धटम् ॥
घनमंगुलमात्रंतुशोषयेत्पूरयेज्जलैः ॥ २६ ॥

लसौढेके फलको चूर्णकर घडेपर लेपकरै जोकि एक अंगुल मात्र मोटाहो उससे जल पूर्ण और शोषित होजाताहै ॥ २६ ॥

शिरीषमूलमादायरविवारेतुपूर्वजम् ॥
उदकेनसह्घृष्टंललाटेतिलकेकृते ॥ २७ ॥

इतवारकेदिन शिरसकी जड़ लाकर जलके संग पीसकर माथे-पर तिलक करनेसे देखनेवाला स्तंभित होजाताहै ॥ २७ ॥

अथदिव्यस्तम्भनम् ।

तप्तदिव्येतथासर्वकृतदोषोविमुच्यते ॥
उत्तराभिमुखंग्राह्यंमेघनादस्यमूलकम् ॥ २८ ॥

अथ दिव्यस्तंभन तप्त दिव्यमें सब दोष छूट जातेहैं उत्तरकी ओर मुखकर ढाककी जड़ ग्रहण करै ॥ २८ ॥

भक्षयेद्धारयेद्वस्त्रैर्दिव्यस्तंभकरम्परम् ॥
श्वेतगुंजोत्थितंमूलमृक्षेउत्तरभाद्रके ॥ २९ ॥

उसे भक्षण कर वस्त्रद्वारा धारण करै तो दिव्य पदार्थ स्तंभित होजातेहैं उतराभाद्रपद नक्षत्रमें श्वेत चौंटलीकी जड़ ॥ २९ ॥

उत्तराभिमुखंग्राह्यंदिव्यस्तंभकरंमुखे ॥
भृंगीमूलंरोचनाचपिष्ट्वापाणौप्रलेपयेत् ॥ ३० ॥

उत्तरकी ओर मुखकर ग्रहण करै और मुखमें धारण करनेसे दिव्यस्तंभन होताहै भांगरेकी जड़ गोरोचनके साथ पीस हाथमें लपेटे ॥ ३० ॥

ललाटेतिलकंकृत्वातप्तदिव्यजयीभवेत् ॥
मरीचंमागधीचैलाचर्वितागिलितासती ॥ ३१ ॥

मस्तकमें तिलक करनेसे तप्त दिव्यपदार्थका जीतनेवाला होताहै कालीमिर्च पीपल इलायची यह चाबने या निगलनेसे ॥ ३१ ॥

रवितंडुलजैर्दिव्यैःकृतदोषोविमुच्यते ॥
आज्यंशर्करयापीत्वाचर्वित्वानागरम्वचाम् ॥ ३२ ॥

आक और तन्दुलसे सब प्रकारके दोषोंसे छूटजाताहै घी और बूरा मिलाकर सोंठ और वच मिलाकर मुखमें रखनेसे ॥ ३२ ॥

तप्तलोहंलिहेत्पश्चात्कृतदोषोविमुच्यते ॥
मंडूकरससंपिष्टैर्लज्जामूलैर्वनक्तकैः ॥ ३३ ॥

तत्ते लोहेको चाटनेसेभी उसका दोष नहीं लगता सोना पाठाके रसमें लज्जावन्तीकी जड़ पीसनेसे ॥ ३३ ॥

लिप्तपाणिर्नरःसत्येतप्तदिव्येविशुद्धचति ॥
ॐअग्नीदहंतीकोधरैमैंधरोजातीनाभावाछुछिनिददो दिव्यपतितस्तंभेईश्वरोमहेशः ॥ एतेस्तंभनश्रीमहादेवकीआज्ञाअमुंमंत्रमयुतंजपेद्दिव्योसिद्धिर्भवति ।
ॐलोहाप्रज्वलेकोइलाकेभानुहोचण्डकेदारकापडीलोपडौतुषार ॥ अयन्तुलोहादिव्यस्तंभनमंत्रः ॥

अथ गोमहिष्यादिस्तम्भनम् ।

उष्ट्रस्यास्थिचतुर्दिक्षुनिखनेद्भूतलेध्रुवम् ॥
गोमेषीमहिषीसत्तीन्स्तंभयेत्कारिणीमपि ॥

इतिगोमंहिष्यादिस्तम्भनम् ॥

उष्ट्रस्यास्थिचतुर्दिक्षुनिखनेद्भूतलेध्रुवम् ॥
गोमेषीमंहिषीसत्तीनूस्तंभयेकारिणीमपि ॥ ३४ ॥

इतिगोमहिष्यादिस्तंभनम् ॥

उसे हाथमें लगानेसे मनुष्य दिव्यपदार्थके तापसे शुद्ध होताहै अर्थात् शरीर जलता नहीं ॥ ३४ ॥

मंत्र ॐ अग्नीदहंतीकोधरैमैंधरोजातीनामात्राछुछिनिददो दिव्यपतितस्तम्भेईश्वरोमहेशः एतेन स्तम्भनम् श्रीमहादेवकी आज्ञासे॥ इसमंत्रको १०००० जपनेसे सिद्धि होतीहै ॥ ॐ लोहो प्रज्वकोइलाकिभानुहोचण्डकेदारकापडीलोहापडौतुषार ॥ यह लोहदिव्यके स्तम्भनका मंत्रहै ॥ अथ गोमहिषी आदिका स्तम्भन ॥ ऊंटकी हड्डी चारों ओर भूतलमें गाडनेसे गौ भैंस भेड़ घोडा हाथी तकका स्तम्भन होताहै ॥ ३४ ॥

कालीकरालीअमुकंस्तंभयस्वाहा ॥
अनेनमंत्रेणसाध्यनामहृदिधृत्वास्पृष्ट्वावादर्शनाज्जप
तस्तंभितोभवति ॥ क्षिप्रंइतिमनुष्यस्तम्भनम् ॥३५॥

इति गोमहिषी आदिका स्तम्भन॥ काली कराली अमुकं स्तंभय स्वाहा इसमंत्रसे साध्यका नाम हृदयमें धारण करछूकरवा देखकर जपै तौ स्तंमन होताहै।क्षिप्रं इति इससे मनुष्यका स्तंभन होताहै३९

अथ मनःस्तम्भनम् ।

चर्मकारस्यकुण्डानिरजकस्यतथैवच ॥
कुण्डान्मलंसमुद्धृत्यचांडाल्याऋतुवाससम्॥ ३६॥
वन्धयेत्योटलींप्राशोयस्याऽग्रेतांविनिः क्षिपेत् ।
तस्योत्थानेभवेत्स्तम्भः सिद्धियोग उदाहृतः ॥

अथ मनस्तंभनम् चमार और धोबीकी नांदका मैललेकर चण्डा-

लीका ऋतुका वस्त्र लेकर इसकी पोटली बांधकर जिसके आगे फेंकदे वह उठनेमें स्तम्भित होजायगा यह सिद्धयोगहै ॥ ३६ ॥

श्वेतगुंजाफलंवाप्यंनृकपालेपिमृत्स्नया ॥
निशिकृष्णचतुर्दश्यांत्रिदिनंतत्रजागरेत् ॥ ३७ ॥

श्वेत चौंटलीको मनुष्यकी खोपडीमें मट्टी डालकर बोवै कृष्णपक्षकी चौदसको यह कार्यकर तीन राततक जागै ॥ ३७ ॥

नित्यंसिंचेज्जलेनैवमंत्रपूजांचकारयेत् ॥
तस्याःशाखालताग्राह्याशुभऋक्षेस्वमन्त्रतः ३८
क्षिपेद्यस्यासनेतांतंस्तम्भयेत्तत्क्षणाद्ध्रुवम् ॥३९॥

और तीनदिन बराबर उसपर जल छिडके मंत्रपूर्वक पूजाकरै और शुभ नक्षत्रमें उसकी शाखाको ग्रहणकरै जिसके आसनपर फेंके वह उसीसमय स्तंभित होजाताहै ॥ ३९ ॥

ॐरुद्रेभ्योनमः । ॐवज्ररूपायवज्रकिरणायशिवेर क्षभवेसमामृतंकुरु २ स्वाहाअयम्पूजामंत्रः । इत्यासनस्तम्भनम्। भृंगराजोह्यपामार्गसिद्धार्थसहदेविकाम् । तुल्यन्तुल्यंवचाश्वेताद्रवमेषांसमाहरेत् । लोहपात्रेविनिःक्षिप्यद्रवमेषांसमाहरेत् ॥ ४० ॥

ॐरुद्रेभ्योनमः ॐवज्ररूपाय वज्रकिरणाय शिवेरक्ष भवेसमाभृतंकुरु २ स्वाहा । यह पूजाका मंत्रहै इति आसन स्तम्भन भांगरा चिरचिटा सरसौं सहदेई इनकी बराबर वच श्वेतकटेरी यह सब लोहपात्रमें डालकर इनका रस निकालै ॥ ४० ॥

तिलकैःसर्वभूतानांबुद्धिस्तम्भकरंभवेत् ॥ ४१ ॥

इसके तिलक करनेसे सबभूतोंकी बुद्धि स्तंभित होजातीहै।४१।

ॐ नमोभगवतेविश्वामित्रायनमः । सर्वमुखीभ्यांवि

श्वामित्रायविश्वामित्रोजापयतिशक्त्याआगच्छ२ स्वाहाउक्तयोगस्यायंमन्त्रः। अंगुलीलात्रिधाआशय आगलस्वाहा । अनेनमंत्रेणनदींप्रविश्यअष्टोत्तरश तांजलीस्तर्पयेत्।शत्रूणांबुद्धिस्तम्भोभवति। कर्पूरे णचितांगारेनामलिखित्वातदुपरिमृत्तिकांदद्यात्तत्र शत्रोर्मुखबंधोभवति ॥ इतिशत्रुबुद्धिस्तम्भनम् ॥

मंत्र ॐनमो भगवते विश्वामित्रायनमः॥ सर्वमुखीभ्यां विश्वामित्राय विश्वामित्रोजापयति शक्त्या आगच्छ २ स्वाहा (उक्तयोगस्यायंमन्त्रः–यह उपरोक्तयोगका मंत्रहै ॥ अंगुलीलात्रिधा आशय आगल स्वाहा । इसमंत्रसे नदीमें प्रवेशकर १०८ अंजलिसैं तर्पण करै तौ शत्रुओंकी बुद्धि स्तंभित होजातीहै कपूरसे चिताके अंगारेपर शत्रुका नाम लिखकर उसके ऊपर मट्टी डालनेसे शत्रुका मुख बंधजाताहै इति शत्रुबुद्धि स्तंभनम् ॥

अथचौराणांगतिस्तम्भनम् ।

ॐनमोब्रह्मद्वेषिनिशिवेरक्षरक्षठःठः। अनेनमंत्रेणसप्त पाषाणखण्डानिश्मशानाद्गृहीत्वात्रीणिकटयांबध्वाऽ पराणिमुष्टिभ्यांधारयेत्चौराणांगतिस्तम्भोभवति। इतिचौराणांगतिस्तम्भनम् ।

अथ चोरगति स्तंभनम् ॥ ॐनमो ब्रह्मद्वेषिनिशिवे रक्षरक्ष ठः ठः इसमंत्रसे सातकंकर श्मशानस्थानसे लेकर तीनकमरमें बांधै शेषमुट्ठीमें धारणकरै तौ चोरोंकी गति स्तंभित होतीहै इति चौराणाम् गति स्तंभनम् ॥

अथगर्भस्तंभनम् ।

ग्राह्यंकृष्णचतुर्दश्यांधत्तूरस्यतुमूलकम् । कटयांब ध्वारमेत्कान्तानगर्भंधारयेत्क्वचित् । मुक्तेनलभतेग र्भम्पुरानागार्ज्जुनोदितम् । तन्मूलचूर्णयोनिस्थंनग

र्भसंभवेत्क्वचित् ॥ ४२ ॥ सिद्धार्थमूलंशिरसिब
ध्वाकांतारमेत्तुया ॥ नगर्भंधारयेत्सास्त्रीमुक्तेनलभ
तेपुनः ॥ ४३ ॥ इतिगर्भस्तम्भनम् । अनेनग
र्भोनभवतीति ॥

अथ गर्भस्तंभनम् ॥ कृष्णपक्षकी चौदसके दिन धतूरेकी जड़ ग्रहणकर कमरमें बांधकर स्त्री पतिसे रमणकरै तौ कभी गर्भकी स्थिति नहीं होतीहै ॥ इसके खोलनेसे गर्भकी स्थिति होतीहै ऐसा पहले नागार्जुनने कहाहै अथवा धतूरेकी जड़का चूर्णकर योनिमें धारण करनेसे कभी गर्भकी स्थिति नहीं होतीहै ॥ ४२ ॥ सरसोंकी जड़ शिरपर बांधकर जो अपने कान्तसे रमण करतीहै वह स्त्री कभी गर्भधारण नहीं करती उसके खोल रखनेसे फिर गर्भकी स्थिति होतीहै ॥ ४३ ॥ इति गर्भस्तम्भनम् ॥

अथ शुक्रस्तम्भनम् ॥

इन्द्रवारुणिकामूलंपुष्येनग्नस्समुद्धरेत् ॥
कटुत्रयैर्गवांक्षीरैःसम्पिष्ट्वागोलकीकृतम् ॥ ४४ ॥

अथ वीर्यस्तम्भतम् ॥ नग्नहोकर पुष्यनक्षत्रमें इन्द्रायणकी जड़ उखाडकर उसै सोंठ मिर्च पीपलके साथ पीस गौकेदूधमें गोली बांधै ॥ ४४ ॥

छायाशुष्कंस्थितेचास्येवीर्य्यस्तंभकरंनृणाम् ॥
नीलीमूलंश्मशानस्थंकट्यांबध्वातुवीर्य्यधृक्॥४५॥

और उसको छायामें सुखाले एक गोली मुखमें रखनेसे वीर्यस्तम्भन होताहै। श्मशानमें उत्पन्न हुई नीलकी जड कमरमें बांधकर रमै तो वीर्य स्तंभित होताहै ॥ ४५ ॥

कृष्णोन्मत्तवचामूलैर्मधुपिष्टैःप्रलेपयेत् ॥

लिंगंतदारमेत्कान्तांस्वभावाद्विगुणांनरः ॥ ४६ ॥

काले धतूरे और वचकी जड शहतमें पीसकर मदनध्वज पर लेपकर स्त्रीके साथ रमण करनेसे दुगुना पराक्रम दिखाताहै ४६॥

भृंगीविषंपारदंचप्रत्येकंतुद्विगुंजकम् ॥
वराटाक्षंक्षिपेद्विन्दुःस्थिरःस्याच्छिरसाधृतम् ॥
रक्तापामार्गमूलन्तुसोमवारेनिमन्त्रयेत् ॥ ४७ ॥

अभ्रक विष पारा यह वस्तु शोधी हुई ले और प्रमाणमें दो॰दो चोंटली भरले इनके प्रयोगसे शुक्र स्तंभन होताहै ॥ लाल अपामार्ग (चिरचिटे) की जडको सोमवारके दिन निमं-त्रण देकर ॥ ४७ ॥

भौमेप्रातस्समुद्धृत्यकट्यांबध्वातुवीर्य्यधृक् ॥
दुन्दुभोनामयःसर्प्पःकृष्णवर्णसमाहरेत् ॥ ४८ ॥

मंगलके दिन प्रातःकाल उखाड़कर लावै कमरमें बांधनेसे वीर्य स्तंभित होताहै काले वर्णके दुन्दुभ नाम सर्पको लावै ॥ ४८ ॥

तस्यास्थिधारयेत्कट्यांनरोवीर्य्यंनमुञ्चति ॥
विमुंचतिविमुक्तेनसिद्धियोगउदाहृतः ॥ ४९ ॥

उसकी हड्डी कमरमें धारण करनेसे मनुष्यका वीर्य स्तंभित होताहै और उसको खोल रखनेसे वीर्य मुक्त होताहै ॥ ४९ ॥

नखास्थीनिसमादायमार्जारस्यासितस्यच ॥
कृकलासस्यपुच्छाग्रमुद्रिकाप्रेततन्तुभिः ॥ ५० ॥

श्वेत मार्जारके नख और अस्थि लेकर कृकलास (गिर गट) की पूंछके अग्रभागकी बनी अँगूठीको मृतक स्थानके सूतसे लपेट कर ॥ ५० ॥

वेष्टयांकनिष्टिकाधार्य्यांनरोवीर्य्यंनमुंचति ॥५१॥

कन उंगलीमें धारण करके मनुष्य वीर्यको नहीं त्यागनकर सकताहै ॥ ५१ ॥

पुष्योद्धतंश्वेतपिकाक्षवीजंकटीतटेलोहितसूत्रबद्धम् ॥
बीजच्युतिंधारयतिप्रसंगेख्यातःसदायंकिलयोगराजः ५२

पुष्य नक्षत्रमें उखाडा हुवा श्वेतपिका क्षकावीज लाल सूतमें कमरमें वांधनेसे बीजकी स्खलितता नहीं होती यह योगराजने कथन किया है ॥ ५२ ॥

श्वेतान्यपुष्टाख्यतरोःफलानिक्षीरेणपिष्ट्वावटपादपस्य ॥
करंजबीजोदरमध्यगानिस्तंभंतिवीर्यंवदनेधृतानि ॥
आदित्यवारोद्धृतसप्तपर्णवृक्षस्यबीजंविनिधायवक्त्रे ॥
जयेदकाण्डंसुरतावतारेपुमान्पुरन्ध्रीःस्मरतीव्रवेगाः ५३

श्वेतकोयल वृक्षके फल लेकर उन्हें बड़के दूधके साथ पीसे उसमें करंज बीज का मध्यांश डालकर मुखमें धरनेसे वीर्य स्तंभित होताहै रविवारके दिन सप्तपर्ण वृक्षके धारण करकेउरके बीज मुखमें रखनेसे सुरतके समय पुरुष स्त्रीका जय करताहै ।५३।

नागकेशरकर्षंतुगोघृतेपातयेद्बुधः ॥
भुक्त्वारमेच्चरमणींतदाबिन्दुःस्थिरोभवेत् ॥ ५४ ॥

नाग केशर एक कर्ष गौके घीमें डाले उसे भोजन कर जो स्त्रीसे रमण करै तौ वीर्य स्थिर होताहै ॥ ५४ ॥

श्वेतेषुपुंखाचरणंगृहीत्वापुष्यार्कयोगेपुरुषस्यकट्याम् ॥
कुमारिकाकर्तितसूत्रकेनबद्धंजयत्याशुमनोजबीजम् ५५

श्वते शरफोंककी जडको पुष्य नक्षत्र युक्त रविवारमें ग्रहण करके क्मारी कन्याके काते हुए सूतसे पुरुषकी कमरमें बांधनेसे कामको जय करताहै ॥ ५५ ॥

वीजमीश्वरलिंगस्यसूतंवृश्चिककण्टकम् ॥
क्षिपेत्पूगफलंचास्मिन्त्रिलोहैस्तंचवेष्टयत् ॥५६॥

धतूरेके बीज पारा मैनफल यह सुपारीके साथ मिलाकर तीन लोहसे उसको वेष्टित करै ॥ ५६ ॥

जिह्वोपरिस्थितेतस्मिन्नरोवीर्यंनमुंचति ॥
सहदेवीबीजमूलंसंमिश्र्यंपद्मकेसरैः ॥ ५७ ॥

इसको जिव्हापर रखनेसे मनुष्य वीर्यको नहीं छोडता है और सहदेवीके बीज और जड़ पद्मकेसर ॥ ५७ ॥

मध्वाज्यसहिताल्लेपान्नरोवीर्यंनमुंचति ॥
नीलोत्पलसितांभोजकेशरंमधुशर्करम् ॥ ५८ ॥
अमीभिर्नाभिलेपेनचिरंरमतिकामुकः ॥ ५९ ॥

इसमें घी और शहत मिलाकर लेप करै तौ मनुष्यका वीर्य स्खलित नहीं होताहै नील कमल श्वेत कमलकी केसरमें सहत शर्करा मिलाय इसका नाभिपर लेप करनेसे बहुत देरतक कामी पुरुष रमण करसकताहै ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

अदायकृष्णेतरकाकजंघामूलंसितांभोरुहकेसरंच ॥
क्षौद्रेणपिष्ट्वापरिलिप्यनाभिंस्तम्भंप्रपद्येत्पुरुषस्यबीजं६०

श्वेत काक जंघाकी जड़ श्वेत कमलकीकेसर यह लेकर शहतके साथ पीस नाभि पर लेप करनेसे पुरुषका वीर्य स्तंभित होताहै६०

छाग्येडकादुग्धपिष्टंलज्जामूलंप्रलेपयेत् ॥
हृदयेपादयोर्वीर्यंद्रवतेनकदाचन ॥ ६१ ॥

बकरी और भेडीके दूधमें लज्जावन्तीकी जड पीसकर हृदय और चरणोंमें लेप करनेसे पुरुषका वीर्य पतित नहीं होताहै ॥ ६१ ॥

मूलंवाश्वेतपुंखायाःसक्षौद्रंनाभिलेपनात् ॥
मधुनापद्मबीजस्यतद्वल्लेपेनवीर्य्यधृक् ॥ ६२ ॥

अथवा श्वेत शरफोकेकी जडमें शहत मिलाकर नाभिमें लेप करै तौ वीर्य स्तंभित होताहै अथवा शहतमें कमलका बीज मिलाकर लेप करनेसे वीर्य स्तंभित होताहै ॥ ६२ ॥

इन्द्रवारुणिकामूलमुन्मत्ताजस्यमूत्रतः ॥
भावयेत्सप्तवारंतंलिंगलेपेनवीर्यधृक् ॥ ६३ ॥

इन्द्रायणकी जडको उन्मत्त बकरेके मूत्रमें सात वार भावना देकर लिंगपर लेपकरनेसे वीर्य स्तम्भित होताहै ॥ ६३ ॥

उन्मत्ताजस्यमूत्रेणपेषयेद्वानरीशिफां ॥
लिप्त्वालिंगंनरोवीर्य्यंचिरकालंनमुञ्चति ॥ ६४ ॥

अथवा उन्मत्त बकरेके मूत्रसे जटामांसीको पीसकर ध्वजापर लेप करनेसे मनुष्यका वीर्य चिरकाल तक स्खलित नहीं होताहै ॥ ६४ ॥

कर्पूरंटंकणंसूतंतुल्यंमुनिरसंमधु ॥
मर्दयित्वालिपेल्लिंगंस्थित्वायामंतथैवच ॥ ६५ ॥

कपूर सुहागा पारा यह सब बराबरले अगस्त्यके रस और शहतमें इनको मिलाकर लिंगपर लेपकर एक पहरतक स्थित रहै ॥ ६५ ॥

ततःप्रक्षालयेल्लिंगंरमेद्रामांयथोचितम् ॥
वीर्य्यस्तम्भकरंपुंसांसम्यग्नागार्जुनोदितम् ॥ ६६ ॥

फिर अपने ध्वजको धोकर कान्ताके साथ रमण करैतो पुरुषका वीर्य स्तंभित होताहै यह नागार्जुनने कहाहै ॥ ६६ ॥

कौसुंभतैलेनविलिप्यपादौयदृच्छयादीव्यतिवृद्धवीर्य्यः ।

पुनर्नवाचूर्णविलेपनात्खलुजहातिबीजंनकदाचिदेतत् ॥

कुसुम्भका तेल पैरोंमें मलनेसे स्वेच्छासेही वीर्यकी वृद्धि होतीहै और पुनर्नवाके चूर्णके विलेपन करनेसे कदाचित्भी वीर्य स्खलित नहीं होताहै ॥ ६७ ॥

कर्पूररसंपाकमहेशबीजैःस्वार्द्धंतुबीजंपुरुषस्यनाभौ ॥ विलिप्यकांताजघनेचकान्तेनलभ्यतेशुक्रमधःकदापि ॥ ६८ ॥

कपूर संपाक और पारा यह नरवीर्यके साथ पुरुषकी नाभिमें लेप करनेसे वा स्त्रीकी जंघामें लेप करनेसे कभी वीर्य स्खलित नहीं होताहै ॥ ६८ ॥

भूलतासिक्थकंचैवकुसुंभस्यचतैलकम् ॥
वीर्यधृक्पादलेपेनचटकांडस्यलेपनात् ॥ ६९ ॥

भूलता और मोम और कुसुम्भका तेल पैरमें लपेटनेसे वीर्य स्तंभित होताहै अथवा चटकाके अंडका पैरमें लेप करनेसे वीर्य स्तंभित होताहै ॥ ६९ ॥

नवनीतेनयुक्ताभ्यांपद्भ्यांशय्यांचनस्पृशेत् ॥
श्लेष्मातस्थकुरुंटस्यबीजंकरंजकस्यच ॥
भेडीक्षीरेणतंपिष्ट्वाकर्षंभुक्त्वातुवीर्य्यधृक् ॥७० ॥

पैरोंमें मक्खन मलकर चरणोंसे सेजको स्पर्श न करै लहसोडा कुरुंट (पीलकटसरैया) और करंजके बीज भेडीके दूधमें पीसकर एककर्ष मात्र भक्षण करनेसे वीर्यस्तंभित होताहै ॥ ७० ॥

सुदर्शनाभवंमूलंतांबूलैस्सहपेषयेत् ॥
अल्पंत्याज्यंप्रयत्नेनशुक्रस्तंभनमुत्तमम् ॥ ७१ ॥

सुदर्शनाकी जड़ ताम्बूलके साथ पीसकर घृतकेसाथ यत्नसे सेवनकरनेसे वीर्यस्तंभित होताहै ॥ ७१ ॥

श्वेतार्कतूलकैर्वर्त्तीदीपःसूकरमेदसा ॥
यावज्ज्वलतिदीपोयंतावद्वीर्य्यंनमुंचति ॥ ७२ ॥

श्वेत आकके तूलकी (रूईकी) बत्तीकरकै सूकरकी चरबीसे दीपक बालनेसे जबतक दीपक बलता रहैगा तबतक वीर्यपात नहीं होगा ७२

मूलंवराहक्रांताया अजाक्षीरेणपेषयेत् ॥
लिंगलेपेनचानेनवीर्य्यस्तंभकरंभवेत् ॥ ७३ ॥

बाराही कन्दकी जड़ बकरीके दूधसे इसके ध्वजपर लेपकरनेसे वीर्यस्तंभित होताहै ॥ ७३ ॥

पुष्योद्धृतंश्वेतहयमारमूलंकटीतटे ॥
बद्धंबिन्दुस्थिरकरंमुक्तेतुच्यवतेपुनः ॥७४॥

पुष्यनक्षत्रमें श्वेत हयमार अर्थात् कनेरकी जड़ला कमरमें बांधनेसे वीर्यपात वहीं होताहै ॥ ७४ ॥

वक्रीरसंतूर्द्धृगेनदात्रेणग्राहयेद्रवौ ॥
संपिष्यवटिकांकृत्वासंशोष्यचविनिःक्षिपेत् ॥७५ ॥

पर्पटीको लेकर उसका रस रविवारके दिन ग्रहणकर इसको भलीप्रकार पीस इसकी गोली बनाय सुखाकर रखछोडे ॥ ७५ ॥

आत्ममूत्रेणताल्लिप्यांलिंगमूलंतुवीर्य्यधृक् ॥
पूतीकरंजवीजंचश्वेतमण्डूकमंडयोः ॥ ७६ ॥

अपने मूत्रसे उसको घिसकर मदनध्वजके मूलस्थानमें लेपकरनेसे वीर्यस्तंभित होताहै पूतीकरंजके बीज श्वेतमण्डूक और मंड ७६

मूलंपिष्ट्वातुलिंगाग्रेलेपयेच्चन्दनैस्सह ॥
तथाकरतलेदद्याद्वामेबिन्दुस्थिरोभवेत् ॥ ७७ ॥

सोनापाठा इनकी जड़ चन्दनकेसाथ मदन ध्वजपर लेप करनेसे तथा हथेलीमें लेप करनेसे वीर्यस्तंभित होताहै ॥ ७७ ॥

लज्जालुमूलंभटिकांपिष्ट्वाताम्रस्यभाजने ॥
अंजनंकृत्यतेनांज्यादर्द्धरात्रेस्थिरोभवेत् ॥ ७८ ॥

लज्जावन्तीकी जड़ और भटिकाको पीसकर ताम्रपात्रमें घिसे रात्रिमें अंजन करै तौ वीर्य स्थिर होताहै ॥ ७८ ॥

कृष्णधूर्त्तमहाकालंशनिवारेनिमंत्रयेत् ॥
रविवारेसमानीयचादत्तारमणीकृतैः ॥ ७९ ॥

काले धतूरे तथा महाकाललताको शनिवारके दिन निमंत्रण दे और रविवारके दिन लाकर और कन्यासे सूतकतवाकर ७९

सूत्रैर्गुणत्रयैर्बद्धंकरेवामेप्रयत्नतः ॥
उपविश्यासनेखण्डत्रयैर्यामत्रयंततः ॥ ८० ॥

तिगुने तिस सूत्रके तीन खंडकर वाम हाथमें यत्नसे बांधकर आसनपर तीन पहरतक बैठे ॥ ८० ॥

बिन्दुस्थिरत्वमाप्नोतिभुक्तेस्खलतितत्क्षणात् ॥
हेमाह्वलोचनंतुल्यंकृष्णधत्तूरबीजकम् ॥ ८१ ॥
वटक्षीरेणसंमर्द्यकुबेराक्षस्यबीजकैः ॥
क्षिप्त्वातद्धारयेद्वक्रेवीर्य्यस्तंभकरंभवेत् ॥ ८२ ॥

इतिशुक्रस्तंभनम् ॥

इतिश्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेस्तंभनंनामचतुर्थोपदेशः ४

तौ बराबर वीर्य स्थिर होताहै इसके खोलनेसे मुक्त होताहै (चोक) नाग केशर वंशलोचन और काले धतूरेके बीज ॥८१॥ बड़के दूधके सहित करञ्जके बीज यह सब एकत्र कर मुखमें धारण करनेसे वीर्य स्तंभित होताहै ॥ ८२ ॥ इति शुक्रस्तम्भनम् ।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडितज्वालाप्रसादमिश्र कृतभाषाटीकायांचतुर्थोपदेशः ॥ ४ ॥

अथ मोहनम् ।

कन्यावरेयुवतिसंगमनेनराणामालोकनेनरपतेःक्रय
विक्रयादौ । प्रज्ञाविधौसकलकर्मणिकौतुकेवा ॥ धूपः
सदैवकृतिभिर्विनियोजनीयः ॥ १ ॥

कन्याके विषयमें स्त्री प्रसंगमे राजाके देखनेमें प्रज्ञाविधि सम्पूर्णकर्म और कौतुकइन्होमें विद्वानोंको धूपका प्रयोग सदाकरना चाहिये।१।

शृंगीवचानलदसर्जरसंसमानंकृत्वात्रुटिंमलयजंचषडेव
मिश्रम् ॥ याधूपयेन्निजगृहंवसनंशरीरंतस्यास्तुदा
सइवमोहमुपैतिलोकः ॥ २ ॥

काकडासींगी वच उशीर राल (एला)छोटी इलायची यहसमानभाग लेकर और मलयगिरि चन्दनको मिलाकर जो स्त्री अपनेघर वस्त्र और शरीरमें धूपदे तौ लोक मोहको प्राप्तहो उसके दासकीसमान होजाता हैं ॥ २ ॥

भृंगराजःकेशराजोलज्जाचसहदेविका ॥
एभिस्तुतिलकंकृत्वात्रैलोक्यंमोहयेन्नरः ॥ ३ ॥

भांगरा दूसरा भागरा लज्जावंती सहदेई इनका तिलक लगाकर मनुष्य त्रिलोकीको मोहित कर सकता है ॥ ३ ॥

त्रिदलंकुसुमंयस्यतंधत्तूरस्यकृताजलिः ॥
भृंगराजेनसाज्येनातिलकंमोहयेन्नरः ॥ ४ ॥

त्रिदल हंसपदीके धूतेरके फूल लज्जावन्ती और भृंगराज इन सबोंको घृतमिलाकर तिलक करनेसे मनुष्य त्रिलोकीको मोह सकता है ॥ ४ ॥

तालकंकुनटींचैवभृंगपक्षंसमंसमम् ॥

कृष्णोन्मत्तस्यकुसुमंवाटिकांकारयेद्बुधः ॥ ५ ॥

हरताल मनशिल और भौंरेके पंख यह समान भाग लेकर तथा धूतेरेके फूल लेकर गोली बनावै ॥ ५ ॥

तेनैवतिलकंकृत्वात्रैलोक्यंमोहयेन्नरः ॥
आदौसप्तस्वराग्राह्याअन्तेहुंकारसंयुताः ॥ ६ ॥
ॐकारशिरसिकृत्वाहूंअन्तेफाडितिन्यसेत् ॥ ६ ॥
मंत्रः ॥ ॐ अंआंइंईंउंऊंऋंहुंफट् ॥
अनेनमंत्रेणकृत्वाताम्बूलभावनांसाध्यस्यमुखेनिःक्षिते
मोहमायातितत्क्षणात् ॥ ७ ॥

उसी से तिलक करके मनुष्य त्रिलोकीको मोहित कर सकता है प्रथम सात स्वर उच्चारण कर अन्तमें हूंकार मिलावै ॐकार प्रथम लगाकर अन्तपदमें फट् लगावै अर्थात् यह मंत्र है (ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं हुं फट्) इस मंत्रसे ताम्बूलको भावना देकर साध्यके मुखमें खवावे तो वह मोहको प्राप्त होताहै देर नहीं लगती ॥ ७ ॥

ॐ भोंक्षांभोंमोहयमोहय ॥
ॐनमोभगवतीपादपंकजपरागेभ्यः ॥ ८ ॥
ॐअस्यमंत्रस्यवारत्रयंजपान्मोहमाप्नुवंतिजनाः ॥
शुभामूलंतथावीजंरक्तचन्दनसंभवम् ॥ ९ ॥
त्रुटिवीजंसमंपिष्ट्वाताम्बूलादौप्रयोजयेत् भोक्तुंदे-
यंस्वहस्तेनमोहमाप्नोतिचेश्वरः ॥

ओंर भोंक्षां भों मोहय मोहय ओं नमो भगवती पाद पंकज परागेभ्यः इस मंत्रको तीन वार जपने से मनुष्य मोहको प्राप्त

होताहै ॥ प्रियंगु की जड़तथा बीज लालचन्दन इलायची के बीज इनको समान पीसकरताम्बूलमें दे और अपने हाथसे खानेको दे तौ ईश्वर भी मोहको प्राप्त हो जाताहै ॥ ९ ॥

॥ इति ईश्वरमोहनम् ॥

अथ दुष्टशत्रुमोहनम् ॥

वृश्चिकोद्भवचूर्णेनधूपोमोहयतेनृणाम् ॥ गरलंधूर्त्त पंचांगम्महिषीशोणितंकणानिशायांकुरुतेमोहंधूपो गुग्गुलुसंयुतः ॥ १० ॥

अथ दुष्ट शत्रु मोहनम् ॥ मैनफल के चूर्णकी धूप मनुष्यको मोहित कर देती है विष धूतरे का पञ्चाग भैंसका रुधिर श्वेत जीरा गुग्गुल संयुक्त इनकी धूप देनेसे मनुष्यको मोहित करती है ॥ १० ॥

हलिनीविषधत्तूरंशिखिविष्टाभिरन्वितम् ॥
तयाधूपःसमोभागैर्मोहयत्येवनिश्चितम् ॥ ११ ॥

कलिहारी विष धतूरा मोरकी बीट यह समान भागले धूप देनेसे उसी क्षण मनुष्यको मोहित करती है ॥ ११ ॥

छुछुंदरीसर्पमुंडंवृश्चिकस्यतुकंटकम् ॥
हरितालंसमंधूपोमोहयेत्सकलान्नरान् ॥ १२ ॥

छुछुंदर सांपका मुंड मैनफल का कांटा और हरिताल यह सब समान भाग ले इनकी धूप देनेसे मनुष्योंको मोहित करती है ॥ १२ ॥

अधः पुष्पीशिखाचैवश्वेतंचगिरिकर्णिका ॥
गोरोचनसमायोगेतिलकंशत्रुमोहनम् ॥ १३ ॥

गोभी कलिहारी श्वेत कितहीवृक्ष और गोरोचन इनका तिलक करनेसे शत्रुको मोह सकताहै ॥ १३ ॥

तालकोन्मत्तबीजानिपानेशत्रोश्चदापयेत् ॥
तत्क्षणान्मोहमाप्नोतिचोन्मत्तोजायतेनरः॥ १४ ॥

हरताल धतूरे केबीजपानमें शत्रुको देनेसे मनुष्य उसी क्षणमें मोहको प्राप्त हो जाता है और उन्मत्त हो जाता है ॥ १४ ॥

समाक्षिकैःसिताम्भोजैस्सुस्थःपानाद्भवेन्नरः ॥ १५ ॥

इति शत्रुमोहनम् ।

इति मोहनाधिकारः ।

फिर शहदमिला श्वेत कमलका पान करनेसे मनुष्य स्वस्थ होताहै ॥ १५ ॥

इति शत्रुमोहनम् इति मोहनाधिकारः ॥

अथरंजनम् ।

तत्रदेहरंजनम् ॥ अत्रांगरागः पुरुषेणकार्यः ॥
स्त्रियाश्चसंभोगसुखायगात्रे ॥ तस्माद्देहगंध
विधानमादौविलासिनः सर्वमुदीरयामि ॥ १६ ॥

उसमें प्रथम देह रंजन कहते है प्रायः स्त्रियोंके सुखके निमित्त पुरुषोंको अपना देहरंजन करना चाहिये इस कारण विलासीजनोंके निमित्तमें गंधादिकार्य कथन करता हूं ॥ १६ ॥

हरीतकीलोध्रमारिष्टपत्रंसप्तच्छदंदाडिमवल्कलंच ॥
एषोङ्गनायाःकथितःकवीन्द्रैःशरीरदौर्गन्ध्यहरःप्रलेपः

हरड, लोध और नीमके पत्ते सतौना दाडिमकाछिलका इन सबका लेप करनेसे शरीरकी दुर्गन्ध दूर होती है यह प्रयोग विद्वानोंका कहा है ॥ १७ ॥

हरीतकीश्रीफलमूलशुक्तिंचिंचाफलंपूतिकरंजबीजम् ॥

कक्षादिदौर्गंध्यमपिप्रभूतंविनाशयत्याशुनिदाघ
काले ॥ १८॥

हरड़ नारियलकी जड़, चिंचाफल पूतिकरंजुएके वीज इनका लेप वगलमें करनेसे गरमीके दिनोंमें महादुर्गन्धको दूर करता है ॥ १८ ॥

कदम्बपत्रंलोध्रंचअर्जुनस्यतुपुष्पकम् ॥
पिष्टागात्रोद्वर्त्तनाच्चदुर्गंधचयनाशनम् ॥ १९ ॥

कदम्बके पत्ते लोध अर्जुनके फूल पीसकर शरीरमें मलनेसे शरीरकी दुर्गन्ध नष्ट होती हैं ॥ १९ ॥

सचन्दनोशीरकरंजपत्रैःकोलाक्षमज्जागुरुनागयुक्तैः ॥
लिप्त्वाशरीरंप्रमदातुतेनचिरप्रसूतंविनिहन्तिगन्धम्२०

चन्दन उशीर करंजके पत्ते कोल बहेडेकी मींगी अगुरु नागकेशर यह सब पीसकर शरीरपर मलनेसे वहुत कालकी दुर्गन्धको दूर करतेहैं ॥ २० ॥

सदाडिमत्वङ्मधुलोध्रपद्मैः पिष्टैस्समानैःरपिनिम्ब
पत्रैः ॥ विलिप्यगात्रंतरुणीनिदाघेदुर्गंधघर्मांवुचयं
निहन्ति ॥ २१ ॥

दाडिमीका वक्कल और मधुलोध्र पद्म इनको समान भाग लेकर कपास और नीमके पत्तोंको शरीरमें मलनेसे स्त्रीके पसीनेकी दुर्गन्ध दूर होती है ॥ २१ ॥

सकेशरोशीरशिरीषलोध्रैश्चूर्णीकृतैरंगविलेपनेन ॥
ग्रीष्मेनराणांनकदापिदेहेघर्म्मच्युतिःस्यादितिभो-
जराजः ॥ २२ ॥

केशर उशीर शिरस लोध इनका चूर्ण कर शरीर पर लेप

करनेसे गरमीमें शरीरसे बहुत पसीना नहीं निकलताहै ऐसा भोज राजने कहाहै ॥ २२ ॥

तिलसर्षपरजनीद्वयदूर्वागोरोचनाकुष्टैः ॥ अजमूत्र तक्रपिष्टैरुद्वर्तितमंगमनुपमंभवति ॥ २३ ॥

तिल सरसौं दोनो हलदी दूर्वा गोरोचन कूठ बकरेके मूत्रके और मट्ठेकेसाथ शरीरपर लेप करनेसे मनोहरता होती है २३॥

हरीतकीतोयदतुल्यभागैवनेरुहस्यापिचतुर्थभागः॥ तदर्धभागःकथितोनखस्यस्यादोषगंधोमदनप्रकाशः ॥

हरड़ और मोथा यह तुल्य भाग लेकर बनरुह का चौथाई भाग ले और इनसे आधा भाग तालमखाना यह मिलाकर लेप करनेसे कामस्थानका दुर्गन्ध दूर होती है ॥ २४ ॥

एलाशटीपत्रकचन्दनानितोयाभयाशिग्रुघनाम-यानि ॥ ससौरभोयंसुरराजयोग्यःख्यातःसगंधोनर मोहनाख्यः ॥ २५ ॥

इलायची कचूर पत्रज चन्दन मोथा हरड़ सैंजना कपूर यह मोहन नामक योग सब प्रकार दुर्गंधिका दूर करनेवाला है ॥ २५ ॥

धत्तूरकश्मीरघनांबुलोहनिशाकरोशीरसमानिपिष्ट्वा ॥ लेपःप्रियोयंसुरमानवानामुदीरितःपूर्वकवीन्द्रधीरैः२६

धतूरा केशर मोथा नेत्रवाला लोह कपूर उशीर यह सब समान पीसकर इनका लेप करनेसे सबोंकी प्रियता होती है यह मनुष्य और देवताओंको प्रिय है पूर्व विद्वानोने कहा है ॥ २६ ॥

उशीरकृष्णागुरुचन्दनानिपत्रांबुतुल्यानिसमानिपिष्ट्वा॥ एतानिगात्रेषुविलासिनीनांश्रीखण्डतुल्यंप्रकरोतिगंधम्

इतिदेहरंजनम् ॥

उशीर काला अगर चन्दन तेजपात नेत्रवाला यह सब समान घिसकर अंगोंमें लेपकरनेसे विलासवतीके स्त्रियोंके अंगोंमें चंदन कैसी सुगन्ध होजातीहै ॥ २७ ॥

इति देहरंजनम् ।

अथमुखरंजनम् ॥

रसालजम्बूफलगर्भसारः सकर्कटोमाक्षिकसंयुतश्च स्थितोमुखान्तेपुरुषस्यरात्रौ करोतिपुंसांमुखवास मिष्टम् ॥ २८ ॥

आम और जामन दोनोंकी गुठली लेकर काकडासींगी सहत मिलाकर यह रात्रिके समय पुरुष मुखमें रक्खै तौ बडी दुर्गन्ध नष्ट होकर सुगान्धि होती है ॥ २८ ॥

गुडत्वगेलानखजातिशिल्हैःस्वर्णान्वितैःक्षुद्रवटीविधेया ॥ ताम्बूलगर्भादिवसेचरात्रौकरोतिपुंसांमुख वासमिष्टम् ॥ २९ ॥

गुड दालचीनी इलायची नख (गन्धद्रव्य) जायफल नागकेशर इन्होंमें सुवर्ण वरकमिलाकर इनकी क्षुद्रवटी करके रात्रिमें ताम्बूलके साथ खानेसे पुरुषोंके मुखमें सुगन्ध होती है ॥ २९ ॥

चूर्णमुराकेशरकुष्ठकानांप्रातर्दिनान्तेपरिलेढि यास्त्री ॥ अप्यर्द्धमासेनमुखस्यगंधःकर्पूरतुल्यो भवतिप्रकामम् ॥ ३० ॥

जो स्त्री प्रातःकालमें जटामांसी केशर कूठ तीनोंको पीस इनका चूर्ण चाटती है तौपन्द्रह दिनमें उसके मुखकी गन्धकर्पूरकी तुल्य हो जाती है ॥ ३० ॥

यःकुष्ठचूर्णमधुनाघृतेनपिकाक्षवीजान्वितमत्तिनित्यम्॥ मासैकमात्रेणमुखंतदीयंगंधायतेकेतकगंधतुल्यम् ॥३१॥

जो कोई कूठका चूर्ण मधु और घृतके साथ तालमखाने नित्य सेवन करता है उसका मुख एकमहीनेमें केतकीके गंधकी तुल्य हो जाता है ॥ ३१ ॥

गोजलैःक्वथितापथ्यामिशिकुष्ठकणान्विता ॥
वदनस्यदुरामोदंनिहन्तिपरिशीलिता ॥ ३२ ॥

गोमूत्रमें हरड़ पकाकर उसमे सोंप कूठ पीपल डालकर इसका सेवन करनेसे मुखकी दुर्गन्ध दूर होती है ॥ ३२ ॥

तिलंजातिफलंपूगंभक्षयित्वापिबेदनु ॥
शीततोयंपलार्द्धन्तुआस्यदुर्गन्धनाशनम् ॥ ३३ ॥

तिल जायफल सुपारी भक्षण करनेसे इसके पीछे ठंडा जल आधा पल पीनेसे मुखकी दुर्गन्ध नष्ट होतीहै ॥ ३३ ॥

घृतकांजिकगंडूषंपरितोभक्षयेच्छटीम् ॥
तथाकृतेभवेदास्येदुरामोदविनाशनम् ॥ ३४ ॥

घी कांजी यह दोनोंका गंडूषकरै–इनके आद्यन्तमध्यमें कचूरका भक्षण करै उसे मुखका दुर्गन्ध नष्ट होता है ॥ ३४॥

गोमूत्रैःक्वाथयेत्कुष्ठंबालकंसहरीतकिम्॥
सर्वंपिष्ट्वावटींकुर्यान्मुखदुर्गंधनाशनम् ॥ ३५ ॥

गोमूत्रमें कूठ सुगन्धवाला और हरड डालकर क्वाथ बनावै पीछे सब पीसकर गोलीवना मुखमें रखनेसे मुखकी दुर्गन्ध का नाश होता है ॥ ३५ ॥

कटुतिक्तकषायेणदंतकाष्ठेननित्यशः ॥
दुर्गंधंहन्तिनोचित्रंक्षौद्रैर्वाकुष्ठचूर्णकम् ॥ ३६ ॥

कड़वे और तीखे काढे करके अथवा नित्य दतौन करनेसे अथवा शहतके साथ कूठका चूर्ण सेवन करनेसे मुखकी दुर्गन्ध नष्ट होती है ॥ ३६ ॥

सिंधूत्थसिद्धार्थकसारिवानांत्वचायुतानां
परिलेपनेन ॥ स्त्रीपुंसयोर्यौवनयोर्हठेन
विनाशमायातिमुखस्थगन्धः ॥ ३७ ॥

सैंधा सरसों सारिवन दालचीनी चूर्णकर इनका लेप करनेसे स्त्री पुरुषोंके युवावस्थामें उठा हुआ मुखका दुर्गंध दूर होजाता है ३७॥

पिष्ट्वामसूरंघनसारवरेणमुहुर्मुहुस्तेनविलिप्यवक्रम् ॥
नश्यंतिगंडाःपिटकाःप्ररूढामासार्द्धमात्रेणविलासि
नीनाम् ॥ ३८ ॥

मसूरको घनसार के साथ पीसकर बारंबार उसको स्त्रियोंके मुखपर लेप करनेसे गंड पिटक मुहासे यह पन्द्रह दिनमेंही नष्ट होजाते हैं ३८॥

यःकंटकंशाल्मलिपादपस्य क्षीरेणपिष्ट्वाष्टदिनं
विलिप्यगण्डप्रदेहाःपिटकास्त्र्यहेणप्रयांतिनाशंपुरुष
स्यतत्स्थम् ॥ ३९ ॥

जो सेमलके वृक्षके कांटे आठ दिन दूधमें पीसकर पुरुषके मुखपर लेप करै तौ उसके मुखकी झांई मुहासे आदि तीनदिनमें नष्ट हो जाते हैं ॥ ३९ ॥

धान्यंवचासावरतुल्यभागंपिष्ट्वालिपेत्तेनमुखंनितां
तम् ॥ मुखोद्भवायौवनजानराणांनश्यन्तिनूनंपिट
काःक्रमेण ॥ ४० ॥

धनियां वच सरवन यह बराबर भाग लेकर इन्है पीस निरन्तर मुखपर लेपकरनेसे निश्चयही मनुष्योंके जवानीके मुहांसे पिकट दूर हो जाते हैं ॥४०॥

सिद्धार्थबीजद्वितयंतिलंचक्षारेणपिष्ट्वापरिलिप्यव

क्रम् ॥ सप्ताहमात्रेणमुखस्थनीलीं निहंति कृष्णामितिरंतिदेवः ॥ ४१ ॥

सरसों और तिल इनको जवाखारकेसाथ पीसकर मुखपर लेपकरनेसे सात दिनमें मुखकी नीलिका फुनसी मुहासे आदि नष्ट होते है यह रन्तिदेवने कहाहै ॥ ४१ ॥

निशाद्वयंगैरिकशोणयष्टिरंभाम्बुमाहन्द्रेयवोत्तमानि ॥ निघ्नंतिनीलिंत्रयवारमात्राच्चन्द्रेणतुल्यंवदनम्भवेच्च ॥ ४२ ॥

दोनों हलदी गेरू सोनापाठा कदली नेत्रवाला इन्द्र जौ यह तीनवार मुखपर लगानेसे मुखकी फुंसी दूर होतीहैं और मुखचन्द्रमा के तुल्य होजाताहै ॥ ४२ ॥

मरीचंरोचनायुक्तंसंपेष्यमुखमालिपेत् ॥
तरुण्याःपिटकाःसर्वानश्यंतिमुखसंभवाः॥४३॥

काली मिरच और गोरोचन पीसकर मुखपर लपेटनेसे मुखके जवानीके मुहांसे आदि दूर हो जाते हैं ॥ ४३ ॥

व्यंगेषुचार्जुनत्वग्वामंजिष्ठावासमाक्षिका ॥
एतालिप्तात्र्यहंयावद्भवेत्पद्मोपमंमुखम् ॥ ४४ ॥

अर्जुनकी छाल औरमजीठका चूर्ण इनको सहतमें मिलाय तीन दिन मुखपर लिप्त करनेसे मुख कमल सदृश निर्मल होजाता है ॥ ४४ ॥

मातुलिंगजटासर्पिःशिलागोशकृतोरसः ॥
मुखकांतिकरोलेपःपिटकातिलकालजित् ॥ ४५ ॥

विजौरेकी जड़ घी मनसिल गौके गोवरका रस इनके लेप करनेसे मुखपर कान्ति होती है पिटिका तिल आदि दूर होते हैं४५

रक्तचन्दनमंजिष्ठाकुष्ठलोध्रप्रियंगवः ॥
वचांकुरमसूराश्चव्यंगघ्नामुखकान्तिदाः ॥ ४६ ॥

रक्तचंदन, मजीठ, कूठ, लोध, प्रियंगु, वटकेअंकुर, मसूर इनका लेप मसूरिका व्यंगादिको दूर कर मुखपर गन्ध और कान्ति करने वाला है ॥ ४६ ॥

मंजिष्ठामधुकंलाक्षामातुलिंगंसपिष्टकम् ॥
कर्षप्रमाणैरेतैस्तुतैलस्यकुडवंपचेत् ॥ ४७ ॥
अजापयस्तद्विगुणंशनैर्मृद्वग्निनापचेत् ॥ ४८ ॥

मजीठ, मुलैठी, लाख, विजौरेकी जडको पीस यह एक एक कर्षप्रमाण लेकर एक कुडव तेलमें पकावै उस्से बकरीका दूध लेकर मृदुअग्निमें इन सबको पकावै ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

लीनकापिडिकाव्यंगाअभ्यंगादेवनाशयेत् ॥
मुखप्रसन्नंपिहितंनीलंकर्कशवर्जितम् ॥ ४९ ॥

लीनका, छोटी फुनसी, व्यंग मुहासे आदि सब इसके मलनेसे दूर होते हैं मुख निर्मल होजाता है कंटकादि नहीं रहतेहैं खुदरापन जाता रहताहै ॥ ४९ ॥

सप्तरात्रप्रयोगेणभवेत्कांचनसंनिभम् ॥
अत्राद्विरुक्तत्वात्यष्टीमधुकर्षद्वयंतथा ॥ ५० ॥

सातरातके प्रयोगसे सुवर्णकी तुल्य होजाता है मधुको दोबार कहनेसे शहत दो कर्ष लेना चाहिये ॥ ५० ॥

मनःशिलातथालोध्रंद्विनिशासर्षपाःसमाः ॥
वारिपिष्टोहितोलेपोवदनेस्यामिकांहरेत् ॥ ५१ ॥

मनशिल, लोध, दोनों हलदी, सरसों यह बराबर लेकर जलसे पीस लेप करनेसे मुखकी श्यामता छूट जाती है ॥ ५१ ॥

महिषीक्षीरसंयुक्तंरजनीरक्तचन्दनम् ॥
कृतेलेपेनिहंत्याशुस्यामिकांवदनाश्रिताम् ॥५२॥

भैंसके क्षीरसे युक्त दोनों हलदी, लालचन्दन मिलाकर मुख-पर लेप करनेसे मुखकी झाई दूर होती है तथा स्याहीभी जाती रहती है ॥ ५२ ॥

उभेहरिद्रेमंजिष्ठाघृतंगौराश्वसर्षपाः ॥
पेष्यंगैरिकसंयुक्तमजाक्षीरेणपाचितम् ॥ ५३ ॥

दोनों हलदी, मजीठ, गौका घी, सफेद सरसौं, गेरूके साथ इनको पीसकर बकरीके दूधके साथ पकावै ॥ ५३ ॥

एतेनैवभवेद्वक्रमुदयादित्यवर्चसम् ॥
वचालोध्रमुशीरंचसर्पिस्सर्जरसःपयः ॥ ५४ ॥

इससे मुखपर सूर्यके समान कांति होती है. वच, लोध, उशीर, घृत, राल, दूध ॥ ५४ ॥

पीतानिवटपत्राणिरजनींसहपेषयेत् ॥
लेपोयंमुखपादाभ्यांपद्मवत्कुरुतेभृशम् ॥ ५५ ॥

पीले वटके पत्ते, हलदी के साथ पीसकर मुखपर लेप करने-से कमल के समान मुख प्रकाशित होताहै ॥ ५५ ॥

मसूरान्मधुनासार्द्धंपिष्ट्वातैर्मर्दयेन्मुखम् ॥
सप्तरात्रप्रयोगेणपुंडरीकदलप्रभम् ॥ ५६ ॥

मसूर शहतके साथ पीसकर मुखपर मलनेसे सातरात्रिके प्रयोगमें कमलके समान मुख होजाता है ॥ ५६ ॥

इतिमुखरंजनम् ॥

अथकेशरंजनम् ।

स्रग्गंधधूपांवरभूषणानांनशोभतेशुक्लशिरोरुहानाम् ॥
यस्मादतोमूर्द्धजरागसेवांकुर्य्याद्यथैवांजनभूषणानाम् ५७॥

माला, गंध, धूप, वस्त्र, भूषण यह श्वेत बालवाले पुरुषोंको शोभित नहीं होताहै इस कारण बालोंकी सेवा अवश्य करै जिससे वह भौंरेकी समान होजाते हैं ॥ ५७ ॥

आम्राण्डेनोत्थितंतैलंकांतपाषाणचूर्णितम् ॥
काकतुंडीफलंकृष्णंचूर्णयित्वाप्रयत्नतः ॥ ५८ ॥

आमकी गुठलीका तेल और कान्तपाषाणका चूर्ण, काकादनीका फल, लोहचूर्ण यह सब यत्नपूर्वक चूर्ण करके ॥ ५८ ॥

धान्यराशौविनिःक्षिप्यमासार्द्धंशिरसिक्षिपेत् ॥
नस्यंदिनत्रयन्तेनकेशरंजनकंभवेत् ॥ ५९ ॥

धान्यराशिमें दाबकर एक महीनेके उपरान्त निकाल शिरमें डालै तीन दिन लेप करनेसे केश काले होजाते हैं ॥ ५९ ॥

वर्षार्द्धंतिष्ठतेकृष्णंभ्रमरांजनसंन्निभम् ॥
त्रिफलालोहचूर्णंतुनीलीभृंगीसमूलकम् ॥ ६० ॥

और छः महीनेतक वे बाल काले भौंरेकी समान होजाते हैं. त्रिफला, लोहचूर्ण, नील के पत्ते भांगरा मूल ॥ ६० ॥

एतच्चूर्णमिडामूत्रेदिनमेकंविभावयेत् ॥
तेनैवमर्दयेच्छीर्षंरंजतेभ्रमरोपमम् ॥ ६१ ॥

इन सबका चूर्ण बकरीके मूत्रमें एक दिन भावना देकर फिर शिरपर मलनेसे भौंरेकी समान बाल होजाते हैं ॥ ६१ ॥

गुंजाबीजस्यचूर्णन्तुकुष्ठैलादेवदारुकम् ॥
तुल्यांसम्भावयेच्चूर्णंदिनैकंभृंगयद्रवैः ॥ ६२ ॥

चौटलीके बीजोंका चूर्ण कूठ एला, देवदारु यह बराबर लेकर इनके चूर्णकी एक दिन भांगरेके रसमें भावनादे इसके मलनेसे बाल भौंरेकी समान कृष्णवर्ण होते हैं ॥ ६२ ॥

चूर्णाच्चतुर्गुणेतैलेपाचयेन्मृदुवह्निना ॥
तेनाभ्यंगाद्धनाकेशारंजनंभ्रमरोपमम् ॥ ६३ ॥

चूर्णसे चौगुने तेलमें कोमल अग्निसे पकावै उसके लगानेसे बाल भौंरेकी समान होजातेहैं ॥ ६३ ॥

हस्तिदंतस्यदग्धस्यसमासेनरसंसमम् ॥
अजाक्षीरेणतंपिष्ट्वालेपनात्केशरंजनम् ॥ ६४ ॥

हाथीका दांत जलाकर और इसके समान रस ले बकरीके दूधमें उसे पीसकर लेप करनेसे बाल काले होते हैं ॥ ६४ ॥

त्रिफलालोहचूर्णन्तुइक्षुभृंगरसस्तथा ।
कृष्णमृत्तिकयासार्द्धंभाण्डेमासेनिरोधयेत् ॥ ६५ ॥

त्रिफला, लोहचूर्ण, ईखका रस, भांगरेका रस, काली मट्टीके बर्तनमें एक महीने तक बंद कर रक्खै ॥ ६५ ॥

तल्लेपाद्रंजयेत्केशाञ्चतुर्म्मासांस्थिरोभवेत् ॥
लोहकिट्टंजयापुष्पंपिष्ट्वाधात्रीफलंसमम् ॥ ६६ ॥

उसके लेप करने से काले बाल होकर चार महीनेतक स्थिर रहते हैं. लोहकिट्ट, जवा (गुडहर) के फूल, आमले यह समान भाग ले इनको पीस ॥ ६६ ॥

त्रिदिनंलेपयेच्छीर्षेद्विमासंकेशरंजनम् ॥
भृंगराजरसप्रस्थंतैलंकृष्णतिलात्समम् ॥ ६७ ॥

तीन दिन लेप करनेसे दो महीनेतक बाल काले रहतें हैं भांगरेका रस एक सेर और इसीकी बराबर काले तिलले ॥ ६७ ॥

मर्द्दयेत्प्रहरैकन्तुतैलासंनीलिकारसम् ॥
तल्लेपस्त्रिदिनंकुर्य्यात्केशरंजनकंभवेत् ॥ ६८ ॥

एक प्रहरतक इसमें नीलीका रस लिप्त करै इसके तीन-दिन लगानेसे बाल काले हो जाते हैं ॥ ६८ ॥

चूर्णसर्जयवक्षारंसिद्धार्थंचारनालकैः ॥
नागपुष्पंदिनेमध्येतल्लेपात्केशरंजनम् ॥ ६९ ॥

सज्जीखार, जवाखार, सरसों और कांजी नागकेशर इनको पीसकर केशोंमें लगानेसे बाल काले होजाते हैं ॥ ६९ ॥

काकमाचीयबीजानिसमंकृष्णतिलांस्ततः ॥
तत्तैलंग्राहयेद्यंत्रेतन्नश्येत्केशरंजनम् ॥ ७० ॥

काकमाचीके बीज इसके बराबर काले तिल ले यन्त्रमें इनका तेल निकालकर बालोंमें लगानेसे बाल काले होजाते हैं ॥ ७० ॥

गोघृतंभृंगियद्रावंमयूरशिखयासह ॥
अग्निनामृदुनापाच्यंतंनश्येत्केशरंजनम् ॥ ७१ ॥

गौका घी, भांगरेका रस, मोरशिखाके साथ मृदु अग्निसे पकाले इसके लगानेसे बाल काले होजाते हैं, यह प्रयोग उत्तम है ॥ ७१ ॥

काकमाचीयबीजानिसमंकृष्णतिलांस्ततः ॥
जयापुष्परसंक्षौद्रंकर्षैकंन्यस्यमाचरेत् ॥ ७२ ॥

काकमाचीके बीजोंके समान कालेतिल ले उसमें गुडहरके फूलोंका रस शहत एक एक कर्ष डालै ॥ ७२ ॥

सप्ताहंरंजयेत्केशान्सर्वंनस्येत्वयंविधिः ॥
त्रिफलालोहचूर्णन्तुवारिणापेषयेत्समम् ॥ ७३ ॥

यह एकत्र करके सात दिनतक बालोंको काला रखताहै सब

नस्यकी वही विधिहै त्रिफला और लोहचूर्ण यह समानले जलसे पीसे ॥ ७३ ॥

द्वयोस्तुल्येनतैलेनपचेन्मृद्वग्निनाक्षणम् ॥
तैलतुल्यंभृंगरसंयावत्तैलंचपाचयेत् ॥ ७४ ॥

और इन दोनोंके समान तेल लेकर मृदु अग्निसे पकावै और तेलकी बराबर भांगरेका रसभी इसमें डाले जब रस जलजाय तेलमात्र रहजाय ॥ ७४ ॥

स्निग्धंभांडगतंभूमौस्थितिंमासात्समुद्धरेत् ॥
सप्ताहंलेपयेद्दृष्ट्वाकदल्यश्चदलैश्शिरः ॥ ७५ ॥

तब उसे चिकने बर्तनमें भरकर पृथ्वीमें गाडदे एक महीनेसे निकालकर केलेके पत्तेपर, लगाय शिरको सात दिनतक लगावै॥७५॥

निर्वातेक्षीरभोजीस्यात्क्षालयेत्रिफलाजलैः ॥
नित्यमेवंहिकर्त्तव्यंसप्ताहैरंजनंभवेत् ॥ ७६ ॥

निर्वातस्थानमें क्षीरका भोजन पान करै और त्रिफलेके जलसे धोडाले सात दिन ऐसा करनेसे सर्वथा बाल काले हो जातेहैं ॥ ७६ ॥

यावज्जीवंनसन्देहःकेशाःस्युर्भ्रमरोपमाः ॥
महाकालस्यबीजानिबाकुचीबीजतत्समम् ॥ ७७ ॥

और निःसन्देह जन्मपर्यन्त केश श्याम रहतेहैं अथवा महाकालके बीज इसके समान बाकुची, सोमराजीके बीज उसीके समानले ॥ ७७ ॥

चूर्णन्द्रव्यैश्चनिर्गुंड्यांभावयेत्तुचतुर्दिनम् ॥
जपापुष्पद्रवैरेतंततःपातालयंत्रके ॥ ७८ ॥

इनको चूर्णकर चार दिनतक गुडहरके रसकी भावनादे और पातालयंत्रसे इसका ॥ ७८ ॥

तैलंग्राह्यंतुतल्लेपपत्रैरेरण्डजैश्शिरः ॥
वेष्टयेत्क्षीरभोजीस्याद्वातातपविवर्जितः ॥ ७९ ॥

तेल निकालकर उसके लेप करनेसे अर्थात् एरण्डके पत्तोंमें लगाकर शिरपर लेप करनेसे और क्षीर (दूध) पान करनेसे और वात धूपका सेवन न करनेसे ॥ ७९ ॥

एवंसप्तादिनंलेप्यंतन्दुलांधारयेन्मुखे ॥
कृष्णवर्णाःप्रजायन्तेतथाभवतिप्रत्ययम् ॥ ८० ॥

मुखमें तन्दुल धरके उस प्रकार सात दिनतक बालोंपर लेप करनेसे कृष्णवर्ण होजातेहैं ॥ ८० ॥

महोग्रकर्दमेक्षिप्त्वाषण्मासात्तुसमुद्धरेत् ॥
तद्भुतंजायतेकृष्णंकर्षैकंशिरसिक्षिपेत् ॥ ८१ ॥

तथा वायविडंगको कीचडमें डालकर छःमहीनेतक पडा रहने दे उसका एक कर्ष चूर्ण कर शिरमें डालनेसे बाल काले होजातेहैं॥८१

केशाःकृष्णाःप्रजायन्तेभ्रमरीकुलसंनिभाः ॥
कपालीरञ्जनंख्यातंयावज्जीवनसंशयः ॥ ८२ ॥

जोकि काले भौंरेकी समान होजातेहैं और जीवनपर्यन्त वैसेही रहजातेहैं इसमें सन्देह नहीं ॥ ८२ ॥

सनीलिकासैंधवपिप्पलीभिर्घृतानुयुक्तैरुपलिप्यकेशम् ॥
क्रमेणशंखोपममाशुकृष्णंशिरोरुहंमेचकतामुपैति ॥८३॥

नीलकी जड, सैंधा, पीपली, घृत इनसे बालोंको लेपन करनेसे क्रमसे श्वेत बालभी काले वर्णके होजातेहैं ॥ ८३ ॥

फलान्वितंचूततरोःप्रसूनंपिंडारकंपांडुरनीलिकेवा ॥
प्रस्थंप्रमाणंचालितस्यतैलंपचेदमीभिर्विदितोपदेशैः ८४

फूलसहित आमके फल, पिंडार, धवईके फूल, नील यह सब लेकर और एक सेर तेल लेकर इसमें यह सब पकावै ॥ ८४ ॥

तस्मिंश्चमध्येयदिहंसपक्षःक्षिप्तोभवेन्मेचकवर्णयुक्तः ॥
पाकस्तदैवास्यनरैर्विधेयःख्यातंपृथिव्यामपिनीलतैलम्॥

उसके मध्यमें राजहंसके बाल डालकर देखे जो वह डालतेही कृष्णवर्णके होजाय तो उसका पाक यथार्थ जाने और यह पृथ्वीमें नीलतैल नामसे विख्यातहै ॥ ८५ ॥

एतन्निलिप्तंपलितंनराणांशंखावदातंसकलंत्रिरात्रम् ॥
पुष्पंनश्रेयांसिसमानयुक्तंचिरम्भवेद्दृष्टइतिप्रयोगः ॥८६

इसको बालोंपर लगानेसे श्वेत बाल भौंरेकी समान काले होजातेहैं यह प्रयोग अच्छी प्रकार देखा हुआ है और सिद्धहै॥८६॥

शतावरीकृष्णतिलेनयुक्तागोरोचनाकाकमुखाभिधाच ॥ अमीभिरालिप्यपुनःशुकेशान्करोतिशुक्लानपिकृष्णवर्णान् ८७

शतावरी, काले तिल, गोरोचन, काकमुखा इनको पीस बालोंपर लेप करनेसे शुक्ल बाल काले होजातेहैं ॥ ८७ ॥

मदंतिकायारसकल्कसिद्धंतिलोद्भवंतैलमिदंनराणाम् ॥
अकालजातांपालितंसरौक्षंकेशस्यकारुष्यमलंनिहन्ति॥

नवमाल्लिकाका रस निकालकर तिलका तेल डाल कल्क लगानेसे मनुष्योंके अकालमें श्वेत हुए बाल श्याम होजातेहैं बालोंके सब प्रकारके रोग और मल दूर करतेहैं ॥ ८८ ॥

इति केशरंजनम्

अथसौगंधिकरणम् ।

मुस्तंचसर्षपंचैवउशीरंचतथैवच ॥
हरीतक्याश्चक्काथेनआमलक्यास्समंततः ॥ ८८ ॥

केशमूलंसमालेप्यमेघतुल्योभवेत्कचः ॥ ८९ ॥

मोथा,सरसों, उशीर, हरड़,आमला इनका क्वाथ करके केशकी-जडमें लेपन करनेसे बाल मेघके समान काले होजाते हैं ॥८९ ॥

शूक्ष्मैलजीमूतनखैःसचूतैस्स्वर्णामसीपत्रकसंयुतैश्च ॥
सौरभ्यकांतीकिलमूर्धजानांस्नात्वानरोविन्दतिसर्वदैव९०॥

छोटी इलायची, मोथा, नख, (सुगन्धद्रव्य) आम, नागकेशर शेफातिका, तेजपात, ढाक इनका चूर्ण करके इनको बालोंमें लगा कर स्थान करनेसे बालोंमें सुगन्धि होजाती है ॥ ९० ॥

स्वर्णाम्बुदोशीरनखीयुतानांपथ्यान्वितानांचविलेपनेच ॥
स्नात्वानरःसौरभमर्द्धमासंवैकैलपमाप्नोतिशिरोरुहस्य॥९१॥

नागकेशर,मोथा, उशीर, नखी, (सुगन्धद्रव्य) हरड इन का ले-पनकर स्नान करनेसे मनुष्योंके शिरमें पन्द्रह दिनतक सुगन्धि आती है ॥ ९१ ॥

पथ्यावशानामलकीफलानांमंजस्तुजीमूतरसामयानाम् ॥
मासीयुतानाम्परिलेपनेनस्नात्वानरस्सौरभकान्तिवृष्टयै ॥

इतिकेशरंजनेस्नार्थीयसुगंधिद्रव्यम् ॥

हरड की बकली, आमला, मेढासिंगी, मोथिका रस, कूठ जटामांसीके सहित लेप करनेसे स्नान करे तो सुगन्धि होजाती है ॥ ९२ ॥

इतिकेशरंजने स्नानीयसुगन्धिद्रव्यम् ॥

अथ केशयूकादिनिवारणम् ।

विडंगगंधोत्पलकल्कयोगाद्गोमूत्रसिद्धंकटुतैलमेतत् ॥
अभ्यंगयोगेनशिरोरुहाणांयूकादिलिख्यप्रचयंनिहन्ति॥

केशोंकी लीखादिका निवारण करना वायविडंग. अगर, कमल इनको पीस गोमूत्रसे सिद्धकर कडवे तेलमें मिलाकर बालोंमें मलनेसे सम्पूर्ण लीखी मरजातीहैं ॥ ९३ ॥

गोमूत्रसारिवामूलंलेपाद्यूकानिवारणम् ॥
पारदंमर्द्दयेन्निष्कंकृष्णधत्तूरजैर्द्रवैः ॥ ९४ ॥

गोमूत्र, सरवनकी जड़ इनका लेप लीखोंको निवारण करताहै काले धतूरेके रसमें एक निष्क(१०८ रत्ती)पारेको खरल करे॥९४॥

नागवल्लीद्रवैर्वापिवस्त्रखंडंविलेपयेत् ॥
तद्वस्त्रंवेष्टयेन्मौलौधार्य्यायामत्रयंतथा ॥ ९५ ॥

और पानके रसमें मिलाकर वस्त्रपर लपेटकर वह वस्त्र शिर-पर धारण करनेसे तीन प्रहर शिरपर रखनेसे ॥ ९५ ॥

यूकाःपतंतिनिश्शेषंमस्तकान्नात्रसंशयः ॥
द्विनिशानवनीतेनलेपान्मौलेःप्रकंडुनुत् ॥ ॥ ९६॥

सब शिरसे लीखें गिर जातीहैं इसमें सन्देह नहीं. दोनों हलदी मक्खनके साथ मिलाकर मलनेसे शिरकी खुजली नष्ट होजातीहै९६

नीलोत्पलंतिलंयष्टिसर्षपानागकेशरम् ॥
धात्रीफलंसमंपिष्ट्वालेपोयूकाविनाशकः ॥९७॥

नीलकमल, तिल, मुलैठी, सरसों, नागकेशर, आमलेके साथ पीसकर लेप करनेसे यह लेप लीखका नाश करनेवालाहै ॥९७॥

निशागन्धकगोमूत्रंविडंगंकटुतैलकम् ॥
पारदेनसमंमर्द्यलेपोयूकाविनाशकः॥ ९८ ॥

हलदी, गंधक, गोमूत्र, वायविडंग,कड़वातेल पारेकेसाथ मिलाकर लेप करनेसे लीखको दूर करताहै ॥ ९८ ॥

लाक्षभल्लातकंमुस्ताकूटगुग्गुलसर्षपाः ॥
विडंगेनसमंलेपाद्भूमोयूकानिवारकः ॥ ९९ ॥

लाख, भिलावा, नागरमोथा, कूट, गूगल, सरसो, वायविडंग इनके साथ लेप करनेसे लीखें निवारण होजातीहैं ॥ ९९ ॥

बिल्वमूलंसगोमूत्रंलेपाद्यूकाविनाशनम् ॥ १०० ॥
इतिकेशरंजनेयूकादिनिवारणम् ॥

बेलकी जड़, गोमूत्र इनका लेप लीखोंका निवारण करने वालाहै ॥ १०० ॥

इति केशरंजने यूकादिनिवारणम् ॥

अथ केशस्यइन्द्रलुप्तादिनिवारणम् ।

गुंजाफलैःक्षौद्रयुतैर्विलिप्याशिरःप्रदेशेसकलेन्द्रलुप्तम् ॥
अनेनयोगेनसदैवकेशारोहन्तिकृष्णाःकुटिलाविशालाः १

बालोंका इन्द्रलुप्त रोग निवारण करना शिरके बाल गिरने लगे इसको इन्द्रलुप्त कहतेहैं चाटली और शहत पीसकर शिरपर लगानेसे सब प्रकारका इन्द्रलुप्तरोग दूर होजाताहै, इस योगसे बाल जमकर बडे और कुटिल होजातेहैं ॥१॥

मातंगदंतस्यमषींविधायश्वेतांजनंतुल्यतयासुपिष्टम् ॥
लिप्येदनेनैवमहेन्द्रलुप्तंकेशाःप्ररोहंत्यपिहस्तमध्ये ॥२॥

हाथीके दांतको जलाय उसकी राख कर इसकी बराबर रसौत ले बकरीके दूधमें पीस इसका लेप करनेसे हाथोंकी हथेलीमें भी बाल जमसक्ते हैं और तो कौन कहै ॥ २ ॥

कुंकुमम्मरिचैस्साद्धंपिष्ट्वातैलेनलेपयेत् ॥
इन्द्रलुप्तंनिहंत्याशुंकिबीजंवीरजद्रवैः ॥ ३ ॥

कुंकुम और काली मिर्च इनको तेलके साथ पीसकर लेप करनेसे इद्रलुप्तरोग शीघ्र नष्ट होजाताहै तथा जंबीरीके बीजोंका रस गुण करताहै ॥ ३ ॥

सुदग्धंहस्तिदन्तन्तुछागदुग्धरसांजनम् ॥
पिष्ट्वालेपात्प्रजायन्तेकेशाःकरतलेष्वपि ॥ ४ ॥

दग्ध हुवा हाथीका दांत बकरीका दूध, रसोत इनको पीसकर हाथमें लेप करनेसे भी बाल जम आतेहैं ॥ ४ ॥

जातीपुष्पंदलंमूलंकृष्णगोमूत्रपेषितम् ॥
लेपोयंसप्तरात्रेणदृढकेशकरःपरः ॥ ५ ॥

चमेलीके फूल, दल,मूल, काली गौके मूत्रमें पीसकर यह लेप करनेसे सातरात्रिमें दृढ बाल कर देताहै ॥ ५ ॥

शृंगाटत्रिफलाभृंगीनीलोत्पलमयोरजः ॥
सूक्ष्मंचूर्णसमंकृत्वापचेत्तैलेचतुर्गुणे ॥ ६ ॥

सिंघाडा, त्रिफला, भांगरा, नीलकमल, लोहचूर्ण इन सबका चूर्ण कर इससे चौगुणा तेल डालकर पकाले ॥ ६ ॥

तल्लेपेनदृढाःकेशाः कुटिलास्सरलाअपि ॥
कीटभक्षितकेशंतुस्थानंस्वर्णेनघर्षयेत् ॥ ७ ॥

इसका लेप करनेसे बाल कुटिल और सरल होजातेहैं और यदि बालोंको कीडा खागया हो तो सुवर्णको वहां घिसे ॥ ७ ॥

यावत्सुतप्ततांयातितावल्लेपमिमंकुरु ॥
भल्लातकंचबृहती गुंजामूलफलंतथा ॥ ८ ॥

जबतक वह तप्तताको प्राप्त न होजाय तबतक बराबर लेप करतारहै, भिलावा, कटेरी, चौटलीकी जड और फल ॥ ८ ॥

मधुनासहलेपेनवायुक्षीरोटकप्रणुत् ॥

भल्लातकंकृष्णतिलंकंटकारीफलंसमम् ॥ ९ ॥

यह शहतके साथ पीसकर लेप करे तो इन्द्रलुप्तरोग दूर करता है भिलावा कालेतिल, कटेरी के फल यह समान भागले ॥ ९ ॥

पिष्टंतंडुलतोयेनलेपोयन्तंविनाशयेत् ।
जपापुष्पैश्चतंहन्यात्कृष्णागोमूत्रलेपनात् ॥ १० ॥

चावलके जलसे पीसकर लेप करनेसे इन्द्रलुप्तरोग दूर करताहै और काली गौके मूत्रमें जवाके फूल पीसकर लेप न करै ॥ १० ॥

तिलप्रसूनंसहगोक्षुरेणसलावणंगव्यघृतेनपिष्टम् ॥
सप्ताहमात्रेणशिरःप्रलेपाद्भवन्तिदीर्घाःप्रचुराश्चकेशाः ॥

अथवा तिलके फूल, गोखरू, लवण, गौके घीसे पीसकर सात दिन लेप करनेसे बाल दीर्घ और बहुत होजाते हैं ॥ ११ ॥

शाल्मलीतालमूल्योश्चमूलंपद्मसमुद्भवम् ॥
छागदुग्धेसमंपिष्टंलेपयेन्मुंडितंशिरः ॥
त्रिदिनंभक्षयेतच्चकेशवर्द्धनमुत्तमम् ॥ १२ ॥

सैमल, तालमूली, कमल मूल यह बराबर लेकर बकरीके दूधके साथ पीसनेसे यह लेप शिरमुंडित बालोंको हितकारी है और तीन दिन लेप करनेसे उत्तम केशवृद्धि होजाती है ॥ १२ ॥

इतिकेशरंजनेइन्द्रलुप्तादिनिवारणम् ।

अथ केशशुक्लीकरणम् ॥

वज्रीक्षीरेणसप्ताहंतच्छेषंभावयेत्तिलम् ॥
तत्तैललिप्ताःकेशाश्चशुक्लास्स्युर्नात्रसंशयः ॥ १३ ॥

अथ बाल श्वेतकरने की विधि—थूहरके दूधमें श्वेततिलोंको सात दिन भावनादे फिर उस तेलको बालोंपर लेप करनेसे निःसन्देह बाल श्वेत होजाते हैं ॥ १३ ॥

रोगामलकचूर्णन्तुवज्रीक्षीरेणसप्तधा ॥
भावयेतस्यलेपेनशुक्लतांयांतिमूर्द्धजाः ॥ १४ ॥

कूठ और आमलेका चूर्णको थूहरके दूधसे सात वार भावित करनेसे इसका लेप बालोंको श्वेत करता है ॥ १४ ॥

अजाक्षीरेणसप्ताहंभावयेदभयाफलम् ॥
तच्चूर्णसहतैलेनलेपाच्छुक्लाभवन्तिहि ॥ १५ ॥

इतिकेशशुक्लीकरणम् ॥

इतिश्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेमोहनकेशादिरंजनेपंचमोपदेशः ५

हरड़को सात दिन बकरीके दूधमें भावनादे उसका चूर्णकर तेलमें मिलाय बालोंमें लगावै तो श्वेत हों ॥ १५ ॥

इति केशशुक्लीकरणम् ।

इति श्रीनित्यनाथ विरचिते कामरत्ने पंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीकायां केशादिरंजने पंचमोपदेशः ॥ ५ ॥

अथ वाजीकरणम् ॥

बलेननारीपरितोषमेतिनहीनवीर्यस्यकदापिसौख्यम् ॥
अतोबलार्थंरतिलम्पटस्यवाजीविधानंप्रथमंविदध्ये ॥१ ॥

अथवाजीकरण बल से स्त्री संतुष्ट होती है,परन्तु हीनवीर्य पुरुषसे कभी स्त्री सन्तुष्ट नहीं होती है इसकारण उन लम्पट पुरुषोंके बलके निमित्त वाजी (पुष्ट) प्रकरण लिखाजाताहै ॥ १ ॥

अश्विन्यांवटवृन्दाकंक्षीरैःपीत्वामहाबलः ॥
पुष्पोद्धृतंपिबेन्मूलंश्वेतार्कस्यप्रयत्नतः ॥ २ ॥
सप्तरात्रंतुगोक्षीरैःवृद्धोपितरुणायते ॥

अश्विनीनक्षत्र में वढका वंदा दूध के साथ पीसकर पीनेसे

बलकी वृद्धि होती है पुष्यनक्षत्रमें उखाडी हुई श्वेत आककी जड सात दिनतक गौके दूधके साथ यत्नसे पिये तो वृद्धभी तरुण होजाता है ॥ २ ॥

चूर्णंविदार्यास्वरसेनतस्याविभावितंभास्कररश्मिजालैः॥
मध्वाज्यसंमिश्रितमेवलीढ्वादशस्त्रियोगच्छतिनिर्विशंकं ॥
भूयोविभाव्यामलकस्यचूर्णंरसेनतस्यैवसिताज्यमिश्रम् ३

विदारीकंदका चूर्णकर उसीके स्वरसमें भावनादे धूपमें सुखानेसे शहत और घृत मिलाय न्यून और अधिक सेवन कर दशस्त्रियोंको तृप्त करसक्ता है आमलेके रसमें आमलोंको भावना देकर उसमें मिश्री और घृत मिलावे ॥ ३ ॥

सक्षौद्रमालेढिनिशामुखेयोनूनंसवृद्धस्तरुणत्वमेति ॥४॥

इसे शहतके साथ रात्रिमें पान करनेसे वृद्ध पुरुषभी तरुणहो जाता है ॥ ४ ॥

कर्षप्रमाणंमधुकेस्वचूर्णंक्षौद्राज्यसंमिश्रितमेवलीढ्वा ॥
क्षीरानुपानंरमतेतुतावद्यावन्नराणामुदरस्थमेतत् ॥ ५ ॥

मुलैठीका चूर्ण एक कर्ष लेकर इसमें घृत और शहत मिलाकर पान करनेसे मनुष्यमें अधिक सामर्थ्य होजाता है ॥ ५ ॥

शितपिकतरुबीजंतन्दुलाः षष्टिकानांसघृतमधुसमेतं
प्रत्यहंयोवलेढि ॥जठरकुहरमध्येयातिपाकंनयावद्रमय
तिकृशदेहोप्यंगनानांसमूहम् ॥ ६ ॥

कौंछके बीज, सांठीके चावल, न्यूनाधिक घृत और शहत मिलाकर चाटनेसे जबतक यह न पचै तबतक कृश मनुष्यभी स्त्रीके साथ रमण कर सकता है ॥ ६ ॥

वृद्धशाल्मलिमूलस्यरसंशर्करयापिबेत् ॥
एतत्प्रयोगात्सप्ताहाज्जायतेरेतसोम्बुधिः ७ ॥

वृद्ध सेमलकी जड़कारस शर्कराके सहित पान करे तो इस प्रयोगसे सात दिनमें मनुष्य वीर्यवान् होजाताहै ॥ ७ ॥

लघुशाल्मलिमूलेनतालमूलीसचूर्णितम् ॥
सर्पिषापयसापीत्वारतौचटकवद्भवेत् ॥ ८ ॥

लघु सेमलकी जड़ और तालमूलीका चूर्ण घृतके साथ पान करनेसे रतिमें चटककी तुल्य होजाता है ॥ ८ ॥

घृतेनमासंमसृतानिभूयोसुभावयित्वारविशोषितानि ॥
क्षीरेणसंसाध्यचभक्षयित्वासयातिनारीशतमुग्ररेतः॥९॥

और फिर घृतके साथ इसीको प्लावित करके दूधसे संभावित कर भक्षण करे तो रतिमें चटकतुल्य होजाता है सौस्त्रीसे रमण कर सकता है ॥ ९ ॥

योवर्त्तकीलावकपिंजलानांमांसन्तथावेश्मविहंगमस्य ॥
हव्येनसिद्धंसहसैंधवेनमहाबलःस्यादुपयुज्यमानः॥१०॥

जो बतक लवा कबूतर (जंगली) चिडियापक्षीका मांस हव्यमें घृत डालकर सैंधेके साथ भक्षण करता है उसका बल अधिक बढजाता है ॥ १० ॥

विदारीकन्दकल्कन्तुघृतेनपयसानरः ॥
उदुम्बरसमंस्वादेद्वृद्धोपितरुणायते ॥ ११ ॥

विदारीकंदके कल्कको घीमिले दूधके साथ एक तोला पान करनेसे वृद्ध पुरुष भी तरुण होजाता है ॥ ११ ॥

पिप्पलीनांरसोपेतांवस्तांडौक्षीरसर्पिषा ॥
मापितोभक्षयेद्यस्तुसगच्छेत्प्रमदाशतम् ॥ १२ ॥

बकरेके दोनों अंडकोशोंको प्रथम जलमें उबालकर फिर दूधसे निकाले हुए घीमें भूनकर अनुपानके अनुसार उसमें सैंधानिमक,

और पीपलका चूर्ण मिलाय भक्षण करे तो अनेक स्त्रियोंसे रमण कर सकता है ॥ १२ ॥

बस्तांडसिद्धेपयसिभावितानसकृत्तिलान् ॥
यःखादेत्सनरोगच्छेत्स्त्रीणांशतमपूर्ववत् ॥ १३ ॥

बकरेके अंडकोशको दूधमें औटाकर उस दूधकी तिलोंमें वारंवार भावनादे इनको छायामें सुखाय सेवन करे तो सौ स्त्रियोंसे रमण कर सकताहै ॥ १३ ॥

गोक्षुरकःक्षुरकश्शतमूलीवानरीनागबलातिबलाच।
चूर्णमिदंपयसानिशिपेयंयस्यगृहेप्रमदाशतमस्ति १४॥

गोखरू, तालमखाने, शतावर, कौंचके बीज, नागबला, खिरेंटी इनका चूर्ण दूधके साथ रात्रिमें पान करनेसे सौ स्त्रियोंको तृप्त कर सकता है ॥ १४ ॥

अश्वत्थफलमूलत्वक्छुंगासिद्धंपयोनरः ॥
सपीत्वाशर्कराक्षौद्रंकलिंगइवहृष्यते ॥ १५ ॥

पीपलके फल, जड़, छाल और कली इनको अनुमानके अनुसार दूधमें डाल औटावे शीतल होनेपर मिश्री शहत मिलाय बूराडालकर पीवे तो कुलिंग (चिडे) के समान प्रसन्न होताहै ॥ १५ ॥

घृतंशतावरीगर्भंक्षीरेचतुर्गुणेपचेत् ॥
शर्करापिप्पलीक्षौद्रयुक्तंतद्वृष्यमुच्यते ॥ १६ ॥

घृतमें शतावरीका स्वरस मिलाय चौगुने दूधके साथ पकाय उसमें मिश्री, शहत, पीपल शतावर का कल्क डालकर खाय तो पुष्टता होती है ॥ १६ ॥

शतावरीरजःप्रस्थंप्रस्थंगोक्षुरकस्यच ॥
वाराह्याविंशतिपलंगुडूच्याःपंचविंशतिः ॥ १७ ॥

भल्लातकानांद्वात्रिंशच्चित्रकानान्दशैवतु ॥
तिलानांनिस्तुषाणांतुप्रस्थंदद्यात्सुचूर्णितम् ॥१८॥
त्रिफलस्यपलान्यष्टौशर्करायाश्चसप्ततिः ॥
माक्षिकंशर्कराद्धेंनमाक्षिकाद्धेंनवैघृतम् ॥ १९ ॥

शतावरका चूर्ण एक सेर, दक्षिणी गोखरूका चूर्ण एकसेर, वाराहीकंदका चूर्ण एकसेर, सतगिलोय एक सेर, नौ छटाक शुद्ध किये भिलावे २ सेर, चीतेकी छाल ढाई पाव; धोए तिल एक सेर, सोंठ, मिर्च, पीपलाका चूर्ण आध सेर, मिश्री साढेचार सेर इससे आधा शहत और एक सेर दो छटांक घी ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥

शतावरीसमन्देयंविदारीकन्दजंरजः ॥
एतदेकीकृतंचूर्णंस्निग्धभांडेनिधापयेत् ॥ २० ॥

शतावरीके समान विदारीकंदका चूर्ण यह सब बारीक कर मिलाय चिकने बर्तनमें रख छोडे ॥ २० ॥

पलार्द्धमुपभुंजीतयथेष्टंचास्यभोजनम् ॥
मासैकमुपयोगेनजरांहंतिरुजामपि ॥ २१ ॥

प्रतिदिन दो तोले सेवन करनेसे यथेष्ट भोजन करे तो एक महीनेमें जरा और हीनवीर्यता नष्ट होती है ॥ २१ ॥

वलीपलितखालित्यहेमपांड्वाद्यपीनसान् ॥
हन्त्यष्टादशकुष्ठानितथाष्टावुदराणिच ॥ २२ ॥

वली शिरके बालोंका श्वेत होना, गुंजापन, प्रमेह, पीनस, अठारह कोढ, आठ प्रकारके उदर रोग ॥ २२ ॥

भगंदरंमूत्रकृच्छ्रंगृध्रसीसहलीमकम् ॥
क्षयंचैवमहाव्याधिंपंचकासान्सुदारुणान् ॥ २३ ॥

भगन्दर, मूत्रकृच्छ्र गृध्रसी, हलीमक रोग, क्षय, महाव्याधि, पांच प्रकारकी दारुण खांसी ॥ २३ ॥

अशीतिवातज्वरान्रोगांश्चत्वारिंशच्चपैत्तिकान् ॥
विंशतिंसूक्ष्मरोगांश्चसंसृष्टान्सन्निपातकान् ॥२४॥

अस्सी वातज्वर, चालीस पित्तके रोग, वीस सूक्ष्मरोग, सन्निपातके रोग ॥ २४ ॥

सर्वानर्शोगदान्हन्याद्वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥ २५ ॥

बवासीर यह सब ऐसे दूर होजाते हैं जैसे इन्द्रके वज्रसे पर्वतोंके पक्ष कटगयेथे ॥ २५ ॥

सकांचनाभोमृगराजविक्रमस्तुरंगमंचाप्यनुयातिवेगतः॥
स्त्रीणांशतंगच्छतिसातिरेकंप्रहृष्टपुष्टंचयथाविहंगम्॥२६

तथा सुवर्णके समान शरीर होकर सिंहके समान पराक्रमी, घोडेके समान कामवेग प्राप्त होताहै और यह सौ स्त्रीके संग गमन कर सकता है तथा विहंगके समान हृष्ट पुष्ट होता है ॥ २६ ॥

पुत्रान्संजनयेद्धीमान्नरसिंहनिभांस्तथा ॥
नारसिंहमिदंचूर्णंसर्वरोगहरंनृणाम् ॥ २७ ॥

यह चूर्ण मनुष्यको नृसिंहके समान् कान्तिमान करता है यह नृसिंहचूर्ण मनुष्योंके सबरोग दूर करता है ॥ २७ ॥

इति नृसिंहचूर्णम् ।

त्रैलोक्यविजयाचूर्णंसबीजंघृतभार्जितम् ॥
त्रिकटुस्त्रिफलाकुष्ठंभृंगसैंधवधान्यकम् ॥ २८ ॥

अथ वा त्रिलोक विजयानामक चूर्ण सबीज घृतसे भूनकर सेवन करनेसे बलकारक होताहै त्रिकटू (सोंठ मिरच पीपल) हर्र, बहेडा, आमला' कूट, भांगरा, धनियां, वच ॥ २८ ॥

चव्यंतालीशपत्रंचकट्फलंनागकेशरम् ॥
अजमोजायवानीचषष्टीमधुकमेवच ॥२९॥

चव्य, तालीसकी छाल,कट्फल नागकेशर,अजमोद,अजवायन, कचूर, मुलैठी ॥ २९ ॥

मेथीजीरकयुग्मंचगृहीत्वासमभागतः ॥
यावन्त्येतानिचूर्णानितावदेवतदौषधम् ॥ ३० ॥

मेथी, कालाजीरा, श्वेतजीरा यह सब समान भाग लेकर यह सम्पूर्ण औषधी ॥ ३० ॥

समेशिलातलेपिष्ट्वाचूर्णयेदतिचिच्छणम् ॥
तावदेवसितादेयायावदायातिबंधनम् ॥ ३१ ॥

समान शिलापर पीसकर महीन चूर्णकरै इतनी इसमें मिश्रीकी चासनी करै जिस्से वह बँध जाय ॥ ३१ ॥

घृतेनमधुनामिश्रंमोदकंपरिकल्पयेत् ॥
घृतभर्जिततिलचूर्णमोदकोपरिविन्यसेत् ॥
त्रिसुगंधिसमायुक्तंकर्पूरेणाधिवासितम् ॥ ३२ ॥

तथा इसमें घी और शहत मिलाकर लड्डू बांधे मोदकके ऊपर घीमें भुने हुये तिलोंका चूर्ण डालै तथा पत्रज, तज, इलायची, कपूरसे अधिवासित करै ॥ ३२ ॥

स्थापयेद्घृतभांडेतुश्रीमन्मदनमोदकम् ॥
भक्षयेत्प्रातरुत्थायवातश्लेष्मभयापहम् ॥ ३३ ॥

घृतके बर्तनमें स्थापन करकै रखछोडे यह मदनमोदक प्रातःकालमें उठकर खानेसे श्लेष्माका भय दूर होता है ॥ ३३ ॥

प्रवृद्धमग्निंकुरुतेमन्दमाग्निंप्रदीपयेत् ॥
कृशानामतिरूक्षाणांस्नेहनंस्थौल्यकारणम् ॥ ३४ ॥

बढीहुई अग्निको सम और मन्दाग्निको बढाताहै, कृश, अत्यन्त रूखे पुरुषोंको स्थूल और स्नेहन करता है ॥ ३४ ॥

कासघ्नंसर्वशूलघ्नंआमवातविनाशनम् ॥
सर्वरोगहरंह्येतत्संग्रहंग्रहणीहरम् ॥ ३५ ॥

कास, शूल, आमवातका नाशक है सम्पूर्ण रोग तथा संग्रहणी रोगको यह हरण करता है ॥ ३५ ॥

एतस्यसततांभ्यासाद्वृद्धोपितरुणायते ॥
ब्रह्मणःप्रमुखाच्छ्रुत्वावासुदेवेजगत्पतौ ॥ ३६ ॥

निरन्तर इसके सेवन करनेसे वृद्धभी तरुण होजाता है, ब्रह्माके मुखसे श्रवणकर वासुदेव जगत्पतिसे ॥ ३६ ॥

एषकामस्यवृद्ध्यर्थंनारदेनप्रकाशितः ॥
येनलक्षैर्वरस्त्रीणांरमेत्सयदुनन्दनः ॥ ३७ ॥
इति श्रीमन्मदनमोदक ॥

यह कामकी वृद्धिके अर्थ नारदजीने कथन कियाहै, जिसके कारण यदुनन्दन सैकडों स्त्रियोंसे रमण करतेथे ॥ ३७ ॥

इति मदनमोदक ॥

मृतसूताभ्रकंस्वर्णवाजिगंधावचारसैः ॥
मुशलीकंदलीकन्दद्रवैश्चमर्दयेद्दिनम् ॥ ३८ ॥

शुद्धपारा, शुद्ध सुवर्ण, असगंध, वचके रसमें खरलकर इसमें मुशली, कदलीकन्दका चूर्ण डालकर एक दिन खरल करे ॥ ३८ ॥

लाक्षालघुपुटैःपच्यान्मर्दयेत्पूर्ववद्द्रवैः ॥
पुटन्देयंमनुर्मर्धमेवमष्टपुटैःपचेत् ॥ ३९ ॥

लाखके लघुपुट देकर इसको खरल करता रहै और लाक्षा जलके आठ पुट देकर इसको पकावे ॥ ३९ ॥

शाल्मलीजातनिर्यासैश्चतुर्मासान्तुभक्षयेत् ॥
गोदुग्धंमर्कटीबीजैः पलार्द्धम्पाचयेदनु ॥ ४० ॥

सेमलके उत्पन्न हुए गोंदसे और चारमहीने भक्षणकरे गौका दूध कौंछके बीज आधे पल डालकर पकावे ॥ ४० ॥

रसःकामकलाख्योयंरमतेस्त्रीसहस्रकैः ॥
सर्वांगोद्वर्त्तनंकुर्य्यात्सरसैःशाल्मलीरसैः ॥ ४१ ॥

इतिकामकलारसः ॥

यह कामकलानामक रस है, इसके सेवनसे मनुष्य सहस्र स्त्रियोंसें रमण कर सकताहै,सर्वांगमें सेमलके रसको मले, पुरुषको कामबल बढजाताहै (इति कामकलारस) ॥ ४१ ॥

शुद्धसूतंसमंगंधंत्र्यहंचकाचजैर्द्रवैः ॥
मर्दितंवालुकायंत्रेयामंसंपुटगंपचेत् ॥ ४२ ॥

शुद्ध पारा उसकी बराबर शोधी गंधक तीन दिन काच लवणके साथ खरल करके वालुकायंत्रमें एक पहर संपुट कर आंचदे ॥४२॥

रक्तागस्त्यद्रवैर्भाव्यंदिनमेकमिवद्रुतम् ॥
यथेष्टंभक्षयेच्चान्नंकामयेत्कामिनीशतम् ॥ ४३ ॥

और फिर निकालकर एकदिन लाल अगस्त्यके रसकी भावनादे, इसको सेवनकर यथेष्ट अन्न भक्षणकर सौ स्त्रीसे रमण करसकताहै ॥ ४३ ॥

पलद्वयंद्वयंशुद्धंपारदंगंधकंतथा ॥
मृतहेम्नस्तुकर्षैकंपलैकंचमृताभ्रकम् ॥ ४४ ॥

दो पल शुद्ध पारा, दोपल शुद्ध गंधक, शुद्ध सोना एक कर्ष, शुद्ध अभ्रक एक पल ॥ ४४ ॥

मृतताम्रंचतुर्निष्कंसर्वंपंचामृतैर्दिनम् ॥
रुद्रागजपुटैःपाच्यादिनैकान्तेसमुद्धरेत् ॥ ४५ ॥

फूंका हुआ तांबा चार निष्क (६४ मासे) इन सबको पंचामृतसे खरल करके ग्यारह दिन पीछे गजपुटमें रखकर फूंकदे, एक दिन की आंच देकर फिर इसको फूंकदे इसको निकालकर पीसे ॥४५॥

पिष्ट्वापंचामृतैःकुर्य्याद्वटिकांबदराकृतिम् ॥
अनंगसुन्दरीखादेद्रमेद्रामाशतत्रयम् ॥ ४६ ॥

बेरकी बराबर इसकी गोली बनावै, यह अनंगसुंदरी नामक वटी सेवन करनेसे सौ स्त्रियोंसे रमण करसकता है ॥ ४६ ॥

शाल्मलीमूलचूर्णन्तुभृंगराजस्यमूलकम् ॥
पलैकंसितयाचान्नंभक्षयेत्कामयेच्छतम् ॥ ४७ ॥

सेमल की जडकाचूर्ण भांगरेकी जड इनका चूर्णकर इसमें एक पल मिश्री डालकर खाय तो सौ स्त्रियोंसे गमन करसकताहै ॥४७॥

इति अनंगसुन्दरीवटिका ।

सूतपादंताम्रचूर्णंखल्वेपिष्टंप्रकारयेत् ॥
निःक्षिप्यकदलीकन्देकन्दलेप्यंचगोमयैः ॥ ४८ ॥

पारा चौथाई भाग और तांबा इनको ले चूर्ण कर केलेकी जड़में खरल करै; फिर इसका गोलाकर गोबरसे लपेट सुखाले ॥ ४८ ॥

शुष्कंगजपुटैःपच्यात्तथाकन्देपुनःक्षिपेत् ॥
एवंसप्तपुटैःपच्यात्कंदैःकन्दपृथक्पृथक् ॥ ४९ ॥
दत्वातदघृतंचूर्णंवस्त्रेबद्धातुपाचयेत् ॥
दोलायंत्रेचसंयुक्तंछागीदुग्धेपुनःपचेत् ॥ ५० ॥

सुखाकर गजपुटसे फूंकदे, फिर निकाल केलेकी कंदमें भावना देकर फूंकदे, इसप्रकार सात वार पृथक् पृथक् भावनादे और फिर वस्त्रकी कपरोटी लगा सुखाय फिर कपरोटी चढावे,फिर दोलायंत्र-में सिद्धकर बकरीके दूधसे पाक करै ॥ ४९ ॥ ५० ॥

गुडूच्याथशतावर्य्याचानर्य्यागोक्षुरैस्तथा ॥
गजापिप्पलिकालाज्याकदल्याकोकिलाक्षकैः ॥५१॥

सितयापाचयेदेवद्विगुणंलघुवह्निना ॥
उद्धृत्यचूर्णयेत्स्वच्छंभक्षेद्गुंजाचतुष्टयम् ॥ ५२ ॥
सितायुक्तंसदासेव्यंमहाकामेश्वरोरसः ॥
कामिनीनांसहस्रैकंक्षोभयेन्निमिषान्तरे ॥ ५३ ॥

गुडूची, शतावरी, कौंचके बीज, गोंखरू, गजपीपल, लाजा, (खील) केलाकंद, तालमखाना इन सबको बराबर ले बारीक करके इनसे दूनी मिश्रीकी चासनी कर लघु आंचसे पकावे,उपरोक्त सब औषधी उसमें डालदे और ऊपरके रसभी इसमें डालदे इस चूर्णको चार चौंटली प्रमाण भक्षण करै मिश्रीके साथ यह महाकामेश्वर रस सदा सेवन करे चाहिये तो एक क्षणमें सहस्र स्त्रियोंको क्षुभित कर सकताहै ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

गोक्षुरंवानरंबीजंगुडूचीगजपिप्पली ॥
कोकिलाक्षस्यबीजानिफलंगुणशतावरी ॥ ५४ ॥

गोखरू, कौंचके बीज, गुडूची, गजपीपल, तालमखानाके फल, शतावरी ॥ ५४ ॥

कर्कशाबीजमज्जाचसर्वतुल्यंविचूर्णयेत् ॥
चूर्णतुल्यासितायोज्यामधुनापिंडितंलिहेत् ॥
पलार्द्धमनुपानंस्यात्किंचित्पेयंगवांपयः ॥ ५५ ॥

इति महाकामेश्वररसः ॥

कर्कशाके बीज और मींगी यह सब बराबर लेकर चूर्ण करै और चूर्णके तुल्य बराबर मिश्री डालकर शहतके साथ इसकी बटी बनाकर सेवन करे आधे पलका इसका अनुपान है अर्थात् इस पर कुछ गौका दूध पीना चाहिये ॥ ५५ ॥

इति महाकामेश्वररसः ।

शुद्धसूतसमंगंधंरक्तोत्पलदलैर्द्रवैः ॥
याममेकंपुनर्गंधपूर्वादर्द्धंविनिःक्षिपेत् ॥ ५६ ॥
तद्द्रवैर्मर्दयेच्चांगपूर्वंगंधंचमर्दनम् ॥
पूर्वंद्रवैर्दिनैकंतुकाचकुप्यांनिरुध्यच ॥ ५७ ॥

शोधा पारा, शोधी गंधक, लाल कमलके दलके रसमें एक पहर-तक खरल करे और इस रसको सुखाकर वारंवार खरल करे और जब पारा और गंधक सब प्रकारसे एकरूप होजाय तब इसको ले कांचकी शीशीमें भरकर ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

दिनैकंवालुकायंत्रंपक्वमुद्धृत्यभक्षयेत् ॥
पंचगुंजासितासार्द्धंरसोयम्मदनोदयः ॥ ५८ ॥

एक दिनतक वालुकायंत्रमें चढादे, फिर उतार इसे प्रयोग करे यह मदनोदय रस पांच चौंटली प्रमाण मिश्रीके सहित खाना उचित है ॥ ५८ ॥

कोकिलाक्षस्यबीजंचसमूलीशर्करासमम् ॥
गवांक्षीरेणतत्पेयंपलार्द्धमनुपानकम् ॥ ५९ ॥
वानरीकोकिलाक्षस्यबीजंश्यामतिलंसमम् ॥
मूलंगोक्षुरमाषाभ्यांशुष्कचूर्णंप्रकल्पयेत् ॥ ६० ॥

तालमखानेके बीज और मुसली, शर्करा यह समान भागले, आध पल गौके दूधके साथ इसको पान करै तो पुष्टि होती है, यह मदनोदय रसहै कौंचकेबीज, तालमखानेके बीज और काले तिल यह समान भागले और गोखरू उरद इनको पीसकर चूर्ण करले ॥ ५९ ॥ ६० ॥

इति मदनोदयरसः ।

चूर्णन्तुल्यंमृतंचाभ्रंसर्वंतुल्यासिताभवेत् ॥
कर्षमेकंगवांक्षीरैःपेयंकामांगनायकम् ॥ ६१ ॥

इस चूर्णमें अनुमानसे मृत अभ्रक डालै इन सबको तुल्य मिश्री डालै एक कर्ष (सोलहमासे) गौके दूधसे पान करे तो स्त्रियोंको अतिप्रिय होता है ॥ ६१ ॥

तैलेनपक्कचटकंखादेद्भोजनपूर्ववत् ॥
भोजनांतंपिबेत्क्षीरंरामाकामायतेशतम् ॥ ६२ ॥

इति कामांगनायकः ॥

चटकापक्षी को तेलमें पकाय भोजनसे पहले खाय और भोजनके अन्तमें दूध पीवे तो सौ स्त्रियोंसे रमण कर सकता है यह कामांगनायकहै ॥ ६२ ॥

अश्वगंधावह्निमूलंशाल्मलीचशतावरी ॥
विदारीमुशलीकन्दंकोकिलाक्षस्यबीजकम् ॥६३॥

असगंध, चीतेकी जड़, सेमल, शतावरी, विदारीकंद, मुशली कंद, तालमखाने ॥ ६३ ॥

वानरीबीजतत्तुल्यंसुष्टुचूर्णंतुकारयेत् ॥
चूर्णतुल्यंमृतंचाभ्रंसर्वतुल्यासिताभवेत् ॥ ६४ ॥

और कौंचके बीज इनका चूर्ण करै और चूर्णके अनुसार शुद्ध अभ्रक डाले सबकी बराबर मिश्री होवे ॥ ६४ ॥

गवांक्षीरैःपिबेत्कर्षंरमयेत्कामिनीशतम् ॥
अश्वकर्कटमांसन्तुभक्षयेच्चापिबेत्पयः ॥ ६५ ॥

इन सबको एक कर्ष गौके दूधके साथ लेनेसे सौ स्त्रियोंसे रमण करसकता है अश्व और खेकडेका मांस भक्षणकर ऊपरसे दूध पीवे ६५

योगकामामृतःख्यातोबलवीर्य्यायुवर्द्धकः ॥
धात्रीफलस्यचूर्णान्तुभावयेत्तत्फलन्द्रवैः ॥ ६६ ॥

यह कामामृत नामक योग अत्यन्त बाल वीर्यका बढाने वाला है आंवलेका चूर्ण कर उसमें उसीके फलके रसकी भावना देकर सुखावे

एकविंशतिवारन्तु शोष्यंपेष्यं पुनः पुनः ॥
चूर्णपादंमृतंलोहंमध्वाज्यंशर्करान्वितम् ॥ ७७ ॥

ऐसे इक्कीस बार भावना देकर सुखावै इस चूर्णसे चौथाई लोहभस्म डाले इसमें शहत घृत मिश्री डाले ॥ ७७ ॥

पलैकंभक्षयेन्नित्यंसिताक्षीरैःपिबेदनु ॥
कामयेत्स्त्रीशतंनित्यंधात्रीलोहप्रभावतः ॥ ७८ ॥
इति धात्रीलोहम् ॥

इसको प्रतिदिन एक पल खाय मिश्री सहित ऊपर दूध पीवे इस धात्रीलोहके प्रभावसे सौ स्त्रीकी नित्य इच्छा करसकता है ७८

इति धात्रीलोह ॥

वानरीबीजचूर्णंतुनिस्तुषंमाषचूर्णितम् ॥
नारिकेलोदकैर्भाव्यंयामान्तंपेषयेत्समम् ॥ ७९ ॥

कौंचके बीजोंका चूर्ण छिलके रहित उडदोंका चूर्ण लेकर नारियलके रसकी भावना देकर एक प्रहरके उपरान्त उसको पीसले ॥ ७९ ॥

पिष्टस्यविंशद्विंशेनमृतमभ्रंनियोजयेत् ॥
तद्वत्तैर्वटिकाकार्यामध्वाज्याभ्यांतुभक्षयेत् ॥८०॥

अच्छे प्रकार उसको पीसकर शुद्ध अभ्रक उसमें डालै इस प्रकार उनकी वटिका करके शहत और घृतके साथ भक्षण करै ॥ ८० ॥

पीत्वाक्षीरंसितायुक्तंरम्यांरामांरमेच्छतम् ॥
सताम्बूलंशतामूलंमनुपानंनिरन्तरम् ॥ ८१ ॥

इसके ऊपर मिश्री डालकर दूध पीवे तो अनेक स्त्रियोंके साथ रमण कर सकता है इसके ऊपर निरंन्तर ताम्बूल भक्षण करै॥८१॥

ऊर्णनाभिभवंबीजंमधुनासहपेषयेत् ॥
तेननाभिप्रलेपेनबंधःसद्योविमुंचति ॥ ८२ ॥

मकडीको शहतके साथ इस्के नाभिपर लेप करनेसे स्त्रीसे बद्ध हुआ पुरुष शीघ्र मुक्त होता है अर्थात् मैथुनमें समर्थ होताहै॥८२ ॥

अन्तरिक्षेनसंग्राह्यंयत्नाद्वागुटिकामलम् ॥
तेनालिंगप्रलेपेनरमेद्रामाशतंनरः ॥ ८३ ॥

अन्तारिक्षसे गुटिका मलले इसका ध्वजापर लेप करे तो मनुष्य सौ स्त्रियोंसे रमण करसकता है ॥ ८३ ॥

सम्यङ्मारितमभ्रकंकटफलंकुष्ठाश्वगंधामृता
मेथीमोचरसंविदारमुशलीगोक्षूरमिक्षूरकम् ॥
रंभाकंदशतावरीह्यजमुदामाषास्तिलाधान्यकं
यष्टीनागबलाकचूरमदनंजातीफलंसैन्धवम् ॥ ८४॥

अच्छी प्रकार शोधा अभ्रक शोधा हुआ कट्फल कूठ अजमोद गिलोय मेथी मोचरस विदारीकंद मुशली गोखरू कोकिलाक्ष के बीज कंदलीकंद शतावरी अतिबला उडद तिल धनियां असगंध खरैंटी मुलहटी और नागबला कचूर मैनफल जायफल सेंधा॥८४॥

मार्गीकर्कटशृंगभृंगत्रिकटुकंजीरद्वयंचित्रकं
चातुर्जातुपुनर्नवागजकणाब्राह्मीनिशावासकम् ॥
बीजंमर्कटिशाल्मलंफलत्रिकंचूर्णसमंकल्पयेत्
चूर्णसंविजयासिताद्विगुणितामध्वाज्ययोःपिंडितम्॥८५॥

कस्तूरी काकडासिंगी भांगरा त्रिकटु दोनोंजीरे तज पत्रज इलायची दालचीनी नागकेशर पुनर्नवा गजपीपल ब्राह्मी हलदी अडूसा कौंचके बीज सेमल त्रिफला इनको बराबर लेकर चूर्ण

करै, उस चूर्णके समान भंग, दूनी मिश्रीले इसमें घृत और मधु डालकर इसकी वटिका बनाले ॥ ८५ ॥

कर्षार्द्धम्वटिकाविलेह्यमथवासेव्यंसदासर्वदा
पेयंक्षीरसितानुवीर्य्यकरणेस्तम्भेप्ययंकामिनीम्॥८६॥
वामावश्यकरंपरंचसुखदंप्रौढांगनाद्रावकं
क्षीणेपुष्टिकरंगदक्षयकरंहन्त्याशुसर्वामयम् ॥८७॥

इसकी आधे कर्षकी वटिका बनावै उसको चाटे अथवा वैसेही सेवन करै इसके ऊपर मिश्री डालकर दूध पीवे तो यह स्त्रीको स्ताम्भित कर सकताहै यह स्त्रीको वशमें करनेवाला सुखदायक प्रौढ स्त्रियोंको प्रेरणा करने वालाहै क्षीणवीर्यमें पुष्टिका करने वाला रोगक्षयकर शीघ्र सब रोगोंका नाशकहै ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

कासश्वासमहातिसारशमनंमन्दाग्निसंदीपनं
अर्शंसंग्रहणीप्रमेहनिचयंश्लेष्मातिरक्तप्रणुत् ॥
नित्यानन्दकरंविशेषकविताबाचांविलासोत्तमं
धत्तेसर्वगुणंहठात्स्ववदशाध्यानप्रधानंपुनः ॥ ८८ ॥

कास श्वास महाअतिसारका शमनकरनेवाला मन्दाग्निका प्रदीप्त करने वाला बवासिर संग्रहणी सबप्रकारके प्रमेह कफके रोग रक्तरोगको दूरकरताहै नित्य आनन्द करनेवाला विशेष कर विशेष बुद्धि आदिकेगुण देताहै सम्पूर्णगुण इसके प्रभावसे प्राप्तहोजातेहैं८८

अभ्यासेननिहंतिमृत्युपलितंकामेश्वरोवत्सरात्
सर्वेषांहितकारकोनिगदितःश्रीनित्यनाथेनसः ॥
वृद्धानांमदनोदयोदयकरःप्रौढांगनासंगमे
सिद्धोयंसमदृष्टप्रत्ययकरोराज्ञासदासेव्यताम् ॥ ८९ ॥

इति कामेश्वरः ।

और इसके अभ्याससे मृत्यु जीती है बालोंका अकालमें पकना दूर होता है यह सबका हितकारक कामेश्वररस नित्यनाथने कहा है. वृद्धोंको कामउदय करनेवाला प्रौढ अंगनाके संग में सुख देनेवाला यह सिद्ध राजोंको सदा विश्वासकर सेवन करना चाहिये ॥ ८९ ॥

इतिकामेश्वररसः ।

यत्किंचिन्मधुरस्निग्धंजीवनंबृंहणंगुरुः ॥
हर्षणंमनसश्चैवतत्सर्ववृष्यमुच्यते ॥ ९० ॥

जोकुछ वस्तु मधुर चिकनीहै वह जीवनकारक और भारीहै मन को वर्षण करनेवाली जो वस्तुमात्र है वह सब वृष्य कहातीहै ९०

नरोवीर्य्यकरान्योगान्सम्यक्शुद्धोनिरामयः ॥
आसप्ततेःप्रकुर्वीतवर्षादूर्द्ध्वंचशोडशात् ॥ ९१ ॥

वीर्यकारी पदार्थोंको शुद्ध रोगहित होकर सेवन करना चाहिये सोलह वर्षसे ऊपर ७० वर्षतक इनयोगोंको सेवन करे॥९१॥

नचवैषोडशाद्वर्षात्सप्तत्यात्परतोनचं ॥
आयुःकामोनरःस्त्रीभिःसंयोगंकर्त्तुमर्हति ॥
कल्पःसोदग्धवयसोवाजीकरणसेवितः ॥ ९२ ॥

सोलहसे न्यून और सत्तर वर्षसे अधिक योगोंको सेवन न करे आयुकी कामना करनेवाला मनुष्य स्त्रियोंसे इस प्रकार संयोग करे वाजीकरणकल्पसे शरीर पुष्ट होजाता है और इसके होनेसे उत्साह और इष्ट सिद्ध होता है ॥ ९२ ॥

आयुष्मंतोमन्दजरावयुर्वीर्य्यबलान्विताः ॥
स्थिरोपचितमांसाश्चभवंतिस्त्रीषुसंयतम् ॥
त्रिभिस्त्रिभिरहोभिश्चसेवेतप्रमदांनरः ॥ ९३ ॥

आयुवाले मन्दजनभी वीर्यबलसे युक्त होजाते हैं स्थिर आरोग्य-बलसे युक्त हो मन्दभी स्त्रीसंयुक्त होते हैं तीन दिनमें

स्त्रिको सेवन करे अर्थात् तीसरे दिन स्त्रीका संगम करना उचित है ॥ ९३ ॥

(?) सर्वेषुऋतुग्रीष्मेषुपक्षात्पक्षाद्व्रजेद्बुधः ॥
योगोनसेव्यवृतानसुशृतयिपयःशीतलंचाम्बुपीत्वा
गच्छेन्नारिंस्वरूपांस्मरवसतलांकामुकःकामलीलः ॥
सोनहृष्टप्रहृष्टोव्यपगतसुरतःसंधयेन्नित्यनित्यं
कान्तासंगादसकृदपिनरोधातुवैषम्यमेति ॥ ९६ ॥
ग्लानिकम्पोरुदौर्बल्यंधात्विन्द्रियबलक्षयः ॥
क्षयवृद्ध्युपदंशाद्यारोगाश्चातीवदुर्जयाः ॥९७॥ (?)

सबसे अधिक बलकी आवश्यकताहै ग्रीष्ममें न्यून प्रसंगकरै एक पक्षमें गमन करै जो बलवर्द्धक औषधियोंको सेवन नहीं करता वह दुर्बल यह योग न सेवन करै शीतल जलपान करके वा औटाया दूध पीकर कामीजन रूपवती स्त्रीसे गमन करै यत्नपूर्वक रातके समय प्रेम और धारतासे सेवन करै ग्रीष्मकालकी यह विधिहै अति प्रसंगवर्जित करना और जो इससे अन्यथा स्त्रियोंको सेवन करते हैं उनको ग्लानि कम्पा दुर्बलता धातु इन्द्रियोंका बल क्षय होता है.तथा क्षय अंडवृद्धि उपदंशादि दुर्जय रोग होते हैं९६॥९७

अकालमरणंचैवभजतः स्त्रियमन्यथा ॥
शोषकासज्वरार्शांसिश्वासकार्श्यातिपांडुता ॥९८॥

इसकारण अकालमें स्त्रीके भजनेसे अकालमें मरणभी होताहै शोषरोग, श्वास कास ज्वर आदि पाण्डुरोग ॥ ९८ ॥

अतिव्यवायाज्जायन्ते रोगाश्चक्षयकादयः ॥
असेवनान्मोहमदोग्रन्थिरग्नेश्चमार्दवम् ॥ ९९ ॥

अति रति करनेसे क्षयादि रोग होजाते हैं विना सेवनके मोह-ग्रंथी आदि तथा अग्निकी मृदुता होती है ॥ ९९ ॥

त्यजेप्रीत्यादिशुचितांलोकाध्यक्षंचमैथुनम् ॥
जरयाचिंतयाशुक्रंव्याधिभिःकर्मकर्षणात् ॥ ९८ ॥
क्षयंगच्छत्यनशनंस्त्रीणांचैवातिसेवनात् ॥
क्षयाद्भयादाविश्वासाच्छोकास्त्रिदोषदर्शनात्॥९९॥

मनुष्य चिन्ता मैथुनका ध्यान त्यागदे जराकी चिन्तासे वीर्य क्षीण होता है और अतिकर्मसे क्षीणता होती है भोजन न करनेसे और स्त्रीके अति सेवन करनेसे क्षय, भय और अविश्वास तथा शोक त्रिदोष देखने ॥ १०० ॥ १०१ ॥

नारीणामेवसन्नत्वादभिवातादसेवनात् ॥
रूपयौवनमौदार्यलक्षणैर्याविभूषिता ॥ ॥
यावस्याशिक्षितायाचसास्त्रीवृष्यतिमामता ॥ १०० ॥

तथा नारीके समान सुखदायक मानकर अभिघातसे असेवनसे क्षय होता है यौवनसम्पन्न और लक्षणसे विभूषित है, जो स्त्री वशीभूत शिक्षित है वह अपने वशमें होनेसे वाजीकरणके योग्य है ॥ १०० ॥

स्त्रिषुक्षयंमृगयतांवृद्धानांचरितंशताम् ॥
क्षीणजामलपशुक्राणांस्त्रीषुक्षीणाश्चयेनराः ॥ १ ॥

स्त्रीजनोंमें जिसका अल्पवीर्य होगया है क्षीण अल्पवीर्य तथा जो मनुष्य स्त्रीमें क्षीण है ॥ १ ॥

विलासिनामर्थवतांयौवनंवनशालिनाम् ॥
बह्वीनांपतिनान्नृणांयोगावाजिकराहिताः ॥ २ ॥

इतिश्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेवीर्य्यविवर्द्धनंनामषष्ठोपदेशः ॥

विलायसी अर्थ वा यौवनवाले पुरुष बहुत स्त्रीजनोंके पतिवाले पुरुषोंके वाजीकरणयोग हितकारक हैं ॥ २ ॥

इतिश्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेवीर्यवर्द्धनंनामषष्ठोपदेशः॥६॥

अथ गाढीकरणम्, तत्र भक्ष्यनिषेधः ॥

अत्यन्तमूलकटुतिक्तकषायमम्लं
क्षारंचशाकखदिरंलवणाधिकंच ॥
कामीसदैवरतिमान्वनिताभिलाषी
नोभक्षयेदितिसमस्तजनःप्रसिद्धः ॥ १ ॥

अथ वीर्यगाढीकरणम्,तत्र भक्ष्यनिषेध ।

अत्यन्त मूल, कड़वी, कसैली अम्ल, खारी, शाक, खैर अत्यन्त नमकीन वस्तु इतनी वस्तुओंको जो स्त्रीसे रतिकी अभिलाषा करनेवाला पुरुष हो वह सेवन नकरै ॥ १ ॥

प्रौढांगनायानवसूतिकायाश्लथंवरांगंनसुखाययूनाम् ॥
तस्मान्नरैर्भेषजतोविधेयागाढीक्रियामन्मथमन्दिरस्य२ ॥

प्रौढ स्त्री,नवीन प्रसूता स्त्रीका वरांग शिथिल होजानेके कारण युवा पुरुषोंको सुखदायक नहीं होता इस कारण मदनमंदिरका संकोच करना चाहिये ॥ २ ॥

निशाद्वयंपंकजकेशरञ्चनिष्पीड्यदेवद्रुमतुल्यभागम् ॥
अनेनलिप्तंमदनातपत्रंप्रयातिसंकोचमलंयुवत्याः ॥ ३ ॥

दोनों हलदी, कमल, केशर, देवदारु इनको तुल्य भागलेकर योनिमंदिरमें लेप करनेसे संकोच होकर निर्मलता होती है ॥ ३ ॥

सधातकीपुष्पफलत्रिकेणजम्बूत्वचासाररसंघृतेन ॥
लिप्त्वावराङ्गंमधुकेनतुल्यंवृद्धापिकन्येवभवेत्पुरंध्री ॥ ४॥

धायके फूल, हरड, बहेडा, आमला, जामुनकी त्वचा, लोहसार, घृत और मुलहटी इसका लेप करनेसे वृद्धा स्त्रीभी कन्याके समान होती है ॥ ४ ॥

पिकाक्षबीजेनमनोजगेहंविलिप्ययोषानियमंश्चरंति ॥
हठेनगाढंलभतेतदंगंदृष्टंनरैरेषहठेनयोगः ॥ ५ ॥

शिलारस और रुद्राक्षके बीजोंसे काममन्दिरपर लेप करनेसे साक्षात् नियम करनेसे अवश्य मदनमंदिर संकुचित हो जाताहै यह योग श्रेष्ठ है ॥ ५ ॥

मृणालपद्मंपयसासुपिष्यदृढासमंगीगुटिकाविधेया ॥
यस्यावरांगेनिहिताक्षणेनकन्यारमेत्याहसमूलदेवः ॥६॥

कमलको जड़सहित जलसे पीसनेसे और उसकी गुटिका बनाकर जिसके काममन्दिरमें क्षणमात्रको रखदे वह कन्यावत् होजातीहै ऐसा मूलदेवने कहाहै ॥ ६ ॥

इक्ष्वाकुबीजंस्नुहिसारिवेनपिष्ट्वावरांगंपरिलिप्यतेन ॥
नवप्रसूतासिहठेननारीकन्याभवेत्संयमतोनाचित्रम्॥७॥

कडवी तुम्बीके बीज सेहुंड सारिवाके साथ पीसकर योनिपर लेप करनेसे वह स्त्रीका कामभवन कन्याके समान होजाताहै ॥७॥

इन्दीवरव्याघ्रिवचोषणानांतुरंगमारासनयामिनीनाम् ॥
लेपेननार्यास्स्मरसंस्थरध्रंसंकोचयत्याशुहठेनयोगः ॥

नील कमल, कटेरी, वच, कालीमिरच, कनेर, हलदी यह लेप करनेसे तत्काल स्त्रीका काममन्दिर संकुचित होजाताहै ॥ ८ ॥

याशक्रगोपंस्वयमेवपिष्ट्वाविलिंपतिस्त्रीचवरांगदेशम् ॥
आहत्यतस्याःकठिनंचगाढंभवेन्नचक्रांतिविचारचर्या९॥

वीरबहूटीको पीसकर जो स्त्री रतिमंदिरपर लेप करतीहै

उसका मंदिर मनोहर और संकुचित होजाताहै, इसमें आश्चर्य नहीं ॥ ९ ॥

मदनकथनसारैःक्षौद्रतुल्यैर्वरांगंशिथिलितमपियस्याः पूरितंभूयएव ॥ भवतिकठिनमुच्चैःकर्कशंकामिनीना मितिनिगदतियोगंबस्तिदेवोनरेन्द्रः ॥ अश्वगन्धै र्लिपेद्योनिंगाढीकरणमुत्तमम् ॥ १० ॥

॥ इति गाढीकरणम् ॥

मैनफल, कथनसार यह बराबर शहत डालकर जो काममंदिर- में लेप करै तो वह स्थान कर्कश और कठोर होजाताहै यह योग बस्तिदेव नरेन्द्रने कहाहै वा असगंधका योनिपर लेप करै तो गाढी होती है ॥ १० ॥

इति संकोची करणम्.

अथ स्त्रीद्रावणम् ॥

यद्यप्यष्टगुणाधिकोनिगदितःकामोंगनानांसदा नोयातिद्रवतांतथापिझटितिस्त्रीयोषितांसंगमे ॥ तस्माद्भेषजसंप्रयोगविधिनासंक्षेपतोद्रावणम् किंचित्पल्लवयामिनीरजदृशांप्रीत्यापरंकामिनाम्॥११॥

यद्यपि स्त्रियोंको कामदेव आठ गुणा कहाहै तथापि संगममें द्रवीभूत नहीं होतीहै इस कारण संक्षेपसे द्रवीभूत होनेको औषधी कहतेहैं जिसके होनेस कामिनियोंको परमप्रीति प्राप्त होतीहै॥११॥

सिंदूरंचिंचाफलमक्षिकानितुल्यानियस्यामदनातपत्रे ॥ निक्षिप्यतीसांपुरुषप्रसंगात्प्रागेववीर्य्यच्युतिमातनोति १२

सिंदूर, इमलीका फल, शहत यह बराबर लेकर कामध्वजापर लेप करनेसे और स्त्रीसे रति करै तो शीघ्रही स्त्री द्रवीभूत होजातीहै ॥१२॥

व्योषंरजःक्षौद्रसमन्वितंवाक्षिप्तंयदिस्यात्स्मरयंत्रगेहे ॥
द्रुताभवेत्सासहसैवनारीदृष्टस्सदायंकिलयोगराजः॥१३॥

त्रिकुटेका चूर्ण शहतके साथ रतिस्थानमें डालनेसे स्त्री पुरुषके प्रसंगमें बहुत शीघ्र द्रवीभूत हो जाती है यह योगराज देखगयाहै १३

सुपक्वचिंचाफलघोषमूलीगुडंतथामाक्षिकतुल्यभागम् ॥
अमीभिरालिप्यपुनःसुलिंगंबीजंकरोत्याशुनितंबिनीनाम् ॥

पक्के इमलीकेफल, मूली, गुड़, शहत यह सब वस्तु कामध्वजापर लेप कर रतिकरनेसे स्त्री शीघ्र द्रवीभूत होती है ॥ १४ ॥

सटंकणंक्षौद्रमहेशबीजैःकर्पूरतुल्यैरुपालिप्यलिंगम् ॥
शतंनरोयःसविलासिनीनांरतःप्रपातंकुरुतेहठेन ॥१५॥

सठी, कचूर, पीपल, शहत, पारा, कपूर यह ध्वजापर लेपन कर जो पुरुष रति करताहै तो अवश्य स्त्री द्रवीभूत होजाती है१५

पारावतपुरीषंचमधुनासैंधवैर्युतम् ॥
लिंगस्यलेपनात्तेनस्त्रीणांद्रावणमुत्तमम् ॥ १६ ॥

कबूतरकी बीट, शहत, सेंधा यह कामध्वजापर लेपकर रति करनेसे स्त्री द्रवीभूत होजाती है ॥ १६ ॥

गोक्षुरावतयामार्गरसेनलिंगलेपनात् ॥
तत्क्षणाद्द्रवतेनारीपद्मपत्रेयथापयः ॥ १७ ॥

गोखरू अपामार्ग के रसका कामध्वजापर लेप करनेसे उसी क्षण स्त्री ऐसे द्रवीभूत होजाती है जैसे कमलपत्रपर जल ॥ १७ ॥

पिप्पलीचन्दनंचैवबृहतिपक्वांतितिडीम् ॥
एतैर्लिंगप्रलेपेनद्रवेन्नारीनसंशयः ॥ १८ ॥

पीपली, लालचंदन कटेहरी, पक्की इमली इनका ध्वजापर लेप करनेसे स्त्री द्रवीभूत होजाती है इसमें संदेह नहीं ॥ १८ ॥

अगस्तिपत्रद्रवसंयुतेनमध्वाज्यसंमिश्रितटंकणेन ॥
लिप्त्वाध्वजंयोरमतेंगनानांसशुक्रमाकर्षतिशीघ्रमेव॥ १९ ॥

अगस्तके पत्तोंके रसके सहित उसमें मधु घृत और सुहागा मिलाकर जो स्त्रियोंसे रमण करते हैं तो बहुत शीघ्र स्त्री द्रवीभूत होती हैं ॥ १९ ॥

सलोध्रधत्तूरकपिप्पलीनांक्षुद्रोषणक्षौद्रविमिश्रितानाम् ॥
लेपेनलिंगस्यकरोतिरेतःश्च्युतिंविपक्षप्रमदाजनस्य ॥२०॥

लोध धतूरा पीपली कटेहरी पीपल इसमें शहत मिलाकर लेपकर जो रति करताहै उससे स्त्री बहुत शीघ्र द्रवीभूतहोजातीहै २०

तुरगसलिलमध्येभावितंक्षेत्रमाषं
मरिचमधुकतुल्यंपिप्पलींपेषयित्वा ॥
परिरमतिविलिप्यस्वीयलिंगंनरोयः
प्रभवतिवनितानांकामकल्लोलमानः ॥२१॥

असगंधके जलके मध्यमें क्षेत्रमाष (उडद) मिरच मुलैठीकी समान पीपलको पीसकर इसको कामपताकापर लेप कर स्त्रीसे विहार करनेसे स्त्री बहुत शीघ्र द्रवीभूत होती है ॥ २१ ॥

बिल्वपुष्पंसुकर्पूरंमुंडीपुष्पंचपेषितम् ॥
लिंगलेपेनरामाणांद्रावंतिरतिसंगमे ॥ २२ ॥

बेलकाफूल कपूर यह मुंडकी पुष्पके साथ पीसकर कामध्वजा पर लेप करनेसे शीघ्र स्त्री द्रवीभूत होती है ॥ २२ ॥

बृहतीफलमूलानिपिप्पल्योमरिचानिच ॥
मधुरोचनयासार्द्धंलिंगलेपेद्रवंतिताः ॥ २३ ॥

कटेहरीके फल और जड़ पीपल काली मिर्च शहत गोरोचन यह मिलाय कामध्वजपर लेपकर रमण करनेसे स्त्री द्रवीभूतहोतीहै २३

क्षौद्रगंधकलेपेनाशिलायुक्तेनतत्फलम् ॥
उपहारपशोरक्तंगृह्णीयादन्तरिक्षतः ॥ २४ ॥

तथा शहत गंधक मनशिलके लेपसेभी कार्य सिद्ध होताहै भेडके पशुका रक्त अन्तारिक्षसे ग्रहणकरै ॥ २४ ॥

तच्छुष्कंचूर्णितंस्थाप्यंपुष्पेरक्ताश्वमारजे ॥
तत्पुष्पंधारयेद्वस्त्रेतर्ज्जन्यंगुष्ठयोगतः ॥ २५ ॥

उसको सुखाय चूर्ण कर लाल कनेरके फूलमें धारण करै तर्जनी (अँगूठेके निकटकी अँगूली) और अँगूठे से उसको धारण करै ॥ २५ ॥

आवर्त्यसंमुखेस्त्रीणांदृष्टमात्रेद्रवंतिताः ॥
जम्बीरफलमध्येतुमूलंवृश्चिककंटकम् ॥ २६ ॥

स्त्रीके सन्मुख होतेही वह अवश्य द्रवीभूत होजातीहै जम्भीरी नींबूके बीचमें श्वेतपुनर्नवाकी जड रखकर ॥ २६ ॥

क्षिप्त्वाबध्वास्त्रियैदद्याद्घ्राणमात्रेद्रवन्तिताः ॥
आहरेद्वामजंघांतुटिट्टिभस्यतुदक्षिणैः ॥ २७ ॥

बांधकर स्त्रीको दे तो सूंघनेमात्रसे द्रवित होती है टिट्टिभकी बांईजंघा लाकर उसको शुद्ध करके फिर ॥ २७ ॥

तन्मध्येप्रक्षिपेद्भूर्ज्जपत्रमोंकारलेपितम् ॥
रक्ताश्वमारपुष्पेनमुखंतस्यानिशोधयेत् ॥ २८ ॥

उसके बीचमें ओंकार लिख भोजपत्र डाल चारोंओर लेपन कर रक्खै और लाल कनेरके फूलसे उसका मुख बंद करदे ॥ २८ ॥

कर्णोपरिस्थितंतेनदृष्ट्वास्त्रीद्रवतिध्रुवम् ॥

जलेनलांगलीमूलंपिष्ट्वाहस्तेप्रलेपयेत् ॥ २९ ॥

उसे कानपर रक्खे देखतेही स्त्री द्रवीभूत होजातीहै कलिहारीकी जड़को जलसे पीसकर हाथमें लेप करनेसे ॥ २९ ॥

हस्तेनस्त्रीकरस्पृष्टेद्रवत्यग्नौघृतंयथा ॥ ३० ॥

हाथसे छूतेही इस प्रकार स्त्री द्रवीभूत होजातीहै जैसे अग्निसे घृत ॥ ३० ॥

मरिचकनकबीजैःपिप्पलीलोध्रयुक्तैर्विमलमधुविमिश्रैर्मानवोलिप्तलिंगम् ॥ स्मरतिस्मरविलासेकष्टसाध्यंचनारीसमुचितरतरागांसंविदध्यादवश्यम् ॥ ३१ ॥

कालीमिर्च धतूरेके बीज पीपल लोध यह सब पीस शहतमें मिलाकर कामध्वजपर लेप करनेसे रतियुद्धमें कठिन स्त्रीभी अवश्य पराजित होजातीहै ॥ ३१ ॥

सर्वेषांद्रवयोगानांमंत्रराजाशिवोदितम् ॥
जपेदष्टोत्तरशतंतत्रयोगस्यसिद्धये ॥ ३२ ॥

इन सब द्रवीभूत होनेके योगोंका एक मंत्र शिवजीने कहाहै जिससे यह योग सिद्ध होते हैं इस योगकी सिद्धिके निमित्त एकसौ आठ मंत्र जपना चाहिये ॥ ३२ ॥

ॐनमोभगवतेरुद्रायउड्डामरेस्वण्यद्रावय २
स्त्रीणांमदंपातय २ स्वाहा । ठः । ठः ।

इति द्रावणम् ।

ओंनमो भगवते रुद्राय उड्डामरे स्वण्य द्रावय २ स्त्रीणां मदं पातय २ स्वाहा ठः । ठः ।

इतिद्रावणम् ।

अथलिंगस्थूलीकरणम् । (दृढीकरणम्)

सकुष्टमातंगबलाबलानांवचाश्वगंधागजापिप्पलीनाम् ॥
तुरंगशत्रोर्नवनीतयोगाल्लेपेनलिंगंमुसलत्वमेति ॥ ३३ ॥

कूट पीपल दोनों खरेटी वच असगंधा गजपीपल कनेर इनका मक्खनके साथ लेप करनेसे ध्वजा मूसलके समान कठोर होती है ॥ ३३ ॥

दिनेदिनेयदाह्येवंसुधीःकुर्य्यात्प्रयत्नतः ॥
तदास्थूलंभवेल्लिंगंनिश्चितंनात्रसंशयः ॥ ३४ ॥

जो बुद्धिमान् दिन दिन यत्न पूर्वक यह प्रयोग करता है तब उसकी ध्वजा स्थूल होजाती है इसमें सन्देह नहीं ॥ ३४ ॥

सलोध्रकाश्मीरतुरङ्गगंधामातंगगंधापरिपाचितेन॥तैले
नवृद्धिंखलुयातिलिङ्गंवरांगनालोकमनोहरन्तत् ॥३५॥

लोध केशर असगंध पीपल शालपर्णी तेलमें इनको पकाकर लेप करनेसे ध्वजाकी वृद्धि होती है जो स्त्रीजनोंको मनोहरहै॥३५॥

भल्लातकास्थिजलशूकमथाश्वपत्र
मंतर्विदाह्यमतिमान्सहसैंधवेन ॥
एतद्विरूढबृहतीफलतोयपिष्ट
मालेपनम्माहिषविद्धिमलीकृतेङ्गे ॥
स्थूलंमहत्तरतुरंगमतुल्यमाशु
शेफःकरोत्यभिमतंनहिसंशयोस्ति ॥
सूतकंमरिचंकुष्ठंनागरंकंटकारिका ॥
अश्वगंधातिलंक्षौद्रंसैन्धवंश्वेतसर्षपाः ॥ ३६ ॥

भिलावेंकी मींगी शेवाल इन दोनोंको जलाकर सेंधानिमक मिलाय और बडी कटेहरीके साथ जलसे पीस करके आलेपन करै तो महिष की सदृशध्वजा होती है और तुरंगके समान ध्वजा होजाती है और दृढ होतीहै इसमें सन्देह नहीं पारा काली मिर्च कूठ सोंठ कटेहरी असगंध तिल शहत सेंधा श्वेतसरसों ॥ ३६ ॥

अपामार्गोयवामाषाःपिप्पलीपेषयेज्जलैः ॥
लेपोयंकुरुतेवृद्धिंलिंगस्यदृढतांध्रुवम् ॥ ३७ ॥

त्रिरचिटा जौ उडद पीपल इनको जलके साथ पीसकर लेप करनेसे ध्वजाकी वृद्धि और दृढता होती है ॥ ३७॥

मासमात्रंसदालिख्वामर्दयेच्चदिवानिशम् ॥
वराहवसयालिंगंमधुनासहलेपयेत् ॥ ३८ ॥

एक महीने इसका लेप और मालिश करनेसे तथा शूकरकी चरबी शहत से लेपन करनेसे ॥ ३८ ॥

स्तनंलिंगंकर्षपाणिवर्द्धनंभक्षणादिकम् ॥
टंकणंचमहाराष्ट्रीजम्बूशूकरतैलकम् ॥ ३९ ॥

दृढता होती है और यही स्तनवृद्धिकाभी करने वाला है तथा सुहागा जल पीपल शूकरका तेल ॥ ३९ ॥

मधुनासहलेपेनलिंगस्यान्मुसलोपमम् ॥
महिषीनवनीतंचमुशलीचूर्णमिश्रितम् ॥ ४० ॥

यह शहतके साथ लेपन करनेसे मूसलके समान होजाती है भैंसका मक्खन मूशलीका चूर्ण मिलाकर ॥ ४० ॥

धान्यराशिस्थितंभाण्डेसप्ताहाच्चसमुद्धरेत् ॥
तेनप्रलेपयेल्लिंगंमासैकाद्वर्द्धतेध्रुवम् ॥ ४१ ॥

धान्योंके साथ बर्तनमें रखकर सात दिनमें उघारकर उसको लींगपर लेप करनेसे एकमहीनेमें अवश्य ध्वजाकी वृद्धि होती है४१

मुशलीशीतलाभक्ष्यालिंगवृद्धिकरीमता ॥
मारणोत्थंकृमिंचैवकंटकारीफलंजलैः ॥ ४२ ॥

मुशली आरामशीतला खानेसे लिंगकी वृद्धि करनेवाली है धवूरा लाख कृमिकटेहरीके फल जलसे पीसकर ॥ ४२ ॥

पिष्ट्वालिंगंप्रलेपेनस्थूलंभवतिनिश्चितम् ॥
तद्वच्चमुशलीसाज्यालेपाल्लिंगस्यदार्ढ्यकृत् ॥ ४३ ॥

लेप करनेसे कामध्वजा अवश्य स्थूल होजाती है इसी प्रकार मुशली घृतका लेप ध्वजाको दृढ करता है ॥ ४३ ॥

पिप्पलीलवणंक्षीरंसितालेपापिदीर्घकृत् ॥
मांसीवाक्षफलंकुष्ठमश्वगंधाशतावरी ॥ ४४ ॥

पीपल सेंधालवण दूध मिश्रीके लेप करनेसे ध्वजा दृढ होती है ॥ ४४ ॥

तैलेपक्त्वाप्रलेपेनलिंगस्थौल्यकरंध्रुवम् ॥
रोहितामत्स्यपित्तन्तुजलौकालांगलीसह ॥ ४५ ॥
अनेनमर्दयेल्लिंगंवर्द्धतेमुसलोपमम् ॥
सूतकोह्यश्वगंधाचरजनीगजपिप्पली ॥ ४६ ॥

अथवा जटामांसी बहेडा कूठ असगंध शतावरी तेलमें पकाकर लेप करनेसे ध्वजा स्थूल होजाती है इसमें सन्देह नहीं रोह-मछलीका पित्ता जोंक और कलिहारीके साथ ध्वजकी जडमें मर्दन करनेसे मूसलकी समान वृद्धि को प्राप्त होती है पारा असगंध हलदी गजपीपल ॥४५॥४६॥

सितायुक्तंजलैःपिष्ट्वामासैकंलेपयेत्तदा ॥
अद्भुतम्वर्द्धयेल्लिंगंयोगिकर्णस्तनानिच ॥ ४७ ॥

---

१ वमनोत्थवा पाठः ।

मिश्री यह सब वस्तु जलके साथ पीसकर एक महीने पर्यन्त लेप करनेसे ध्वजा अद्भुत प्रकार से बढती है जैसे योगीके कान और स्तन बढते है ॥ ४७ ॥

योमर्कटीमूलमजाप्रलेपेव्यालुप्तकेशःशयनेनिशायाम् ॥
पिष्ट्वाध्वजंलिम्पतितस्यकामंभवेदयोदंडमिवक्षणेन ॥४८॥

जौ कौंचकी जड़को अजा औषधीके साथ पीसकर शयनके समय रात्रिमें लेप करता है उसकी मदनध्वज लोहदण्डके समान हो जाती है ॥ ४८ ।

हयाविपत्नीनवनीतमध्येवचाबलाभागरसामयैश्च ॥
लेपेनलिंगंसहसैवपुंसांलोहोपमंस्यादितिदृष्टमेतत् ॥४९॥

जो मनुष्य भैंसके मक्खनमें बच खिरैंटी और पारा मिलाय लेपन करे तो तत्काल यह लेप करनेसे मदनध्वज लोहदण्डके समान होजाती है यह देखाहुआ योग है ॥ ४९ ॥

कृष्णापराजितामूलंग्राह्यंखदिरकीलकैः ॥
कृष्णसूत्रैःकटिबद्धाऊर्द्धलिंगंकरोतिच ॥ ५० ॥

कृष्ण विष्णुकान्ताकी जड़ खदिरकी कीलकसे ग्रहणकर काले तागेसे कमरमें बांधे तो रतिध्वजको दृढ करती है ॥ ५० ॥

देवदालीरसंधात्रीक्षीरपानास्थिरोध्वजः॥
इत्येवंसर्वयोगानांमंत्रराजंशिवोदितम् ॥ ५१ ॥
अनेनमंत्रितंकृत्वामासैकंलेपयेत्ततः ॥
ॐनमोभगवतेउड्डामहेश्वरायसवरप्रसवरकुरुर
स्वाहाठःठःदृढीकरणंतुबिनामंत्रेणकार्य्यम् ॥

वन्दालीकारस आमला और दूधपानसे ध्वजा स्थिर होती है इस प्रकार इन सबयोगोंमें शिवजीका कहाहुआ मंत्रराज है इस

मंत्रसे अभिमंत्रितकर एक मासपर्यन्त लेपनकरै ॥ ५१ ॥

ओंनमो भगवते उड्डामहेश्वराय सब सब प्रसव प्रसव कुरु कुरु स्वाहा ठःठः दृढीकरना विना मंत्रकेही करे ॥

इति लिंगस्थूलीकरणम् । (दृढीकरणम्)

अथस्तनवर्द्धनं स्तनोत्थापनंच ॥

मातङ्गकृष्णामथवाजगंधावचायुतापर्युषिताम्बुमिश्रा ॥
हयाविपत्नीनवनीतयोगात्कुर्वन्तिपीनेकुचकुम्भयुग्मम् ५२
तैलम्वचादाडिमकल्कसिद्धंसिद्धार्थजंलेपनतोनितान्तम् ॥
नारीकुचौचारुतरौचपीनौकुर्य्यादसौयोगवरःप्रदिष्टः॥५३॥

अथ स्तनवर्धन उत्थापनकरना ।

पीपल कालीमिर्चे असगंध बचा इन सबको मिलाकर भैंसके मक्खनके साथ कुचोंमें लगानेसे शीघ्र दोनोंस्तनोंको कुम्भके समान दृढकरते हैं वच दाडिम इन को सरसोंके तेलमें पकाय इनका लेप करनेसे स्त्रीकेस्तन अत्यन्त सुन्दर पुष्ट यह प्रयोग करता है ॥५२॥५३॥

श्रीपर्णिकायारसकन्तुसिद्धंतिलोद्भवंतैलवरंप्रदिष्टः ॥
चूर्णेनवक्षोजयुगेप्रदेयंप्रयातिवृद्धिंपतितेपिनार्य्याः ॥५४

श्रीपर्णी (कम्भारी) के रसमें सिद्धकर तेल बनाले इसको दोनों उरोजपर लगानेसे गिरेहुए भी स्त्रीके कुच उठि आतेहैं ॥ ५४ ॥

प्रथमकुसुमकालेनस्ययोगेनपीतं
सनियममथवास्यात्तंदुलांभोयुवत्याः ॥
कुचयुगलसपीनंक्कापिनोयातिपातं
कथितइतिपुरैवंचक्रदत्तेनयोगः ॥ ५५ ॥

प्रथम कुश और महाकाल औषधी योगसे नियमपूर्वक पान करनेसे अथवा चावलोंका जल सेवन करनेसे जो किसीप्रकारसे भी कुच पुष्ट न हों तो इस्से होजातेहैं यह योग चक्रदत्तने कहाहै ॥ ५५ ॥

शालितंदुलोदककर्षमात्रंवामदक्षिणनासाभ्यां
नस्यंदेयं॥मुंडीचूर्णंदशपलंतोयैश्चातुर्गुणैःपचेत् ॥
अर्द्धशेषंहरेत्क्वाथंक्वाथार्द्धंतिलतैलकम् ॥ ५६ ॥

शालितंदुलका जल एक कर्ष बांई दाहिनी नासिकाके छिद्रसे नास लेनेसे और दशपल मुण्डीका चूर्ण लेकर उसे चौगुने जलमें पकावे जब आधा रहजाय तब इसमें तिलका तेल डालदे ॥५६॥

तैलशेषंपचेत्तेननस्यंपानंचकारयेत् ॥
पतितंयौवनंस्त्रीणांमासादुत्तिष्ठतेध्रुवम् ॥ ५७ ॥

जब क्वाथमात्र जलजाय तेलमात्र रहजाय तब उसको नस्य और पानके काममें लावे, इससे गिरेहुए स्त्रीके कुच फिर उठि आतेहैं५७

श्यामानिशाबलालाजालवणंक्वाथयेत्समम् ॥
तोयेचतुर्गुणंपाच्यंपादशेषंसमाहरेत् ॥ ५८ ॥

प्रियंगु हलदी खिरेंटी खील सेंधा इनका क्वाथ करके चौगुने पानीमें पकावे जब चौथाई रहजाय ॥ ५८ ॥

तिलतैलंक्वाथपादंतैलार्द्धंमहिषीघृतम् ॥
स्नेहशेषंपचेत्तैलंनस्येनमासमात्रतः ॥ ५९ ॥

तिलका तेल उसमें डालकर क्वाथ करै तेलसे आधा भैंसका घी ले और जब रस जल जाय तेलमात्र रहजाय तब एक मासेभर नस्य लेय ॥ ५९ ॥

बालास्त्रीवृद्धनारीणांयौवनंकुरुतेद्भुतम् ॥ ६० ॥

तौ बाला स्त्री और वृद्ध स्त्रियोंके योवन अद्भुत होजातेहैं ॥६०॥

एरण्डतैलंशकुलस्यतैलंतथामाबिल्वस्यरसंगृहीत्वा ॥
संमर्दयेदूर्ध्वग्रहहस्तकेनतदास्तनंस्यात्पतितंनचैवम् ६१

एरण्डकातेल शीलमत्स्यका तेल और बेलकारस ग्रहणकरके यह तेल कुचौंपर मर्दन करने से नवीन होजातेहैं ॥ ६१ ॥

श्रीपर्णीरसकर्कांभ्यांतैलंसिद्धंतिलोद्भवम् ॥
तत्तैलंतिलकेनापिस्तनस्योपरिदापयेत् ॥६२॥

श्रीपर्णी (गंभारी) का रस कर्कट वृक्ष और तिलकातेल लेकर पकावै और उसे स्तनपर लगावै ॥ ६२ ॥

काठिन्यांवृद्धतांयातिपतितांचोत्थिताम्भवेत् ॥
वृद्धावाकन्यकावापिपातौयस्याःपयोधरौ ॥ ६३ ॥

तौ स्तन कठिन और वृद्धिको प्राप्त होतेहैं और पतित हुए उठि आते हैं, जिस वृद्ध वा कन्याके पयोधर पतित होजांय वह ॥ ६३ ॥

श्वेतोद्भस्यकुसुमंकृष्णधेनुपयसिनित्यंपिष्टास्तनयुगेदे
याभवेत्पीनपयोधरा ॥ ६४ ॥

श्वेत मोथे के फूल काली गौके दूधमें पीसकर दोनों स्तनोंपर लेप करनेसे पुष्ट होजाते हैं ॥ ६४ ॥

वचाश्वगन्धासंयुक्ताअश्वारिपत्रकंतथा ॥ गजपिप्प
लिकायुक्तंसंघोभिन्नजलेनच ॥ पेषयित्वाविधानेनले
पयेत्स्तनमण्डले ॥ ६५ ॥

वच असगन्ध असगंधके पत्ते गजपीपलके सहित जलसे पीसकर स्तनमण्डलमें लेप करनेसे ॥ ६५ ॥

नयतेतुकदाचिद्वैताम्रतालफलंतथा ॥
गांमरिपत्ररसश्चैवतत्समंतिलतैलकम् ॥ ६६ ॥

समानंजलभागंचदत्वापाकंसमाचरेत् ॥
तैलशेषंपरिज्ञायवस्त्रेणशोधयेत्कुचौ ॥ ६७ ॥
दिवाप्रलेपनादेवलौहत्वंजायतेचिरात् ॥ ६८ ॥
इति स्तनवर्द्धनं स्तनोत्थापनञ्च ।

स्तन आम्रफलके समान उन्नत होजातेहैं गंभारीके पत्र कारस तिलकातेल इनकी बराबर जलदेकर पाक करे जब तेलमात्र शेष रहजाय तब स्तनपर लेप करनेसे स्तन लोहकी समान कठोर होजाते हैं ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

अथ योनिसंस्कारः ।

प्रक्षालयेन्निम्बकषायतोयैर्निशाज्यकृष्णागुरुगुग्गुलानाम्॥
धूपेनयोनिंनिशिधूपयित्वानारीप्रमोदंविदधातिभर्तुः ६९
नीमके काढेसे योनिको धोना चाहिये अथवा नीम हलदी घृत कालाअगुरु गूगल इनकी धूप योनिमें देनेसे स्त्री प्रमोदको प्राप्त होतीहै ॥ ६९ ॥

प्रक्षाल्यनिम्बस्यजलेनभूयस्तस्यैववल्केनविलेपयेच्च ॥
त्यजेयुरत्याश्चिरकालभूतंगंधम्वरांगस्यनसंशयोत्र७०॥
इति योनिसंस्कारः ।

फिर नीमके जलसे प्रक्षालन करके और नीमके छालका लेप करनेसे चिरकाल योनिकी दुर्गन्ध नष्टहोतीहै इसमें सन्देह नहीं७०॥

अथ लोमशातनविधि ।

पलाशभस्मान्विततालचूर्णैरम्भांबुमिश्रैरुपलिप्यभूयः॥
कन्दर्पगेहंमृगलोचनानांरोमाणिरोहंतिकदापिनैव ७१॥
छाकको भस्म हरतालकी भस्म यह दोनों जलसे पीस लेप करनेसे स्त्रियोंके मदनमंदिरके रोम कदाचित्भी नहीं जमतेहैं ॥ ७१ ॥

एकःप्रदेयोहरितालभागःपंचप्रदेयोजलजस्यभागः॥
सवस्तरोर्भस्मनएवपंचप्रोक्ताश्चभागाःकदलीजलार्द्राः॥

हरिताल एकभाग शंखकी भस्म पांचभाग वसतरुकी भस्म पांच भाग यह केलेके जलमें सानकर पात्रमें सात दिन लेप करनेसे मदन स्थानमें कभी रोम नहीं जमतेहैं ॥ ७२ ॥

संसिद्धपात्रेषुसप्ताहमित्थंकृत्वास्मरागारविलेपनंच ॥
रोमाणिसर्वाणिविलासिनीनांपुनर्नरोहंतिकदाचिदेव ७३
रम्भाजलेसप्तदिनंविभाव्यभस्मानिकम्बोर्मसृणानिपश्चात्
नलेनयुक्तानिविलेपनेनरोमाणिनिर्मूलयतिक्षणेन ॥ ७४ ॥

केलेके जलमें सात दिनतक शंखकी भस्मसे भावना दे और नल तृणसे युक्त लेप करनेसे फिर कभी नहीं जमते और क्षण मात्रमें निर्मूल होजातेहैं ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

तालकंशंखचूर्णन्तुमंजिष्ठाभस्मकिंशुकम् ॥
समभागप्रलेपेनरोमखंडनमुत्तमम् ॥ ७५ ॥

हरताल शंखचूर्ण मजीठ टेसूकी भस्म इनको समान भाग लेकर लेप करनेसे रोम दूर होजातेहैं ॥ ७५ ॥

तालकंगंधचूर्णंतुपिष्ट्वाचक्षारतोयकैः ॥
तेनलिप्त्वाकचाघर्मेस्थितेगच्छन्तितत्क्षणात् ॥ ७६

हरताल गंधकका चूर्ण पीसकर क्षार जलके साथ लेपकर धूपमें स्थित होनेसे बाल उखड़ जातेहैं ॥ ७६ ॥

पूगवृक्षस्यपत्रोत्थद्रवैःपिष्ट्वातुगंधकम् ॥
तेनलिप्त्वास्थितेघर्मेरोमखण्डनमुत्तमम् ॥ ७७ ॥

सुपारीके पेडके पत्तों के रसमें गंधक पीसकर लेपकर धूपमें स्थित होनेसे रोम उड जाते हैं ॥ ७७ ॥

नराणांखण्डकेशानांछुच्छुन्दर्य्याश्चतैलतः ॥
ननिर्यान्तिपुनर्ल्लेपात्रिसप्ताहेकृतेसति ॥ ७८ ॥

जिनके खण्डकेश होगये हो छछूंदर के तेलका लेप करनेसे तीन सप्ताहतक लगानेसे बाल नहीं जमते हैं ॥ ७८ ॥

कुसुंभतैलतप्तानांसप्तवारंतथागुणम् ॥
सद्योजातस्यमाहिषीवत्सस्यमलमाहरेत् ॥ ७९ ॥

तथा तपाकर कुसुम्भके तेलको तप्तकरके लगानेसेभी यही गुणहै तत्कालमें उत्पन्न हुए भैंसके बच्चेका गोबर लावे ॥ ७९ ॥

तल्लिप्त्वावेष्टयेद्रात्रौकेशान्वातारिपात्रतः ॥
प्रातस्तप्तोदकैःक्षाल्याःपतंत्यामूलतोत्थिताः ८० ॥

रात्रिमें इसको बालोंपर एरण्डके पत्तेमें लगाय लेप करै फिर गरम पानीसे धोनेसे बाल जड़से गिरजातेहैं ॥ ८० ॥

पिपीलिकानांकृष्णानांस्थूलानांभूगृहंहरेत् ॥
छायाशुष्कंच तच्चूर्णंपंचाहंलेपयेत्सदा ॥ ८१ ॥

बड़ीकाली चैंटीके रहनेके स्थानकी मट्टी लाय छायामें सुखावै उसका चूर्ण करले फिर पांचदिन लेप करै ॥ ८१ ॥

पूर्ववत्खण्डकेशानां न पुनारोहणंभवेत् ॥
शंखतालंयवंगुञ्जांकांजिकैःपेषयेत्सदा ॥ ८२ ॥

तौ पूर्व में खण्डहुए बाल फिर नहीं जमते हैं शंखकी भस्म हरताल इन्द्रजौ गुंजा यह कांजी के साथ सदापीसै ॥ ८२ ॥

लेपात्पतंतिरोमाणिपक्वपत्रमिवद्रुमात् ॥
लेपनाद्धन्तिकेशांश्चकटुतैलैर्मनाशिला ॥ ८३ ॥

उसके लेपसे रोम ऐसे गिरजातेहैं जैसे वृक्ष से पक्के फल तथा

बालोंपर कडवातेल और मनशिलाका लेप करनेसे बाल गिरजाते हैं ॥ ८३ ॥

इति लोमशातनम् ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने गाढीकरणादिलोमशातनंनाम सप्तमोपदेशः ॥ ७ ॥

अथषंढीकारणं-

तत्साम्यंच ॥

नरोमूत्रयतेयत्रकृष्णंतत्रतुवृश्चिकम् ॥
निखन्याज्जायतेषंढंउद्धृतेतुपुनःसुखी ॥ १ ॥

अथ षंढी (नपुंसक) करणम् और तिसका प्रतिहार । जहां मनुष्य मूत्र करता है वहां काला बिच्छू गाडदेनेसे नपुंसक होजाता है. फिर उखाड़नेसे सुखी होता है ॥ १ ॥

अजामूत्रेणसंभाव्यंनिशिषड्बिन्दुचूर्णितम् ॥
खानपानप्रयोगेणषंढत्वंजायतेनृणाम् ॥ २ ॥

बकरीके मूत्रमें भावना देकर रात्रिमें षड्बिन्दुका चूर्ण कर खान पानमें प्रयोग करनेसे मनुष्यको नपुंसकता होतीहै ॥ २ ॥

तिलगोक्षुरयोश्चूर्णंछागदुग्धेनपाचितम् ॥
शीतलंमधुनायुक्तंपिबेत्षंढत्वशांतये ॥ ३ ॥

तिल गोखरूका चूर्ण बकरीके दूधमें पकाय शीतलकर शहतके साथ पियो तो षंढ़पन शान्त होजाता है ॥ ३ ॥

जलौकादुग्धचूर्णन्तुनवनीतेनभक्षितम् ॥
यावज्जीवंनसन्देहःषंढत्वमाप्नुयान्नरः ॥ ४ ॥

जलौका और कतृणका चूर्ण मक्खनके साथ भक्षण करनेसे मनुष्य जीवपर्यन्त षंढ़ होजाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ४ ॥

धत्तूरपुष्पभक्षेणपुनःसंपद्यतेसुखम् ॥

फिर धतूरेके फूलोंके भक्षण करनेसे सुखी होता है ॥ ५ ॥

योगोविषाणम्पतितंचघृष्ट्वालिंपेद्रतौस्वस्यमनोभवास्त्रे ॥
एकांतकंतत्कुरुतेन्यपत्न्यानोत्तिष्ठतेतामपहायपत्नीम् ६॥

गिरेहुए गोके सींगको घिसकर रतिकरनेके समय कामास्त्रपर लेप करनेसे फिर वह स्त्री उसे छोड़कर कभी रति नहीं करती है ॥ ६ ॥

अत्युन्नतंचापरगोविषाणंघृष्ट्वापुनस्तेनविलिप्यलिङ्गम्॥
प्रयातिभूयःप्रकृतंतदंगंदृष्टोनरैरेषसदाप्रयोगः ॥ ७ ॥

फिर दूसरे उससे बड़े सींगको घिसकर काम अस्त्रपर लेप करनेसे फिर अपनी प्रकृतिको प्राप्त होता है यह प्रयोग देखा हुआ है॥७॥

निशाविचूर्णघनसारचूर्णसमीकृतम्भस्तपयोवियुक्तम् ॥
भक्तंनिपीतंकुरुतेनिकामंनरस्यषंढत्वमितिप्रसिद्धम् ८॥

हलदीका चूर्ण कपूरका चूर्ण यह सब समान भाग लेकर दूध से पान करने मनुष्य को षंढ अर्थात् हीजकर देता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ ८ ॥

तिलस्यदंडाविटपस्यचूर्णप्रसाधिरंभापयसोर्द्धमासम् ॥
सपाचितंशर्करयान्वितंचपीत्वाहरेत्षढकतामयस्य ॥

तिलमें नागबलाका चूर्ण करके केलेके रसमें भावितकरे यह आधे महीनेतक शरकरा साथ पीनेसें षंढपन दूर होजाता है॥९॥

इति षंढकरणंतत्साम्यश्च ॥

अथयोनिबंधनंमोक्षणंच ॥

पूर्वोत्थंलांगलीमूलंवामपादस्यपांशुकम् ॥
एकत्रकारयेद्धीमान्द्वयेनशुक्तिसंपुटे ॥ १० ॥

पूर्वमें उगी हुई लांगली की जड़को और वामचरण की धूरिको एकत्र कर बुद्धिमान् इन दोनोंसे दो सीपीको लेपित करै ॥ १० ॥

लेपयेद्भगबंधस्यात्तक्रैःप्रक्षाल्यमुच्यते ॥
श्मशानचैलमादायवामपादस्यपांशुकम् ॥ ११ ॥

इसके लेप करनेसे योनि बंधन होतीहै फिर मट्ठेसे प्रक्षालन करनेसे छूटतीहै श्मशानमेंसे वस्त्र लावै उसमें वामचरणके नीचे की धूरि मिलाकर ॥ ११ ॥

संध्यायांबंधयेत्तेनपोटलीभगबंधनीम् ॥
ॐअमुकीभगबध्नामिविस्फुररंध्रशोणितम् ॥ १२ ॥

संध्याके समय पोटली बांधनेसे योनिका बन्धन होताहै " अमुकी भगबध्नामि विस्फुरं रन्ध्रशोणितम् " इत्यादि ऊपर लिखा मंत्र पढै कि ॥ १२ ॥

मयाकृतंभगबंधनास्तिलोकचिकित्सकाः ॥
पतिर्वापतिमंत्रोवायेचान्येभगमर्द्दकाः ॥
सर्वेवैविमुखंयांतिवर्जयेत्कामुकैस्तथा ॥ १३ ॥

मैंने अमुक स्त्रीकी योनिबंधन कीहै इससे रन्ध शोणित स्फुरना रहित होगा इस मेरे किये बंधनका लोकमें कोई चिकित्सा करनेवाला नहीं है, पार्वतीपतिके मंत्र वा और भगमर्दक चिकित्सा आदि ये सम्पूर्ण विमुख होजांयगे, इसकारण कामुक इसमें मौन हैं ॥ १३ ॥

ॐचिठिचिठिखचिटिखचिटिठःठःप्रयोगद्वयस्या
यंमंत्रः॥वचैलांचंदनंक्षीरैःप्रक्षाल्यामर्दयेद्भगम् ॥
यंत्रमंत्रादितंत्रेणयत्किंचिच्छत्रुणाकृतम् ॥ १४ ॥

"ॐ चिठिचिठि खचिटि २ ठःठः" दोनों प्रयोगका यह मंत्र है॥ वच इलायची चन्दन इनको पीस दूधमें मिलाय योनिको मर्दन करै तो यंत्र मंत्र तंत्र जो कुछ शत्रुने किया है ॥ १४ ॥

तत्तस्यैवभवेद्येनसिद्धिमंत्रस्सउच्यते ॥
सप्ताभिर्मंत्रितंतोयंशुद्धम्पूतंपिबेत्तुयः ॥
तस्यशत्रुकृतोदोषइशत्रुवेश्मभविष्यति ॥ १५ ॥

वह सब इस सिद्ध प्रयोगको मंत्र सहित करनेसे दूर होता है, सात वार मंत्रको अभिमंत्रित कर जो जल पियै उसके शत्रुका किया दोष शत्रुकेही मंदिरमें होगा ॥ १५ ॥

ॐवज्रमुष्टिवज्रकीबाडीवज्रबाँधौदशद्वार ॥
वज्रपाणीपिबेच्चांगेडाकिनीडापिनीरक्षौवसर्वांगेमं
त्रजयोशत्रुभयौडाकिनीवावोंजानुवायौकालिकालि
शामनतेंब्रह्माकीधीशुसाशुडाकिनीमिलिकरिवरेयो
मोरोजीडुभातेकरेतीपत्नेपानीकरेगुआकरेयानेकरे
सूतेकरेपरिहासेकरेनयनकटाक्षिकरेआपोनहाथेपर
हाथेजियतिसंचारेकिलनीपोतनीअनिन्तुषवरीकरेए
तेविज्ञानअहिननगेयोमोहिकरेत्साराकुठितित्स्केम
सरूपद्रे ॥

ॐमोक्षिद्धिगुरूरपायस्वीलिंगमहादेवकीआज्ञा ॥
एलाफलंवासवगोपचूर्णंगुप्तंक्षिपेद्योषिदुपस्थमार्गे ॥
तस्यैवलिंगस्यवरप्रवेशंस्यात्तत्रनान्यस्यकदाचिदेव १६

"ॐवज्र मुष्टि वज्रकि वाड़ी वज्रबांधौंदश द्वार वज्र पाणी पिवित् चांगे डाकिनी डापिनी रक्षोव सर्वांगे मंत्रज यो शत्रु भयो डापिनी वावों जानुवायो कालिका लिश मनते ब्रह्माकेधीशु साशु डाकिनी मिलि करिवरे योमी रोजी डुभातेकरेती पत्नेपानी करे गुजकरे यानेकरे सूतकरे परिहासेकरे नयन कटाक्षिकरे आपोन हाथेपर हाथे जयति संचारे किलनी पोतनी अनितु षवरी करे एंत विज्ञान

अहिननगे योमोहि करे त्साराकुठि तित्स्के मसरूपद्दे ॐ मोसिद्धि गुरूरयाय" स्वीलिगंमहादेवकीआज्ञा ॥

पूर्वी इलायची इन्द्रगोपका चूर्ण जो स्त्रीके मदनमंदिरमें गुप्त डालदे तौ उससे वह डालने वाला पुरुष ही रति कर सकता है अन्य नहीं ॥ १६ ॥

गव्येनदध्नामथितंविधायप्रक्षालयेत्तेनतदंगमुच्चैः ॥
भवेद्दरांगंप्रकृतंयुवत्याइत्याहकर्त्ताहरमेखलायाः॥१७॥

फिर गौके दहीको मथकर उससे कामसदन प्रक्षालन करनेसे फिर पूर्ववत् होजाताहै यह वचन हरमेखलाके कर्ताने कहाहै॥१७॥

आकाशदेशेपतितंगृहीत्वायोषिन्नखंदन्तमलंसुपिष्ट्वा ॥
लिप्त्वाध्वजंतेनरमेत्ततोयातस्याविनाशःपुरुषांतरेण॥१८

आकाश देशमें गिरेहुए स्त्रीके नख दांतके मैलको ग्रहण कर फिर पीसकर कामध्वजापर लेप करै तो उसको पुरुषान्तरकी इच्छा नहीं होती ॥ १८ ॥

निर्घातलोहस्यजलेनभूयःप्रक्षालनंकामगृहस्यकुर्य्यात् ॥
पुनःसमासादयतिप्रहृष्टंनारीतदंगंखलुपूर्वरूपम् ॥ १९ ॥

फिर बिना निर्घात लोहके जलसे कामस्थानका प्रक्षालन करे तो पतिसंभोगमें स्त्री पूर्ववत् प्राप्त होतीहै इसमें सन्देह नहीं ॥ १९ ॥

मुहुर्मुहुर्यामथितेननारीप्रक्षालयेत्सप्तदिनानियत्नात् ॥
तस्यास्तदंगंपुनरेवभूयात्पूर्वानुरूपांनहिसंशयोस्ति॥२०

इति भगबंधनं तस्यमोक्षणंच ॥

और बारंबार जो स्त्री मथन किये इन प्रयोगों से गुप्त स्थान सात दिनतक प्रक्षालन करै तो उसका गुह्यस्थान पूर्ववत् होजाताहै इसमें सन्देह नहीं ॥ २० ॥

इति योनिबंधनं तस्य मोक्षणंच ॥

अथ नष्टपुष्पायाःपुष्पकरणम् ॥

ज्योतिष्मतीकोमलपत्रमग्नौभृष्टंयवायाःकुसुमंचपिष्टम् ॥
गृह्णाम्बुनापीतमिदंयुवत्याःकरोतिपुष्पंस्मरमंदिरस्य २१

ज्योतिष्मती (मालकांगनी) कमलपत्र अग्निमें भुने जो और फूल पीसकर जो स्त्री पान करतीहै उसका नष्टरज फिर प्रवर्तित होता है ॥ २१ ॥

लांगलीकन्दचूर्णवामूलंवापामार्गजम् ॥
इन्द्रवारुणिकामूलंयोनिस्थंपुष्पबंधनुत् ॥ २२ ॥

कलिहारी औषधीके कन्दका चूर्ण वा चिरचिटेकी जड़ वा इन्द्रावणकी जड़ योनिमें रखनेसे रजका बंधन छूटजाता है ॥२२ ॥

पारावतपुरीषंचमधुनासंपिबेत्तुयः॥
रजस्वलाभवेन्नारीमूलदेवेनभाषितम् ॥ २३ ॥

कबूतर की वीट जो शहतमें मिलाकर पीवे वह स्त्री आवश्य रजस्वला होतीहै ऐसा मूलदेवने कहाहै ॥ २३ ॥

तिलमूलकषायन्तुब्रह्मदंडीयमूलकम् ॥
यष्टीत्रिकटुकंचूर्णक्काथयुक्तंचपाययेत् ॥ २४

तिलके मूलका काढ़ा वा ब्रह्मदंडीकी जड़ मुलैठी त्रिकुटा इनका चूर्ण वा क्काथ करके जो पानकरै ॥ २४ ॥

पुष्परोधेरक्तगुल्मेस्त्रीणांसद्यःप्रशस्यते ॥
तिलक्काथेगुडंव्यूषंतिलभागयुतंपिबेत् ॥
क्काथंरक्तभवेगुल्मेनष्टपुष्पेचयोजयेत् ॥ २५ ॥

तो रतका रोध योनिकी ग्रंथि यह शीघ्र नष्ट होजाती है तिल के क्काथमें गुड़ सोंठ मिर्च पीपल तिलके भागके साथ पीवेतो अर्थात् क्काथ बनाय गुल्म नष्टपुष्प सब दूर होजातेहैं ॥ २५ ॥

दूर्वादलंतन्दुलतुल्यभागंनिःपिष्यपिष्टंपरिपाचितञ्च ॥
तद्भक्षयित्वावनिताप्रनष्टंपुष्पंलभेतस्वबलानुरूपम् ॥२६॥

इतिनष्टपुष्पायाःपुष्पकरणम् ॥

अथवा दूवार्दल और चावल बराबर पीसकर पकावै उसे खाने से स्त्री रजोवती होतीहै ॥ २६ ॥

इति रजस्वलाकरणम् ॥

अथगर्भस्त्रावणम् ॥

तत्रानभिनवगर्भस्त्रावणम् ॥

कुतेजारेक्षिपेद्योनौतिलतैलात्कसैंधवम् ॥
द्रवतेतत्क्षणादेवशुक्रपुष्पंस्रवत्वपि ॥ २७ ॥

जो विधवाके तत्कालका गर्भ होतौ तिलके तेलमें सैंधको गीलाकर योनिमें धरे तौ उसी समय शुक्रपुष्पका मेल पृथक् हो स्राव होजाता है ॥ २७॥

अथ गर्भपातनम् ॥

काण्डमेरण्डपत्रस्ययोनावष्टांगुलंक्षिपेत् ॥
चातुर्मास्योभवेद्गर्भःस्रवतेतत्क्षणादपि ॥ २८ ॥

अरंडके पत्तोंका मूठा योनिमें अष्ट अंगुल पर्यन्त रखनेसे चार महीनेका गर्भ उसी समय पतित होजाताहै ॥ २८ ॥

देवदालीयचूर्णंतुकर्षैकंतोयपेषितम् ॥
पिबेद्गर्भवतीनारीगर्भस्त्रवतितत्क्षणात् ॥ २९ ॥

देवदालीका चूर्ण एक कर्ष (सोलहमासे) गर्भवती स्त्री पीवे तो उसी समय गर्भ पतित होजाताहै ॥ २९ ॥

निर्गुण्डीद्रवसंपिष्टंचित्रमूलंमधुप्लुतम् ॥
कर्षंभुक्त्वापतत्याशुगर्भोरंडाकुलोद्भवम् ॥ ३० ॥

निर्गुण्डी (सिन्धुवार) के रसमें चीतेकी जड़ पीस शहत मिलाय एक कर्ष मात्र खाय तो उसी समय रंडाका गर्भ गिर जाताहै॥३०॥

इति गर्भस्रावणम् ॥

अथ रक्तनिवारणम् ॥

धात्रींचपथ्यांचरसांजनंचकृत्वाविचूर्णंसजलंनिपीतम् ॥
अत्यंतरक्तोत्थितमुग्रवेगंनिवारयेत्सेतुमिवाम्बुपूरम् ॥३१॥

आमले हर रसौत इनका चूर्ण कर जलके साथ पीनेसे अत्यन्त रक्त जिसका जाताहो वह निवारण होजाताहै ॥ ३१ ॥

शेलुस्त्वचामिश्रिततंदुलेनविधायपिष्टंविनियोजनीयम् ॥
कन्दर्पगेहेमृगलोचनायारक्तंनिहंत्याशुहठेनयोगः ॥३२॥

शेलु वृक्षकी त्वचा और सांठीके चावल मिलाकर मृगलोचनीके योनिमें रखनेसे रक्तका वेग निवारण होताहै ॥ ३२ ॥

मूलंतुशरपुंखायाःपेषयेत्तन्दुलोदकैः ॥
पाययेत्कर्षमात्रन्तुअसिरक्तप्रशांतये ॥ ३३ ॥

सरफोंकेकी जड़ चावल के जलके साथ पीसनेसे कर्षमात्र पीनेसे अधिक रक्त शान्त होजाताहै ॥ ३३ ॥

कुशस्यमूलंकदलीदलंवाबलासिफावाबदरीफलम्वा ॥
गुडूचिकातण्डुलवारिपीतास्त्रीणामनेकंरुधिरंजयेच्च ॥३४॥

कुशकी जड़ केलेका पत्ता खरैंटी जटामांसी गुडूची बदरीफल यह चावलके जलके साथ पीनेसे रुधिरका अधिक निकलना बन्द होताहै ॥ ३४ ॥

कुरंटकस्यमूलानिमधुकःश्वेतचन्दनम् ॥
युक्त्यापिष्टाक्षमात्राणिपाययेत्तंदुलाम्बुना ॥ ३५ ॥

कुरंट (कुटज) की जड़ मुलैठी श्वेतचन्दन इनको बारीक पीस चावलके जलके साथ अक्षमात्र पीवे ॥ ३५ ॥

सकृत्पीत्वामाषयुतंप्रदरात्परिमुच्यते ॥
घृतभृष्टंमाषयूषभोजनंश्वेतचन्दनम् ॥ ३६ ॥

यह उर्दों के सहित पीने से प्रदरसे छूटा जाता है घीमें भुना हुआ यह उर्दोंका यूष और श्वेतचन्दन लेना चाहिये ॥ ३६ ॥

चन्दनंक्षीरसंयुक्तंसघृत्तंपाययेद्भिषक् ॥
शर्करामधुसंयुक्तमसृक्स्रवविनाशनम् ॥ ३७ ॥

क्षीरके सहित चन्दन और घृतपान करनेसे अथवा शर्करा और मधुपान करनेसे रुधिर पित्तविकार शान्त होजातेहैं इसमें जहां चन्दनहै वहां लालचन्दन लेना ॥ ३७ ॥

दार्वीरसांजनवृषाद्वकिराताबिल्वभल्लातकैरव
कृतोमधुनाकषायः ॥ पीतोजयत्यतिबलंप्रद
रंसशूलंपीतंशितारुणविलोहितनीलकृष्णम् ॥३८॥

देवदारु रसौत चिरायता बेल भिलावा अडूसा नागरमोथा इनका क्वाथ कर घृत मधु डालकर पीवेतो कठिन प्रदर शूल पीत श्वेत अरुण लाल नील कृष्ण सब प्रकारके उपद्रवकी शान्ति होजातीहै ॥ ३८ ॥

अशोकस्यत्वचासिद्धंक्षीरंरक्तहरंपिबेत् ॥
पेटारिकायाःपत्रंचमाषचूर्णेनसंयुतम् ॥ ३९ ॥

अशोककी छाल बच इनसे सिद्ध किया दूध पीनेसे रक्तनाश हो जाताहै पेटारिकाके पत्ते उर्दोंके चूर्णके सहित ॥ ३९ ॥

रम्भादलैर्वेष्टयित्वादाहयेच्चप्रयत्नतः ॥
तस्यभक्षणमात्रेणह्यतिरक्तनिवारणम् ॥ ४० ॥

रम्भाके दलसे वेष्टनकरके यत्नपूर्वक जलावै इसके भक्षण-मात्रसे अतिरक्तकी निवृत्ति होतीहै ॥ ४० ॥

तन्मूलन्तदुलैःपिष्ट्वापिष्टकम्भर्जयेद्बुधः ॥
तस्यभक्षणमात्रेणरक्तादिविकृतिंहरेत् ॥ ४० ॥

और इसीकी जड़ चावलके साथ पीसकर इस पिट्टीको भूनकर खायतो खातेही रक्तादि विकृति दूर होजातीहै ॥ ४१ ॥

तस्यवल्कलचूर्णन्तुभृष्टतंदुलचूर्णकम् ॥
भक्षणादेवतद्रक्तंस्त्रीणांशमयतिध्रुवम् ॥ ४२ ॥

और इसीके छालका चूर्ण तथा भुने चावलोंका चूर्ण भक्षणकर-नेसे अवश्यही स्त्रियोंका अति रुधिर निकलना बन्द होजाताहै ४१

शतावर्यास्तुमूलस्यनिजद्रावंसमाहरेत् ॥
त्वचाविंशत्पलान्येवम्वस्त्रपूतंप्रयत्नतः ॥ ४३ ॥

शतावरीकी जड़का द्रव स्वच्छ लावै और वीसपल उसकी छालको पीसे वस्त्रसे छानकर ॥ ४३ ॥

द्रवतुल्यंगवांक्षीरंक्षीरस्याद्द्विगुणंघृतम् ॥
जीवंतिकोलमन्दाराअतसीक्षीरकाकुली ॥ ४४ ॥
मुद्गपर्णीमाषपर्णीमहामेदाशतावरी ॥
द्राक्षापारशुकोयष्टिजीरकंप्रतिकार्षिकम् ॥ ४५ ॥

इस द्रवके तुल्य गौका क्षीर ले दूधसे दूना घृतले और जीवन्ती कोलमन्दार अलसी क्षीरकाकोली मुद्गपर्णी माषपर्णी महामेदा शतावरी दाख मुनक्का मुलेठी जीरा ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

पलार्द्धंमधुकंपुष्पंसर्वमेकत्रपाचयेत् ॥
घृतशेषंसमुत्तार्य्यंशीतेजातेंचनिक्षियेत् ॥ ४६ ॥

एक २ कर्षके आधपल महुएके फूल इन सबको एकत्र करे जब घृतमात्र शेष रहजाय तब उतार ले ठंडा होनेपर पात्रम रखछोड़े ॥ ४६ ॥

पलाष्टकंकणाचूर्णंक्षौद्रंवापिप्पलाष्टकम् ॥
सितादशपलंयोज्यमिदंशतावरीघृतम् ॥ ४७ ॥

पीपल का चूर्ण आठपल अथवा शहत आठपल मिश्री दश पल इस में डालदे यह शतावरी घृत है ॥ ४७ ॥

लेह्यंकर्षंशमेदाशुदुःसाध्यमतिरक्तजम् ॥
दोषंक्षयंचमंदाग्निंहृद्रोगंग्रहणीग्रहम् ॥ ४८ ॥

इति रक्तनिवारणम् ॥

एक कर्ष इसका सेवन करै तौ रक्तदोष दूर होता है क्षतक्षय मन्दाग्नी हृद्रोग ग्रहणीरोग दूर होताहै ॥ ४८ ॥

इतिरक्तनिवारणम ॥

अथ वंध्यानांगर्भधारणम् ॥

जन्मवंध्याकाकवंध्यामृतवत्साश्चयास्त्रियः ॥
तासांपुत्रोदयार्थायशंभुनासूचितंपुरा ॥ ४९ ॥

वंध्या कई प्रकार की होती हैं अर्थात् जन्मवंध्या काकवंध्या मृतवंध्या जिसके बालक नहीं जीते हैं उनके पुत्र होने के निमित्त शिवजीने विधान किया है ॥ ४९ ॥

तत्रप्रथमंजन्मवंध्याचिकित्सा ॥

समूलपत्रांसर्पाक्षींरविवारेसमुद्धरेत् ॥
एकवर्णगवीक्षीरेकन्याहस्तेनपेषयेत् ॥ ५० ॥

पहले जन्मवंध्या की चिकित्सा कहते हैं-जड़पत्ते सहित सुगन्ध रास्ना को रविवारके दिन उखाड़कर लावे उसको एकरंगवाली गौके दूधमें कन्याके हाथसे पिसवावै ॥ ५० ॥

ऋतुकालेपिबेद्वंध्यापलार्द्धंतद्दिनेदिने ॥
क्षीरशाल्यन्नमुद्गंचलघ्वाहारंप्रदापयेत् ॥ ५१ ॥

ऋतुकालमें वंध्या प्रतिदिन दो दो पल इसको पान करै दूध शालिधान्य मूंग आदि लघु आहार करै॥ ५१ ॥

एवंसप्तदिनंकुर्य्याद्वंध्याभवतिगर्भिणी ॥
उद्वेगंभयशोकंचदिवानिद्रांविवर्ज्जयेत् ॥ ५२ ॥

इस प्रकार सात दिन करनेसे वंध्या स्त्रीभी गर्भिणी होजाती है औषध सेवनके समय उद्वेग भय शोक और दिनमें सोना त्यागदे ॥ ५२ ॥

नकर्मकारयेत्किंचिद्वर्ज्जयेच्छीतमातपम् ॥
नोचेदपरमासेवाकारयेत्पूर्ववत्क्रियाम् ॥ ५३ ॥

कोई काम न करै शीत घामादिको नसहै और नहीं तो पूर्ववत् फिर दूसरे महीने क्रिया को करै ॥ ५३ ॥

पतिसंगाद्गर्भलाभंनात्रकार्याविचारणा ॥
एकमेवतुरुद्राक्षंसर्पाक्षीकर्षमात्रकम् ॥ ५४ ॥

पतीके संगसे वह गर्भको प्राप्त होती है इसमें सन्देह नहीं एक रुद्राक्ष और एक कर्ष सुगन्धरास्ना ॥ ५४ ॥

पूर्ववच्चगवांक्षीरैऋतुकालेप्रदापयेत् ॥
महागणेशमंत्रेणरक्षांतस्यानुबंधयेत् ॥ ५५ ॥

यह पूर्ववत् पिसाय ऋतुकालमें गौके दूधसे पीसकरदे और महागणेशके मंत्रसे रक्षा करै ॥ ५५ ॥

एवंसप्तदिनंकुर्य्याद्वंध्याभवतिपुत्रिणी ॥
ॐदददन्महागणपतेरक्षामृतंमत्सुतंदेहि ॥ ५६ ॥
पत्रमेकंपलाशस्यगर्भिणीपयसान्वितम् ॥
पीत्वाचलभतेपुत्रंरूपवंतंनसंशयः ॥ ५७ ॥

इस प्रकार सात दिन करनेसे वंध्या पुत्रिणी होती है महागणपति रक्षा देते हैं एक कोमल ढाकके पत्रको गर्भिणी दूधके साथ पीनेसे रूपवान् पुत्रको प्राप्त करती है इसमें संदेह नहीं ॥ ५६॥५७ ॥

पथ्यभुक्तंयथापूर्वंतद्वत्सप्तदिनावधि ॥
देवदालीयमूलंतुग्राहयेत्पुष्यभास्करे ॥ ५८ ॥

और जैसे पूर्वमें कहा है इसप्रकार सात दिन पर्यन्त करै जब पुष्यनक्षत्रमें सूर्य आवे तो देवदालीकी मूली ग्रहण करे ॥ ५८ ॥

निष्कत्रयंगवांक्षीरैःपूर्ववत्क्रमयोगतः ॥
वंध्याचलभतेपुत्रंदेयंपथ्यंयथापुरा ॥ ५९ ॥

गौका दूध तीन निष्क पूर्ववत् क्रियाके योगसे करै तो पूर्ववत् पुत्रको प्राप्त होती है पूर्ववत् पथ्यदे॥ ५९ ॥

शीततोयेनसंपिष्टंशरपुंखीयमूलकम् ॥
कर्षंपीत्वालभेद्गर्भंपूर्ववत्क्रमयोगतः ॥ ६० ॥

शरफोकेकी जड़ शीतल जल से पीसे पूर्वक्रमसे एक कर्ष लेतो पुत्र होताहै ॥ ६० ॥

मुस्ताप्रियंगुसौवीरंलाक्षाक्षौद्रंसमंपिबेत् ॥
कर्षतंदुलतोयेनवंध्याभवतिपुत्रिणी ॥ ६१ ॥

मोथा प्रियंगु सौवीर लाख शहत यह सब समान लेकर चावलके जल से एक कर्ष पीवैतो वंध्या पुत्रवती होतीहै ॥ ६१ ॥

पथ्यभुक्तंयथापूर्वन्तद्वत्सप्तदिनंपिबेत् ॥

समूलांसहदेवींचसंग्राह्यंपुष्यभास्करे ॥ ६२ ॥

और सात दिन पथ्यसे रहै जब सूर्य पुष्यनक्षत्रमें हो तो जड़ सहित सहदेईको ग्रहण करै ॥ ६२ ॥

छायाशुष्कंचतच्चूर्णमेकवर्णगवांपयः ॥
पूर्ववत्पिबतेनारीवंध्याभवतिगुर्विणी ॥ ६३ ॥

छायामें सुखाय उसको ग्रहणकरै चूर्ण कर गौके दूधसे स्त्री ग्रहण करै तौ गर्भिणी होती है ॥ ६३ ॥

मूलंशिखायाःखलुलक्ष्मणायाऋतौनिपीयंत्रिदिनंपयोभिः ॥
क्षीरान्नचर्यांनियमेनभुंक्तेपुत्रंप्रसूतेवनितानचित्रम् ॥ ६४ ॥

लक्ष्मणा (श्वेतकटेरी) की जड़ और पत्ते ऋतुकालमें दूधसे तीन दिन स्त्री पान करै तौ और दिनमें भी क्षीरादि लघु आहार करै तौ उसके पुत्र होताहै इसमें आश्चर्य नहीं ॥ ६४ ॥

सपिप्पलीकेशरशृंगवेरंभद्रोषणंगव्यघृतेनपीतम् ॥
वंध्यापिपुत्रंलभतेहठेनयोगस्तुसोयंमुनिभिःप्रदृष्टः ॥ ६५ ॥

पीपल केशर अद्रख भद्रमोथा पीपली यह गौके घीसे पान करनेसे वंध्याभी पुत्रको प्राप्त होती है यह योग मुनियोंका देखा हुआहै ॥ ६५ ॥

तुरंगगंधाघृतवारिसिद्धमाज्यंपयस्नानदिनेचपीत्वा ॥
प्राप्नोतिगर्भंनियमंचरंतिवंध्याचनूनंपुरुषप्रसंगात् ॥ ६६ ॥

असगंध औटाय घृतसे सिद्धकर घृत और दूधके साथ स्नान कर दिनमें पानकरै तो अवश्य नियम से रहनेसे वंध्या स्त्री पुत्रवती होतीहै यह शयनकालमें पीवे ॥ ६६ ॥

पुष्यार्कयोगोद्धृतलक्ष्मणायामूलंतथावज्रतरोश्वपिष्ट्वा ॥
अप्येकवर्णापयसानिपीतंस्त्रियःस्मृतंपुत्रकरंमुनीन्द्रैः ॥ ६७ ॥

पुष्य और सूर्य के योगमें लक्ष्मणाकी जड़ उखाड़कर लावै यह अथवा थूहरकी जड़ पीसकर दूध के साथ पीनेसे अवश्य पुत्र होताहै ॥ ६७ ॥

कन्दमूलंघृतैःपिष्ट्वाऋतौसागर्भिणीपिबेत् ॥
पुष्योद्धृतंलक्ष्मणमेवचूर्णंपुंसानिपिष्टंसघृतंनिपीतम् ॥
क्षीरोदनंप्राश्यपतिप्रसंगाद्गर्भम्विदध्यात्तरुणीनचित्रम् ६८॥

जो ऋतुमें बाराहीकन्दकी जड़को पीस घीके साथ खाय तौ वह गर्भिणी होतीहै अथवा पुष्य नक्षत्रमें उखाड़ी लक्ष्मणाका चूर्ण कर उसे घीके साथ पानकर पीछे दूधपान करै तौ तरुणी अवश्य गर्भवती होतीहै इसमें सन्देह नहीं ॥ ६८ ॥

कृष्णापराजितामूलंवस्तक्षीरेणसंपिबेत् ॥
ऋतुस्नातात्रिधायातुवंध्यागर्भधराभवेत् ॥ ६९ ॥

श्यामविष्णुक्रांताकी जड़ दूधसे पीसकर ऋतुसे स्नानकर तीन दिन पिये तो वंध्याभी गर्भ धारण करती है ॥ ६९ ॥

नागकेशरकंचूर्णंनूतनंगव्यदुग्धतः ॥
पिबेत्सप्तदिनंदुग्धंघृतैर्भोजनमाचरेत् ॥ ७० ॥

नागकेशरका चूर्ण ताजे गायके दूधके साथ सात दिन पर्यन्त पीवे और अधिक घृतयुक्त भोजन करे तो ॥ ७० ॥

तद्दतौलभतेगर्भंसानारीपतिसंगता ॥
पुत्रजीवकपत्रैकंपिबेत्क्षीरैर्ऋतौचया ॥ ७१ ॥

वह स्त्री पतिके संग करके अवश्य पुत्रको प्राप्त करती है जो स्त्री ऋतुमें जिये पोतेका एक पत्र दूधके साथ पान करती है ॥ ७१ ॥

पतिसंगाचसानारीसत्यंपुत्रवतीभवेत् ॥
तस्यमूलंचैकवर्णक्षीरैःपीत्वाचपुत्रिणी ॥ ७२ ॥

वह स्त्री पतिके संगमें अवश्य पुत्रवती होती है अथवा इसकी जड़ दूधके साथ बहुत महीन पीसकर पीनेसे पुत्रवती होती है ॥ ७२ ॥

काकोल्यौलक्ष्मणामूलंषष्टिकस्यचतंडुलम् ॥
नार्येकवर्णापयसापीत्वागर्भवतीभवेत् ॥ ७३ ॥

क्षीरकाकोली और कालोली श्वेतकटेरीकी जड़ सांठीके चावल ऋतुकालमें बहुत महीन दूधके साथ पीनेसे गर्भवती होतीहै॥७३॥

अश्विन्यांबोधिवृक्षस्यवन्दाकंग्राहयेद्बुधः ॥
गोक्षीरैःपानमात्रेणवंध्यापुत्रवतीभवेत् ॥ ७४ ॥

अश्विनीनक्षत्रमें कदंबके वृक्षका वन्दा ग्रहणकर गौके दूधसे उसके पानमात्र करनेसे स्त्री गर्भवती होती है ॥ ७४ ॥

तिलरसगुडचैकंगोपुरीषाग्नियोगा
त्तरुणवृषभमूत्रंप्रस्थयुक्तंविपक्वम् ॥ ७५ ॥
ऋतुदिवसविमध्येसप्तवारैश्चपीतं
जनयतिसुतमेतंनिश्चितंपुष्पितैव ॥ ७६ ॥

तिल रस गुड़ तरुण बैलका मूत्र १ सेर इसे गौके गोबरके उपलोंकी अग्निमें पकावे इसको ऋतुके दिनोंमें सातवार पीवे तो अवश्य पुत्र होता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ७६ ॥

कदम्बपत्रंश्वेतंचबृहतीमूलमेवच ॥
एतानिसमभागानिअजाक्षीरेणपेषयेत् ॥ ७७ ॥

कदम्बपत्र श्वेतचंदन खटेरीकी जड़ इनको बराबर ले बकरीके दूध से पीसे ॥ ७७ ॥

त्रिरात्रम्पंचरात्रम्वापिबेदेतन्महौषधम् ॥
ऋतौनिपीयमानेतुगर्भोभवतिनिश्चितम् ॥ ७८ ॥

तीन रात वा पांच रात ऋतु के अन्तमें इस महौषधिको पान करनेसे रातमें पीनेसे अवश्य गर्भवती होती है ॥ ७८ ॥

गोक्षुरस्यतुबिजंचपिबेन्निर्गुंडिकारसैः ॥
त्रिरात्रंसप्तरात्रम्वावंध्याभवतिपुत्रिणी ॥ ७९ ॥

निर्गुण्डीके रसयुक्त गोखरूके बीज पीवे तीन वा सात रात पीनेसे वंध्या पुत्रवती होती है ॥ ७९ ॥

कर्कोटबीजचूर्णंतुएकवर्णगवांपयः ॥
ऋतौनिपीयमानेतुगर्भोभवतिनिश्चितम् ॥ ८० ॥

कर्कोटकके बीजोंका चूर्ण बारीक कर गौके दूधसे रात्रिमें पीवे तो अवश्य गर्भवती होती है ॥ ८० ॥

गोक्षुरस्यतुबीजंचपिबेन्निर्गुंडिकारसैः ॥
त्रिरात्रंसप्तरात्रम्वावंध्याभवतिपुत्रिणी ॥ ८१ ॥

गोखरूके बीज निर्गुण्डी के रस के साथ पान करने से तीन वा सात दिन इसके सेवन से वंध्या पुत्रवती होती है ॥ ८१ ॥

भगाख्येचैवनक्षत्रेवटवृक्षस्यमूलकम् ।
हस्तेबध्वालभेत्पुत्रंसुन्दरंकुलवर्द्धनम् ॥ ८२ ॥
अश्वत्थस्यतुवन्दाकंपूर्वेद्युःसुनिमंत्रितम् ॥
ऋतुस्नातेतुपीतंस्यादपिवन्ध्यालभेत्सुतम् ॥ ८३ ॥
एकवर्णसवत्सायागोक्षीरेणसुपेषितम् ॥
भावितंवटवन्दाकंपीतंवन्ध्यासुतंलभेत् ॥ ८४ ॥
पूर्वंपुत्रवतीयासाक्वचिद्वंध्याभवेद्यदि ॥
काकवंध्यातुसाज्ञेयाचिकित्सास्यास्तुकथ्यते॥८५॥

भग देवतावाले नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी में वट की जड़ हाथमें बांधनेसे वंध्या पुत्र पाती है । पीपलके वन्देको पहले दिन निमंत्रण

करै ऋतुमें पीनेसे वन्ध्या पुत्रवती होती है । एक वर्ण बछड़ेवाली गौके दूध में बड़के वन्देको भावनादे पीवे तो वंध्याके पुत्र हो जो पहले पुत्रवती होकर यदि फिर वन्ध्या हो जाय उसको काक-वंध्या कहते हैं उसकी चिकित्सा इस प्रकार है ॥ ८५ ॥

विष्णुक्रांतासमूलांतुपिष्ट्वादुग्धैस्तुमाहिषैः ॥
महिषीनवनीतेनऋतुकालेतुभक्षयेत् ॥ ८६ ॥

विष्णुक्रान्ता जड़ सहित भैंसके दूधमें पीसकर और भैंसके मक्खनके साथ ऋतुकालमें भक्षण करै ॥ ८६ ॥

एवंसप्तदिनंकुर्य्यात्पथ्यमुक्तंचपूर्ववत् ॥
गर्भंचलभतेनारीकाकवंध्यासुशोभनम् ॥ ८७ ॥

इस प्रकार सात दिन करै और पथ्यसे रहै तो वह काकवन्ध्या अवश्य गर्भवती होतीहै ॥ ८७ ॥

अश्वगंधीयमूलन्तुग्राहयेत्पुष्यभास्करे ॥
पेषयेन्माहिषीक्षीरैःपलार्द्धम्भक्षयेत्सदा ॥
सप्ताहाल्लभतेगर्भंकाकवंध्याचिरायुषम् ॥ ८८ ॥

पुष्य नक्षत्रमें सूर्यहो तो असगंधकी जड़को ग्रहणकरके भैंसके दूधसे पीसकर आधेपल भक्षण करे तो सात दिनमें काकवंध्या गर्भवती हो चिरायुष्क पुत्रको उत्पन्न करतीहै ॥ ८८ ॥

अथ मृतवत्साचिकित्सा ॥

गर्भसंजातमात्रेणपक्षान्मासाच्चवत्सरात् ॥
म्रियतेद्वित्रिवर्षाद्वायस्याःसामृतवत्सिका ॥८९॥

जिसके बालक उत्पन्न होतेही पक्ष महीने वर्ष दोवर्ष वा तीन वर्षमें मर जातेहैं वह मृतवत्सा कहलातीहै ॥ ८९ ॥

तत्रयोगःप्रकर्त्तव्योयथाशंकरभाषितम् ॥
मार्गशीर्षेऽथवाज्येष्ठेपूर्णायांलेपितेगृहे ॥ ९० ॥

उसमें शंकरका कहा योग करना चाहिये मार्गशीर्ष अथवा ज्येष्ठकी पूर्णिमाको अपना घर लीपकर ॥ ९० ॥

नूततंकलशंपूर्णंगंधतोयेनकारयेत् ॥
शाखाफलसमायुक्तंनवरत्नसमन्वितम् ॥ ९१ ॥

नये कलशेमें जल भरकर उसमें सुगंधित द्रव्य डाले आम्रशाखा और नवरत्न उसमें डाले ॥ ९१ ॥

सुवर्णसूत्रिकायुक्तंषट्कोणमंडलेस्थितम् ॥
तन्मध्येपूजयेद्देवीमेकांतींनामविश्रुताम् ॥ ९२ ॥

सुवर्णसूत्रिका सहित छः कोन मण्डलकी रचना करे उसके मध्यमें एकान्ती नाम देवीकी पूजाकरै ॥ ९२ ॥

गंधपुष्पाक्षतैर्धूपैर्दीपनैवेद्यसंयुतैः ॥
अर्चयेद्भक्तिभावेनमद्यमांसैःसमत्स्यकैः ॥ ९३ ॥

गंधपुष्प अक्षत धूप दीप नैवेद्यसे संयुक्तकर भक्तिभावसे अर्चन करे मद्यमांस मत्स्य भी दे ॥ ९३ ॥

ब्राह्मीमाहेश्वरीचैवकौमारीवैष्णवीतथा ॥
वाराहीचतथेन्द्राणीषट्सुपुत्रेषुमातरः ॥ ९४ ॥

ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही इन्द्राणी यह छः माताहैं ॥ ९४ ॥

पूजयेन्मंत्रबीजैश्चफेंकारैर्नामविश्रुतः ॥
दधिभक्तैश्चपिंडानिसप्तसंख्यानिकारयेत् ॥ ९५ ॥

इनको बीजमंत्रसे छः पत्रेमें पूजन करके फेंकार का उच्चारण करे और सात पिण्ड दधिके निर्माण करै ॥ ९५ ॥

षट्संख्याषट्सुपत्रेषुमातृभ्यःकल्पयेत्पृथक् ॥
बिल्वाभंसप्तमंपिंडंशुचिस्थानेबहिःक्षिपेत् ॥ ९६ ॥

छः तो छहौं माताओंको पत्रोंमें प्रदान करै और बेलकी समान सातवां पिण्ड पवित्र स्थानमें बहार रक्खै ॥ ९६ ॥

तैर्भुक्तेगृहमागच्छेच्चक्राग्रेयागमाचरेत् ॥
कन्यकायोगिनीवामाभोजयेत्सकुटुम्बकैः ॥ ९७ ॥

उसको भक्षण कर घर में आवै और उस चक्र के आगे याग करै और कन्या योगिनी स्त्रीको सकुटुम्ब भोजन दे ॥ ९७ ॥

दक्षिणान्दापयेत्तासांदेवताग्रेचनान्यथा ॥
विसर्ज्यदेवतांचाथनद्यांतत्कलशोदकम् ॥ ९८ ॥

और देवताके आगे उनको दक्षिणा दे फिर देवता को विसर्जन कर उस कलश के जलको नदीमें डाल दे ॥ ९८ ॥

सकुलंवीक्षयेद्धीमांच्छुभेनशुभमादिशेत् ॥
विपरीतेपुनःकार्यंयावत्तावत्सुसिद्धिदम् ॥ ९९ ॥

और कुटुम्ब सहित बुद्धिमान् उसको देखे शुभदिन कृत्य करै जबतक सिद्धि हो तबतक ॥ ९९ ॥

प्रतिवर्षमिदंकुर्य्याद्दीर्घजीविसुतंलभेत् ॥ १०० ॥

प्रतिवर्ष ऐसा करै तो दीर्घजीवी पुत्रकी प्राप्ति होती है ॥१००॥

"ॐह्रींफैंएकांतीदेवतायैनमः"

अनेनमंत्रेणपूजाजपश्चकार्यः ॥
प्राङ्मुखःकृत्तिकाऋक्षेवंध्याकर्कोटकींहरेत् ॥
तत्कन्दंपेषयेत्तोयैःकर्षमात्रंसदापिबेत् ॥
ऋतुकालेतुसप्ताहंदीर्घजीवीसुतोभवेत् ॥ १०१ ॥

'ओं ह्रीं फें एकांतीदेवतायै नमः' इस मंत्रसे पूजा जप करै ॥ कृत्तिका नक्षत्रमें पूर्वदिशा को मुखकर वंध्या स्त्री ककोंटकीको लावै उसकी जड़को जलसे पीसकर एक कर्ष सदा पीवे इस प्रकार सात दिन ऋतुकालमें करनेसे दीर्घजीवी पुत्रकी प्राप्तिहोती है ॥ १०१ ॥

याबीजपूरन्द्रुममूलकंवाक्षीरेणसिद्धंहविषाविमिश्रम् ॥
ऋतौनिपीत्वासुपतिम्प्रयातिदीर्घायुषंसातनयंप्रसूते ॥

जो बीजपूरकी जड़को दूधमें सिद्धकर हविष अन्नमें मिलाय ऋतुकालमें पान कर पतिके निकट जातीहै वह दीर्घायु पुत्रको उत्पन्न करतीहै ॥ १०२ ॥

मंजिष्ठामधुकंकुष्टंत्रिफलाशर्करावला ॥
मेदापयस्याकाकोलीमूलंचैवाश्वगंधजम् ॥
अजमोदाहरिद्रेद्वैहिंगुंकटुकरोहिणी ॥ १०३ ॥

मजीठ मुलेठी कूठ त्रिफला मिश्री खरैंटी महामेदा क्षीरकाकोली असगंधकी मूली अजमोदा दोनों हलदी हिंगु कुटकी ॥१०३

उत्पलंकुमुदंद्राक्षाकाकोल्यौचन्दनद्वयम् ॥
एतेषांकर्षिकैर्भागैर्घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ १०४ ॥

नीलकमल कुमुद काकोली दाख क्षीरकाकोली दोनों चन्दन यह सब एक एक कर्ष लेकर एकशेर घीमें पकावे ॥ १०४ ॥

शतावरीरसंक्षीरंघृतंदेयंचतुर्गुणम् ॥
सर्पिरेतन्नरःपीत्वानित्यंस्त्रीषुवृषायते ॥ १०५ ॥

शतावरीका रस दूध घी यह चौगुना डाले यहघृत पान करके मनुष्य रतिमें स्त्रीसे प्रबल होताहै ॥ १०५ ॥

पुत्राञ्जनयतेनारीमेधाविप्रियदर्शनान् ॥
याचैवास्थिरगर्भास्याद्यानारीजनयेन्मृतम् ॥१०६॥

और स्त्री इसके सेवनसे बुद्धिमान् पुत्रोंको उत्पन्न करतीहै जो प्रिय दर्शन होताहै तथा जिस स्त्रीका गर्भ स्थिर होगयाहो वा जिसके मृतक संतानहो ॥ १०६ ॥

अल्पायुषंवाजनयेद्याचकन्यांप्रसूयते ॥
योनिदोषेरजोदोषेगर्भस्रावेचशस्यते ॥ १०७ ॥

वा जिसके अल्पायु संतान होती हो वा जिसके कन्याही होतीहो वा जिसके योनि और रजमें दोषहो वा जिसके गर्भस्राव होताहो उन सबके निमित्त यह प्रयोग उत्तमहै ॥ १०७ ॥

प्रजावर्द्धनमायुष्यंसर्वग्रहनिवारणम् ॥
नाम्नाफलघृतंह्येतद्रहस्यंपरिकीर्तितम् ॥ १०८ ॥
जीवद्वत्सैकवर्णयाघृतमत्रतुदीयते ॥
आरण्यगोमयेनात्रवह्नेर्ज्वालाप्रदीयते ॥ १०९ ॥
(अत्रपयस्याक्षीरयुक्ताभूमिकूष्माण्डाउत्पलंनीलम्)
इति फलघृतम् ॥

यह प्रजाकाबढ़ाने वाला आयुदाता सबग्रहका निवारण करने वाला फल घृतहै अश्विनीकुमारोंका है जीते बछड़ेवाली और एक वर्णवाली गौका घी इसमें लेना चाहिये इसको अरण्य उपलोंकी आंचसे बनावे घृतमात्र शेष रहनेसे उतारले इसे सेवनकरै ॥१०८॥१०९।

इति फलघृतम् ॥

अथ गर्भस्रावरक्षा ॥

अकस्मात्प्रथमेमासिगर्भेभवतिवेदना ॥
गोक्षुरैःपेषयेत्तुल्यंपद्मकोशीरचन्दनम् ॥ १ ॥

अकस्मात् पहले महीनेमें गर्भमें वेदना होतीहै उस समय गोखरू पद्माख खस लाल चन्दन ॥ १ ॥

पलमात्रंपिबेन्नारीत्र्यहाद्गर्भःस्थिरोभवेत् ॥
अथवामधुकंदारुशाकवृक्षस्यबीजकम् ॥
संपेष्यक्षीरकाकोलींपिबेत्क्षीरैस्तुगोभवैः ॥ २ ॥

एक पलमात्र तीन दिन पान करनेसे गर्भ स्थित होजाताहै अथवा मुलैठी देवदारु शाकवृक्षके बीज और क्षीरकाकोली इनको पीस गौके दूधसे पान करै॥ २ ॥

द्वितीये ॥ नीलोत्पलंमृणालंचयष्टीककंटश्रृंगिका ॥
गोक्षीरैश्चद्वितीयंचपीत्वाशाम्यतिवेदना ॥ ३ ॥

दूसरे महीने नीलकमलकी जड़ मुलैठी काकडासींगी इन को बराबर ले गौके दूधके साथ पिये तौ दूसरे महीनेकी वेदना शान्त होजाती है ॥ ३ ॥

अथवाश्वत्थवल्कंचतिलंकृष्णंशतावरी ॥
मंजिष्ठासहितांपिष्ट्वापिबेत्क्षीरैश्चतुर्गुणैः ॥ ४ ॥

अथवा पीपलकी छाल कालेतिल शतावरी मजीठ इनको बरा-बर ले पीसकर चौगुने दूधके साथ पिये ॥ ४ ॥

तृतीये ॥ श्रीखण्डंतगरंकुष्टंमृणालंपद्मकेशरम् ॥
पिबेच्छीतोदकैःपिष्टंतृतीयेवेदनावती ॥ ५ ॥

तीसरे महीनेमें चन्दन तगर कूट मृणाल (कमलकी जड़) कमल केशर यह ठंढे जलके साथ पिये तो तीसरे महीनेकी वेदना शान्त होजाती है ॥ ५ ॥

अथवाक्षीरकाकोलींवलांपिष्ट्वापयःपिबेत् ॥ ६ ॥

अथवा क्षीरकाकोली और सुगंधवाला जलसे पिये ॥ ६ ॥

चतुर्थे ॥ नीलोत्पलंमृणालानिगोक्षुरंचकशेरुकम्॥
तुर्य्यमासेगवांक्षीरैःपिबेच्छाम्यतिवेदना ॥ ७ ॥

चौथे महीनेमें नीलोत्पर कमलकी जड़ गोखरू कसेरू पीसके गौके दूधके साथ पीनेसे चौथे महीनेकी वेदना शान्त होजाती है॥ ७ ॥

अथवामधुकंरास्नाश्यामाब्राह्मणयष्टिका ॥
अनन्तांपेषयित्वातुगव्यंक्षीरैश्चसंपिबेत् ॥ ८ ॥

अथवा मुलैठी रास्ना श्यामाक ब्राह्मणयष्टि अनन्तमूल इनको पीसकर गौके दूधके साथ सेवन करे तो चतुर्थमासकी वेदना शान्त होजाती है ॥ ८ ॥

पञ्चमे ॥ पुनर्नवाथकाकोलींतगरंनीलमुत्पलम् ॥
गोक्षुरंपंचमेमासेगर्भक्लेशहरंपिबेत् ॥ ९ ॥

पंचममासमें पुनर्नवा काकोली तगर नीलोत्पल यह लेकर गौके दूधसे पियेतो पंचममासकी वेदना दूर होती है ॥ ९ ॥

अथवाबृहतीयुग्मंयज्ञाङ्गंकुम्भलंवरम् ॥
गोघृतंक्षीरसंयुक्तंपिबेत्पिष्ट्वाचपंचमे ॥ १० ॥

अथवा दोनों कटेरी ब्राह्मणयष्टिका कमलनाल गौके घी और दूधके साथ पंचम मासमें सेवन करे ॥ १० ॥

षष्ठे ॥ शिताकपित्थमज्जाचशीततोयेनपेषयेत् ॥
षष्ठमासिगवांक्षीरैःपिबेत्क्लेशनिवृत्तये ॥ ११ ॥

छठे महीनेमें मिश्री कैथका गूदा ठंढ़े जल के साथ पीसकर पिये वा गौके दूधके साथ पीनेसे वेदना शान्त होती है ॥ ११ ॥

अथवागोक्षुरंशिग्रुमधुकंपृष्टिपर्णिकाम् ॥
बलायुक्तंपिबेत्पिष्ट्वागोदुग्धैःषष्ठमासके ॥ १२ ॥

अथवा गोखरू सहिंजना मुलैठी पृष्टिपर्णी खरेंटी इनको गौके दूधसे छटे महीनेमें सेवन करे ॥ १२ ॥

सप्तमे ॥ कशेरुंपौष्करंमूलंशृंगाटंनीलमुत्पलम् ॥
पिष्ट्वाचसप्तमेमासिक्षीरैःपीत्वाप्रशाम्यति ॥ १३ ॥

कसेरू पुष्करमूल सिंघाड़ा नीलोफर पीसकर दूधके साथ पीनेसे सातवें मासकी व्यथा शान्त होजातीहै ॥ १३ ॥

अथवामधुकंद्राक्षाशृंगाटञ्चकशेरुकम् ॥
मृणालंशर्करायुक्तंक्षीरैःपेयंन्तुसप्तमे ॥ १४ ॥

अथवा मुलैठी दाख सिंघाड़ा कसेरू कमलकी जड़ मिश्रीके साथ दूधमें मिलाय पानकरे ॥ १४ ॥

अष्टमे ॥ यष्टीपद्माक्षकंमुस्तंकेशरंगजपिप्पलीम् ॥
नीलोत्पलंगवांक्षिरैःपिबेदष्टममासके ॥ १५ ॥

आठवें महीनेमें मुलैठी पद्माख मोथा नागकेशर गजपीपल नीलोत्पल यह गौके दूधमें अष्टममासमें पिये ॥ १५ ॥

अथवाबिल्वमूलन्तु कपित्थंबृहतीफलम् ॥
इक्षुपटोलयोर्मूलमेभिःक्षीरंप्रसाधयेत् ॥ १६ ॥

अथवा बेलकी जड़ कैथ दोनों कटेरी अर्थात् छोटी बड़ी गन्नेका रस पटोलकी जड़ यह दूधमें सिद्धकरे ॥ १६ ॥

तत्क्षीरमष्टमेपीत्वागर्भेशाम्यतिवेदना १७

यह दूध पनिसे आठवें मास की गर्भकी पीड़ा शान्त होजाती है ॥ १७ ॥

नवमे॥विशालाबीजकंकोलं मधुनासहपेषयेत् ॥
वेदनानवमेमासिशांतिमाप्नोतिनान्यथा ॥ १८ ॥

नौमें महीनेमें इन्द्रायनके बीज क्षीरकाकोली शहत के साथ पनिसे नवमें महीने की व्यथा शान्त होजातीहै ॥ १८ ॥

अथवामधुकंश्यामाह्यनन्ताक्षीरकाकुली ॥
एभिःसिद्धंपिबेत्क्षीरंनवमेवेदनावती ॥ १९ ॥

अथवा मुलैठी गुडूची अनन्तमूल प्रियंगु इनसे सिद्धकर नौवें महीनेमें दूध पिये तौ वेदना शान्त होतीहै ॥ १९ ॥

दशमे ॥ शर्करागोस्तनीद्राक्षासक्षौद्रंनीलमुत्पलम्॥
पाययेद्दशमेमासिगवांक्षीरैःप्रशान्तये ॥ २० ॥

दशमें महीनेमें मिश्री मुनक्का शहत नीलकमल यह गौके दूधसे दशमें महीनेमें पानकरे तो वेदना शान्त होती है ॥ २० ॥

अथवाशुंठिसंसिद्धंगोक्षीरंदशमेपिबेत् ॥
अथवामधुकंदारुशुंठीक्षीरेणसंपिबेत् ॥ २१ ॥

अथवा सोंठसे सिद्धकर गौका दूध दशमें महीनेमें पान करे अथवा मुलैठी देवदारु सोंठ गौके दूधसे पिये ॥ २१ ॥

सामान्ये॥धात्र्यञ्जनंसावरयष्टिकाख्यंत्र्यहंनिपीतंप्रमदाहठेन
सप्ताहमात्रंविनियोज्यनारीस्तभ्नातिगर्भंचलितंनचित्रम्२२

सामान्यतासे जो नारी लोध(वा आमला) सौवीरांजन मुलैठी सात दिन सावधान होकर पीतीहै तो उसका गर्भ स्तंभित होताहै फिर चलायमान नहीं होता ॥ २२ ॥

क्षौद्रंवृषंचन्दनसिंधुजातंमहेन्द्रमाज्यंपयसासुपिष्टम् ॥
गर्भंक्षरंतंप्रतिहंतिशीघ्रंयोगोयमुक्तःकिलमूलदेवैः ॥२३

शहत अडूसा चन्दन सैंधा इद्रजौ घृत यह जलसे पीसकर देनेसे पड़ताहुआ गर्भ शीघ्र थम जाताहै यह योग मौलिदेवने कहाहै२३॥

कुलालहस्तोद्भवकर्दमस्यवत्सीपयःक्षौद्रयुतस्यमात्रम्।
गर्भच्युतिंशूलमयींनिवार्य्यकरोतिगर्भंप्रकृतंहठेन २४॥

कुम्हारके चाकपर बर्तन बनाते समय जो पतली मिट्टी हाथमें

लगतीहै उसको ले बकरीके दूधमें डालकर शहतके साथ पिये तो शूलयुक्तगर्भके गिरनेको निवारण करताहै और स्थापित करताहै २४

कशेरुशृंगाटकबीजकाणिपयोघनैरंडशतावरीभिः ॥
सिद्धंपयश्शर्करयाविमिश्रंसंस्थापयेद्गर्भमुदित्यशूलम् ।

कशेरू सिंघाड़ा बिजौरा नागरमोथा एरण्ड शतावरी इनसे सिद्ध किया जल मिश्री डालनेसे शूल निवारण करताहै और गर्भको गिरनेसे रोकताहै ॥ २५ ॥

कंदःकौमुदकस्यमाक्षिकयुतंक्षीराज्यमिश्रंपिबे-
त्सप्ताहंसितयासुपक्कमबलाशीतीकृतंवायुना ॥
गर्भस्रावमरोचकंसपवनंशोफंत्रिदोषंवमिं
शूलंसर्वविधंनिहंतिनियमादेवंचयत्तत्स्मृतम्॥२६॥

कुमुदका कन्द शहत घी दूध मिलाकर पिये अर्थात् इसमें मिश्री डालकर ठंढ़ाकर सात दिन पियेतो गर्भस्राव अरोचक वातरोग सूजन त्रिदोष चमचमाहट शूल यह सब नियमसे सेवन करनेसे नष्ट होजातेहैं ॥ २६ ॥

ह्रीवेरातिविषामुस्तामरिचंसंशृतंजलम् ॥
दद्याद्गर्भेप्रचलितेप्रदरेकुक्षिवद्यापि ॥ २७ ॥

हीवेर अतीस मोथा मोचरस कुटज जौ इनका क्वाथ कर गिरते हुए गर्भमें देनेसे प्रदर कोखरोगमें देनेसे शूलादि नष्ट होजातेहैं॥२७॥

कुवलयकन्दंसतिलंपीत्वाक्षीरेणमधुसितायुक्तम् ॥
गुरुतरदोषैश्चलितंगर्भसंस्थापयेदाशु ॥ २८॥

कमलका कन्द तिल यह शहत मिश्रीयुक्त दूधके साथ पीनेसे गुरुदोषसे गिरतेहुए गर्भकोभी शीघ्र स्तंभन करताहै ॥ २८ ॥

पद्मोत्पलमृणालानिमधुकंशर्करातिलाः ॥
द्रवमानेषुगर्भेषुगर्भस्थापनमुत्तमम् ॥ २९ ॥

पद्म नीलोत्पलकीनाल मुलैठी मिश्री बडीकटेरी यह गर्भ
र्भ रतेमें स्थापन करताहै ॥ २९ ॥

इति गर्भस्रावरक्षा ॥

अथ गर्भशुष्के ॥

गोक्षीरंशर्करायुक्तंगर्भशुष्कप्रशांतये ॥
पिबेद्द्राम‍धुकंचूर्णंगंभारीफलचूर्णकम् ॥
समांशंगव्यदुग्धेनगुर्विणीतत्प्रशांतये ॥ ३० ॥

इति गर्भशुष्कनिवारणम् ॥

अथ गर्भ शुष्क शान्ति । शर्करा के सहित गौका दूध सेवन करने से शुष्कगर्भकी शान्ति होती है ॥ अथवा गंभारीके फलका चूर्ण वा मुलैठी का चूर्ण शहत के साथ पान करै अथवा गर्भिणी स्त्रि जिसका गर्भ सूखता हो वह गायका दूध सेवन करै ॥ ३० ॥

इति शुष्कगर्भनिवारणम् ॥

अथ सूतिकानिरोधेसुखप्रसवमाह ॥

श्वेतम्पुनर्नवामूलंचूर्णयोनौप्रवेशयेत् ॥
क्षणात्प्रसूयतेनारीगर्भेणातिप्रपीडिता ॥ ३१ ॥

सुखसे प्रसव होनेकी विधि ॥ श्वेत पुनर्नवा की जड़का चूर्ण स्त्रीयोनिमें प्रवेश करै तो तत्काल प्रसव होता है और गर्भकी पीड़ा नहीं होती है ॥ ३१ ॥

उत्तराभिमुखंग्राह्यंश्वेतगुंजीयमूलकम् ॥
कट्यांबध्वासप्तसूत्रैःसुखंनारीप्रसूयते ॥ ३२ ॥

उत्तरकी ओर मुख कर श्वेत चोटलीकी जड़ ग्रहण करके उसे कच्चे सूतसे बांधे तो स्त्री सुखसे प्रसववती होती है ॥ ३२ ॥

उत्तरेचसमालोड्यंश्वेतगुंजाफलांकियत् ॥
सुखप्रसवमाप्नोतितत्क्षणान्नात्रसंशयः ॥ ३३ ॥

वा पेटमें बांधनेसे अथवा उत्तरको देख समालोड़ितकी श्वेत चौंटलीका लेप सुखसे प्रसव करता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ३३ ॥

योनिम्वालेपयेत्तेनसासुखेनप्रसूयते ॥
सहदेव्याश्वमूलंवाकटिस्थंप्रसवेत्सुखम् ॥ ३४ ॥

अथवा योनिमें लेप करनेसे सुखसे सन्तान उत्पन्न होती है अथवा सहदेईकी जड़ कमरमें बांधने से स्त्रीके सुखेस बालक उत्पन्न होताहै ॥ ३४ ॥

अपामार्गस्यमूलन्तुग्राहयेच्चतुरङ्गुलम् ॥
नारीप्रवेशयेद्योनौतत्क्षणात्साप्रसूयते ॥ ३५ ॥

चिरचिटेकी जड़ चार अंगुलकी ग्रहण कर योनिमें रखनेसे स्त्री सुखसे बालक उत्पन्न करती है ॥ ३५ ॥

तोयेनलांगलीकन्दंघृष्ट्वायोनिंप्रलेपयेत् ॥
नाभिंचलेपयेत्तेनतत्क्षणात्सूयतेध्रुवम् ॥ ३६ ॥

अथवा कलिहारीकी जड़ घिसकर नाभिमें प्रलेप करे तो बहुत शीघ्र सन्तान होतीहै ॥ ३६ ॥

गुंजाफलार्द्धखंडंचतोयपूगंतथार्द्धकम् ॥
पिबेद्वातोयपिष्टंचसासुखेनप्रसूयते ॥ ३७ ॥

चौंटली आधेपल खांड आधेपल सुपारी इनको जलके साथ पीसकर पीनेसे सुखसे स्त्री प्रसव करती है ॥ ३७ ॥

गुंजातरोर्मूलयुगंविधानादुत्पाट्यपुष्येचरवौनिबद्धम् ॥

कटीतलेमूर्द्धनिनीलसूत्रैःशीघ्रंप्रसूतिंकुरुतेंगनायाः॥३८॥

चौंटलीकी जड़ और चौंटली यह विधिपूर्वक रविवारके दिन पुष्यनक्षत्रमें लावे उसे कमरके नीचे वा शिरमें नीलसूत्रसे बांधनेसे स्त्री शीघ्र प्रसव करती है ॥ ३८ ॥

आगारधूमंगृहवारिणावापीत्वाबलाशीघ्रतरंप्रसूते ॥
अलम्बुषामूलमथोनिबद्धंयोगद्वयंभूपतिरित्यवादीत् ॥३९॥
समातुलुंगंमधुकस्यचूर्णमध्वाज्यमिश्रंप्रमदानिपीय ॥
व्यथाविहीनंप्रसवंहठेनप्राप्नोतिनैवात्रविकल्पबुद्धिः॥४०॥
(अत्रमातुलुंगस्यमूलंग्राह्यंनतुफलंक्वाथयित्वापेयम्।)

गृहका धूम जलके साथ पीनेसे स्त्री शीघ्र सन्तान करती है अथवा लज्जालूकी जड़ कमरमें बांधनेसे शीघ्र प्रसव होताहै यह राजाने कहा है मातुलुंग और मुलैठीका चूर्ण शहत घीसे मिलाकर स्त्री पान करै तौ व्यथाके विनाही सुखसे सन्तान होती है इसमें सन्देह नहीं ॥ मातुलिंगी की जड़ ग्रहण करनी फल नहीं क्वाथ करके पीना चाहिये ॥ ४० ॥

दशमूलीशृतंतोयंघृतसैंधवसंयुतम् ॥
शूलातुरापिबेन्नारीसासुखेनप्रसूयते ॥ ४१ ॥

दशमूल का काढा घृत और सैंधके सहित शूल से व्याकुल स्त्रीको पिलानेसे सुखसे स्त्री प्रसववती होतीहै ॥ ४१ ॥

"ॐमन्मथॐमन्मथॐमन्मथमन्मथवाहिनीलम्बोदरमुंच २ स्वाहा"॥अनेनमंत्रेणजलंसुतप्तंपातुंप्रदेयंशुचिनानरेण ॥ तोयाभिपानात्खलुगर्भवत्याप्रसूयतेशीघ्रतरंसुखेन ॥ ४२ ॥

'ॐ मन्मथ ॐमन्मथ ॐमन्मथ मन्मथ वाहिनी लम्बोदर मुंच २

स्वाहा' इस मंत्रसे पवित्र होकर गरमकर जल स्त्रीको पिलावै तो इस जलके पान करनेसे स्त्री सुखप्रसूति होती है ॥ ४२ ॥

"ॐकारंचहकारंचअकारेणसुपूजितम् ॥
ॐकारेशिरसंकृत्वाअन्तेनमस्त्रिमूर्तये ॐ
हांनमस्त्रिमूर्त्तये" ॥ ४३ ॥

'ॐकार हकार अकार से युक्तकर ॐकार शिरपर कर अन्तमें त्रिमूर्तयेनमः लगावे ॐ ॐ हां नमस्त्रिमूर्तये' ॥ ४३ ॥

अनेनैवतुमंत्रेणजप्तव्यंसूतिकागृहे ॥
सुखंप्रसवमाप्नोतिसापुत्रंलभतेध्रुवम् ॥ ४४ ॥

इति सुखप्रसवविधिः ॥

इस मंत्रको प्रसूतिकाके घरमें जपे तो सुख से प्रसववती होती है और सुपुत्र को प्राप्त होती है ॥ ४४ ॥

इति सुखप्रसवविधिः ।

अथ बालानांसूतिकायाश्चभूतग्रहनिवारणम् ॥

विल्वमूलन्देवदारुंगोशृंगंचप्रियंगुच ॥
मार्जारस्यमलंकुष्टंवंशत्वगाजमूत्रकैः ॥ ४५ ॥

अथ बालानां सूतिका ग्रह निवारणम् ॥ बेलकी जड़ देवदारु गोशृंग प्रियंगुफूल रक्तचीतेकी जड़ बिल्लीका मल कूठ बांसकी छाल यह सब वस्तु बकरेके मूतमें पीस कर ॥ ४५ ॥

पिष्ट्वाधूपोनिहन्त्याशुग्रहभूतज्वरादयः ॥
डाकिनीराक्षसाःप्रेताःपिशाचाब्रह्मराक्षसाः ॥ ४६ ॥
एकाहिकोद्व्याहिकश्चज्वरोनश्यतितत्क्षणात् ॥

धूपदेनेसे ग्रह भूतज्वर डाकिनी राक्षस प्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षस दूर होते हैं एकांतरा तिजारी दूर होती है ॥ ४६ ॥

'ॐद्रावितंतापेठंठःस्वाहा' अनेनधूपन्दद्यात् ॥

श्रीवासंसर्षपंकुष्टंवचातैलंघृतंवसा ॥
धूपोबालग्रहेदेयोबालानांग्रहशांतये ॥ ४७ ॥

'ॐ द्रावित तापे ठंठः स्वाहा' इस मंत्रसे धूपदे ॥ चन्दन सरसों कूठ वच तेल घी चरबी इनकी धूप बालकों को ग्रहशान्तिके निमित्त देना चाहिये ॥ ४७ ॥

शिरीषनिम्बयोःपत्रंगोशृंगस्यत्वचावचः ॥
वंशत्वक्शिखिपिच्छंचकंगुनाचसमंघृतम् ॥ ४८ ॥

शिरस नीमके पत्ते गौके सींगकी त्वचा वच वंशकी छाल मोरपंख मालकांगनीकी समान घृत ॥ ४८ ॥

धूपोबालग्रहान्हंतिस्वयंमंत्रेणमंत्रयेत् ॥ ४९ ॥

यह सब एकत्र कर मंत्र पढ़ इन की धूप देने से बालग्रह दूर होते हैं ॥ ४९ ॥

ॐद्रुतंमुंचडुड्डामरेश्वरआज्ञापयतिस्वाहा ॥
धूपत्रयाणामेषमंत्रः ॥
पुनर्नवानिम्बपत्रसर्षपघृतविरचितोधूपः ॥
गर्भिण्याबालानांसततंरक्षाकरःकथितः ॥ ५० ॥

" ॐ द्रुतं मुंच २ डुड्डामरेश्वर आज्ञापयति स्वाहा " यह धूप देनेका मंत्र है पुनर्नवा नीमके पत्ते सरसौं और घी इनकी धूप मंत्रपढ़कर देनेसे गर्भिणी और बालकों की रक्षा होती है ॥ ५० ॥

दाडिमस्यतुवन्दाकंज्येष्ठाऋक्षेसमुद्धरेत् ॥
द्वारेबद्धंतुबालानांसर्वग्रहनिवारणम् ॥ ५१ ॥

ज्येष्ठानक्षत्रमें दाडिमका वन्दा लावै वह बालकों के घरके द्वारे बांधनेसे सब ग्रहोंका निवारण होताहै ॥ ५१ ॥

पुष्यार्केश्वेतगुंजायामूलमुद्धृत्यधारयेत् ॥

बालानांकंठदेशेचडाकिनीभयनाशनम् ॥ ५२ ॥

पुष्यनक्षत्रमें श्वेत चौंटलीकी जड़ धारण करे अर्थात् बालकों के कंठमें बांधनेसे डाकनीका भयनाश होजाताहै ॥ ५२ ॥

श्वेतापराजितापत्रंजयापत्रंद्वयोरसम् ॥
नस्यंकुर्य्यात्पलायन्तेडाकिनीदानवादयः ॥ ५३ ॥

श्वेत विष्णुक्रान्ताके पत्ते और गुड़हरके पत्ते इन दोनोंके रसका हुलास देनेसे डाकनी दानवादि पलायन करजाते हैं ॥५३॥

सर्पत्वक्शिखिजारिष्टपल्लवंरजनीवचा ॥
रसोनांहिंगुगोलोमशृंगीमरिचमाक्षिकैः ॥ ५४ ॥

सांपकी कैंचली सीसम नीमकेपत्ते हलदी वच ल्हसन हिंगु गैके लोम (बाल) काकड़ासिंगी कालीमिरच शहत ॥ ५४ ॥

धूपःसर्वज्वरघ्नोयंकुमाराणांज्वरापहः ॥
छुच्छुन्दरीमलंमांसंहरिद्राबिल्वपत्रकम् ॥ ५५ ॥
इन्द्रजंसर्षपंपत्रंधूपेनतत्प्रयोजितम् ॥
निहंतिरोदनंरात्रौबालस्याशुनसंशयः ॥ ५६ ॥

इसकी धूप सम्पूर्ण ज्वर तथा कुमारोंका ज्वर हरनेवाली है छछूंदरका मल मांस हलदी बेलपत्र इन्द्रजौ सरसों तेजपात इनकी धूप देनेसे रातमें बालकका रोना थम जाता है इसमें संदेह नहीं ॥ ५६ ॥

मत्स्यराजस्यपित्तेनमरिचंभावयेद्बुधः ॥
रविवारेरौद्रशुष्कमञ्जनात्सर्वभूतहृत् ॥ ५७ ॥

मत्स्यराजके पित्तमें कालीमिरचकी भावना दे रविवारके दिन इसको सुखाय धूप देनेसे ग्रह दूर होते हैं ॥ ५७ ॥

नरसिंहस्यमंत्रेणसकृदुच्चरितंहरेत् ॥

डाकिंनीग्रहभूतानितमःसूर्य्योदयेयथा ॥ ५८ ॥

नृसिंहका मंत्र पढ़कर लावे इससे डाकिनी ग्रह भूतादि ऐसे भाग जाते हैं जैसे सूर्यके उदयमें अंधकार भाग जाता है ॥५८ ॥

"ॐनरसिंहायहिरण्यकशिपुवक्षःस्थलविदारणायात्रि भुवनव्यापकायभूतप्रेतपिशाचडाकिनीकुलोन्मूलना यस्तंभोद्भवायसमस्तदोषान्हरहरविश २ पच२हन २ कंपय २ मथ २ ह्रीं ३ फट् ठःठःठः एहि २ रुद्रआज्ञापयतिस्वाहा" ॥

अथ नरसिंहमंत्रः ॥

"ॐह्रींह्रींह्रींह्रूंह्रूंह्रूंफट्स्वाहा"। अनेनसर्षपाअभिमं त्रितंकृत्वारोगिणंप्रहारयेत्॥तदासर्वेग्रहाःपलायन्ते। बालग्रहाभिभूतानांबलिंयत्नेनकल्पयेत् ॥ शुचिपक्कातुसप्ताहंमत्स्यंमांसंसुरांफलम् ॥ ५९ ॥

"ॐ नरसिंहाय हिरण्यकशिपुवक्षस्थल विदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूत प्रेत पिशाच डाकिनी कुलोन्मूलनाय स्तंभोद्भवाय समस्तदोषान् हर हर विश २ पच २ हन २ कंपय कंपय मथ मथ ह्रीं ३ फट् ठ ठ ठ एहि एहि रुद्र आज्ञापयति स्वाहा' अथ नृसिंहमंत्रः। 'ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं ह्रूं फट् स्वाहा' इन मंत्रसे सरसों पढकर मारे ताली बजावे तो सम्पूर्ण ग्रह भाग जाते हैं, जब बालकों को ग्रह आकर्षित करले तो यत्नसे उनकी बलिकल्पित करै सात दिन पर्यन्त पवित्रहो मत्स्य मांस सुरा फल ॥ ५९ ॥

पुष्पधूपाक्षतंगंधंदीपंचदक्षिणादिकम् ॥

चंतुष्पथेक्षिपेद्रात्रौशुद्धेनूतनखर्परे ॥
शनौवाकुजवारेवाबालदोषोपशान्तये ॥ ६० ॥
"ॐसर्वभूतेभ्योबलिंगृह्ण २ स्वाहा" ॥

इति बलिदानमंत्रः ॥

इति बालानांसर्वग्रहनिवारणम् ॥

पुष्प धूप अक्षत गंध दीप दक्षिणा यह सब वस्तु रात्रिमें शुद्ध और नई लेकर सिकोरेमें शनिवार मंगलको चौराहे में रखिआवै और यह मंत्र पढ़दे, 'ॐ सर्वभूतेभ्यो बलिंगृह्ण स्वाहा' ॥ ६० ॥

इति बलिदानमंत्रः ॥

इति बालानांसर्वग्रहनिवारणम् ॥

अथ गर्भवत्याबालस्यअहितुंडिकादिनिवारणम् ॥

चंद्रग्रस्तेशिखीमूलंविधानेनोद्धरेद्बुधः ॥
बद्धंगलेचजघनेबालाहितुंडिकांजयेत् ॥ ६१ ॥

गर्भवती के बालक की अहितुंडिकादि निवारण करनी। चन्द्रग्रहणमें कलिहारीकी जड़ विधिपूर्वक लावै उसको बालक के गलेमें बांधनेसे अहितुंडिका दूर होती है ॥ ६१ ॥

श्वेतार्कमूलंसंगृह्यगृहस्तम्भेचबंधयेत् ॥
पुष्यार्कवारवेवीरबालाहितुंडिकांजयेत् ॥ ६२ ॥

पुष्यनक्षत्र में वा रविवारके दिन श्वेतआककी जड़ लाकर बांधनेसे बालकका अहितुंडरोग दूर होता है ॥ ६२ ॥

उदुम्बरभवंमूलंशिशुकट्यांचबंधयेत् ॥
बृहत्कूष्मांडवृत्तंवातेनाहितुंडिकांजयेत् ॥ ६३ ॥

इति बालानामहितुंडिकानाशनम् ॥

गूलरकी जड़ लाकर बालककी कमरमें बांधे अथवा बड़े पेंठे की डंठली बांधनेसे अहितुंड़िकारोग दूर होता है ॥ ६३ ॥

इति बालानामहितुंडिकानाशनम् ॥

अथ स्त्रीणांपुष्परक्षा ॥

पलाशराजादनयोःफलानिपुष्पाण्यथोशाल्मलिपादपस्य ॥
आज्येनमासार्द्धदिनंपिबंतिरक्षाभवेन्निश्चितमेवपुष्पे ६४॥

अथ स्त्रीणां पुष्परक्षा । ढाक और क्षीरिणीवृक्षके फल सेमलके फूल यह घीके साथ पंद्रह दिन पान करनेसे निश्चयही स्त्रीके पुष्पकी रक्षा होती है ॥ ६४ ॥

तुषाम्बुनापावकवृक्षमूलंनिक्काथयित्वानियमंचरंती ॥
ऋत्वन्तकालेत्रिदिनंपुरंध्रीरक्षाभवेदामरणान्तमेव ॥६५

तुषकेजलसे चीतेकी जड लेकर जो नियम से काढा कर पीवै और नियमसे रहै और ऋतुके अन्तमें तीनदिन पान करनेसे जन्म पर्यन्त स्त्री के आर्तवकी रक्षा होती है ॥ ६५ ॥

फलंकदम्बस्यचमाक्षिकानित्विषोदकेनात्रिदिवंसकृत्वा॥
स्नानावसानेनियमेनपीत्वारक्षामवश्यंकुरुतेहठेन ॥६६॥

कदम्बके फल सोनामाखी यह तीन दिन तुषके जलसे पीस कर स्नानके अन्तमें तीन दिनतक इसे नियमसे सेवन करनेसे ऋतुकी रक्षा होती है ॥ ६६ ॥

त्रैहायनंवागुडमत्तिनित्यंपलप्रमाणंवनिताऽर्द्धमासम् ॥

जीवांतिकंनिश्चितमेवतस्यांरक्षाख्यमुक्तंकविपुंगवेन ६७॥

अथवा जो स्त्री पंद्रहदिन तक नित्य तीन वर्षके गुड़का चार तोला प्रमाणसे सेवन करती है कविपुंगव जीवनपर्यंन कहाहै (?) ६७

कर्षद्वयंराक्षसवृक्षबीजंसप्ताहमात्रंशितशालिधान्यम् ॥
ऋतौनिपीतंमृगशावकाक्ष्यारक्षार्थमेतन्नियतंप्रदिष्टम्॥६८॥

इति स्त्रीपुष्परक्षा ॥

दोकर्ष राक्षसवृक्षके बीज यह दोनों शालिशाकधान्य यह ऋतुके अन्तमें सात दिनतक पान करनेसे अवश्य पुष्प की रक्षा होतीहै ६८

इति स्त्रीपुष्परक्षा ॥

अथ दुर्भगाकरणम् ॥

ज्येष्ठानक्षत्रेनिम्बवन्दाकंयस्याअंगेदीयते
सादुर्भगाभवति इतिदुर्भगाकरणम् ॥ ६९ ॥

अथ दुर्भगाकरणम् । ज्येष्ठानक्षत्रमें नीमका वन्दा जिसके अंगमें दियाजाय वह दुर्भगा होती है ॥ ६९ ॥

इति दुर्भगाकरणम् ।

अथकलहकरणम् ॥

विशाखानक्षत्रेनिम्बवृक्षस्योत्तरमूलंविवस्त्रोविमुखीभूयउत्पा
टचमुखेनयस्यचालयेक्षिपेत्तस्यगृहेप्रत्यहंकलहोभवति ॥
शाखोटमूलंपत्रंचएकीकृत्यस्थापयेत्तथा ॥ ७० ॥

विशाखानक्षत्रमें नीमके पेड़की जड़ उत्तरकी ओर मुखकर नग्न होकर मुखसे उखाड़े जिसके जहां फेंकदे प्रतिदिन उसके यहां क्लेश होताहै सिहोरेकी जड़ और पत्ते मिलाकर रखने से क्लेश होताहै७०॥

दूरेकृतेतुतद्वृक्षेभद्रंभवति। तन्नक्षत्रेशाखोटबदरीबीज
द्वयमेकीकृत्ययस्यगृहेस्थापयेत्तस्यानित्यंकलहोभवति ॥

ब्रह्मदण्डीसमूलाचकाकमाचीसमन्वितम् ॥
जातीपुष्परसैःपिष्ट्वासप्तरात्रंपुनःपुनः ॥ ७१ ॥
एषधूपःप्रदातव्यःशत्रुगोत्रस्यमध्यतः ।
यथागोत्रंसमाघ्रातिपितापुत्रैःसमंकलिः ॥ ७२ ॥

दूर करनेसे दूरहोताहै । विशाखानक्षत्रमें शाखोट और बेरकी दो गुठली एकत्र कर जिसके घरमें डाले उससे नित्य क्लेश होताहै । जल सहित ब्रह्मदण्डी काकमाची यह जाईके फूलोंके रसमें सातरात्रितक बारंबार पीसे, यह धूप शत्रुके गोत्रमें देनेसे सूंघनेसे पितापुत्रमें क्लेश होता है ॥ ७२ ॥

इति कलहकरणम् ।

इति श्री नित्यनाथविरचिते कामरत्ने षण्ढीकरणादि
कलहकरणान्तं नामोष्टमोपदेशः ॥ ८ ॥

अथ सर्वारिष्टनाशार्थंरक्षाविधिः ॥

ईश्वरेणपुरादेव्यैयद्यत्तत्कथितंमया ॥
कादिद्विरवसानंचअक्षरंस्वरसंयुतम् ॥ १ ॥
ईकारेणापिसंपूज्यअधोरेफमयान्वितम् ॥
ॐकारंशिरसंकृत्वाजप्तव्यंसिद्धिमिच्छता ॥ २ ॥

अथ सम्पूर्ण अरिष्टनाशक रक्षाविधि। ईश्वरने पार्वतीके प्रति जो जो कुछ कहाहै आदि हकार अक्षर और स्वरके सहित वह हकारके सहित और नीचे रेफसे संयुक्त तथा आदिमें ओंकार लगाकर सिद्धिकी इच्छा करनेवालेको जपना चाहिये ॥ २ ॥

मंत्रोयम् " ह्रींह्रींह्रीं ॐ ह्रीं क्रीं ख्रीं वा
ॐ क्रीं ख्रीं ॐ ठ्रीं थ्रीं फ्रीं ह्रीं " ॥
स्वसंयमनमंत्रोयंशतार्द्धजपमात्रतः ॥
अशेषारिष्टनाशःस्यादित्याहपुरसूदनः ॥ ३ ॥

ह्रीं ह्रीं ह्रीं अथवा(ओंह्रीं क्रीं ख्रीं) वा (ओंक्रींख्रीं क्ष्रीं यह मंत्र है ५० वार कहनेसेही यह मंत्र सिद्ध होजाता है और सम्पूर्ण अरिष्ट नाश करता है ऐसा शंकरने कहा है ॥ ३ ॥

कपरंचपरंचैवठपरंतपरन्तथा ॥
पपरंवर्णमाहृत्यईकारेणसुपूजितम् ॥ ४ ॥
अधोरेफसमायुक्तमोंकारैःशिरसंतथा ॥
मंत्रोयम् ॥ ख्रंछ्रंठ्रंथ्रंफ्रंह्रम् । शुद्धम् ।
श्रद्धयातुमहामंत्रंयेपठंतिसदामुने ॥
सर्वथातस्यपुंसःस्यात्सर्वारिष्टविनाशनम् ॥
हस्तेनरक्तपुष्पेणग्रथितयाचमालया ॥
अभिमन्त्र्यशतेनापिदद्यादेव्यैसदानघे ॥ ५ ॥

ककार पकार उकार तकार पकार यह हकार के सहित उसके नीचे रेफ लगानेसे प्रथम ओंकार उच्चारण करै मंत्र यह है 'ख्रं छ्रं ठ्रं थ्रं फ्रं ह्रं' (शुद्ध) हे मुने ! इस मंत्रका माहात्म्य जो सदा उच्चारण करते हैं उनके सब अरिष्ट नाश होजाते हैं और हाथमें लाल-फूल की माला लेकर इसको उच्चारण करते हैं सौवार अभिमंत्रित-कर देवीको चढ़ाते हैं ॥ ५ ॥

यावज्जीवंशुभंतस्यसर्वलाभोदिनेदिने ॥
नगृहेनिष्टपातःस्याल्लिखित्वास्थापनेऽपिच ॥ ६ ॥

उसको जन्मपर्यन्त शुभ होता है, अर्थात् दिन २ अर्थलाभ होता है, इसे लिखकर स्थापन करनेसे घरमें अरिष्ट नहीं होता है ॥ ६ ।

अक्षराणामंत्यवर्णालिखित्वापंचधानघे ॥
अधोरेफसमायुक्तमोंकारेशिरसंतथा ॥ ७ ॥.

अक्षरोंके अन्त्य वर्णोंको पंचविधिसे करके नीचे रेफ मिलाकर ॐकार सहित उच्चारण करै ईकार युक्त कर अन्तमें फट् लगावे ॥ ७ ॥

हकारेणचसम्पूज्यमन्तेफडक्षरंस्मृतम् ॥
ईकारेणचसंपूज्यअन्तेफडक्षरान्वितम् ॥
'ॐ क्ष्रीं । ५ । फट्'। मंत्रोयम्ममरूपस्यध्यानंजापंतथैवच ॥
ममैवहृदयंतस्यसदातद्गतमानसः ॥ ८ ॥

'क्ष्रीं फट्' यह मंत्रहै मेरेही रूपका ध्यान करे और जपकरे और तद्गतमन होकर मुझमेंही अपना मन लगावे ॥ ८ ॥

सदास्यात्तद्गृहेक्षेमंसहस्रार्द्धस्यजापनात् ॥
त्रैलोक्येतत्समोनास्तिनित्यंफलमवाप्नुयात् ॥ ९ ॥

इसमंत्रका पांचसे जप करनेसे उसके घरमें सदा अरोग्यता रहतीहै, इसकी समान त्रिलोकीमें कुछ नहीं, यह नित्यफल का देनेवाला है ॥ ९ ॥

नित्यंसम्पद्यतेराज्ञापत्न्यापुत्रेणबांधवैः ॥
ज्ञातिभिःसज्जनैश्चापिशत्रुभिश्चविशेषतः ॥ १० ॥

इससे राजा स्त्री पुत्र बांधवों के सहित नित्य सम्पत्तिमान होताहै ज्ञाति सज्जन शत्रु सबकी दृष्टि में विशेष होताहै ॥ १० ॥

जन्मांतरेसुखीप्राणीशृणुदेविमहाफलम् ॥
अन्तद्वयंसमागृह्यमधोरेफसमन्वितम् ॥ ११ ॥

जन्मान्तरमेंभी वह प्राणी सुखी होताहै, हे देवि ! इसका महा- फल सुनो दो अन्तके अक्षर ग्रहण कर उसके रेफ लगावै ॥ ११ ॥

ॐकारसंयुतंकृत्वारेखाबिन्दुसमायुतम् ॥१२ ॥

ॐकारसंयुक्त करके रेखाबिन्दुके सहित मंत्रोद्धार करै यह मंत्र है ॥ १२ ॥

मंत्रोयम् ॥

ॐक्ष्रौंक्ष्रौंअनेनैवतुमंत्रेणयेजपंतिमहाजनाः
तेसर्वेशांतिमायांतिसततंतस्यजापनात् ॥ १३ ॥

'क्ष्रौं क्ष्रौं' इसमंत्रको जो महाजनजप करते हैं वे निरन्तर इसके जपके फलसे शान्तिको प्राप्त हो जातेहैं ॥ १३ ॥

श्वेतार्कमूलंपुष्यार्केसमुद्धृत्यविधारयेत् ॥
बाहुभ्यांव्याधयोनस्युस्त्वरिष्टानिविशेषतः॥ १४ ॥

पुष्यनक्षत्रमें श्वेत आककी जड़ लगावै उसको भुजामें बांध- नेसे व्याधि और अरिष्ठ नहीं होता है ॥ १४ ॥

तद्दर्शनेननश्यंतिडाकिनीदानवादयः ॥
तद्धूपेनपलायन्तेप्रेताद्यादूरतोध्रुवम् ॥ १५ ॥

और उसके दर्शनसेही डंकिनी अथवा दानव आदि नष्ट होजातेहैं और इसकी धूपसेही प्रेतादि दूरसे भाग जाते हैं ॥ १५ ॥

पूर्वाभाद्रपदाऋक्षेवन्दाकंतुशिरीषजम् ॥
संगृह्यशिरसिक्षिप्तेअभयंभवतिध्रुवम्॥ १६ ॥

पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रमें शिरसका वन्दा लावै उसको शिरपर रख- नेसे निश्चयसे अभय होता है ॥ १६ ॥

विष्णुक्रांताभवंमूलंहस्तस्थंचौरभीतिजित् ॥
नरसिंहस्यमंत्रेणसकृदुच्चारितेहरेत् ॥ १७ ॥

डाकिनीग्रहभूतानितमःसूर्य्योदयेयथा ॥
नरसिंहमंत्रः पुराबलाधिकारेलिखितः ॥
भूतप्रेतपिशाचादिभयेस्मृत्वानरोऽभयः ॥
भैरवींतुमहापूर्वींभवेदेवनसंशयः ॥ १८ ॥

वा विष्णुक्रान्ताकी जड़ हाथमें स्थित रखनेसे चोरका भय नहीं होता है और नृसिंहके मंत्रसे सब दुःख हरजाते है, डाकिनी गृह भूत ऐसे नष्ट होजाते हैं जैसे सूर्यके सन्मुख अंधकार नहीं रहता, नृसिंहमंत्र कहते हैं. वह जो पहले बलिके अधिकारमें कहाहै, प्रेत पिशाचादिके भयमें उसको स्मरणकर मनुष्य अभय होजाताहै और इसमें संदेह नहीं वह महा भैरवीका भक्त उसको जानता है १८

अथ निद्राकरणम् ॥

निगडेचौरिकायांचपठेद्वारत्रयंयदि ॥
सर्वेप्रहारिकायांतिनिद्रायावशमेवच ॥ १९ ॥

चोरबेडीको तीनवार मंत्रसे अभिमंत्रित करै तो सब पहरा करनेवाले सो जांयगे ॥ १९ ॥

काककालिकामहिषासुरनाशिनीयोगनिद्राणीअमुकार॥
पुरियादेवीकालिकामालायोगनिन्द्राणीउदपानान॥ २०॥

काक कालिका महिषासुरनाशिनी योगनिद्राणी अमुकार पुरियादेवी कालिका मालायोगनिद्राणी उदयपानान ॥ २० ॥

दीकालमायाधरिनागनिद्राणीअमुकारपुरीदंडप
हरिभूपैलौठकालिकारआज्ञागडागडीपीठेकालि
कारआज्ञा इतिलौकिकमंत्रः ॥

नदीकाल मायाधरी नागनिद्राणी या अमुकारपुरी दंडपहरि भूपै लोटे कालिकार आज्ञा गडा गडी पीठे कालिकार आज्ञा

इति लौकिकमंत्रः ।

अथनिगमोक्तम् ॥

ॐह्रींचंडांडउग्रचंडारिकाकालिकानिद्रयद्रय ॥ इति मंत्रेणमहानिद्राणीभवति ॥ एतन्मंत्रंपठित्वातस्य गृहेवाद्यवालोपठित्वाधूलिंकृत्वाक्षिपेत् ॥ कालिका विद्याकालमोहैदेवासुरनरकेहोस्थिरनहे ॥ २१ ॥ त्रिभुवनजगतकालिकारदासीयहरी ॥ जागंताल्लि निद्रगेलमहिमद्रभेयशी ॥ कालिकारआज्ञानिद्राली लागेउदयदेखि ॥ आनिंद्रभागेगुवाकंखादित्वातस्या वशिष्टंविवरंकृत्वासंयोज्यतत्रप्रस्नावयेत् ॥ तस्यवा टिकायामनेनमंत्रेणतस्यनिद्रांकरोति ॥ काकजं घाजटानिद्रांजनयेच्छिरसिस्थिता ॥ मूलंवाका कमाच्याश्वकृष्णायास्तद्गुणंस्मृतम् ॥ २२ ॥

अथ शास्त्रमंत्र 'ओं ह्रीं चण्डा उग्र चण्डारिका कालिका-न्द्रिय' इस मंत्र से महानिद्रा होती हैं यह मंत्र पढ़कर उसके घरमें विद्या निक्षेपकरै वह विद्या यह है कालिका विद्या काल मोहै देवासुर नरतकहो स्थिर लहै, त्रिभुवन जगत कालिकारदा सीयहरिजागंता निन्द्र गेल महि मंडले पसी कालिकार आज्ञा निद्राली लागे उदय देखि आनिन्द्रा भागे सुपारी खाकर उसके अवशिष्टमें विवर करके संयुक्तकर उसपर प्रस्नावकर उस वाटिकामें रखदे जो वहां उस वाटिकाके सेवन

करेगा पूर्वोक्त मंत्रसे निद्रा होती है ॥ घुंघची और रुद्रजटा शिर-पर डालनेसे निद्रित कर देती है अथवा काकमाची (मकोय) की जड़ पीपल शिरपर डालनेका भी यही गुण है ॥ २२ ॥

मुनिखंडकशाकंवाशय्यास्थानेखनेदथ ॥ करंजमूलंशिरसिबंधनात्कुरुतेतथा 'ॐशुद्धे २महायोगिनीमहानिद्रेस्वाहा'इसमंत्रसेमहानिद्रायणीदेवीका३०० जपकरै ॥ २३ ॥

बकवृक्ष इक्षु विशेषका शाक शय्यास्थान में खोदकर गाड़देनेसे अथवा करंजुए की जड़ शिरपर बांधनेसे नींद आजातीहै ॥२३॥

अथ निद्राभंजनम् ॥

कनकधूस्तूरमूलंमृताभ्रकेतकीपुष्परजः ॥
एतानिपिष्ट्वाकपटवेषेनखादयेन्निद्राभंजनंभवति ॥२४॥
नीलोत्पलंसमरिचंनागकेशरमूलकम् ॥
पिष्ट्वातदंजयेच्चक्षुर्निद्रामाप्नोत्यसंशयः ॥ २५ ॥

इति निद्राकरणम् ॥

कृष्णधतूरेकी जड शोधाअभ्रक केतकीके फूलोंका रस यह सब पीसकर श्वेत कटेरीके रसमें खाय अथवा नीलोफर कालीमिर्च नागकेशर यह सब बारीक पीसकर नेत्रोंमें आंजै तो नींद आतीहै२५

इति निद्राभंग ॥

निद्राकामंत्र ३०० जपै (ओं शुद्धे २ महायोगिनी महानिद्रेस्वाहा) यह महानिद्रायणीका मंत्र है इसे पढकर श्मशानकी गोमूत्रसे प्लावित मृत्तिका घरमें डालनेसे निद्रा होती है यह निद्राकी विद्या संक्षेपसे कहीहै ।

अथ बंधनमोचनम् ॥

मार्गशीर्षस्यपूर्णायांशिखीमूलंसमुद्धरेम् ॥
बंधनान्मुच्यतेतेनाशिखाबंधनसंशयः ॥ २६ ॥

अथ बंधमोचन मार्गशीर्ष महीनेकी पूर्णिमाको शिखीकी जडी उखाडकर लावै उससे अवश्य बंधनसे छूट जायगा इसमें संदेह नहीं ॥ २६ ॥

"ॐ नमःकनकपिंगलेरुद्रहृदयांशेरौद्रास्थिधारिणि तिष्ठतिष्ठसरसरसन्मोहयभगवतिशिखिजेतिमिरेम हामायेस्वाहा ॥ अथवा ॐ नमःकमलपिंगलेरुद्रहृ दयाङ्कवेतालअस्थिधारिणितिष्ठ २ सर २ सर्वान्मो हय२भगवतिशिखाजेतिमिरेमहामायेस्वाहा"॥अष्टो त्तरशतंजप्त्वाशिखायांपूर्वौषधंबंधयेत्ततःसिद्धिः ॥
प्लुक्षंसेनककरांतंलिखेद्बंधनमोचनम् ॥ २७ ॥

मंत्र यह है 'ओंनमःकनक पिंगले रुद्रहृदयांशे रौद्रास्थिधारिणि तिष्ठ तिष्ठ सरसरसन्मोहय भगवति शिखिजे तिमिरे महामाये स्वाहा। यह मंत्र एकसौआठवार जपकर शिखामें औषधी बांधनेसे सिद्धि होती है प्लुक्षांसे ककार पर्यन्त मंत्र लिखनेसे बंध-मोचन होताहै ॥ २७ ॥

अथ निगडादिभंजनम् ॥

हस्तार्केसिन्दुवारस्यमूलंचोत्तरगंहरेत् ॥
स्पर्शनम्बंधविच्छेदंकुरुतेशीघ्रमारुतः ॥ २८ ॥

निगडादिभंजनम् । हस्तनक्षत्रमें उत्तरदिशामें जाकर सिन्धुवार की जड़ लावै उसके स्पर्शमात्रसे निगड़भंग हो जाता है इसमें संदेह नहीं ॥ २८ ॥

मांसीरक्तोत्पलंतुल्यंकृकलासेचभोजयेत् ॥
तन्मलैर्गुटिकांस्पर्शात्तालयंत्रेभिनन्त्यलम् ॥ २९ ॥

जटामांसी लालकमल यह बराबरले कृकलास (घिरघट) को भोजन करावे उसकी बीटकी गुटिके स्पर्श करके लगानेसे ताल-यंत्र टूटजाताहै ॥ २९ ॥

सुपक्वमिष्टिकांहस्तवज्रीप्राहस्तुयोगिभिः ।
सूक्ष्मचूर्णन्तुतांकृत्वालोहकिट्टमथापिवा ॥ ३० ॥

सुपक्वइष्टि और थूहरको रस कर लावे, ऐसा योगिराजोंने कहाहै उसका सूक्ष्म चूर्णकरके अथवा लोह कीटको लेकर ॥ ३० ॥

सूत्रैरज्जुंदृढीकृत्यतिलंतैलेनेलेपितम् ॥
तच्चूर्णलोडितंकृत्वामहालोहंभिनत्यलम् ॥ ३१ ॥

सूत्र में की रस्सी दृढकरके तिलके तेलसे लिप्तकरे उस चूर्ण को लगावे तो यह महा लोहेको क्षण में तोड़ देता है ॥ ३१ ॥

"ॐनमोभगवतेरुद्रायडङ्कामरेश्वरायबहुरूपायनाना रूपधरायहसनृत्यनृत्यतुदनानाकौतुकेन्द्रजालदर्श कायठःठःस्वाहा ॥

अनेनसर्वयोगाभिमंत्रासिद्धिः ॥

ॐ वाघवाहिनीसिंहेयाकान्तिकत्वान्मिकाआर्या देवीमंत्रितोरदासरणेनाहिथिलशतोइदवीत्रिभुवनमा तुचौसष्ठिमिनिबंधनभागिआपलाचण्डाचण्डचामु-ण्डीचामुण्डानिकटकालिकानादशनआगेअमुकाबं-धनभागियाआलावाधाधायापायेनिश्वलचौसष्ठीबंधन विरकालिकामाछांडेहुंकारचौसष्ठीमबंधनकाचारं

भागीभइलल्याइखंकालिकारआज्ञाआआजादेविमैंचि तोवदासरसेवाननाहिंविनासंतोम्वीदेवि ॥ त्रिभुवनर णरमायाचौसृष्टिबंधनभागीआम्पेला ॥ चंडाचण्ड चामुण्डाविकट्टकालिकामादनआगेअमुकारबंधन भागिआफेलाववाधवाघथायात्रानियन ॥ चौशठीबं धनमैलविरलाकालिकामाछडेहूंकारचौशठिबंधन काटारभाद्रिभरलक्षारस्वारकालिकारआज्ञा ॥ अथवा॥ ॐअग्निमुखीपिशाचीअमुकं हन हन पच पच शीघ्रंमेवशमानय"एतन्मंत्रद्वयंपूर्वमष्टोत्तरशतं जप्त्वासप्तवारंजप्तेनानाविधिबंधनछेदोभवति ॥ इति मंत्रंपठित्वाकरांगुल्याप्रहारयेत्द्वारिदत्तेद्वारमुक्तंभ वति ॥ दंहुंॐ॥ आयआयचिठिचिठिहांलोंवज्रनन्दि कांकालिका ॥ अनेनमंत्रेणश्वेतसर्षपंश्वेतोदुम्बरपु ष्पत्रयंत्रिः॥पठित्वाप्रथमद्वारेक्षिपेत्सर्वद्वाराणिभञ्जन्ति॥

इतिनिगडानांभंजनम् ॥

'ओं नमोभगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय बहुरूपाय नानारूपधराय हस २ नृत्य नृत्य तुद तुद नाना कौतुकेन्द्रजाल दर्शकाय ठः ठःस्वाहा' इसमंत्रसे अभिमंत्रित करनेसे सिद्धिहोतीहैं ॥ 'ओं बाद्य वाहिनि सिद्धे पाकादि लिका लाथि आआ जा देवीमें चितो वदा सरसे वान नाहिं विनाशं तोम्बिदेवी त्रिभुवन रणरमा पाचौ सृष्टि बंधन भागी आमूपेला चण्डा चण्ड चामुंडा विकंद कालिका मादन आगे अमुकार वन धन भागी आफेला व वाध वाघ पायात्रानि पन चौसट बंधनैंमल विरला कालिका माछड़े हूंकार चौसठि बंधनका ठार भाद्रि भाल क्षार

स्वार कालिकार आज्ञा ॥ यह दोनों मंत्र पहले एकसौआठ बार जपे फिर सातवार जपे तो अनेक प्रकार बंधनछेदन होजातेहैं । यह मंत्र पढकर हाथकी अंगुलीके प्रहारमात्रसे द्वार मुक्त होताहै ' दं हं ॐ आए आए चिठ चिठ हानां वज्र नन्दिका कालिका ' इसमंत्रसे श्वेत सरसों श्वेत उदम्बरके फूल तीनवार पढ़कर पहले द्वारपर फेके तो सब द्वार भग्न होजातेहैं ॥

इति निगडभंजनम्.

बिभीतकन्तुशाखोटमूलपत्रेणसंयुतम् ॥
स्थापयेद्यद्गृहद्वारेतस्यवैकलहोभवेत् ॥ ३२ ॥

बहेड़ा सिघोरा और इसकी जड पत्तेसहित जिसके घरके द्वारमें स्थापित करै उसके यहां सदा क्लेश होताहै ॥ ३२ ॥

मार्जारमूषिकद्विजदिगम्बराणांलोमभिर्धूपात् ॥
आर्द्रायांयत्रगृहेतत्रवैजायतेवैरम् ॥ ३३ ॥

मार्जार चूहा द्विज दिगम्बर इनके लोमकी धूपदेने आर्दानक्षत्रमें ऐसा करनेसे वैर होजाताहै ॥ ३३ ॥

अथगृहक्लेशनिवारणम् ॥

तक्रपिष्टेनतालेनलेपयेत्पात्रकाकृतिम् ॥
तामाघ्रायगृहाद्यातिमक्षिकानात्रसंशयः ॥ ३४ ॥

हरतालको मट्ठेकेसाथ पीसकर पीली मक्खीकी समान उसको लेप करनेसे सूंघनेसे मक्खी नहीं आती इसमें संदेहनहीं ॥ ३४ ॥

गुडार्कदुग्धकुल्माषंतिलचूर्णसमान्वितम् ॥
अर्कपत्रेषुविन्यस्तंमूषकान्तकरंगृहे ॥ ३५ ॥

गुड आकका दूध कुल्माष (कुल्थी) उर्द तिल इनका चूर्ण कर आकके पत्तेपर रखनेसे मूषे नष्ट होजाते हैं ॥ ३५ ॥

तालकंछागविण्मूत्रंपलांडुंसहपेषयेत् ॥
आलिप्यमूषिकंतेनजीवितंचविसर्जयेत् ॥ ३६ ॥

हरताल छागकी विष्ठा और मूत्र इसको प्याजके साथ पीसे उससे मूषिकको आलेपन करके जीताहुआही छोड़दे ॥ ३६ ॥

तंदृष्ट्वाचगृहंत्यक्त्वापलायन्तेहिकौतुकम् ॥
मार्जारस्यमलंतालंपिष्ट्वामूषिकमालिपेत् ॥ ३७ ॥

उसको देखकर घरसे कौतुकपूर्वक पलायन करजातेहैं । मार्जारका मल हरताल यह पीसकर मूषकपर लपेटै ॥ ३७ ॥

तमाघ्रायगृहंत्यक्त्वासद्योनिर्यातिमूषिकाः ॥
गंधकंहरितालंचब्राह्मीत्रिकटुसंयुतम् ॥ ३८ ॥

उसको सूंघकर घरछोड चुहे अन्यत्र चलेजातेहैं, गंधक हरिताल ब्राह्मी त्रिकुटा ॥ ३८ ॥

छागलीमूत्रतःपिष्ट्वापूर्ववन्मूषिकंलिपेत् ॥
मघायांब्रध्नकंक्षेत्रेस्थापयेन्मधुकोद्भवम् ॥ ३९ ॥

छागलीके मूत्रसे यह औषधी पीसकर मूषकपर लपेटे मघानक्षत्रमें शुभक्षेत्रमें मधुकोद्भवको स्थापनकरे ॥ ३९ ॥

मक्षिकामूषकानांचजायतेतुंडबंधनम् ॥
मशकाकर्षकोदीपःसावरीगुडतैलजः ॥ ४० ॥

तो मूषक और मधुमक्खी की तुंड बंधनमें होजातीहै, मशकको जैसे एक दीप खैंचताहै ऐसे गुड तेल सावरी पढ़ाहुआहो ॥ ४० ॥

" पूर्वेब्रह्मामेबद्धःपश्चिमेविष्णुर्मेबद्धउत्तरे
रुद्रोमेबद्धदक्षिणेयमोमेबद्धः पातालेवासु
कीमेबद्धःफणिसहस्रेबद्धःहुंअंगुष्ठायनमः" ॥

करसंपुटंकृत्वातालत्रयंदद्यात् ॥
मूषिकमशकनिवारणम्भवति ॥ ४१ ॥

'पूर्वे ब्रह्मा मेबद्ध पश्चिमें विष्णु'मेबद्ध उत्तरे रुद्र दक्षिणे यम बद्ध पाताले वासुकी मेबद्ध फणीसहस्रे बद्धं ·हुं अंगुष्ठायनमः' कर संपुटकर तीन तालदे तो मच्छरोंका निवारण होताहै ॥ ४१ ॥

रोहिषतृणपुष्पन्तुवर्तिमध्येनिवेशयेत् ॥
तद्दीपदर्शनादेवक्षिप्रंनश्यन्तिमत्कुणाः ॥ ४२ ॥

रोहिषतृणका फूल बत्तीके बीचमें रक्खे उस दीपकके दर्शन-मात्रसे तत्काल खटमल नष्ट हो जाते हैं ॥ ४२ ॥

अर्कतूलमयीवर्तिर्भावयेद्यावकेनच ॥
दीपंतत्कटुतैलेननिश्शेषायांतिमत्कुणाः ॥ ४३ ॥

आकके तूलकी बत्तीको यावककी भावनादे उसको कडवे तेलसे संयुक्त दीपकमें जलावै तो सब प्रकार खटमल नष्ट होजाते हैं ४३

अर्ज्जुनस्यफलंपुष्पंलाक्षाश्रीवासगुंग्गुलम् ॥
श्वेतापराजितामूलम्भल्लातकविडंगकम् ॥ ४४ ॥

अर्जुनवृक्षके फल और पुष्प लाख श्वेत चंदन गूगल श्वेत अपराजिताकी जड भिलावा वायविडंग ॥ ४४ ॥

धूपंसर्जरसोपेतंप्रदेयंगृहमध्यतः ॥
सर्पाश्चमत्कुणामूषागंधाद्यांतिदिशोदश ॥ ४५ ॥

सर्जरस (राल) धूप घरमें देनेसे इसकी गंधसे सर्प चूहे खटमल सब नष्ट होजाते हैं ॥ ४५ ॥

गुडश्रीवासभल्लातविडंगंत्रिफलायुतम् ॥
लाक्षारसोर्कपुष्पंचधूपोवृश्चिकसर्पहृत् ॥ ४६ ॥

गुड श्वेतचन्दन भिलावा वायविडंग त्रिफला लाखका रस

आकका फूल इनकी धूप देनेसे घरमें सर्प और विच्छू नहीं रहता हैं ॥ ४६ ॥

मुस्तासिद्धार्थभल्लातकपिकच्छूफलंगुडम् ॥
चूर्णभानुफलोपेतंदहेत्सर्जरसैःसमम् ॥ ४७ ॥

मोथा सरसों भिलावा करंजकोछके फल गुड इनका चूर्णकर आकके फलसे संयुक्तकरै और सब समान रालको भस्म करै ॥४७

मत्कुणामशकास्सर्पामूषिकाविषकीटकाः ॥
पलायन्तेगृहंत्यक्त्वायथायुद्धेषुकातराः ॥ ४८ ॥

तो खटमल मच्छा सर्प मूषक विषके कीट वे सब युद्धमें कातर हुए मनुष्यकी समान घरको छोडकर भाग जाते हैं ॥ ४८ ॥

सर्ज्जरसःशक्रमेदोऽर्ज्जुनमूलमरुबकंकेतकनखवद्धः ॥
एतैर्धूपोरचितःकीटभुजगमशकमक्षिकादिहरः॥४९

राल कुडा मेदा अर्ज्जुनकी जड मैनफल केतकी नख इनकी धूप देनेसे कीट सर्प मशक मच्छर शहतकी मक्खी भागजाती है ॥ ४९ ॥

राजवृक्षफलंबद्धंखट्वायांमत्कुणापहम् ॥
लाक्षासर्ज्जरसोशीरंसर्षपःपत्रकंपरम् ॥ ५० ॥

खाटमें कर्णिकार वा अमलतासका फल बांधनेसे खटमल रह-नहीं पाते, लाख,राल,खश, सरसों यह सब (दुख) दूर करते हैं ५०

भल्लातकविडंगानिविश्वकंपुष्करंतथा ॥
जम्बुलोमशकंहंतिधूपाद्वागृहमध्यतः ॥ ५१ ॥

इति गृहक्लेशनिवारणम ।

वहेडा वायविडंग सोंठ पुष्करमूल इनकी धूप देनेसे जम्बूल और मशक दूर होते हैं ॥ ५१ ॥

इति गृहक्लेशनिवारणम् ।

अथ क्षेत्रोपद्रवनाशनम्

अथक्षेत्रस्यशस्यानांसर्वोपद्रवनाशनम् ॥
वालुकाश्वेतसिद्धार्थान्प्रक्षिपेत्क्षेत्रमध्यतः॥ ५२ ॥

अब खेतीके सम्पूर्ण उपद्रव नाश करने वाला विधान कहते हैं । वालुका श्वेतसरसों यह खेतके बीचमें डालदे ॥ ५२ ॥

शलभाःसर्पकीटाश्चवराहामृगमूषिकाः ॥
मशकास्तत्रनोयांतिमंत्रविद्याप्रभावतः ॥ ५३ ॥

तौ शलभ सर्प कीडे वराह मृग मूषक खरगोश यह मंत्रविद्याके प्रभावसे वहां नहीं आते हैं ॥ ५३ ॥

" ॐनमःसुरेभ्यःबलंजउपारिपरिपारिमिलिस्वाहा ॥ ॐसुरेभ्योनमः ॥ नमस्कृत्यइमांविद्यांप्रयोजयेत् ॥ विद्यांप्रयोजयामीतिविद्यामेसिद्धचतुस्वाहा । अखिलजम्बूकानांमृगाणांशशकानांअन्येषांप्राणिनांशलभादीनामन्येषांप्राणिनांतुंडबंधनंकरोमीत्यत्रप्राणेकृतघ्नस्यतेनपापेनलिप्यतेयत्रमंत्रोऽव्यतिक्रमतिस्वाहा॥ एतन्मंत्रद्वयेनवालुकाभिःसहश्वेतसर्षपान्सप्तवाराभिमंत्र्यक्षेत्रमध्येक्षिपेत्सर्वोपद्रवोनश्यति ॥ मूषिजंबुककीटानांकुरुतेतुण्डबंधनम् ॥ विद्यामंकुशनाथस्यमंत्रंवाभैरवस्यच ॥ ॐनमोनगरनाथाययहहरहरशिलिरसर्वेषांप्राणिनान्तुण्डबंधनंकुरुकुरुहूंफट्स्वाहाउज्जयनीनगरीभैरवबोलेमहादेवभंडारफलबोलेहनुमन्तसाक्षीआस्तिअस्तु" ॥ ५४ ॥

ओं नंमः सुरेभ्यः वनजः जप परि पारि२रज परि परि शिनिस्वा

हा ॐ सुरेभ्योनमः इस प्रकार देवताओंको नमस्कारकर इस विद्याका प्रयोग करै विद्यांप्रयोजयामीति इन दो मंत्रोंसे वालूके साथ श्वेत सरसोंको सातवार अभिमंत्रित कर क्षेत्रके मध्यमें डालनेसे सब उपद्रव शान्त होजाते हैं, मूषक गीदड कीटादि जीवोंकी तुंडबंधित होजाती है । अंकुशनाथकी विद्या या भैरवका मंत्र पढै ॐनमो नगरनाथाय यथा यह हरहर शिलशिल सर्वेषां प्राणिनां तुण्डबंधनं कुरु२हूं फट् स्वाहा उज्जयनीनगरी भैरव बोले महादेव भंडार फूल बोले हनुमन्त साक्षी ३ अस्ति अस्तु' ॥ ५४ ॥

अनेनमंत्रेणसप्ताभिमंत्रितंचंदनंवाटिका ॥
मध्योनिःक्षिप्यपुष्पफलंसमस्तंनिरुपद्रवंभवति ॥
देवदालींचसिद्धार्थंगुटिकांकारयेद्बुधः ॥
क्षेत्रमध्येतुनिःक्षिप्यसर्वपक्षिभयंहरेत् ॥ ५५ ॥

इस मंत्रसे सात वार अभिमंत्रित कर चन्दन बगीचेके मध्यमें डालने से पुष्प फल सब निरुपद्रव होते हैं, देवदाली सरसों इन दो वस्तुओंका बुद्धिमान् गुटिका करै खेतके मध्यमें डाल देनेसे सब पक्षियोंका भय दूर होता है ॥ ५५ ॥

पूर्वाषाढाख्यऋक्षेतुवन्दाम्बिभीतवृक्षजम् ॥
शस्यमध्येक्षिपेत्तेनशस्यवृद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ ५६ ॥

इतिशस्यादीनांसर्वोपद्रवनाशनम् ॥

पूर्वाषाढनक्षत्रमें बहेडेका वन्दा लेकर खेतीके मध्यमें डालनसे शयस्की वृद्धि होती है ॥ ५६ ॥

इति शस्यानां सर्वोपद्रवनाशनम् ।

अथगोमहिष्यादिदुग्धवर्द्धनम् ॥

"ॐह्रूंकारिणीप्रसवॐशीतलम्" अनेनसप्तवारंतृणा

दिकमभिमंत्र्यभोक्तुंदद्यात्तदाबहुलंदुग्धंप्रस्रवति ॥ ५७

अथ गोहिषी आदिके दूध बढ़ानेकी विधि । 'ॐहूं कारिणीं प्रसव ॐ शीतलम्' इस मंत्रसे तृण आदि को सातवार अभिमंत्रित कर गौ आदि के खाने को दे तो बहुत दूध गौ भैसदैगी, ॥ ५७ ॥

इति गोमहिष्यादिदुग्धवर्द्धनम् ॥

इतिश्री नित्यनाथ विरचिते कामरत्ने भाषाटीकायां अरिष्टनाशादि शस्योपद्रवनाशनं गोमहिष्यादि दुग्धवर्धनम् नाम नवमोपदेशः ॥ ९ ॥

अथोच्चाटनम् ॥

मंगलवारेरात्रौश्मशानांगारंकृष्णवस्त्रेणकृत्वारक्तसूत्रेणसंवेष्ट्यंयस्यगृहेपरिक्षिपेत्सप्ताहाभ्यन्तरेतस्योच्चाटनंभवति॥पंचांगुलंचित्रकस्यकीलंग्राह्यंपुनर्वसौ॥सप्ताभिमंत्रितंगेहेखनेदुच्चाटनम्भवेत्॥"ॐलोहितमुखे स्वाहा"॥अस्यअष्टोत्तरसहस्रजपेनपुरश्चरणम्॥भरण्यामंगुलैकन्तुउलूकस्यास्थिकीलकम् ॥ सप्ताभिमंत्रितंयस्यनिखनेदुच्चाटनंभवेत्॥"ॐदहदह हन्हन् स्वाहा"॥काकोलूकस्यपक्षांस्तुहुत्वाह्यष्टोत्तरंशतम्॥यन्नाम्नामंत्रयोगेनसमस्तोच्चाटनंभवेत् ॥ "ॐनमो भगवतेरुद्रायदंष्ट्राकरालायअमुकंसपुत्रबांधवैः सह हन् २ दह २ पच२ शीघ्रंउच्चाटय २ हूंफट्स्वाहाठः ठः"लेपयेत्काकपित्तेनकीलमंगुलसंभवम्॥निखनेद्यस्यभवनेतस्यचोच्चाटनंभवेत्॥ "ॐह्रींदंडिन् २ महादण्डिन्नमोस्तुतेठःठः"नरास्थिकीलकंद्वारेनिखन्याच्च

तुरंगुलम् ।। मंत्रयुक्तंभरेद्द्वारेसत्यमुच्चाटनम्भवेत् ॥१॥

अथ उच्चाटनां,मंगलकेदिन रातको श्मशानसे काले वस्त्रमें अंगारलावै लालसूतमें लपेट जिसके घरमें डाले सात दिनमें उसका उच्चाटन हो पुनर्वसुनक्षत्रमें चित्रककी पांच अंगुलकी कील ग्रहण करै सात वार मंत्र पढ़कर घरमें डालदे उच्चाटन होजायगा।'ॐलोहित मुखेस्वाहा' १००८ जप पुरश्चरणकरै ॥ भरणीनक्षत्रमें एकअंगुल उल्लूकी अस्थि लेकर सात वार मंत्र पढकर जिसके यहां गाड़दे उसका उच्चाटन होजाता है यह मंत्र पढ़े 'ॐदह दह हन् २ कौए और उल्लूके एकसौ आठ पंखलेकर जिसके नामसे मंत्र पढ हवनकरै वह अवश्य उच्चाटन होगा. मंत्र यह है ॐनमो भगवते रुद्राय दंष्ट्रा करालाय अमुकं सपुत्रबांधवैः सह हन २ दह २ पच २ शीघ्रं उच्चा-टय २ हूं फट् स्वाहा. ठ.ठः' कौएके पिचसे एक अंगुल कीलको लिप्तकरै और उसे लिखकर जिसके द्वारपर डालदे उसका उच्चाटन होजाता है ॥ 'ॐ ह्रीं दंडिन् २ महा दंडिन् नमोस्तुते ठः ठः' मनुष्य-कीअस्थि (हड्डी) की चार अंगुलकी मंत्रपढकर जिस शत्रुके द्वारपर गाड़दे उसका अवश्य उच्चाटन होजायगा ॥ १ ॥

"ॐनमोभगवतेरुद्रायअमुकंगृह्ण२त्रासय २ त्रोटय २ नाशय २ पशुपतिराज्ञापयातिठःठः" ॥ मृतकस्यपुरुषस्यनिर्माल्यंचैलमेवच ॥ प्रेतालयात् समागृह्यस्यगेहेनिधापयेत् ॥ २ ॥

अष्टम्यांचचतुर्दश्यांतस्यैवोच्चाटनम्भवेत्॥एषयोगोमयाख्यातःविनामंत्रेणसिद्ध्यतिउद्धृतेनशान्तिः ॥३॥

मंत्र यह है'ॐ नमो भगवते रुद्राय अमुकं गृह्ण२ पच २ त्रासयं २ त्रोटय२ नाशय२पशुपतिराज्ञापयाति ठःठः'॥मृतक पुरुषका निर्माल्य और चैलवस्त्र मरघटसे ग्रहणकरके घरमें डालदे अष्टमी और चौदस

के दिन यहकृत्य करनेसे उसका उच्चाटन होजाता है, यह योगविनाहीं मंत्रके सिद्ध होता है उखाड़नेसे शांति होती है ॥ २ ॥ ३ ॥

श्वेतालांगलिकामूलंस्थापयेद्यस्यवेश्मनि ॥
निखनेत्तुभवेत्तस्यसद्यउच्चाटनंध्रुवम् ॥ ४ ॥

श्वेत कलिहारीकी जड़को घरमें डालदे,वा गाडदे उसके सब कुटम्बमें शीघ्रही उच्चाटन होता है ॥ ४ ॥

सिद्धार्थंशिवनिर्माल्यंयद्गेहेनिखनेद्बुधः ॥
उच्चाटनंभवेत्तस्यउद्धृतेतुपुनःसुखी ॥
संगृह्यवृक्षात्काकस्यनिलयंप्रदहेच्चतम् ॥ ५ ॥

सरसों शिवका निर्माल्य जिसके घरमें गाडदे उसका उच्चाटन होजाता है उखाड़नेसे सुखी हो वृक्षपरसे कौएका घोसला लेकर उसे जलादे ॥ ५ ॥

चिताग्नौभस्मतःशत्रोर्दत्तांशिरसिसुन्दरी ॥
तमुच्चाटयतेदेविशृणुयोगमनुत्तमम् ॥
भवेत्तस्यउद्धृतेचपुनस्सुखी ॥ ६ ॥

उस चिताकी भस्म शत्रुके शिरपर डालनेसे अवश्य उच्चाटन होजाता है; हे देवी! यह उत्तम योग है फिर उसके वहांसे उखाड़नेसे सुखी होता है ॥ ६ ॥

इत्युच्चाटनम्।

अथविद्वेषणम् ॥

एकहस्तेकाकपक्षमुलूकस्यतथापरे ॥
मंत्रयित्वामिलित्वाग्रंकृष्णसूत्रेणबंधयेत् ॥
अञ्जलिञ्चजलेचैवतर्पयेद्धस्तपक्षकैः ॥ ७ ॥

एवंसप्तदिनंकुर्यादष्टोत्तरशतंजपेत् ॥
विद्वेषोजायतेतत्रमहाकौतुकमद्भुतम् ॥
मार्जारमूषिकाविष्ठासाध्यपुत्तलिकाकृता ॥ ८ ॥
नीलवस्त्रेणसंवेष्टयमंत्रयित्वाशतेनच ॥
विद्वेषोजायतेतत्रभ्रातरौतातपुत्रकौ ॥ ९ ॥
मन्त्रस्तु॥"ॐनमोमहाभैरवायश्मशानवासि
न्यैअमुकामुकयोर्विद्वेषंकुरुकुरुक्रूंफट्" ॥
एकहस्तेकाकपक्षमुलूकस्यतथापरे ॥
दर्भेणधारयेद्यत्नात्त्रिसप्ताहंजलाञ्जलिम् ॥ १० ॥

अथ विद्वेषण।एकहाथमें काकपक्ष दूसरेमें उल्लूका ले मंत्रसे इनको मिलाय काले सूत्रसे बांधे और जलसे पक्षको सातदिन तर्पणकर १०८ वारजपै विद्वेषण होगा--बिलाव और मूषकी विष्ठासे साध्यकी पुतली बनावै नीले वस्त्रसे लपेट सौवार मंत्र पढे तौ भ्राता पिता पुत्रमें विद्वेषहो 'ॐनमो महाभैरवाय श्मशानवासिन्यै असुकामुकयोर्विद्वेषं कुरु २ क्रूंफट् २, एकहाथमें काक दूसरेमें उल्लूका पंखले कुशके साथ तीनसप्ताहतक जलकी अंजली धारणकरे ॥ १० ॥

रक्ताश्वमारपुष्पैकंमंत्रयुक्तंजलांजलिम् ॥
नित्यंनित्यंप्रदातव्यमष्टोत्तरसहस्रकम् ॥
परस्परंभवेद्द्वेषःसिद्धयोगउदाहृतः ॥ ११ ॥

लालकनेरका फूल एक लेकर मंत्र पढकर हाथमें जलकी अंजली धारण करे और एक सहस्र आठ यह नित्य अंजलीदे तौ परस्पर द्वेष होजाताहै, यह सिद्धयोग कहाहै ॥ ११ ॥

"ॐनमःकटीटनीप्रमोटनीकीगौरीगौरीअमुकस्या-
मुकेनसहकाकोलूकादिवत्कुरुकुरुस्वाहा" ॥

'ओंनमो मोटकी प्रमोठकी गौरी अमुकस्यामुकेन सह काकोलूकादि वत्कुरुकुरु स्वाहा' । यह जलांजलिका मंत्र है ॥

अथव्याधिकरणम् ॥

"ॐअमुकंहन् २ स्वाहा" ॥अनेनमंत्रेण ॥
कटुतैलाक्तंत्रिकटुम् जुहुयात्तदाशत्रुर्बधिरोभवति ॥
भल्लातकरसोगुंजाकुर्य्यान्नातिसुचूर्णितम् ॥
क्षिपेद्गात्रेभवेत्कुष्ठंसिताक्षीरंपिबेत्सुखी ॥ १२ ॥

अथ व्याधिकरणम् ॥ 'ॐअमुकं हन हन स्वाहा,' इस मंत्रसे कडुवेतेलके साथ त्रिकुटेका हवन करनेसे शत्रु बहरा, होजाता है भिलावेका रस और गुंजा इनका बहुत चूर्ण न करके जिसके शरीर पर फेंके वह कुष्ठी होताहै, फिर मिश्री और दूध पीनेसे सुखी होताहै ॥ १२ ॥

वानरीफलरोमाणिविषंभल्लातचूर्णकम् ॥
गुंजायुतंक्षिपेद्गात्रेस्याल्लूतावेदनान्विता ॥ १३ ॥

कौंचकी फलीके रोम विष भिलावेका चूर्ण उसमें चौंटली मिलाकर जिसके शरीर पर डालदे उसके महापीडा युक्त मकरी के फैलनेकी समान वेदना होतीहै ॥ १३ ॥

उशीरश्चन्दनंचैवप्रियंगुंरक्तचन्दनम् ॥
तगरंपेषयेत्तोयैर्लेपाल्लूतादिनाशनम् ॥ १४ ॥

खस चंदन और तगर यह जलसे पीसकर लगावै तौ लूता की वेदना शान्त होजाय ॥ १४ ॥

अथज्वरानयनं ॥ "ॐचामुण्डेहनहन दह २
पचपच मथ २ चलह २ अमुकं गृण्ह २
स्वाहा" ॥ अनेनकटुतैलेमाक्तनिम्बपत्राणि

यस्यनाम्नाहूयन्तेतस्यशीघ्रंज्वरोभवति ॥
चित्रकपुष्पसहस्त्रंहुनेच्चातुर्थिकज्वरोभवति॥
लवणमष्टाधिकसहस्त्रंहुनेद्दाहज्वरोभवति ॥ १५ ॥

अथ ज्वरानयन 'चामुंडे हन२ दह दह पच पच मथ २ चल्ह २ अमुकं गृह्ण गृह्ण स्वाहा' यह मंत्र पढ़कर कडुवेतेल के साथ नीमके पत्ते जिसके नाम लेकर हवन कियाजाय उसको तत्काल ज्वर होता है; चीतेकी फूल सहस्र हवन करनेसे चातुर्थक ज्वर होता है; एक सहस्र आठवार लवण हवन करनेसे दाहज्वर होता है; १५

इति ज्वरानयनम् ।

अथाक्षिरोगजननम् ॥

करवीरंपुष्पमष्टसहस्त्रमुक्तमंत्रहुनेत्
अक्षिरोगंभवति ॥
स्नुक्पयस्तेनपानेनलेपनंश्वेतकुष्ठजित् ॥
ताम्बूलेइन्द्रगोपश्चदत्वासौश्वेतकुष्ठकृत् ॥
पीत्वायत्नेयथापूर्वम्भक्षेद्वासोमराजिकाम् ॥
"ॐनमोभगवतेरुद्रायउड्डामरेश्वरायअमुकंरोगेणगृह्ण २ पच २ ताडय २ छेदय २ हूंफट्स्वाहा ठःठः"
उक्तयोगानामयंमंत्रः ॥
क्षिपेन्मृगशिरर्क्षेतितुषुंकाष्ठस्यकीलकम् ॥
पंचागुलंरिपोर्गेहेवाह्निमांद्यंप्रजायते ॥ १६ ॥

नेत्ररोग उत्पन्न करना । आठ सहस्र कनेरके फूल हवन करनेसे नेत्ररोग होता है । थूहरके दूधके लेप वा पानसे श्वेत कुष्ठ दूर होता है अथवा ताम्बूलमें वीरबहूटी खाय तौ कुष्ठहो फिर सोमराजीके

पानसि श्वेतकुष्ठ दूर होता है मंत्र यहहै 'ॐनमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय अमुकं रोगेण गृह्ण २ पच २ ताड़य २ छेदय २ हूं फट् ठःठः' उपरोक्त योगका यह मंत्र है, मृगशिरनक्षत्रमें पांच अंगुल तेंदूवृक्षके काठकी कील शत्रुके घरमें डालनेसे रोग होता है ॥१६॥

सामुद्रंलवणंवह्निःकेवलंवासमुद्रजम् ॥
बन्धक्याउदरेन्यस्तंसर्वमंतःपुटैर्दहेत् ॥ १७ ॥

समुद्रलवण चीता अथवा केवल सेंधानोन बन्धकीमें रखकर सब अन्तरपुटसे जलादे ॥ १७ ॥

करवीरार्द्रकाष्ठेनतमादायसुचूर्णयेत् ॥
खानेपानेर्पयेद्यस्यतस्यचक्षुःप्रणश्यति ॥ १८ ॥

कनेरके गीलेकाष्ठद्वारा उसको लेकर चूर्णकरे जिसके खान पानमें डालदे उसके नेत्र नाश होजाते हैं ॥ १८ ॥

उलूकमस्तकंग्राह्यंलवणेनप्रपूरयेत् ॥
सप्ताहंमृत्पात्रस्थमक्षिकाष्ठेनचालयेत् ॥ १९ ॥

उल्लूकामस्तक लेकर लवणसे पूर्ण करे सातदिनतक मट्टीके पात्रमें रखकर बहेड़ेकी मालासे जपकरे ॥ १९ ॥

दृष्टिस्तंभयितुंतस्यमरिचाक्षफलंवचा ॥
"ॐचामुण्डेहन २ दहदह पच २ अमुकंगृह्णगृह्णस्वाहा" ॥
अनेनमंत्रेणानिम्बपत्रकटुतैलसाध्यनामगृहीत्वाजुहुयात्स ज्वरेणगृह्यते ॥ अनेनलवणाहुतीरष्टसहस्रंजुहुयात्सशूलेनगृह्यते ॥ २० ॥

दृष्टिके स्तंभ करनेको कालीमिर्च बहेड़ेका फल और वचहै, 'ॐचामुंडे हन हन दह२पच२अमुकं गृह्ण २स्वाहा' इस मंत्रसे नीमके पत्ते लेकर कडुवे तेलद्वारा साध्यका नाम लेकर हवन करनेसे ज्वरसे

ग्रसितहोता है; इसी मंत्रसे लवणकी आहुति अष्टोत्तर सहस्र हवन करनेसे शूलसे ज्वरसे ग्रसितहोता है ॥ २० ॥

तेनैववेत्रपत्रमष्टसहस्रंजुहुयात्सचतुर्थज्वरेणगृह्यते ॥
रक्तपुष्पंचित्रकरसेनयस्यनामाभिलिख्यभूर्जे
अर्कलतिकायांस्थापयेत्सदाहज्वरेणगृह्यते ॥
"ॐनमःश्रीनृसिंहायदेवायदनुगारयैनमःकृष्णाय" २१

और बेलपत्र आठसहस्र हवन करनेसे चातुर्थिकज्वरसे ग्रसित होताहै; लालफूल और चीतेके रससे जिसका नाम लिख भोजपत्रको आककी बेलपर नामका दे उसे दाहज्वर होगा ' ॐनमः श्रीनृसिंहाय देवायदनुगारयैनमः कृष्णाय ॥ २१ ॥

अथशत्रुद्रावणम् ॥

अश्वत्थकीलमाश्विन्यांयस्यगेहेदशांगुलम् ॥
स्थापयेद्दीर्घयात्रास्यात्तस्यापिनहिसंशयः ॥ २२ ॥

अथ शत्रु द्रावणम् ॥ जिसके घरमें अश्विनी में पीपलकी कील दश अंगुलकी स्थापन करदे उसकी दीर्घ यात्राहो और द्रावित भी होगा इसमें संदेह नहीं ॥ २२ ॥

शृगालस्यास्थिकीलकंस्थाप्यंस्याच्चतुरंगुलम् ॥
रिपोर्गेहेसोमऋक्षेदीर्घयात्राचतस्यवै ॥ २३ ॥

गीदडकी अस्थि चार अगुंलकी स्थापन करै अर्थात् सोमदेवताके नक्षत्र मृगशिरमें शत्रु के घरमें स्थापन करनेसे दीर्घयात्रा होजायगी इसमें संदेह नहीं ॥ २३ ॥

अथउन्मत्तीकरणम् ॥

तालकंधूत्तंबीजञ्चघनचूर्णन्तुभक्षयेत् ॥
दत्तोन्मत्तोभवेच्छत्रुःसिताक्षीरैःपुनःपुनः ॥ २४ ॥

अथ उन्मत्तीकरणम् ॥ हरताल धतूरेके बीज मोथेका चूर्ण देतेही शत्रु उन्मत्त होजाताहै फिर मिश्री और दूध पीनेसे सुखी होता है ॥ २४ ॥

सुखीतालकंलशुनंमूर्ध्निक्षिप्तंयस्यपिशाचकृत् ॥
सुरामांसीसिताक्षीरंभक्षणाच्चसुखावहम् ॥ २५ ॥

हरताल और लहसन जिसके ऊपर डालाजाय वह पिशाचतुल्य होजाताहै । सुरा मांस सिता (मिश्री) दूध पान करनेसे उसी समय सुखी होता है ॥ २५ ॥

मध्वाज्याभ्यांस्वर्णमाक्षींपिष्ट्वातत्कृतकज्जलम् ॥
दत्तंयस्यांजनंनेत्रे उन्मत्तोसौप्रजायते ॥ २६ ॥

मधु घृत सोनामक्खी इनको पीसकर इसका काजर कर सुरापानमें डालकर जिसको दे वह उन्मत्त होजाता है ॥ २६ ॥

गोघृतंसैंधवंतुल्यंवराहस्यतुपित्तकम् ॥
अजाक्षीरेणसंयोज्यंपानेनोन्मत्तनाशनम् ॥ २७ ॥

गौका घी सेंधा यह बराबर ले बाराहका पित्त बकरीके दूधके साथ सेवन करनेसे उन्मत्तपन नाश होजाता है ॥ २७ ॥

मयूरपारावतकुक्कुटानांग्राह्यंपुरीषंकनकंचतालम् ॥
तन्मूर्ध्निदत्तंकुरुतेपिशाचान्निवर्त्तेनमुंडितमस्तकेन ॥ २८ ॥

मोर कुक्कुः (मुरगा) कबूतरकी बीट ग्रहणकर धतूरे हरतालके सहित शिरपर डालनेसे वह प्राणी पिशाचवत् होजाता है फिर शिर मुडानेसे सुखीहोता है ॥ २८ ॥

गुडंकरंजबीजंचघनचूर्णसमंसमम् ॥
फलस्यांतेप्रदातव्यं उन्मत्तोभक्षणाद्भवेत् ॥ २९ ॥

गुड करंजुएके बीज मोथेका चूर्ण यह समानभाग लेकर फलमें देतो भक्षण करतेही उन्मत्त होजाता है ॥ २९ ॥

शर्क्कराशतपुष्पाज्यक्षीरपानेसुखावहम् ॥ ३० ॥

शक्कर सोंफ घृत दूध इनका पान करनेसे सुखी होता है ॥३०॥

" ॐनमः उन्मत्तकारिणिविद्येठःठः " ॥

उक्तयोगानामयमेवमंत्रः ॥३१॥

इत्युन्मत्तीकरणाम् ॥

'ॐनमःउन्मत्तकारिणे विद्ये ठःठः' पूर्वोक्त योगोंका यही मंत्र है ३१

इति उन्मत्तीकरणम् ॥

अथमारणम् ॥

नरास्थिकीलकंपुष्येगृह्णीयाच्चतुरंगुलम् ॥

निखनेद्यस्यगेहेतुभवेत्तस्यकुलक्षयः ॥ ३२ ॥

पुष्यनक्षत्रमें मनुष्यकी आस्थिकीलक चार अंगुलकी ग्रहणकर जिसके घरमें गाडदे उसका कुलक्षय होजाता है ॥ ३२ ॥

"ॐ ह्रूं ह्रींफट्स्वाहा" ॥

अश्वास्थिकीलमश्विन्यांनिखनेच्चतुरंगुलम् ॥

शत्रुगेहेनिहत्याशुकुटुम्बम्वैरिणांकुले ॥ ३३ ॥

हुंहुंफट्स्वाहासप्ताभिमंत्रितंशत्रुगेहेनिखनेकुलंक्षयंयाति

'ॐ ह्रीं फट् स्वाहा,' १००० जपसे सिद्धि घोडेकी अस्थिकील चार अंगुलकी अश्विनीनक्षत्रमें ग्रणकर शत्रुके घरमें गाडनेसे वैरीकि कुलका नाश होजाता है हुंहुं फट् स्वाहा इससे सातवार मंत्र पढकर गाडै कुलक्षयहो ॥ ३३ ॥

"ॐसुरेश्वरे स्वाहा" ॥

सर्पास्थ्यंगुलमेकन्तुआश्लेषायांरिपोर्गृहे ॥

निखनेत्सप्तधाजप्तंमारयेद्रिपुसंततिम् ॥ ३४ ॥

'ॐ सुरेश्वरायस्वाहा' आश्लेषानक्षत्रमें सांपकी हड्डी एकअंगुल की लेकर शत्रुके घरमें गाड़नेसे शत्रुके सन्तानका नाश हो जाता है ॥ ३४ ॥

"ॐसींशोषणेस्वाहा" ॥

निम्बषड्बिन्दुकौंयाह्यौविषंत्वग्वानरीफलम् ॥
एतच्चूर्णप्रदातव्यंशत्रुशय्यासनादिषु ॥ ३५ ॥

'ॐ सीं शोषणे स्वाहा' नीम षड्बिन्दु विष कौंचके फल और छाल इनका चूर्ण शत्रुकी शय्या आसनादिमें प्रदान करेतो ॥ ३५ ॥

जायन्तेस्फोटकास्तीव्रादशाहान्मरणंभवेत् ॥
स्नानभूमूत्रभूमृत्स्नासर्पवक्त्रेविनिःक्षिपेत् ॥ ३६ ॥

तीव्र स्फोटक होजाते हैं; जिससे दशही दिनमें मरण होजाता है, स्नानस्थान मूत्रस्थान की मट्टी सर्पके मुखमें डालदे ॥ ३६ ॥

वेष्टयेत्कृष्णसूत्रेणमार्गमध्येअधोमुखम् ॥
निखनेन्म्रियतेशत्रुस्समुत्थानेसुखीभवेत् ॥ ३७ ॥

काले सूत्रसे वेष्टित करके मार्गके मध्यमें नीचेको मूखकर डाले तो शत्रु मरने लगताहै और उखाडनेसे सुखी होताहै ॥ ३७ ॥

वामदंतंकुलीरस्यअधोभागस्यचाहरेत् ॥
शराग्रेफलकंकुर्य्याद्रिपुरुचचितिजेन्धनैः ॥ ३८ ॥

कैंकड़के नीचेके भागका बायां दांत लावे, उसको बाणके आगें फलमें लगावे और सावधानीसे रक्षाकरे ॥ ३८ ॥

गवाशिरांगुलंकृत्वाशत्रुंकुर्य्याच्चमृन्मयम् ॥
तद्वज्जातेनबाणेनाम्रियतेतत्क्षणाद्रिपुः ॥ ३९ ॥

गवा शिर अंगुल मट्टीकी शत्रुकी मूर्ति बनावै वह उस बाणके प्रहार करतेही उसी समय शत्रु मरजाताहै ॥ ३९ ॥

आर्द्रायांनिम्बवन्दाकंशत्रोःशयनस्थानके ॥
निखनेन्म्रियतेशत्रुरुद्धृतेचपुनःसुखी ॥ ४० ॥
स्तथाशिरीषवन्दाकंपूर्वोक्तेनोडुनाहरेत् ॥
शत्रोर्गेहेस्थापयित्वारिपोर्नाशोभविष्यति ॥ ४१ ॥

आर्द्रानक्षत्रमें नीमका वन्दा लाकर शत्रुके शयनस्थानमें गाडनेसे शत्रु मरजाताहै,उखाडनेसे सुखी होताहै इसी प्रकार शिरसका वन्दा-लाकर शत्रुके घरमें स्थापन करनेसे शत्रुका नाश होजाताहै ॥४१॥

ऊर्णनाभिश्चषड्बिन्दुःसमांसंकृष्णवृश्चिकम् ॥
यस्यांगेतत्क्षिपेच्चूर्णंसप्ताहात्स्फोटनम्भवेत् ॥ ४२ ॥

ऊर्णनाभ षड्बिन्दुकीट और उसकी बराबर काले वृश्चिकका चूर्णकर जिसके शरीरमें डाले सातदिनमें फोडे होजाते हैं ॥४२ ॥

मयूरपुच्छंनीलाब्जंपिष्ट्वालेपैःसुखावहम् ॥
रिपुविष्ठांवृश्चिकंचखनित्वाभुविनिःक्षिपेत् ॥ ४३ ॥
आच्छाद्यप्रावरेणाथतत्पृष्ठेमृत्तिकांक्षिपेत् ॥
म्रियतेमलरोधेनउद्धृतेचपुनःसुखी ॥ ४४ ॥
"ॐह्रींक्षःअमुकंक्षं" । अनेनमंत्रेणराजिकालवणेनशिव
निर्माल्यानिकटुतैलेनसहस्रहोमात् शत्रोर्वधः ॥ ४५ ॥

फिर वह मोरपिच्छ नीलकमलका लेप करनेसे सुखीहोताहै॥ वृश्चिक और शत्रुकी विष्ठापृथ्वीमें खोदकर डालदे शत्रुका मल रुक जायगा वह मृत्यको प्राप्त होगा उखाडनेसे सुखीहोगा 'ॐ ह्रीं क्षः अमुकं क्षं' इसमंत्रसे राई नोन शिवनिर्माल्य कटु तेलके साथ सहस्र आहुती देनेसे शत्रुका.वध होताहै ॥ ४५ ॥

इति मारणम् ॥

अथ अश्वनाशनम् ॥

कृष्णजीरकचूर्णेनरंजितेश्वोनपश्याति ॥
तक्रेणक्षालयेच्चक्षुःसुस्थोभवतिघोटकः ॥ ४६ ॥

काले जीरेका चूर्ण आंखमें डालनेसे घोडा अंधा होजाताहै, फिर मट्ठेसे आखैं धोनेसे स्वस्थ होजाताहै ॥ ४६ ॥

घ्राणेछुछुन्दरीचूर्णदत्तेपततिघोटकः ॥
सुस्थश्चन्दनपानेननश्यंप्राप्यनसंशयः ॥ ४७ ॥

छछूंदरका चूर्ण सुंघातेही घोड़ा गिरजाता है; फिर चंदनकी न्यस्य देनेसे वा पान करनेको देने से स्वस्थ होजाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ४७ ॥

अश्वास्थिकीलमश्विन्यांकुर्य्यात्सप्तांगुलंपुनः ॥
निखनेदश्वशालायांमारयत्येवघोटकान् ॥ ४८ ॥
भरण्यामुक्तमंत्रेणचितिकाष्ठस्यकीलकम् ॥
अष्टाङ्गुलन्तुनिखनेदश्वशालाविनश्याति ॥ ४९॥
" ॐनमोभगवतेरुद्रायॐअश्वान्हनरस्वाहा
ॐपचपचस्वाहा"इत्यश्वनाशनम् ॥

अश्विनीनक्षत्रमें घोडेकी अस्थि की कील सात अंगुलकी बनावै वह अश्वशाला में गाडने से घोडा मर जाता है यही भरणीका फल है । चितिकाष्ठ की अष्टांगुल कीलक अश्वशालामें गाडनेसे घुडसाल नष्ट होतीहै मंत्र यह है'ॐ पच पच स्वाहा'४८।४९

इति अश्वनाशनम् ।

अथसस्यनाशनम् ॥

पुनर्वसौचितिकाष्ठकीलकंत्र्यङ्गुलंक्षिपेत् ॥
शताभिमंत्रितंक्षेत्रेसस्यंतत्रविनश्यति ॥ ५० ॥

पुनर्वसुनक्षत्रमें चितिके काष्ठकी कीलका तीन अंगुलके प्रमाणका सौवार अभिमंत्रित कर खेतमें डालनेसे खेती नष्ट होजातीहै५०॥

"ॐलोहितमुखेस्वाहा" ॥

आर्द्रायांनिःक्षिपेत्कीलंभल्लूकस्यास्थिसंभवम् ॥
क्षेत्रमध्येतदाशत्रोस्सस्यंसर्वंविनश्यति ॥ ५१ ॥

'ॐ लोहितमुखेस्वाहा' यह मंत्र है आर्द्रानक्षत्रमें भल्लूकी अस्थिकी कील शत्रुकी खेतीमें डालदे तौ सब खेती नष्ट होजातीहै५१

विशाखायांकालिकाष्ठकीलमष्टांगुलंक्षिपेत् ॥
कदलीवाटिकामध्येनाशयेत्कदलीफलम् ॥ ५२ ॥

विशाखानक्षत्रमें बेरीके काष्ठकी आठ अंगुल कील कदलीकी वाटिकामें डालनेसे केलेकी फली नष्ट होजातीहै ॥ ५२ ॥

इति सस्यनाशनम् ।

अथरजकस्यवस्त्रनाशनम् ॥

पूर्वाफाल्गुनिनक्षत्रेजातिकाष्ठस्यकीलकम् ॥
अष्टांगुलप्रमाणंतुनिखनेद्रजकगृहे ॥
शताभिमंत्रितंतेनतस्यवस्त्राणिनाशयेत् ॥ ५३ ॥

"ॐकुम्भस्वाहा" ॥

इति रजकस्यवस्त्रनाशनम् ।

धोबी के वस्त्र नष्ट करना । पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रमे जायफलकाठकी

कील आठ अंगुल प्रमाणकी सौ वार अभिमंत्रित कर धोबी के घरमें गाडनेसे रजकके वस्त्र नष्ट होजातेहैं 'ॐकुंभस्वाहा'॥ ५३ ॥

अथधीवरस्यमत्स्यनाशनम् ॥

इतिरजकस्यवस्त्रनाशनम् ॥

संग्राह्यपूर्वफाल्गुन्याम्बदरीकाष्ठकीलकम् ॥
अष्टाङ्गुलंचनिखनेन्नाशयेद्धीवरगृहे ॥ ५४ ॥
" ॐजलेस्वाहा ॥ ॐमत्स्यिस्वाहा" ॥
मंत्रद्वयस्यतुल्यंफलम् ॥
सप्तांगुलम्मघाऋक्षेभल्लातंकाष्ठकीलकम् ॥
गृहीत्वादासगेहेतुदेयंमत्स्यान्विनाशयेत् ॥ ५५ ॥

पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रमें बेरीकी लकड़ी आठ अंगुलकी ग्रहणकर धीवरके घरमें गाडनेसे मच्छियोंका नाश होजाता है 'ॐज्वल २ स्वाहा अथवा जलेस्वाहा ॐमत्सिकास्वाहा' । अथवा मघानक्षत्रमें सात अंगुलका भिलावेका काष्ठ धीवरके घरमें गाडनेसे मच्छियों का नाश होजाता है ॥ ५५ ॥

कृत्तिकायामर्ककाष्ठंकीलकंत्र्यंगुलंक्षिपेत् ॥
शत्रोर्वापीह्रदादौचमत्स्यस्तत्रविनश्यति ॥ ५६ ॥

कृत्तिकानक्षत्रमें आककी लकड़ी तीन अंगुलकी लेकर शत्रु धीमरके बावडी वा ह्रदादिमें डालनेसे उसमेंकी मछली नष्ट हो जाती है ॥ ५६ ॥

इतिकैवर्त्तनाशनम् ॥

अथकुम्भकारस्यभाण्डनाशनम् ॥

हस्तेवैअंगुलंकीलंकरवीरस्यकाष्ठजम् ॥

निखनेत्कुम्भकारस्यशालायांभाण्डनाशकृत् ॥ ५७ ॥

कुम्भकारके बरतनोंका नाश करना. । हस्तनक्षत्रमें तीन अंगुलकी लकड़ी लेकर कुंभारके घरमें गाड़नेसे उसके बरतन टूट जाते हैं ॥ ५७ ॥

पंचांगुलंनिम्बकीलंतद्दक्षेपूर्ववत्फलम् ॥
गोक्षुरंमेषशृंगंचबीजंवाकोकिलाक्षकम् ॥ ५८ ॥
शूकरस्यमलंवाथमूलम्वाश्वेतगुंजकम् ॥
पाकस्थानेतुभांडानांक्षिप्तंस्फोटयतेध्रुवम् ॥ ५९ ॥
तालंकरंजबीजंचटंकणेनसमन्वितम् ॥
कृत्वाभांडास्स्फुटंत्येवउक्तानांमंत्रउच्यते ॥ ६० ॥

अथवा पूर्वोक्त नक्षत्रमें पांच अंगुल नीमकी कील गाड़नेसे पूर्ववत् फल होता है. गोखरू मेढासींगी तालमखाने शूकरका मल अथवा श्वेत चौंटलीकी जड़ डालनेसे अवश्य बरतन फूट जाते हैं; हरताल और करंजके बीज सुहागा यह सब वस्तु डालनेसे अवेके बरतन टूट जाते हैं ॥ ६० ॥

"ॐमदमदस्वाहा ॥ ॐगुरुहरस्वाहा" ॥

अथवा "ॐदमन्यदमन्यस्वाहा" मंत्रत्रयस्यतुल्यंफलम्

'ॐमद मद स्वाहा ॐ गुरु हर स्वाहा' इन दोनों मंत्रोंका बराबर फल है ॥

इति कुंभकारस्यभाण्डनाशनम् ।

अथतैलिकस्यतैलनाशनम् ॥

मधुकस्यतुकीलन्तुचित्रायांचतुरंगुलम् ॥
निखनेत्तैलशालायांतैलंतत्रविनश्यति ॥ ६१ ॥

तेलीका तेलनाशकरना । चित्रानक्षत्रमें चार अंगुल मुलैठीकी कील कोलके स्थानमें डालनेसे तेल नष्ट होजाता है ॥ ६१ ॥

"ॐदहदहस्वाहा" सहस्रजपः ॥
भल्लातकाष्ठंचित्रायांनिखनेत्तैलिकेगृहे ॥
अष्टांगुलंतदातत्रग्राहकोनहिगच्छति ॥ ६२ ॥

'ॐ दह दह स्वाहा' । सहस्र जपकरै भिलावेकी लकड़ी चित्रानक्षत्रमें आठ अंगुलकी गाड़दे तौ उसके यहां कोई ग्राहक नहीं जाता ॥ ६२ ॥

अथ गोपानांगवांक्षीरनाशनम् ॥
निःक्षिपेदनुराधायांजम्बूकाष्ठस्यकीलकम् ॥
अष्टांगुलंगोपगेहेगोदुग्धंचविनश्यति ॥ ६३ ॥

ग्वालियोंकी गऊका दूध नाशकरना । अनुराधानक्षत्रमें जामुन की कील आठ अंगुलकी घोसीके घरमें डालनेसे उसका दूध नष्ट होजाता है ॥ ६३ ॥

अथ वारिजस्यपर्णनाशनम् ॥
नवांगुलंपूगकाष्ठकीलकंनिःक्षिपेद्गृहे ॥
तांबूलिकस्यक्षेत्रेवाऋक्षेशतभिषाह्वये ॥
तदातस्यचताम्बूलंनाशमायातिनिश्चितम् ॥ ६४ ॥

तंबोलीके पत्ते नाशकरने।नौ अंगुल की सुपारीके काठकी कील शतभिषानक्षत्रमें तंबोलीके घरमें डालनेसे अवश्य ताम्बूलोंका नाश होजाता है ॥ ६४ ॥

अथशाकनाशनम् ॥

गन्धकंचूर्णकंतत्राक्षिपेज्जलयुतेनवै ॥
नश्यन्तिसर्वशाकानिशेषान्यल्पबलानिच ॥ ६५॥

गंधकका चूर्ण जलके साथ डालनेसे खेतमेंसे सर्व शाक नष्ट होजाते हैं क्रमसे सूख जायगा ॥ ६५ ॥

तन्तुवायस्यसूत्रनाशनम् ॥

अश्विन्यांजांबिरंकाष्ठंतन्तुवायगृहेक्षिपेत् ॥
द्वादशांगुलमानन्तुसूत्रन्तत्रविनश्यति ॥ ६६ ॥

अथ तंतुवायस्य सूत्रनाशनम् ॥ अश्विनीनक्षत्रमें बारह अंगुल जम्बीरीकी कील जुलाहेके घरमें डालनेसे उसके तागे नष्ट होजातेहैं

अथ शौंडिकस्यमदिरानाशनम् ॥

कृत्तिकायामर्ककाष्ठंषोडशांगुलकंक्षिपेत् ॥
शौंडिकस्यचगेहेचमदिरातत्रनश्यति ॥ ६७ ॥

कृत्तिका नक्षत्रमें आककी लकड़ी सोलह अंगुल कलालके घरमें डालनेसे उसकी मदिरा नष्ट होजाती है ॥ ३७ ॥

अथ कर्मकारस्यलोहनाशनम् ॥

रोहिण्यांबदरीकाष्ठंकीलमेकादशांगुलम् ॥
कर्मकारगृहेक्षिप्तंलोहंतप्तंभवेन्नहि ॥ ६८ ॥

लुहारका लोहनाशन ॥ रोहिणीनक्षत्रमें बेरीके काष्ठकी ग्यारह अंगुलकी कील लुहारके दुकानमें गाड़नेसे लोहा तप्त नहीं होताहै ६८

इतिकर्मकारस्य लोहनाशनम् ॥

अत्रंपारीशसंभ्रमकायवेधछेदकज्ञानविज्ञाननाफूटै ॥

---

१ दूसरी लिपिमें इस प्रकारहै ॥अबपारीस संभ्रम कायवेध छेदका ज्ञान विज्ञान फुटै अमुकारगाय ह्रंकाचण्डीतो इमोरमाशिल पाथरपरै अमुकार गासे मारैससमारै मुमारै रौडांब उलटावेधे विरूपाक्ष विराली उलटावेधे पिण्डोमानीपै।मोरे पिंडेकरे घाउलटावेधे डांकतुलखाः फोड़२दंडी विरूपाक्षरे आज्ञा वारत्रय पडिआ प्रातकाल तीन गंडूष पानी पियै ॥

अमुकारकायंहूंकलिकाचंडीतुंइमोरमाशिलपाथरपडे अमुकारगामेमारेससमरैपुत्रीमारौंतारकउलटावेधेविरू पाक्षंरिवानीउलटावेधेपित्रपानीजेमोरापिंडेकरेघाउल टावेधेताकताकतुजीखाफोटफोटदंण्डीविरूपाक्षेरआ ज्ञावारत्रयंपठित्वाप्रतिप्रातः ॥ त्रिगंडूषजलंपेयंयदि केनापिविद्धंस्यात् ॥ शरीरन्तदैवतेनकार्य्यमिति६९॥

इतिश्रीकामरत्नेनित्यनाथविरचितेउच्चाटनादिकर्म्मकारलो हनाशनंनामदशमोपदेशः ॥ १० ॥

मंत्र–अमु पानीरा शम्भुकाय वेष छेदक ज्ञान विज्ञाननाफूटै अमुकारकायं ह्रं कलिका चंडीतु इमोरमा शिल पाथरपड़े अमुकार गामैं नारै ससमरै पुत्री मारौं तारक उलगैं वेधे विरूपाक्ष रिवा- नी उलटावेधे पित्र पानी जो मोर पिंड़े करै घा उलटा वेध ताक ताकतुजी खा फोट फोट दण्डी विरूपाक्षेर आज्ञा यह तीन वार प्रति प्रातःकाल पढ़ै और तीन घूंट जलपिये जो किसीसे विद्ध हो तो शरीरका वेध छूट जाता है ॥ ६९ ॥

इतिश्री कामरत्ने नित्यनाथविरचिते भाषाटीकायां उच्चाटनादि कर्मकारलोहनाशनं नाम दशमोपदेशः ॥ १० ॥

अथ नानाकौतुकम् ॥

शिखिनस्तुशिखाचूर्णभोजयेद्दिनसप्तकम् ॥
तद्विष्टालिप्तहस्तस्यद्रव्यंशक्रोतितत्क्षणात् ॥ १ ॥

मोरको मोरकी शिखा (कलिहारी) काचूर्ण सात दिनतक भोजन करावै उसकी विष्ठासे हाथ लपेटनेसे तत्काल द्रव्य लुप्तरूप हो जाता है ॥ १ ॥

सप्ताहंतिलतैलेनभावयेदातपेखरे ॥

अंकोलिबीजचूर्णन्तुयोज्यंपेष्यंपुनःपुनः ॥ २ ॥

सात दिनतक तिलके तेलसे ढेराके बीजोंकी चूर्णको भावना देकर धूपमें सुखावे और वारंवार सुखाय पीसे ॥ २ ॥

तत्तैलंग्राहयेद्यत्नात्तैलकारस्ययन्त्रतः ॥
अथवाकांस्यपात्रेद्वेतेनकल्केनलेपयेत् ॥ ३ ॥

उसके तेलको कोलमें पिलवा ले अथवा कांसीके दो पात्र उसके कल्कसे लेप करै ॥ ३ ॥

उत्थाप्यस्थापयेद्धर्मेसंमुखन्तुपरस्परम् ॥
तयोरधःकांस्यपात्रेपतितंतैलमाहरेत् ॥ ४ ॥

फिर इसको उठाकर धूप में रक्खे और सामने रक्खे उसके नीचे कांसीका बरतन रखदे, उसमें जो तेल गिरे उसे ग्रहण करले ॥ ४ ॥

इदमेवाङ्कुलीतैलंसिद्धंसर्वत्रयोजयेत् ॥
लिप्तमंगुलितैलेनमंडितंतत्क्षणाद्दिशेत् ॥ ५ ॥

यह तेल सिद्ध और सब कार्ययोगोंमें प्रयोग करै उँगली में तेल लगाकर फेरनेसे उसी समय मंडन होताहै ॥ ५ ॥

सफलोजायतेवृक्षस्तत्क्षणान्नात्रसंशयः ॥
पद्मिनीबीजचूर्णन्तुभाव्यमङ्कुलितैलतः ॥ ६ ॥

वृक्षपर लगानेसे उसी समय वृक्ष सफल होजाता है इसमें संदेह नहीं एक अंगुली तेल कमलगट्टेमें लगानेसे ॥ ६ ॥

न्यस्तंजलेमहाश्चर्य्यस्तत्क्षणात्पद्मसंभवः ॥
यानिकानिचबीजानिजलजस्थलजानिच ॥ ७ ॥

जलमें रखनेसे उसी समय कमलकी उत्पाति होजातीहै, जितने जलस्थलके वृक्षोंके बीज हैं ॥ ७ ॥

अङ्गुलीतैललिप्तानितानितान्युद्भवन्तिच ॥
यत्किञ्चित्काण्डमूलोत्थंपत्रपुष्पफलादिकम्॥ ८॥

एक अंगुलीमात्र तेल लगानेसे उसी समय जमजातेहैं,जो कुछ काण्डमूलसे उठे हुए पत्र पुष्प फल आदिक हैं ॥ ८ ॥

अङ्गुलीतैललिप्तन्तुतुल्यरूपंभवेद्ध्रुवम् ॥ ९ ॥

अँगुलीसे तेलमात्र लगादेनेसे मुंडितरूप निश्चय हो जाताहै ९

गुंजाफलांबुपिष्टंचलेपयेत्पादुकाद्वयम् ॥
विनाक्लेशंनरोगच्छेत्क्रोशमेकंनसंशयः ॥ १० ॥

जलमें चौंटली पीसकर उसका लेप खड़ाउओंपर करनेसे पैर धोकर उसके ऊपर मनुष्य चढकर एक कोश जा सकता है इसमें संदेह नहीं ॥ १० ॥

लघुदारुमयंपीठंगुंजापिष्टेनलेपयेत् ॥
शुष्कमन्तर्जलैस्सार्द्धमुपविष्टंनमज्जति ॥ ११ ॥

छोटी काठकी चौंकीको चौटली पीसकर लेपित करे सुखाकर जलमें चौकीपर बैठनेसे चौंकी उससे पृथक् नहीं होती है ॥ ११ ॥

गुञ्जाबीजंत्वचोन्मुक्तंचूर्णंभाव्यंनृमूत्रकैः ॥
सप्तवारंततःकाष्ठंलिप्तमङ्गुलसम्भवम् ॥ १२ ॥

चौंटलीके बीजोंकी छाल अलगकर मनुष्य के मूत्रमें चूर्ण कर सातबार कांसीपर लेप करनेसे अंगुलवत् होजाय ॥ १२ ॥

तैलमादायतल्लिप्तंपूर्ववत्पादुकागतिः ॥
वर्तिस्सर्ज्जरसैःपूर्णातैललिप्ताजलेस्थिता ॥ १३ ॥

तेल लेकर पूर्ववत् दोनों खड़ाऊओंको लिप्त करै तौ पूर्ववत् विना खूंटीके खडाऊँपर जासकता है और रालकी बत्तीकरके तेलसे लिप्तकरके जलमें स्थित रखनेसे ॥ १३ ॥

ज्वलितादीपवर्तिस्तुज्वलत्येवनसंशयः ॥
कटुतुंब्युत्थतैलेनपारावतचटोद्भवम् ॥ १४ ॥

वह बत्ती बराबर जली रहैगी इसमें संदेह नहीं, कडवीतुम्बी के तेलसे कबूतर और चटककी बीट ॥ १४ ॥

मलंचशिखिमूलंचपेषितंगर्धभास्थिजम् ॥
ललाटेतिलकन्तेनकृत्वासंदृश्यतेपुनः ॥ १५ ॥

मूलशिखाकी जड गदर्भकी हड्डीके साथ पीसकर माथेपर तिलक लगानेसे ॥ १५ ॥

दशास्योनात्रसन्देहोयथालंकेश्वरोनृपः ॥
शिग्रुबीजोत्थितंतैलंपारावतपुरीषकम् ॥ १६ ॥

इसमें संदेह नहीं वह पुरुष दश शिरके रावणकी समान दीखता है । तथा सहँजनेके बीजोंका तेल और कबूतर की बीट ॥ १६ ॥

वराहस्यवसायुक्तंशिखिमूलसमंसमम् ॥
ललाटेतिलकंतेनयःकरोतिसवैजनः ॥ १७ ॥

बाराहकी चरबी शिखिमूल यह सब समान भाग लेकर जो मनुष्य माथेपर तिलक करै ॥ १७ ॥

दृश्यतेपंचवक्त्रोसौयथासाक्षान्महेश्वरः ॥
रात्रौकृष्णचतुर्दश्यांमयूरास्येविनिःक्षिपेत् ॥
भृंगीबीजंमदःकृष्णांकृष्णभूमौनिवापयेत् ॥
तज्जातभार्गीसंगृह्यतयाकुर्यात्तुरज्जुकम् ॥
तद्रज्जुबद्धःपुरुषोमयूरोदृश्यतेजनैः ॥ १८ ॥

वह पांच मुखवाला साक्षात् महेश्वरकी समान दीखता है, कृष्णचतुर्दशीकी रात्रिमें मोरके मुखमें अतिविषाके बीज सोम-

राजी डालकर कालीमिट्टी में बोवै जब वह उत्पन्न होजाय तब उसकी रस्सी बटकर जिस मनुष्यको उससे बांधे वह मनुष्योंको मोर दीखता है ॥ १८ ॥

तद्योगेकृष्णमार्जारवक्त्रेवैरंडबीजकम् ॥
तज्जातैरंडबीजानामेकवक्त्रेणधारयेत् ॥ १९ ॥

यह योग कृष्ण यूति सारिवा और तगर अंडके बीज उससे उत्पन्न हुए अंडके बीजोंको एकी करके मुखमें धारणकरै ॥ १९ ॥

तंप्रपश्यंतिमार्जारंमनुष्यानात्रसंशयः ॥
शृगालश्वानमेषांश्चयद्दिनेवापयेत्पृथक् ॥ २० ॥
मयूरास्येयथाभार्गीयातिसिद्धिश्वतादृशी ॥
रक्तगुंजाफलंवाप्यंस्त्रीकपालेऽथसेचयेत् ॥ २१ ॥

मनुष्य उसको बिलावकी सूरत दीखने लगता है । इसमें संदेह नहीं गीदड कुत्ता मेंढा इनके मुखमें पृथक् २ यही डालनेसे मोरके मुखमें जैसे भृंगी सिद्ध होती है वैसी सिद्धि होती है, लाल चौंटलीके फलको धोकर स्त्रीके कपालसे सीचनकरै ॥ २१ ॥

जातंफलंक्षिपेद्वक्त्रेस्त्रीरूपोदृश्यतेपुमान् ॥
नरादिसर्वजंतूनांग्राह्यंसद्योहतंशिरः ॥ २२ ॥

उससे जो फल उत्पन्न हो उसे मुखमें रखनेसे स्त्रीरूप दीखता है मनुष्यादि सम्पूर्ण जन्तुओंका तत्काल हतहुआ शिर ग्रहण कर ॥ २२ ॥

तच्चकृष्णचतुर्दश्यांसर्वबीजान्वितंवपेत् ॥
भृंगीधुस्तूरबीजानिगुंजानिवैकसंयुतम् ॥ २३ ॥

कृष्णपक्षकी चौदसको उसमें सबप्रकारके बीज बोवे भाँगरा धतूरा एरण्ड चौंटली यह सब एकत्रकर ॥ २३ ॥

निखनेत्कृष्णभूम्यान्तुबलिपूजासमन्वितम् ॥
सेवयेत्फलपर्यन्तंयावद्बीजानिचाहरेत् ॥ २४ ॥

कृष्णभूमिमें बलिपूजाके सहित उसको गाड़दे और फलपर्यन्त सीचता रहै उसीकी समान बीजौंको लेकर ॥ २४ ॥

तत्तद्बीजेकृतेवक्त्रेतत्तद्रूपंभवेद्ध्रुवम् ॥
इत्येवंकौतुकंलोकेनानारूपस्यदर्शनम् ॥ २५ ॥

जैसे जैसे बीज मुखमें रखते जाय वैसा २ रूप दीखता है, इस प्रकार लोकमें रखते अनेक रूपका दर्शन होताहै ॥ २५ ॥

मुक्तबीजोभवेत्स्वस्थोनात्रकार्य्याविचारणा ॥
हरितालंशिलाचूर्णमङ्कुलीतैलभावितम् ॥ २६ ॥

बीजोंको त्यागनेसे स्वस्थ होजाताहै इसमें संदेह नहीं, हरिताल मनशिलका चूर्ण मालकांगनीके तेलमें भावितकर ॥ २६ ॥

तल्लिप्तवस्त्रंशिरसिस्थितंपश्यतिवह्निवत् ॥
तथैवांकोलतैलेनस्फुरत्येवनसंशयः ॥ २७ ॥

उसे वस्त्रपर लगाय शिरपर धारणकर अग्निके समान दीखताहै इसीप्रकार अंकोलके तेलसे दीखता है इसमें सन्देह नहीं ॥२७॥

सिंदूरंगंधकंतैलंसमाम्पिष्ट्वामनश्शिलाम् ॥
तल्लिप्तवस्त्रधृक्चासौरात्रौसंदृश्यतेग्निवत् ॥ २८ ॥

सिंदूर और गंधकके तेलके साथ मनाशिलको पीसकर उसे कपड़ेमें लगाय धारणकर रातमें जाय तो अग्निकी समान दीखताहै ॥ २८ ॥

दूरेपिस्थितलोकैश्चरात्रौतुकौतुकंमहत् ॥
खद्योतमूलताचूर्णैललाटेतिलकेकृते ॥ २९ ॥

इस्से दूरसे स्थित हुए पुरुषोंको रात्रिमें बड़ा कौतुक दीखता है,

खद्योत और हरतालके चूर्णको माथेपर तिलक करनेसे ॥ २९ ॥

राञौसंदृश्यतेज्योतिस्तस्मिन्स्थानेतुकौतुकम् ॥
मुनिपुष्परसैःपुष्पैर्घृष्ट्वाश्वेतांजनंततः ॥ ३० ॥

रात्रिमें बडी ज्योति और कौतुक दीखता है अगस्त्यके फूलोंके रसमें श्वेतअंजन घिसकर ॥ ३० ॥

अंजिताक्षोनरःपश्येन्मध्याह्नेतारकामयम् ॥
वार्षवार्त्ताकुबीजंचनृकपालेमृदासह ॥ ३१ ॥

आंखोंमें लगानेसे मध्यान्हसमय मनुष्यको जलमें तारे दीखने लगतेहैं और बेंगनके बीज मनुष्यकी खोपडीमें डालकर बौनेसे ३१

तज्जातबीजमूलम्वामुखेप्रक्षिप्यमानवः ॥
शतयोजनपर्य्यन्तंपश्येत्सर्वंयथान्तिकम् ॥ ३२ ॥

उससे उत्पन्न बीज वा जड़को मुखमें रखनेसे सौ योजनकी वस्तु निकट से दीखने लगती है ॥ ३२ ॥

वारिमक्षिकयासार्द्धन्तज्जलंयस्यभक्षणे ॥
दीयतेनिःसरेत्तस्यह्यधोवायुस्तुकौतुकम् ॥ ३३ ॥

जलमक्षिकाके साथ जिसे भक्षण करनेको जल दिया जाय उसको अधोवायुमें यही मक्खी कौतुकयुक्त निकलती है ॥ ३३ ॥

"ॐनमोभगवतेरुद्रायउड्डामरेश्वरायबहुरूपाय
नानारूपधरायहसहसनृत्यनृत्यतुदतुदना
नाकौतुकेन्द्रजालदर्शकायठःठःस्वाहा" ॥
अनेनसर्वयोगानामभिमंत्र्यसिद्धिः ॥
अष्टोत्तरजपेनपुरश्चरणम् ॥

इति नानाकौतकम् ॥

---

१ सपश्येद्गरुडोयथा वा इति पाठः ।

'ॐनमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय बहुरूपाय नानारूपाय सह सह नृत्यनृत्य तुद तुद नानाकौतुकेन्द्रजालदर्शकाय ठः ठः स्वाहा' इसमंत्रसे अभिमंत्रित करनेसे सब योगोंकी जो ऊपर लिखेहैं सिद्धि होतीहै एकसौ आठ वार जपकर पुरश्चरण करै ॥

इति नानाकौतुकसिद्धिः ।

अथ खड्गस्तम्भनम् ॥

सिद्धिः[१]वस्तुसुमतिमोहरमाचान्द्रसुरजमोहोवरभाई
मोहौवरंआंगेकोपखांडाफूटैरक्षाकरदेवीकालिका
चंडीआईचांदसुरजतुजिमलेमुजिफूटैरामेरआज्ञा
सिद्धिउकवारत्रयाभिमंत्रितं ॥
धूलिनाप्रोक्षितेगात्रेकृपाणधारारेखाभवतिनान्यतः॥

इतिखड्गस्तम्भनम् ॥

इतिश्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेनानाकौतुकंनामैकादशोपदेशः ११

अथवा वस्तु सुमति मोहोरमाचान्द्र सुरुज मोहो वरभाइ मोहवर आगे कोप खांडा फूंटै रक्षाकर देवी कालिका चण्डी आइ चांद सूरज तुजि भले मुजि फूटैरामेर आज्ञा सिद्धि तीनबार, इस मंत्रसे अभिमंत्रित कर धूरिसे शरीरको आच्छा दित करे तो कृपाणधारा रेखा होजाती है इसमें अन्यथा नहीं है अर्थात् खड्गबंधन हो जाता है ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेभाषाटीकायां नानाकौतुकंनामैकादशोपदेशः ॥ ११ ॥

अथकाम्यासिद्धिः ॥

पुष्यार्कैतुसमागृह्यमूलंश्वेतार्कसंभवम् ॥

१सिद्धिर्वसुमतिमोहोरमावादसुरजमोहोरमाइमोरअंगकोपखाडाफूटइहरक्षा करैदेवीकालिकाचण्डीआइ०चंदसुरजइमइलेमुइफूटौरामिरआज्ञासिद्धहलव ॥

अंगुष्ठप्रतिमांकुर्य्यात्प्रतिमांतुप्रपूजयेत् ॥ १ ॥
गणनाथस्वरूपांचभक्त्यारक्ताश्वमारजैः ॥
कुसुमैश्चापिगंधाद्यैर्हविष्याशीजितेन्द्रियः ॥ २ ॥
पूजयेन्नाममन्त्रैश्चतद्बीजानिनमोंतकैः ॥
यान्यान्प्रार्थयतेकामान्मासैकेनतुलभ्यते॥ ३ ॥

अथ काम्य सिद्धि । पुष्यनक्षत्रमें श्वेत आककी जड ग्रहणकर उसकी एक अंगुष्ठकी समान प्रतिमाको बनाकर पूजन करै और गणनाथको भक्त्यादि उपचार तथा लाल कनेरके कुसुम गंधादिसे पूजनकर हविष्य अन्न खाय जितेन्द्री रहे नाममात्रसे पूजा करै और बीजादिके अन्तमें 'नमः' लगावै इस प्रकार पूजन करे तो जिस जिस वस्तुकी इच्छा करैगा वह एक मासमें पूर्ण होगी ॥ ३ ॥

प्रत्येकंकाम्यसिध्यर्थंमासमेकंप्रपूजयेत् ॥ ४ ॥

प्रत्येक कामनाकी सिद्धिके निमित्त एक महीनेभरतक पूजा करै ॥ ४ ॥

ॐ गणेशबीजमाह ॥ पंचान्तकंॐअन्तरिक्षायस्वाहा ।
अनेनपूजयेत्।पंचांतकंगणेशशशिधरंबीजंगणपतोर्बिंदुः ॥
ॐह्रींपूर्वंदयांॐह्रींफट्स्वाहा ॥
अनेनमंत्रेणरक्ताश्वमारपुष्पाणिघृतक्षौद्रयुतानिजुहुयात् ॥
वांछितन्ददाति ॥
ॐह्रींश्रींमानसेसिद्धिकरिह्रींनमः ॥
अनेनमंत्रेणरक्तकुसुममेकंजापित्वानद्यांक्षिपेत् ॥
एवंलक्षंजपेत्ततोभगवतीवरदाअष्टगुणानामेकंगुणंददाति ॥
इतिकाम्यसिद्धिः ॥

गणेशबीज कहते हैं 'ॐपंचान्तकं ॐअन्तरिक्षाय स्वाहा'–इससे पूजन करे पांच अक्षर नीचे लिखे यह गणपतिबीज है 'ॐ ह्रीं पूर्वदयां ॐह्रीं फट् स्वाहा' इस मंत्रसे लाल कनेरका फूल घृत और शहतके सहित हवन करनेसे मनोवांछित फलकी प्राप्ति होती है 'ॐ ह्रीं श्रीं मानसे सिद्धिकरिह्रीं नमः' इस मंत्रसे एक लालफूल पढकर नदीमें डालदे इस प्रकार लक्ष जपकरनेसे वरदायक होता है अष्टगुणोंमें एक गुण देता है ॥

इति काम्यसिद्धिः ॥

अथवाक्सिद्धिः ॥

कृत्तिकायांस्नुहीवृक्षवंदाकंधारयेत्करे ॥
वाक्यसिद्धिर्भवेत्तस्यमहाश्चर्यमिदंस्मृतम् ॥ ४ ॥

अथ वाक्सिद्धि । कृत्तिकानक्षत्रमें सेहुड़ नामक वृक्षका वन्दा हाथमें धारण करनेसे वाक्यसिद्धि होती है यह महाश्चर्य है ॥ ४ ॥

मंत्रेणग्राहयेत्स्वातीनक्षत्रेबदरीभवम् ॥
वन्दाकंतत्करेधृत्वायद्यस्तुप्रार्थ्यतेनरैः ॥ ५ ॥

स्वातीनक्षत्रमें बेरका वन्दा ग्रहणकर उसे हाथमें धारणकर मनुष्योंसे जो जो प्रार्थना करै ॥ ५ ॥

तत्क्षणात्प्राप्यतेसर्वंमंत्रमत्रैवकथ्यते ॥ ६ ॥
ॐतंअन्तरिक्षायस्वाहा ॥
अनेनग्राहयेत् ॥ इतिवाक्सिद्धिः ॥

वह वह सब प्राप्त करसकता है मंत्र यह है 'ओं तं अन्तरिक्षाय स्वाहा' इससे ग्रहण करै ॥ ६ ॥

इति वाक्सिद्धिः ॥

अथ गुप्तधनगुप्तवेशचौरादिप्रकाशनम् ।

वन्दाशाखोटचूतस्थागोक्षुरंलवणंपदम् ॥ ७ ॥
अजाक्षीरेणसंपेष्यललाटेतिलकेकृते ॥
प्रकाशंजायतेसर्वंतच्छृणुष्वसमाहितः ॥ ८ ॥

शाखोटका वन्दा आमका वन्दा गोखरू लवण चौथाईभाग बकरीकेदूधमें पीसकर माथेपर तिलक करै तो सब गुप्त प्रकाश होजाता है ॥ ८ ॥

धनानियत्रवासंतियेवाचौरादिकास्तथा ॥
गुप्तवेशामहात्मानोगंधर्वायाक्षिणीश्वराः ॥ ९ ॥

जहां धनादिक हों अथवा चोरादिक हों अथवा गुप्तवेशगन्धर्व यक्षिणी मनुष्य यक्षादि यावन्मात्र ॥ ९ ॥

चतुर्द्दातुश्चवृक्षाद्यामर्त्यलोकेस्थिताध्रुवम् ॥
आश्लेषायांशनेर्वारेसायंदाडिमबीजकम् ॥ १० ॥

जो मनुष्यलोकमें स्थित हैं वे सब प्रगट होजाते हैं आश्लेषानक्षत्रमें शनिवारके दिन सायंकालमें दाडिमके बीजका रसग्रहणकर १०

रसंसंगृह्यतुवरींकृष्णाष्टम्यान्तुभूमिजे ॥
पद्ममूलंमंगलेहन्यंजनंकारयेत्सुधीः ॥ ११ ॥
प्रकाशंपूर्ववत्सर्वंजायतेनात्रसंशयः ॥ १२ ॥

इतिगुप्तधनगुप्तवेशचौरादिप्रकाशनम् ॥

अष्टमी मंगलवारको कमलकी जड और शतावरीका रस ग्रहणकर ॥ इसे शुद्धकर अंजन बनाय लगावै तो पूर्ववत् सब प्रकाश होजाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ११ ॥ १२ ॥

इति गुप्तधनगुप्तवेशचौरादिप्रकाशनम् ॥

अथधनुर्विद्या ॥

इन्द्रेणयाविद्यापुराअर्ज्जुनंप्रतिकथिता ॥
सासप्तविंशत्यक्षराकालायुतरक्ताघोरा ॥
ॐकारशतगुणआधारेएकादशशतसहस्रइन्द्रआज्ञा ॥
एतन्मंत्रेणशरंधृत्वानवधापठित्वाआकर्णपूरितेधनु
षिशरंमेलयेत् ॥ सहस्रधाभवति ॥ कलौदशधा ॥
महादेवेनइन्द्रम्प्रतियाकथितासा सप्तदशाक्षरा ॥
चान्द्रधनुर्गुणरेखाकांडब्रह्मज्ञान ॥
ॐॐॐएतन्मंत्रंपठित्वापंचवारंतदाक्षिपेत्पूर्ववंद्भवति ॥
सर्पैःकवलितम्भेकमर्धमात्रंसमुद्धरेत् ॥
छित्वासर्पस्यमुंडंचआतपेशोषयेत्पृथक् ॥ १३ ॥
पिष्ट्वापृथग्वटीकार्यालक्ष्यलाभप्रदास्मृता ॥
लक्ष्येतुमेकतिलकंशराग्रेसर्पमुंडजम् ॥
दत्वातिलकमाकर्ण्यगुणंधनुषिवेधयेत् ॥
लक्ष्यस्यातिलकंबाणोभिन्दत्येवनसंशयः ॥ १४ ॥
ॐरक्तेधनुरक्तेकाण्डरक्तेहलिजामामारोअमुकारअ
मुकंआंगआमुकटाईमारोंत्रिदशदेवगणरुद्रसाक्षीआ
मुकारमारोंदेवेनराखीअर्जुनकृष्णभवानीरआज्ञा ॥
एतन्मंत्रंपठित्वायस्ययदंगेमारयेत्तदंगंविध्यति ॥
किन्तुप्रथमपरीक्षायांशनिमङ्गलाह
निमृतंब्राह्मणस्यवंशमानीयधनुः ॥
कांडंसज्जीकृत्वातत्प्रमाणंगुणंन्दत्वातत्रतत्समयेवा

पुष्पहारमेकंदत्वामुष्टिस्थानेहंसजीवभेकंभंजयित्वा एकनारिकेलजलेनप्रक्षाल्यकाण्डत्रयेणलक्ष्यंविध्वा साधयेत्यदाद्भुतंधनुःकाण्डेनलक्ष्यंसत्रोरंगसमीपेवे धयेत्तदावृथानस्यात् ॥

इतिधनुर्विद्या ॥

अथ धनुर्विद्या।इन्द्रने जो विद्या पहले अर्जुन से कहीहै वह सत्ताईस अक्षर की है। 'ओंकालायुत रक्ताधरे ओंकारशतगुणआधारे एकादश-शत सहस्र इंन्द्रआज्ञा'।इसमत्र से धनुषपर बाणधारण कर कर्णपर्यन्त नौवार पढकर खैंचे तौ सहस्रप्रकार बाण होता है॰ कलियुगमें दश प्रकारसे होता है । और महादेवजीने जो इन्द्रसे कही है वह सत्त-रह अक्षर की विद्याहै (चान्द्रधनुर्गुणरेखाकाण्ड ब्रह्मज्ञान ओंओंओं) यह मंत्र पांचवार पढ़कर बाण चढ़ावै तौ पूर्ववंत् होता है सर्पसे अर्धखाये मेडकको और सर्पके शिरको काटकर लावै उसे गरमीमें सुखाय पीस गुटिका करै यह लक्षलाभ की देने-वाली है लक्ष्यमें मेडकका तिलक बाणके अग्रभागमें सर्पके मुण्डका कतिलक करै फिर डोराधनुषपर चढाय निशाना लगावै अवश्य लक्ष्य के तिलकको बाण वेधैगा इसमें सन्देह नहीं ॐरक्ते धनुरक्ते-काण्डरक्ते हालिजामा मारो अमुकार अमुकं आसुकटाई मारों त्रिदशदेव गणरुद्र साक्षीअमुकार मारों देवेनराखी अर्जुन कृष्ण भवानीर आज्ञा ॥

यह मंत्र पढकर जिसके शरीरमें जहां मारै वही अंग विद्ध होगा किन्तु पहलीपरीक्षामें शनि मंगलके दिनमें मृतकहुए ब्राह्मणकी अर्थीके बासका धनुष बनाय उसको उसके प्रमाणके डोरेमें चढा कर एक पुष्पहार प्रदान कर मुष्टिस्थानमें हंसशिशु भंजन कर

नारियलके जलसे धोय तीन काण्डसे लक्ष्यवेधकर साधे तो वृथा नहीं होगी ॥ १४ ॥

इति धनुर्विद्या ॥

अथधनधान्याक्षयकरणम् ॥

ऋक्षेचपूर्वफाल्गुन्यांदाडिमीवृक्षसंभवम् ॥
वृक्षादनीघनेदेयमक्षयंभवतिध्रुवम् ॥
वन्दाकन्तुमघाऋक्षेबहुवारकवृक्षकम् ॥
धान्यागारेप्रदातव्यमक्षयंभवतिध्रुवम् ॥ १५ ॥

धनधान्य अक्षयकरण। पूर्वाफाल्गुनीनिक्षत्रमें दाडिमके वृक्षका तथा विदारीकन्दका वन्दा रखनेसे धन अक्षय होता है मघानक्षत्रमें बहुवारके वृक्षका वन्दा लाकर धान्यमें रखनेसे अवश्य धान्य अक्षय होता है ॥ १५ ॥

शेफालिकायावन्दाकंहस्तर्क्षेचसमुद्धरेत् ॥
धान्यमध्येतुसंस्थाप्यंतद्धान्यमक्षयंभवेत् ॥ १६ ॥
भरण्यांकुशवन्दाकंगृहीत्वास्थापयेद्बुधः ॥
सम्पूर्णधनधान्यान्तःस्थंकरोत्यक्षयंध्रुवम् ॥ १७ ॥

हस्तनक्षत्रमें निर्गुण्डीवृक्षका वन्दा ग्रहणकर धान्यमें रक्खे तो धान्य अक्षय होता है भरणीनक्षत्रमें कुशका वन्दा लेकर स्थापन करनेसे सम्पूर्ण धनधान्य अक्षय होता है ॥ १७ ॥

उदुंबरस्यवन्दाकंरोहिण्यांग्राहयेद्बुधः ॥
स्थापयेत्संचितार्थन्तुसदाभवतिचाक्षयम् ॥
मंत्रेणमंत्रितंकृत्वामंत्रोप्यत्रैवकथ्यते ॥
ॐनमोधनदायस्वाहा इतिधनधान्याक्षयकरणम्॥१८॥

रोहिणीनक्षत्रमें गूलरका वन्दा ग्रहणकर स्थापनकरै तो अवश्य अक्षय होता है अभिमंत्रित करनेका मंत्र इस स्थानपर कहते हैं (ॐनमो धनदाय स्वाहा) ॥ १८ ॥

इतिधनधान्याक्षयकरणम् ॥

अथश्रुतिधरविद्यादिकरणम् ॥

पथ्यापाठाकणाशुंठीसैंधवंमरिचंवचा ॥
शिग्रुप्रतिपलंचूर्णंद्वात्रिंशतिपलंघृतम् ॥ १९ ॥
घृताच्चतुर्गुणंक्षीरंदत्वासर्वंविपाचयेत् ॥
घृतशेषंसमुत्तार्य्यलिहेद्वाग्बुद्धिदायकम् ॥ २० ॥

श्रुतिधरविद्यादिकरणम् । हरड़ पाठा पीपल सोंठ कालीमिर्च सेंधा वच सहेंजना यह सब एक एक पल ले घीबत्तीसपल ले घीसे चौगुना दूध लेकर यह सब एक पात्रमें पकावे जब रस जल जाय घृतमात्र शेष रहजाय तब उतारले नित्य इसके पानसे वाणी बुद्धि स्मृति बढती है ॥२०॥

अथ ब्राह्मीघृतम् ॥

द्वेहरिद्रेवचाकुष्टंपिप्पलीविश्वभेषजम् ॥
अजाजीचाजमोदाचयष्टीमधुकसंयुतम् ॥ २१ ॥

ब्रह्मीघृत । दोनों हलदी वच कूठ पीपल सोंठ जीरा अजमोद मुलैठी ॥ २१ ॥

एतानिसमभागानिशुष्कचूर्णानिकारयेत् ॥
तच्चूर्णंसर्पिषालेह्यंकर्षंकंवाक्यशुद्धिकृत् ॥ २२ ॥

यह सब बराबर भागले सुखाकर चूर्ण करै यह चूर्ण घृतके साथ एक कर्ष लेनेसे वाक्यसिद्धि होतीहै ॥ २२ ॥

भक्षयेन्मासमेकन्तुबृहस्पतिसमोभवेत् ॥
ब्राह्मीमुण्डीवचाशुण्ठीपिप्पलीसमचूर्णकम्॥ २३ ॥

एक महीने इसके सेवन से बृहस्पतिकी समान होताहै ब्राह्मी मुण्डी वच सोंठ पीपल इनका समान चूर्णकर ॥ २३॥

मधुनाभक्षयेत्कर्षनष्टवाग्जायतेध्रुवम् ॥
वचास्थिकरवीगुन्द्रामुशलीमधुकंबला ॥
अपामार्गस्यपंचांगंक्षौद्रेणपूर्ववत्फलम् ॥ २४ ॥
अपामार्गवचाशुंठीविडङ्गंशंखपुष्पिका ॥
शतावरीगुडूचीचसमंचूर्णंहरीतकी ॥ २५ ॥

शहतके साथ एककर्ष सेवन करनेसे मनुष्य स्पष्ट बोलनेवाला हो जाता है इसमें सन्देह नहीं अथवा वचकी मींग हिंगु पत्री भद्र-मोथा मूषली मुलैठी खरैंटी चिरचिटेका पंचांग वच सोंठ वायविडंग शंखपुष्पी शतावरी गुडूची हरड़ इनका समान चूर्ण कर ॥ २५ ॥

घृतेनभक्षयेत्कर्षंनित्यंग्रन्थसहस्रधृक् ॥
अश्वगंधाजमोदाचपाठाकुष्टंकटुत्रयम् ॥ २६ ॥

घृतके साथ एक कर्ष प्रतिदिन खाय तो सहस्र ग्रन्थका धारण करनेवाला होता है असगंध अजमोद पाठा कुटकी (कूठ) त्रिकुटा२६

शतपुष्पीविश्वबीजंसैंधवंचसमंसमम् ॥
एतदर्द्धंवचाचैवचूर्णितंमधुसर्पिषा ॥ २७ ॥

सोंफ सोंठ सेंधा यह समान भाग लेकर चूर्ण कर इससे आधी वचले शहत और घीमें मिलाय ॥ २७ ॥

भक्षयेत्कर्षमात्रन्तुजीर्णान्तेक्षीरभोजनम् ॥
सहस्रग्रंथधारीस्यान्मूकोपिवाक्पतिर्भवेत् ॥ २८ ॥

एक कर्ष खाय ऊपरसे दूधका भोजन करै तो यह सहस्रग्रन्थका धारण करने वाला वाक्पति होता है ॥ २८ ॥

लिहेज्ज्योतिष्मतीतैलंबलयावचयासह ॥
स्तोकंस्तोकंक्रमेणैवयावन्निष्कचतुष्टयम् ॥ २९ ॥

मालकांगनीके तेलको खरैंटी और वचके सहित चाटे थोड़ा २ क्रमसे चारनिष्कतक बढावे ॥ २९ ॥

निर्वातेमधुवासीस्याद्ब्रह्मचारीकविर्भवेत् ॥
सूर्यस्यग्रहणेवेन्दोःसमन्त्रामाहरेद्वचाम् ॥ ३० ॥

निर्वातस्थानमें रहे शहत चाटे वह ब्रह्मचारी कवि होता है सूर्य वा चन्द्रग्रहणमें मंत्रके सहित वचका वन्दा लावे ॥ ३० ॥

चूर्णितांसघृतांभुक्त्वासप्ताहेवाक्पतिर्भवेत् ॥
इत्येवमादियोगानांमंत्रराजःशिवोदितः ॥ ३१ ॥

इसे चूर्णकर घीके साथ खानेसे एक सप्ताहमें वाक्पति होता है इन योगोंका मंत्रराज शिवने कहा है ॥ ३१ ॥

जप्त्वायुतञ्चसिद्धिःस्यात्पश्चात्तैरेवभक्षयेत् ॥
ॐहूंहयशीर्षवागीश्वरायनमः॥सहस्रजपः ॥
धात्रीफलरसैर्भाव्यंवचाचूर्णंदिनावधिः ॥
घृतेनलेहयेन्निष्कंवाक्शुद्धिस्मृतिबुद्धिकृत् ॥ ३२ ॥

१००००, मंत्र जपनेसे सिद्धि होती है पीछे उक्त पदार्थ भोजन करै 'ॐहूं हयशीर्ष वागीश्वरायनमः' । यह सहस्र जप है । वचका चूर्ण आमलेके रसमें एकदिन भावितकर एकनिष्क घृतके साथ चाटनेसे वाणीकी सिद्धि और बुद्धि होती है ॥ ३२ ॥

वचाचूर्णंक्षिपेत्क्षीरेपुनर्मंत्रेणमंत्रितम् ॥
भोज्यंक्षीरेणशाल्यन्नंसप्ताहेवाक्पतिर्भवेत् ॥ ३३ ॥

मंत्रको पढकर वचका चूर्ण मंत्र के सहित दूधके साथ लेनेसे वाक्पति होता है ॥ ३३ ॥

सप्तमेअष्टमेचैवसाक्षाच्छ्रुतिधरोभवेत् ॥
वचाचूर्णंपिबेत्क्षीरैर्घृतैःक्षौद्रैश्चयत्पुनः ॥
सप्ताहक्रमयोगेनलेह्यंस्यात्पूर्ववत्फलम् ॥ ३४ ॥

इसे सात दिन वा आठ दिन सेवन करनेसे वेदका धारणकरने वाला होता है अथवा वचका चूर्ण शहत और घृतके साथ चाटनेसे सप्ताहमें बुद्धि तीव्र होजाती है ॥ ३४ ॥

पुष्यार्कयोगेसंगृह्यश्वेतार्कस्यतुमूलकम् ॥
छायाशुष्कंचतच्चूर्णम्मंत्रेणैवाभिमंत्रितम् ॥ ३५ ॥

पुष्यनक्षत्रमें श्वेत आककी जड ग्रहणकर उसे छायामें सुखाय चूर्ण करै मंत्र से अभिमंत्रितकर ॥ ३५ ॥

कर्षमर्द्धपलंवापिप्रातरुत्थायसंपिबेत् ॥
तक्रेणसर्पिषावापिजीर्णान्तेक्षीरभोजनम् ॥ ३६ ॥

एक कर्ष वा आधे पल इसको प्रातःकाल उठकर खाय पचने के समय गौका मट्ठा घी अथवा क्षीर सेवन करै तौ ॥ ३६ ॥

एवंसप्ताहमात्रेणकविर्भवतिबालकः ॥
ॐमहेश्वरायनमः ॥ अनेनमंत्रेणाभिमन्त्र्यपिबेत् ३७॥
इतिश्रुतिधरविद्यादिकरणम् ॥

सात दिन में बालक भी कवि होजाता है 'ॐ महेश्वरायनमः' यह मंत्र है ॥ ३७ ॥

इति श्रुतिधरविद्यादिकरणम् ॥

अथकिन्नरीकरणम् ॥

हरिद्राचवचाकुष्टंपिप्पलीचयवानिका ॥

मरिचंसैन्धवंशुंठीमेषांचूर्णंतुकारयेत् ॥ ३८ ॥

हलदी वच कूट पीपल अजवायन कालीमिर्च सैंधा सोंठ इन का चूर्ण कर ॥ ३८ ॥

मधुनासहितंचूर्णंपेषयित्वाशिलातले ॥
दिनैश्चसप्तभिश्चैवभक्षितव्यंनिरन्तरम् ॥ ३९ ॥

इसे शहत से पीस खाय तो सात दिन निरन्तर खानेसे ॥३९॥

जायतेसुस्वरःपुंसांकिन्नरैःसहगीयते ॥
विभीतकंकणाशुंठीसैन्धवंत्वक्समंसमम् ॥ ४० ॥

किन्नरीकी समान कंठ होताहै बहेड़ा पीपल सोंठ सैंधा तज यह समान भागले ॥ ४० ॥

गोमूत्रेणपिबेत्कर्षंकिन्नरैःसहगीयते ॥
जातीपत्रकणालाजामातुलुंगफलंमधु ॥
पलंलेह्यंभवेन्नादःकिन्नराधिकएवच ॥ ४१ ॥

एक कर्ष गोमूत्रके साथ पान करनेसे किन्नरोंके साथ गान कर सकता है उनकी समान स्वर होजाताहै ॥ ४१ ॥

देवदारुकणाव्योषंशताह्वापत्रकंनिशा ॥
वचासैंधवशिग्रूत्थंमूलंपेष्यंसमंसमम् ॥ ४२ ॥

देवदारु सोंठ मिर्च पीपल जीरा सोंफ पत्रज हलदी वच सेंधा सहेंजनेकी मूली यह सब वस्तु समान लेकर ॥ ४२ ॥

कर्षैकंमधुसर्पिर्भ्यांमासमात्रंसदालिहेत् ॥
कंठशुद्धिर्भवेत्तस्याकिन्नरैःसहगीयते ॥ ४३ ॥

एक कर्ष मधु और घृतके साथ एक महीने चाटे तो कंठकी शुद्धि होती है किन्नरोंके साथ गा सकता है ॥ ४३ ॥

शुंठीचशर्कराचैवक्षौद्रेणसहसंयुता ॥
कोकिलस्वरएवस्याद्गुटिकाभुक्तिमात्रतः ॥ ४४ ॥

सोंठ और मिश्री शहतके साथ मिलाय इसकी गोली बना सेवन करै तो स्वर अच्छा हो ॥ ४४ ॥

आर्द्रकंभृंगकोरंडवासाब्राह्मीवचातथा ॥
वचाचूर्णसमांशेनपलैकंवारिणापिबेत् ॥ ४५ ॥

अदरख भांगरा दालचीनी पीपल अडूसा ब्राह्मी वचका चूर्ण यह समान भाग ले जलके साथ एक कर्षपीने ॥ ४५ ॥

मासिमासिचतुर्दश्यांकृष्णपक्षेद्विसप्तकम् ॥
गंधर्वसदृशंगानंकोकिलानांस्वरोयथा ॥ ४६ ॥

महीने २ कृष्णपक्षकी चतुर्दशीतक चौदह दिन खाय तो गन्धर्व और कोकिलाके स्वरकी समान गान कर सकता है ॥ ४६ ॥

निर्गुण्डीमूलचूर्णन्तुतिलतैलेनयोलिहेत् ॥
कंठशुद्धिर्भवेत्तस्यकिन्नरैःसहगीयते ॥ ४७ ॥

इतिकिन्नरीकरणम् ॥

निर्गुण्डीकी जड़का चूर्ण तिलके तेलके साथ चाटनेसे कंठकी शुद्धि होती है किन्नरोंके साथ गासकता है ॥ ४७ ॥

इति किन्नरीकरणम् ॥

अथचक्षुष्यम् ॥

वर्षाकालेकाकमाचींसमूलांतैलपाचिता ॥
खादेत्समासतश्चक्षुर्गृध्रदृष्टिसमंभवेत् ॥ ४८ ॥

वर्षाकालमें समूल काकमाची तेलमें पकावै इसे एक महीने खानेसे गृध्रकी समान दृष्टि होती है ॥ ४८ ॥

श्वेतम्पुनर्नवामूलंघृतघृष्टंसदाञ्जयेत् ॥
जलस्रावंनिहंत्याशुतन्मूलंतुनिशायुतम् ॥ ४९ ॥

श्वेतपुनर्नवाकी जड़ घीमें पीसकर सदा आंजनेसे नेत्रोंसे जलका निकलना बंद होजाता है अथवा हलदीको नेत्रोंमें आंजे ॥ ४९ ॥

अंजनेचक्षुरोगाश्चनभवंतिकदाचन ॥
द्विनिशासैन्धवंत्र्यूषंबीजंकरंजकंसमम् ॥ ५० ॥

तौ किसी प्रकारसे नेत्ररोग नहीं होताहै दोनों हलदी सेंधा त्रिकुटा करंजके बीज यह समान भाग लेकर ॥ ५० ॥

भृंगीद्रवैर्युतम्वापितिमिरंपटलंहरेत् ॥
शम्बूकंवावराटम्वादग्धंशुष्कंविचूर्णितम् ॥ ५१ ॥

अतीसके रसमें बत्ती बनाय नेत्रोंमें आंजनेसे तिमिर दूर होताहै ॥ ५१ ॥

अञ्जयेन्नवनीतेनहन्तिपुष्पंचिरन्तनम् ॥
अजामूत्रेणभूधात्रीमूलंपिष्ट्वाचवर्तिका ॥ ५२ ॥

घोंघा या कौडी इन्हे जलाय चूर्ण कर मक्खनके साथ नेत्रोंमें आंजै तौ बहुत दिनोंका फूला दूर होता है छागके मूत्रमें भुइ-आमलेकी जड़ पीस उसकी बत्ती को ॥ ५२ ॥

नवनीतसमायुक्तंहन्तिपुष्पंचिरन्तनम् ॥
अञ्जनान्नाशयेत्पुष्पंक्षौद्रैर्वास्वर्णमाक्षिकम् ॥ ५३ ॥

मक्खनके साथ लगानेसे पुराना फूला नष्ट होजाता है अथवा शहत के साथ सोनामक्खी मिलाय आंजनेसे फूल नष्ट होजाताहै ॥ ५३ ॥

मरीचेमर्दनेरक्तैर्वर्तीरात्र्यन्धताञ्जयेत् ॥
जयन्तीवाभयावाथघृष्ट्वास्तन्यैर्निशान्धहृत् ॥५४॥

कालीमिर्चको मर्दनकर बत्ती बनाय लगावै तौ नेत्रोंका रतौंधा दूर होता है अथवा जयन्ती वा हरड़को पीस लगावै तौ रतौंधा दूर होजाताहै ॥ ५४ ॥

शोणितंचर्मकोपंचमांसवृद्धिंचनाशयेत् ॥
अजस्यकृष्णमांसान्तःपिप्पलीमरिचंक्षिपेत् ॥५५॥

रुधिरविकार चर्मकोप और मांसवृद्धि भी इससे दूर होती है काले बकरेके मांसमें पीपल और कालीमिर्च डालै ॥ ५५ ॥

कारयित्वाघृतेपच्याद्घटिकान्तेसमुद्धरेत् ॥
मध्वाज्यस्तन्यसंपिष्टंरात्र्यन्धहरमञ्जनम् ॥ ५६ ॥

फिर एक घडी घीसे पकाय उसकी वटिका बनावै उसमें शहत घी स्त्रीके दूधसे पीस लगावै तौ रतौंधा दूर होजाता है ॥ ५६ ॥

अजापित्तगतंव्योषंधूमस्थानेविशोषयेत् ॥
चिरबिल्वरसैर्घृष्टंरात्र्यन्धहरमञ्जनम् ॥ ५७ ॥

बकरीका पित्त सोंठ मिरच पीपलके साथ धूमस्थानमें सुखावै करंजके रसमें इसे घिसकर लगावै तौ रतौंधा दूर होजाताहै ॥ ५७ ॥

घृतेनपुष्पंमधुनाश्रुपातंतैलेनकंडूंतिमिरंजलेन ॥
रात्र्यन्धकंकांजिकयानिहन्तिपुनर्नवानेत्रपुनर्नवङ्करी ५८

घृतसे फूला शहतसे अश्रुपात तेलसे खुजली जलसे तिमिर कांजीसे रतौंधा दूर होताहै श्वेतपुनर्नवाकी जड नेत्रोंको नवीन कर देती है ॥ ५८ ॥

अत्रश्वेतपुनर्नवाग्राह्या ॥ हरीतकीवचाकुष्टंपिप्पलींमरिचानिवै ॥ बिभीतकस्यमज्जाचशंखनाभिर्मनःशिला ५९

इसमें श्वेतपुनर्नवा लेनी । वच कूट पीपल कालीमिर्च बहेडे की मींगी शंखनाभि मनःशिल ॥ ५९ ॥

सर्वमेतत्समंकृत्वाछागीक्षीरेणपेषयेत् ॥
नाशयेत्तिमिरंकंडूंपटलान्यर्बुदानिच ॥ ६० ॥

यह सब बराबर ले बकरीके दूधसे पीस लगावै तो तिमिर अष्टीला अर्बुदरोग नाश होते हैं ॥ ६० ॥

अधिकानिचमांसानियश्चरात्रौनपश्यति ॥
अपिद्विवार्षिकंपुष्पंमासेकेनैवनाशयेत् ॥ ६१ ॥

जो नेत्रोंमें अधिक मांस बढजाता है, तथा जो रात्रिमें नहीं देखता है वह रोग तथा दोवर्ष का फूला एक मासमें अवश्य नष्ट होजाता है ॥ ६१ ॥

वर्तिश्चन्द्रोदयानामनृणांदृष्टिप्रसादिनी ॥ ६२ ॥

दृष्टिको बढाने वाली चन्द्रोदयनामबत्ती मनुष्यको प्रयुक्त करनी चाहिये ॥ ६२ ॥

छायाशुष्कावटीकार्य्यानामचन्द्रोदयावटी ॥ यस्त्रै
फलंचूर्णमपथ्यवर्ज्यंसायंसमश्नातिहविर्मधुभ्याम् ॥
समुच्यतेनेत्रगतैर्विकारैर्भृत्यैर्यथाक्षीणधनोमनुष्यः ६३

इति चक्षुष्यम् ॥

यह वटी छायामें सुखाकर मनुष्यको प्रयोग करनी चाहिये यह दृष्टि निर्मल करती है जो मनुष्य त्रिफलेके चूर्णको संध्या समय हवि और शहत के साथ खाता है वह नेत्रविकारोंसे ऐसे छूट जाता है जैसे धनहीन पुरुषको नौकर छोंड जाते हैं ॥ ६३ ॥

इति चक्षुरोगनिवारणम् ॥

अथ कर्णस्यबाधिरत्वनाशनम् ॥

शिखरिक्षारजलेनतत्कृतकल्केनसाधितंतिलजम् ॥

अपहरतिकर्णनादंबाधिर्यञ्चापिपूरणात् ॥ ६४ ॥

चिरचिरेके खारयुक्त जलसे वा इसीकें साथ तिलके तेलका कल्क कर कानोंमें डाले तौ बधिरता नाश होती है ॥ ६४ ॥

दशमूलीकषायेणतैलप्रस्थेविपाचयेत् ॥
एतत्कल्कंप्रदायैवबाधिर्य्येपरमौषधम् ॥ ६५ ॥

दशमूलके काढेको एकसेर तेलमें पकावे जब तेलमात्र रह जाय तौ उतारले कर्णबधिरता नाश करनेको यह परम औषधी है॥६५॥

नीलीब्रघ्नरसस्तैलंसिद्धकांजिकसंयुतम् ॥
कदुष्णपूरणात्कर्णोनिश्शेषकृमिनाशनः ॥ ६६ ॥

नीलिकाके रसको तेल और कांजीके सहित कुछ गरम गरम कानोंमें पूर्ण करनेसे सब कृमि नाश होजाते हैं ॥ ६६ ॥

दन्तेनचर्वयेन्मूलंनन्द्यावर्त्तपलाशकम् ॥
तन्नालीपूरितेकर्णेध्रुवंगोमक्षिकाञ्जयेत् ॥ ६७ ॥

धव सोनामक्खी और पलाशकी जड़ दांतोंसे चबानेसे वा कण में उसका लेप करनेसे गोमक्षिका दूर होती है ॥ ६७ ॥

ताम्बूलभक्षणंकृत्वातत्रसन्दापयेद्बुधः ॥
तत्रस्थितास्तुकृमयोनाशमायान्तिनिश्चितम्॥६८॥

फिर ताम्बूल भक्षण कर सेक करै तौ कानके कृमि अवश्य नाश होजाते हैं ॥ ६८ ॥

मूषालीबाकुचीचूर्णखादेद्बाधिर्य्यशान्तये ॥
मनःशिलापामार्गोंथमूलंचूर्णमधुप्लुतम् ॥ ६९ ॥

मूषली बकुचीका चूर्ण खानेसे बधिरता नाश होजाती है मन-शिल अपामार्गके मूलका चूर्ण शहतमें मिलाकर ॥ ६९ ॥

भक्षयेत्कर्षमात्रन्तुबधिरत्वप्रशान्तये ॥

लशुनामलकंतालंपिष्ट्वातैलेचतुर्गुणे ॥ ७० ॥

एक कर्षमात्र खानेसे वह बहरापन शान्त होजाताहै लहसन आमला हरताल पीसकर इससे चौगुना तेल ले ॥ ७० ॥

तैलाच्चतुर्गुणंक्षीरंपाच्यंतैलावशेषितम् ॥
तत्तैलंनिक्षिपेत्कर्णेबाधिर्य्यंञ्चविनाशयेत् ॥ ७१ ॥

इसको पकाले जब रस जल जाय तेलमात्र रह जाय वह तेल कानमें डालनेसे बहरापन शान्त होजाताहै ॥ ७१ ॥

अथ कर्णपालीवर्द्धनम् ॥

सिद्धार्थबृहतीचैवह्यपामार्गसमंसमम् ॥
छागीक्षीरैःप्रलेपोयंकर्णपालींविवर्द्धयेत् ॥ ७२ ॥

सरसौं कटेरी चिरचिटा इनको बकरी के दूधसे लेप करै तौ कर्णपाली बढती है ॥ ७२ ॥

मुषलीकन्दचूर्णंचमहिषीक्षीरसंयुतम् ॥
लोडयेत्स्निग्धभाण्डेतुधान्यराशौनिवेशयेत्॥७३॥

मूषलीकन्दका चूर्ण कर भैंसके मक्खनके साथ मिलाय बरतनमें मिलाय धान्यराशी में धरै ॥ ७३ ॥

सप्ताहादुत्थितंलेप्यंकर्णपालीविवर्द्धते ॥
गुंजामूलकृतंचूर्णमहिषीक्षीरसंयुतम् ॥ ७४ ॥

फिर सात दिनमें निकाल लेप करनेसे कर्णपाली बढती है चौंटलीकी जड़का चूर्ण कर उसमें दूध मिलाय ॥ ७४ ॥

शृतंदधिततःकुर्य्यान्नवनीतंतदुद्भवम् ॥
कर्णयोर्लेपयेन्नित्यंवर्द्धयेन्नात्रसंशयः ॥ ७५ ॥

दहीजमाय उसका मक्खन निकालकर कानोंपर लेप करै तो कर्णपाली बढती है ॥ ७५ ॥

अश्वगंधावचाकुष्टंगजपिप्पलिकासमम् ॥
महिषीनवनीतेनलेपात्कर्णोविवर्द्धते ॥ ७६ ॥

असगंध वच कूट गजपीपल यह भैंसके मक्खन के साथ मिलाय लेप करनेसे कान बढ़ता है ॥ ७६ ॥

वराहोत्थेनतैलेनलेपःकर्णविवर्धनः ॥
चर्मचटकस्यरक्तेनलेपात्कर्णौविवर्द्धते ॥ ७७ ॥

अथवा वराहके तेलका कानोंपर लेप करनेसे कान बढ़ताहै अथवा चर्मचटकका रक्तलेप करनेसे कर्णवृद्धि होती है ॥ ७७ ॥

इति कर्णस्यबधिरत्वनाशनं कर्णपालीवर्धनंच ॥

अथदंतदृढीकरणम् ॥

यमचिंचाजयापुंखामूलंवाहयमारजम् ॥
चलदंतादृढायंतेप्रत्यहंदन्तधावनात् ॥ ७८ ॥

इमली जयन्ती शरफोंका कनेरकी जड़ दांतोंमें लगानेसे कैसे भी दांत हिलते हों दृढ होजाते हैं ॥ ७८ ॥

ताम्रपात्रेक्षणंपाच्यमभयाचूर्णकंमधु ॥
पिष्ट्वाचगुटिकाकार्यादंतैर्धार्याकृमीन्हरेत् ॥ ७९ ॥

हरका चूर्ण और शहत यह ताम्बेके पात्रमें क्षणमात्र पाचितकर गुटिका कर दांतोंमें धारण करै तो दांतोंके कृमि नाश होते हैं७९॥

दंतैर्धार्य्यस्नुहीमूलंकृमिनाशंकरोत्यलम् ॥
कासीसंघृतसंपक्वंधार्य्यंदन्तेव्यथापहम् ॥ ८० ॥

थूहरकी जड़ दातोंमें धारण करनेसे कृमि नाश होजाते हैं कसी-

सको घृतमें पकाकर दांतोंमें धारण करनेसे दांतोंकी व्यथा दूर होती है ॥ ८० ॥

विशालयोःपलंचूर्णंतप्तलोहेपरिक्षिपेत् ॥
तद्धूमस्पृष्टदंतानांकीटपातोभवत्यलम् ॥ ८१ ॥

इन्द्रायण महेंद्रवारुणीका चूर्ण एक पल तप्त लोहेपर डाल दे उसका धुआं छूतेही दांतोंका कीडा मरजाता है ॥ ८१ ॥

जातिकोरकपत्रंचचर्वयेत्प्रातरुत्थितः ॥
स्थिराःस्युश्चलितादंतास्तत्काष्ठैर्दंतधावनात् ॥ ८२ ॥

प्रातःकाल उठकर जायफल कंकोलके पत्ते चबावै तो हिलते हुए दांत निश्चल होजाते हैं ॥ ८२ ॥

गुंजामूलन्तुकर्णाभ्याम्बद्धन्दन्तकृमिप्रणुत् ॥
त्रिसूतंरौप्यमेकन्तुजम्बीररसमर्दितम् ॥ ८३ ॥

चौंटलीकी जड कानोंमें बांधनेसे दांतका कीडा नष्ट होजाताहै एक रुपयेभर पारा जम्बीरीके रसमें मर्दित करै ॥ ८३ ॥

जम्बीरफलमध्यस्थंवस्त्रेबध्वात्र्यहंपचेत् ॥
क्षीरमध्येसमुद्धृत्यगुटिकांतांततःपुनः ॥ ८४ ॥

फिर उसे जम्बीरी नीबूमें रख वस्त्रमें बांध तीन दिनतक दूधमें पकावै फिर उसे निकाल गुटिका करै ॥ ८४ ॥

भावितंभानुदुग्धेनतालकंसूक्ष्मपेषितम् ॥
तन्मध्येगुटिकांक्षित्वावस्त्रेबध्वादिनत्रयम् ॥
मधुभांडगतंपश्चादुद्धृताचास्यधारिता ॥ ८५ ॥

इसे कालीमिर्च आकके दूध और हरताल से सूक्ष्म पीसकर गुटिका बनाय वस्त्र में तीन दिन बांध रक्खे फिर शहतके साथ मांड़ और दूध में रक्खे इसको दांतोंमें घिसे तो ॥ ८५ ॥

घर्षणाच्चलितान्दंतांस्तत्क्षणात्कुरुतेदृढान् ॥
तालकंभानुदुग्धेनदिनमेकंविमर्दयेत् ॥ ८६ ॥

हिलते हुए दांत दृढ़ होजात हैं हरताल को आकके दूध में एक दिन खरल करे ॥ ८६ ॥

तद्गर्भेरसहेमोत्थांपिण्डकांतारसंयुताम् ॥
जम्बीरफलमध्यस्थांदोलायंत्रेत्र्यहम्पचेत् ॥ ८७ ॥

फिर उसको पारेके साथ पिंडीकर के एक स्थान में रक्खे और जंबीरीके फलके बीचमें रखकर तीन दिन दोलायन्त्रमें पचावै ॥ ८७ ॥

तैलक्षौद्रयुतेभांडेसमुद्धृत्यविधारयेत् ॥
दन्तरोगान्हरेत्सर्वान्घर्षणाच्चलिताद्दृढाः ॥ ८८ ॥

फिर तेल और शहत मिलाय इसको बरतनमें रख छोडे यह मलतेही सम्पूर्ण दांतोंके रोगोंको दूर करता है ॥ ८८ ॥

चलदन्तास्थिरकरंकार्य्यंबकुलचर्वणम् ॥
बकुलस्यतुबीजन्तुपिष्ट्वाकोष्णेनवारिणा ॥
मुखेचधारयेद्धीमान्दन्तदार्ढ्यकरम्परम् ॥ ८९ ॥

दांतोंको स्थिर और बलयुक्त करता है बकुलके बीज कुछ गरम पानीके साथ पीसकर बुद्धिमान् मुखमें धारण करै तो दांत दृढ होजाते हैं ॥ ८९ ॥

बकुलस्यत्वचाक्काथमुष्णंवक्त्रेणधारयेत् ॥
दृढाःस्युश्चलितादन्ताःसप्ताहान्नात्रसंशयः ॥ ९० ॥

बकुलकी छालका क्काथ गरम २ मुखमें धारण करनेसे सात-दिनमें हिलते हुए दांत दृढ होजाते हैं इसमें सन्देह नहीं ॥ ९० ॥

इतिदन्तदृढीकरणम् ॥

अथ आहारकरणम् ॥

अर्ध्रकेनापिवृक्षस्यपीठंकृत्वाशनैःस्थितः ॥
योसौभुंक्तेघृतैस्साद्धंम्भोजनंभीमसेनवत् ॥ ९१ ॥

बंधूके वृक्षका पीढाकर शनैः २ उसपर बैठ घृतके सहित भोजन करै तो भीमसेनकी समान भोजन होगा ॥ ९१ ॥

संध्यायामाम्रवृक्षस्यकर्त्तव्यमभिमंत्रितम् ॥
प्रातःपुष्पाणिसंगृह्यमालांशिरसिधारयेत् ॥ ९२ ॥

संध्याके समय आमके वृक्षको अभिमंत्रितकर प्रातःकाल उसके मौरकी माला शिरपर धारण करै ॥ ९२ ॥

कौपीनंसंपरित्यज्यभुंक्तेसौभीमसेनवत् ॥
उद्भ्रान्तपत्रमादायकपिलाश्वानदन्तकम् ॥
कट्यामेवद्वयंबध्वाभुंक्तेसौभीमसेनवत् ॥ ९३ ॥

और कौपीन त्याग भोजन करने बैठे तो भीमसेन की समान भोजन करै मूषकपर्णीके पत्तोंको लाकर तेल पिप्पलीके साथ इन दोनोंको कमरमें बांधे तौ भीमसेनकी समान भोजन करै ॥ ९३ ॥

गृहीत्वामंत्रितान्मंत्रीबिभीततरुपल्लवान् ॥
आक्रम्यदक्षिणांजंघांविंशत्याहारभुग्भवेत् ॥ ९४ ॥

मंत्रका जान्नेवाला मंत्रपूर्वक बहेडेके पत्ते दहिनी जांघसे आक्रमण कर ग्रहण करै अर्थात् जांघके तले रखकर भोजन करनेसे बीसगुना होता है ॥ ९४ ॥

ॐनमस्सर्वभूताधिपतयेग्रस २ शोषय२भैरवी
आज्ञापयतिस्वाहा ॥ उक्तयोगानामयंमंत्रः ॥

---

१ मुष्क इति वा पाठः।

अधरंकृकलासस्यशिखास्थानेविबंधयेत् ॥
वायुपुत्रइवाश्चर्य्यमसौभुंक्तेनसंशयः ॥ ९५ ॥

मंत्र 'ॐनमः सर्वभूताधिपतये ग्रस २ शोषय २ भैरवी आज्ञापयति स्वाहा ' उपरोक्त योगका यह मंत्र है ॥ घिरघटका अधर शिखास्थानमें स्थित करनेसे भीमसेनकी समान भोजन होगा इसमें सन्देह नहीं ॥ ९५ ॥

ॐनाभिवेगेनउर्वशीस्वाहा ॥

'ॐ नाभीवेगेन उर्वशी स्वाहा' ॥

इति आहारकरणम् ॥

अथानाहारकरणम् ॥

अंत्राणिकृकलासस्यमज्जाकरंजबीजकम् ॥
पिष्ट्वातद्गुटिकांकुर्य्यात्रिलोहेनतुवेष्टिताम् ॥ ९६ ॥

घिरघटकी अन्त्र और करंजके बीजोंकी मींग पीसकर उसकी गुटिका बना चांदी सोने अथवा तांबेमें मढकर ॥ ९६ ॥

तांवक्रेधारयेद्योसौक्षुत्पिपासानबाधते ॥ ९७ ॥

मुखमें धारण करनेसे भूख और प्यास नहीं लगती है ॥ ९७ ॥

ॐसांसांशरीरममृतमाकर्षयस्वाहा ॥
पद्मबीजंमहाशालीछागीदुग्धेनपाचयेत् ॥
साज्यंचपायसंभुक्त्वाद्वादशाहंक्षुधापहम् ॥ ९८ ॥

'ॐ सांसांशरीर ममृतमाकर्षय स्वाहा' कमलगट्टेकी गिरी महाशालिधान्य छागीके दूधसे पकावे घृतसहित वह खीर खाय तो बारह दिनतक भूख नहीं लगती है ॥ ९८ ॥

उदुम्बरस्यजंबीरशालिशिम्बीशिरीषजम् ॥
बीजंसंचूर्ण्यचाज्येनभुक्त्वापक्षंक्षुधापहम् ॥ ९९ ॥

गूलर जंम्बीरी शालिधान्य शिम्बी शिरसके बीज इनका चूर्ण कर घीके साथ खानेसे पन्द्रह दिन भूख नहीं लगती है ॥ ९९ ॥

उदुम्बरफलंपक्कमिंगुदीतैलभावितम् ॥
भुक्त्वामासंक्षुधंहंतिपिपासांचनसंयशः ॥ १०० ॥

गूलरका पक्का फल इंगुदीके तेलमें भावित कर खानेसे एक महीनेतक भूख और प्यास नहीं लगती है इसमें सन्देह नहीं १००

अपामार्गस्यबीजानित्वग्र्वर्जानिप्रपाचयेत् ॥
पायसंछागलीक्षीरैर्भुक्तंमासक्षुधापहम् ॥ १०१ ॥
ॐनमोभगवतेरुद्रायअमृतार्कमध्येसं
स्थितायममशरीरेअमृतंकुरु२स्वाहा ॥१०२॥
उक्तयोगानामयंमंत्रः ॥

अपामार्गके बीज पकाय बकरीके दूधमें इसकी खीर खानेसे एक महीनेतक भूख नहीं लगती ॥ 'ओंनमो भगवते रुद्राय मृतार्क मध्ये संस्थिताय ममशरीरे अमृतं कुरु २ स्वाहा' ॥ उपरोक्त योगका यह मंत्र है ॥ १०२ ॥

इत्यनाहारकरणम् ॥

अथपादुकासाधनम् ॥

अश्वनालेङ्गुदीतैलैःपेषयेच्छ्वेतसर्षपम् ॥
तल्लिप्तपादहस्तस्तुयोजनानांशतंव्रजेत् ॥ १०३ ॥

घोडेकी नार अंकुलीका तेल श्वेत सरसों यह सब वस्तु पीसे उसको हाथ पैरोंमें सम्यक् लपेटकर सौ योजन जा सकता है१०३

अंकोलस्यतुमूलंतुतिलतैलेनपाचयेत् ॥
पादसंजानुपर्य्यन्तंलिप्त्वादूराध्वगोभवेत् ॥ १०४॥

अंकोलकी जड़ तिलके तेलमें पकावे इसको जंघापर्यन्त लेप करके मनुष्य दूरतक जासकता है ॥ १०४ ॥

ॐह्रींनमः ॥

ॐनमश्चंडिकायैगगनंगगनंचालय २
वेशय हिलि २ वेगवाहिनीह्रींह्रींस्वाहा ॥
उक्तयोगद्वयस्यायमेवमंत्रः ॥
काकस्यहृदयंनेत्रेजिह्वांचैवमनःशिलाम् ॥
गैरिकंसिंधुजंचैवअजामारीचमालती ॥ १०५ ॥

'ॐह्रीं नमश्चंडिकायै गगनं २ चालय २ वेशय हिलि २ वेग वाहिनी ह्रीं ह्रींस्वाहा 'उक्त योगोंका यह मंत्र है काकका हृदय दोनों नेत्र जिह्वा मनशिल गेरू सेंधानोन शूकशिम्बी मालती ॥ १०५ ॥

समंरुद्रजटांचैवविदार्यासहपेषयेत् ॥
तल्लिप्तपादस्सहसासहस्रंयोजनम्व्रजेत् ॥ १०६ ॥

सप्तरुद्रजटा विदारीकंद यह सब पीसके उसको हाथ पैरमें लपेटकर सहस्र योजनको जासकते हैं ॥ १०६ ॥

वलीपलितनिर्मुक्तोयावदाह्वतशंकरम् ॥ १०७ ॥
ॐनमोभगवतेरुद्रायनमोहरितगदाधरायत्रासय २॥
क्षोभय २ चालने २ स्वाहा ॥
काकजिह्वाब्रह्मचारीगुडलोहेनवेष्टयेत् ॥
मुखेप्रक्षिप्यगच्छन्तियोजनंशतमेवच ॥ १०८ ॥

वलीपलितसे निर्मुक्त हो कर शंकरको आह्वान करै ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमो हरितगदाधराय त्रासय २ क्षोभय २ चालने२ स्वाहा' ॥ कागकी जिह्वा भारंगी गुड़ यह लोहसे वेष्टित कर मुखमें डालकर सौ योजन जासकतेहैं ॥ १०८ ॥

आगच्छन्तितदातूर्णंतेनराःनात्रसंशयः ॥ १०९ ॥
और बहुत शीघ्र आसकते हैं इसमें संदेह नहीं ॥ १०९ ॥
इतिपादुकासाधनम् ॥

अथअनावृष्टिहरणम् ॥

हूह्रींहू (अथवा) हुंश्रींहुंइमंमंत्रंजलमध्येप्रविश्ययदिजपेत्॥
तदाअनावृष्टिंहरति ॥ महावृष्टिर्भवति ॥
इत्यनावृष्टिकरणम् ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेकामसिद्ध्यादि
अनावृष्टिनिवारणं नामद्वादशोपदेशः ॥ १२ ॥

'हुं श्रीं हुं' इस मंत्र को जलके मध्यमें खड़ा होकर जपै तो अनावृष्टि जाती रहती है महावृष्टि होती है ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने भाषाटीकायांकामसिद्ध्यादि
अनावृष्टिनिवारणं नाम द्वादशोपदेशः ॥ १२ ॥

अथनिधिदर्शकमंजनम् ॥

अञ्जनानांतुसर्वेषांमंत्रंसाध्यमघोरकम् ॥
विनामंत्रेणविद्याश्चनाशयन्तिपदेपदे ॥ १ ॥

सब अंजनोंमें अघोरमंत्र साधन करना उचित है विना मंत्रके पद पद में विद्या नष्ट होती है ॥ १ ॥

यक्षिणींमूर्त्तिमाश्रित्यजपेदष्टसहस्रकम् ॥
ततःसर्वविधानानिसुसाध्यानिचप्रारभेत् ॥ २ ॥

यक्षिणीमूर्तिके आश्रित होकर आठ सहस्र जप करे तो सब निधि उसको सुखपूर्वक विदित होजांयगी ॥ २ ॥

ॐबहुरूपंविश्वरूपंविद्याधरमहेश्वरम् ॥
जपाम्यहंमहादेवंसर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ ३ ॥

'ओंबहुरूप विश्वरूप विद्याधर महेश्वर' सब सिद्धिके देनेवाले को मैं जपकरताहूं ॥ ३ ॥

ॐनमोरुद्रायरुद्ररूपायनमोबहुरूपायनमोविश्वरूपायनमोविश्वात्मनेनमः तत्पुरुषयक्षायनमोयक्षरूपायनमएकस्मैनमएकायनमएकरौरवायनमएकयक्षायनमएकेक्षणायनमोयक्षायनमोवरदायनमःतुदतुद स्वाहा ॥ सोपवासोजितेन्द्रियोभूत्वामहेशपूजां कृत्वाइमंमंत्रंजपेत्सिद्धिर्भवति॥ कज्जलानांपातनार्थं ग्राह्योयत्नेनपावकः ॥ दीक्षितस्यगृहेश्रेष्ठंचितायान्तु विशेषतः ॥ ४ ॥

'ओंनमो रुद्राय रुद्ररूपाय नमो बहुरूपाय नमो विश्वरूपाय नमो विश्वात्मने नमः तत्पुरुषयक्षायनमो यक्षरूपायनमः एकस्मै नम एकाय नम एक रौरवाय नम एकयक्षाय नम एकेक्षणाय नमो यक्षाय नमो वरदाय नमः तुद तुद स्वाहा' ॥ उपवास रख जितेन्द्रिय होकर शिवकी पूजाकर इसमंत्रको जपनेसे सिद्धि होती है ॥ काजरके पारनेको यत्नपूर्वक अग्नि ग्रहण करै साधक घरमें वा विशेष चितामें ॥ ४ ॥

रजकस्यगृहाद्वापितस्कैरस्यग्रहाच्चयः ॥
ॐज्वलितविद्युद्धूमायस्वाहा ॥ अयमग्निग्रहणमंत्रः
ॐनमोभगवतेवासुदेवायबंधबंधश्रीपतयेस्वाहा ॥

---

१ एकरोमायनमोवापाठः ।

अनेनमंत्रेणवह्निमभिमंत्रयेत् ॥
ॐनमोभगवतेसिद्धसाधकायज्वल २ पच२ पातय२ बन्धय २ संहर २ दर्शय २ निधिंनमः ॥ अनेनदीपंज्वालयेत् ॥
ॐमंत्रःसर्वसिद्धेभ्योनमोविश्वेभ्यस्वाहा ॥
अनेनकज्जलंग्राह्यं ॥
ॐकालिकालिमहाकालिरक्षेदंजनंनमोविश्वेभ्यःस्वाहा ॥
अनेनमंत्रेणयत्किंचिदंजनद्रव्यमभिमंत्रयेत् ॥
ॐसर्वसर्वहितेक्लींसर्वसर्वहितेसर्वौषधिप्रयाहिते ॥
निरतेनमोनमःस्वाहा ॥
अनेनमंत्रेणअंजनयोग्यांमूलिकामभिमंत्रयेत् ॥
आदौकेवलहेमशलाकयानेत्रमंजयित्वाततस्त
यैवशलाकयाअंजनद्रव्यमभिमंत्रयेत् ॥
अंजयित्वांजनंपश्चात्सप्तधारस्यपत्रकम् ॥
बंधयेत्प्रतिनेत्रन्तुअच्छिद्रंतदधोमुखम् ॥ ८ ॥

अथवा धोबीकेघरसे वा चोरके यहांसे लावे मंत्र यह है ' ओं ज्वलितविद्युद्धामाय स्वाहा अथ अग्निग्रहणका मंत्र ओं नमो भगवते वासुदेवाय धरधर बंध बंध श्रीपतये स्वाहा इसमंत्रसे अग्निको अभिमंत्रित करे ॐनमो भगवते सिद्धसाधकाय ज्वल २ पत २ पातय२ बंध २ संहर २दर्शयदर्शय निधिर्मम इसमंत्रसे दीपकज्लावे ओं ऐं मंत्रःसिद्धेभ्यो नमोविश्वेभ्यःस्वाहा इसमंत्रसे कज्जल ग्रहणकरै ओं कालिकालिमहाकालि रक्षेदंजनं नमो विश्वेभ्यः स्वाहा इस मंत्रसे अंजन द्रव्यको अभिमंत्रित

---

१ तक्षकस्यगृहाच्चय इतिवा पाठः ।

करै ओं सर्वे सर्वहिते क्लीं सर्वे सर्वहिते सर्वऔषधी प्रियाहिते निरते नमो नमः स्वाहा' इसमंत्रसे अंजनयोग्यवर्तिको अभिमंत्रित करै प्रथम सुवर्णशलाकासे नेत्रोंको आंजकर उस शलाकासे अंजन द्रव्यको अभिमंत्रितकरै ॥ इस प्रकार अंजनको आंजकर सात धारक पत्रको बांघ प्रतिनेत्रको अच्छिद्र और अधोमुख बंधित करै ॥ ५ ॥

तस्योपरिसितंवस्त्रंपट्टजञ्चापिवंधयेत् ॥
नांज्यादधिकहीनांगंश्वदंष्ट्रंचाग्निदग्धकम् ॥ ६ ॥

उसके ऊपर सम्यक् प्रकारसे रक्खेहुए श्वेतवस्त्रको वेष्टन कर वा रेशमनिको बांधै और उस समय अधिक और हीन अंगवालों को न आंजे तथा श्वदंष्ट्रआग्निदग्ध को न आंजे ॥ ६ ॥

सम्पूर्णांगंशुचिस्नात्वाद्विदिनंनक्तभोजनम् ॥
क्षीरशाल्यन्नभोक्तारंत्रिदिनांतेततोंजयेत् ॥ ७ ॥

सम्पूर्ण प्रकार से पवित्र हो स्नान करके दोदिनपर्यन्त रात्रिमें भोजन करै दूध शाली धान खाय इस प्रकार तीन दिनके उपरान्त फिर आंजै ॥ ७ ॥

अंजितस्यशिखाबंधंकर्त्तव्यंमंत्रउच्यते ॥ ८ ॥
ॐनमोभगवतेरुद्रायतुलतुलमहेश्वरमाहेश्वल
नुज्वलुविज्वल २ मिज्वल २ हर २ यक्षरक्षपू
जितेयक्षकुमारीसुलोचनेस्वाहा ॥ ॐनमोभग
वतेरुद्राय ॐनन्न २ महेन्नविहेन्नविहेन्नमिहेन्न २
हरहररक्ष २ पूजितेयक्षकुमारिसुलोचनेस्वाहा ॥
यक्षाणांमूर्त्तिमाश्रित्यउदयास्तंमनुंजपेत् ॥
पूर्वमेवसमाख्यातांशिखाबंधांशिवोदितम् ॥ ९ ॥

इदंसर्वांजनेज्ञातव्यम् ॥

आंजकर शिखाबंधन करे उसका मंत्र कहते हैं 'ओंनमो भगवते रुद्राय तुल तुल माहेश्वल नुज्वलु विज्वल २ मिज्वल २ हर २ यक्ष रक्ष पूजिते यक्षकुमारी सुलोचने स्वाहा' ॥ यक्षोंकी मूर्तिके आश्रित होकर उदय और अस्तमें इसका जप करै शिखा बंधन शिवने पूर्व कहादिया है यह सब अंजनमें जान्नाचाहिये ॥ ९ ॥

शरत्कालेतुसंग्राह्याभूलतारक्तवर्णका ॥
सिंदूरपूरितांकृत्वावर्त्तितूलेनवेष्टयेत् ॥ १० ॥

शरत्कालमें पृथ्वीसे इन्द्रगोंप (वीर बहूटी) ग्रहण करनी चाहिये उसमें सिंदूर पूरित करके आककी रुई की बत्ती करे ॥१०॥

अतिकृष्णतिलतैलंग्राहयेद्रक्षयेत्सुधीः ॥
तैलवर्त्योःप्रयोगेणकज्जलंचोत्तरायणे ॥ ११ ॥

और बहुत कालेतिलोंका तेल लेकर उसको रक्षित करै उसी प्रयोगसे उत्तरायणमें कज्जल ॥ ११ ॥

ग्राहयित्वाञ्जनंचक्षुर्निधिंपश्यतिसाधकः ॥
प्रमाणंचविजानातिगृह्णातिचयथेप्सितम् ॥ १२ ॥

ग्रहण करनेसे आंजै तो निधिका दर्शन होताहै और उसका प्रमाण जानकर यथेष्ट ग्रहण करसकता है ॥ १२ ॥

अतिकृष्णस्यकाकस्यजिह्वामांसंसमाहरेत् ॥
वेष्टयेद्रवितूलेनवर्जितेनैवकारयेत् ॥ १३ ॥

बहुत काले कौएकी जिह्वाका मांस लावैं उसको आककीरुईसे लपेटकर बत्तीकी समान कर ॥ १३

अजाघृतेनदीपन्तुप्रज्वाल्यादायकज्जलम् ॥
अंजिताक्षोनरस्तेननिधिंपश्यतिपूर्ववत् ॥ १४ ॥

बकरीके घीमें उसका दीपक जलाय कज्जल ग्रहण करे इससे मनुष्य अज्ञात निधिको पूर्ववत् देखताहै ॥ १४ ॥

सप्तधापद्मसूत्राणिभावयेदिक्षुजैरसैः ॥
उद्धृत्यज्वालयेद्दीपमंकुलीतैलसंयुतम् ॥ १५ ॥

ईखके रसमें पद्मसूत्रको सातवार भावना दे फिर उसे लेकर अंगुलीके तेलसे दीपक जलावे ॥ १५ ॥

ग्राह्यंकृष्णत्रयोदश्यांकज्जलंनिधिदर्शकम् ॥
सर्वांजनमिदंसिद्धंशंभुनापरिकीर्त्तितम् ॥ १६ ॥

कृष्णपक्षकी त्रयोदशीको कज्जल ग्रहण करनेसे निधिका दर्शन होता है यह सर्व सिद्ध अंजन शिवजीने कहा है ॥ १६ ॥

दीपकज्जलयोःपात्रंकर्त्तव्यंनरमुण्डजम् ॥
सर्वेषांकज्जलानांतुसत्यंस्याच्छिवभाषितम् ॥१७॥

परन्तु सब प्रकारके इन दीपकसे काजर पारनेका पात्र मनुष्यकी खोपड़ी ग्रहण करनी चाहिये यह शिवजीने कहाहै ॥ १७ ॥

रक्तेनकृकलासस्यभावयित्वामनःशिलाम् ॥
तेनैवांजितनेत्रस्तुनिधिंपश्यातिपूर्ववत् ॥ १८ ॥

गिरघटके रक्तसे मनशिलाको भावना देकर इससे नेत्ररंजित करके पूर्ववत् निधिको देखता है ॥ १८ ॥

गृहीत्वाचानुराधायाम्वंदांशाखोटवृक्षजाम् ॥
गोरोचनसमंपिष्ट्वात्वंजनंनिधिदर्शकम् ॥ १९ ॥

शाखोटवृक्षका वन्दा अनुराधानक्षत्रमें ग्रहण करके गोरोचन के साथ पीसकर आंजनेसे निधिका दर्शन होताहै ॥ १९ ॥

एतत्सर्वांजनख्यातंप्रसिद्धंशिवभाषितम् ॥
अगस्त्यवृक्षजांकुर्य्यात्पादुकांनिधिदर्शकाम् ॥ २०

पादुकांजनयोगेनसिद्धियोगाभवंतिवै ॥ २१ ॥

यह सब अंजन प्रसिद्ध शिवजीके कहे हैं अगस्त्यके पेड़की पादुका बनानेसे निधिका दर्शन होताहै पादुका अंजनके योगसे सिद्धयोग होताहै ॥ २१ ॥

ॐनमोभगवतेरुद्रायउड्डामरेश्वरायशिलि २ धूमरे नागवेतालिनीस्वाहा॥ अनेनपादुकामभिमंत्रयेत्॥
तुलसीमूलिकांपुष्येशनिवारेसमुद्धरेत् ॥
निष्पिष्यकांजिकेनाथमधुनापुनरंजयेत् ॥ २२ ॥

'ओंनमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय शिलि २ धूमरे नागवेतालिनी स्वाहा' इससे पादुकाको अभिमंत्रित करै॥ तुलसीमूलिका पुष्यनक्षत्र शनिवारके दिन ग्रहण करे उसे कांजीमें डाल शहतमें मिलाय आंजे ॥ २२ ॥

पादजातंकुमारम्वाकन्यकांवातदानिधिम् ॥
दृश्यतेनात्रसन्देहःपातालेलम्बकावपि ॥ २३ ॥

श्रेष्ठ वर्णमें हुए कुमार वा कन्याको निधिका दर्शन हो सकताहै इसमें सन्देह नहीं पातालपर्यन्त भी निधि हो तो उसका दर्शन हो सकता है ॥ २३ ॥

ॐनमोभगवतेरुद्रायकज्जललेपांजनंदर्शय २ स्वाहाठःठः ॥
अनेनमंत्रेणकज्जललेपांजनमभिमंत्रयेत् ॥
खन्यमानेचसर्पाश्चनिस्सरान्तिपदेपदे ॥ २४ ॥

'ओंनमो भगवते रुद्राय कज्जललेपांजनं दर्शय २ स्वाहा ठः ठः'इस मंत्रसे कज्जललेपांजनको अभिमंत्रित करै फिर खनन करने से पद पदमें बड़े २ सर्प निकलते हैं ॥ २४ ॥

औषधेनविनातेभ्योभयंस्यान्मंत्रिणामपि ॥
तस्मादौषधयोगेनपादलेपनचाञ्जयेत् ॥ २५ ॥

औषधीसे विना मंत्रवालोंको भी इनसे भय होसकता है इस कारण औषधिके योगसे चरणमें लेप करके इनको जयन करै॥२५॥

अर्कस्यकरवीरस्यपनसस्यतुमूलिकाम् ॥
पिष्ट्वापादप्रलेपाच्चदूरेगच्छंतिपन्नगाः ॥ २६ ॥
इतिनिधिदर्शकांजनम् ॥

आक करवीर और पनसकी जड पीसकर चरणोंमें लेप करनेसे सर्प दूर भागजाते हैं ॥ २६ ॥

इति निधिदर्शकमंजनम् ॥

अथ अदृश्यकरणम् ॥

चतुर्लक्षमिमंमंत्रंश्मशानेप्रजपेच्छुचिः ॥
नग्नवृत्तिस्ततस्तुष्टापटंयच्छतियक्षिणी ॥ २७ ॥

पवित्र होकर आगे कहाहुआ मंत्र श्मशानमें नग्न होकर जपै तब यक्षिणी इसको एक वस्त्र देती है ॥ २७ ॥

तेनावृतोनरोदृश्योविचरेद्वसुधातले ॥
निधिम्पश्यतिगृह्णातिनविघ्नैःपरिभूयते ॥ २८ ॥

उस्से यह मनुष्य किसीको न दीखता हुआ पृथ्वीतलमें विचरता है और निधि देखकर ग्रहण करसकता है कहीं बिघ्नोंसे इसका तिरस्कार नहीं होता है ॥ २८ ॥

ॐह्रांह्रींस्फेंश्मशानवासिनीस्वाहा ॥
निशाचरींनिशिध्यात्वाजप्त्वावामेनपाणिना ॥
अदृश्यकारिणींविद्यांलक्षजाप्येप्रयच्छति ॥ २९ ॥
ॐनमोनिशाचरमहामहेश्वरपर्यंटतः
सर्वलोकलोचनानिबंधय २ देव्याज्ञापयतिस्वाहा ।

रात्रौकृष्णचतुर्दश्यांश्मशानान्तःशिवालये ॥
बलिनाचोपहारेणकुर्यादर्चनमुत्तमम् ॥ ३० ॥

'ओं ह्रीं ह्रीं स्फें श्मशानवासिनी स्वाहा' रात्रिमें ध्यान कर वाम हाथसे जप करताहुआ एक लक्ष जप करके इस अदृष्टकरनीविद्या को प्राप्त होता है 'ओंनमो निशाचर महामहेश्वर मम पर्यटतः सर्वलोकलोचनानि बंध बंध देव्याज्ञापयाति स्वाहा' कृष्णचतुर्दशीकी रात्रिमें श्मशान शिवालय आदिमें बली उपहार आदिसे उत्तम अर्चन करै ॥ ३० ॥

ततोदीपाङ्गुलीतैलैर्वर्तिस्यादर्कतन्तुभिः ॥
प्रज्वाल्यनृकपालेतुतत्पात्रेघृतकज्जलम् ॥ ३१ ॥

और फिर अंगुलीके तेलसे युक्त आकके तन्तुओंकी बत्ती बनावै मनुष्यकी खोपडीमें बालकर खोपडीपरही काजल पारै ॥ ३१ ॥

अंजयेन्नेत्रयुगलंदेवैरपिनदृश्यते ॥
अर्कशाल्मलिकार्पासपट्टपद्मजतन्तुभिः ॥ ३२ ॥

उसको दोनों आंखोंमें लगाने से देवताओंकोभी नहीं दीखता है आक शालिधान्य कपासका वस्त्र कमलके तन्तु ॥ ३२ ॥

पंचाभिर्वर्तिकाभिश्चनृकपालेषुपंचसु ॥
नवनीतेनदीपास्युःकज्जलंनृकपालतः ॥ ३३ ॥

पांच बत्ती करके यह अलग २ पांच मनुष्योंकी खोपडीमें पारै मक्खनको तेलके स्थानमें बारकर वा नरतेलसे मनुष्यकी खोपड़ीमें काजर पारै ॥ ३३ ॥

ग्राहयेत्पंचभिर्यत्नात्पूर्ववच्चशिवालये ॥
पंचस्थानीयजातंतुएकीकुर्य्यात्तुतंम्पुनः ॥ ३४ ॥

---

१ नरतैलेन इति वा पाठः (नरका तेल)

इन पांचोंको पूर्ववत् शिवालयमें ग्रहण करै पांचोंस्थानोंसे लेकर फिर उसे एकत्र करै ॥ ३४ ॥

मंत्रयित्वाञ्जयेन्नेत्रेदेवैरपिनदृश्यते ॥ ३५ ॥
ॐहूंफट्स्वाहा कालीमहाकालि मांसशोणितभक्षिणि
रक्तकृष्णमुखेदेवीमामेपश्यतुमानुषेति ॐहूंफट्स्वाहा॥एतन्मन्त्रायुतजपात्सिद्धिदोभवति ॥
उक्तास्सर्वेअदृश्यीकरणप्रयोगाः ॥
अनेनमंत्रेणाष्टोत्तरशताभिमंत्रिताअंगुलीतैल
प्रयोगात्सिद्धाभवन्ति ॥
अंगुलीतैलसंसिक्तायवाःपंचदिनावधि ॥
त्रिलोहवेष्टितास्तेषांगुटिकांकारयेच्छुभाम् ॥३६॥

फिर अभिमंत्रित कर नेत्रोंमें लगानेसे देवताओंको भी नहीं दीखता है 'ॐहूं फट् काली महाकाली मांसशोणितकी भक्षण करने वाली रक्तकृष्णमुखे देवि पश्यतु मानुषेति ओंहूं फट् स्वाहा'यह मंत्र १०००० जपनेसे सिद्धि होती है यह सब अदृश्य करनेके प्रयोग हैं इस मंत्रसे एक सौ आठवार अभिमंत्रित करनेसे सिद्धि होती है ॥ अंगुली गजकर्णीके तेलसे पांच दिनपर्यन्त जौ को सिंचन करै और उनको त्रि[1]लोहसे वेष्टित कर सुन्दर गुटिका बनावै ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

अदृश्यकारिणीसातुमुखस्थानात्रसंशयः ॥
तत्तैलंसर्षपाश्वेतात्रिलोहेनतुवेष्टिता ॥ ३७ ॥

अवश्य अदृश्यकरणी विद्या प्राप्त होजातीहै इसमें सन्देह नहीं यह तेल श्वेतसरसों और त्रिलोहसे युक्त करके अर्थात् गुटिका बनाय चांदी ताम्बे आदिसे मढ ॥ ३७ ॥

---

१ सोना, चांदी, ताम्बा ।

गुटिकामुखमध्यस्थासाक्षाददृश्यकारिणी ॥
कृष्णकाकस्यरुधिरंपित्तंगोमायुसंभवम् ॥ ३८ ॥

मुखमें रखनेसे अदृश्य होजाताहै काले कौएका रुधिर गीदडका पित्ता ॥ ३८ ॥

काकारिनखचंच्वापिसमभागंविचूर्णयेत् ॥
ऋक्षेपुनर्वसौवर्त्तिंकृत्वानेत्रेचरंजयेत् ॥ ३९ ॥

उलूकके नख चोंच यह समान भाग लेकर चूर्ण करै और पुनर्वसुनक्षत्रमें इसकी बत्ती बनाय नेत्रोंको आंजै ॥ ३९ ॥

अदृश्योभवतिक्षिप्रंसर्वकार्य्यप्रसाधकः ॥
कृष्णकुक्कुटपुच्छाग्रंनिर्माल्यं[1]मृतकस्यच ॥ ४० ॥

तौ वह शीघ्र अदृश्य होजाताहै तथा सब कार्यसिद्ध होतेहैं कालेमुर्गेकी पूंछका अग्रभाग मृतकका निर्माल्य ॥ ४० ॥

काकनेत्रंचमरिचंपिष्ट्वाकार्यंचमूत्रकैः ॥
कलायार्द्धप्रमाणेनवटींकृत्वाप्रशोषयेत् ॥ ४१ ॥

कौएका नेत्र कालीमिर्च अश्ववला यह गोमूत्रके साथ पीसकर बेरकी बराबर इसकी गोली बनाकर सुखाले ॥ ४१ ॥

तेनैवांजितनेत्रस्तुअदृश्योभवतिध्रुवम् ॥
कृष्णमार्जारांतरस्थंरक्तंसंगृह्यभावयेत् ॥ ४२॥

इससे नेत्रोंको आंजै तो अवश्यही अदृश्य होजाताहै काली बिल्लीका रक्त ग्रहणकर भावना देनेसे ॥ ४२ ॥

नक्तमालस्यतैलेनतत्रश्वेतार्कसूत्रजाम् ॥
वर्तिंप्रज्वाल्यवज्रस्य[2]दलेसंगृह्यकज्जलम् ॥ ४३ ॥

नक्तमाल (करंज) तैलद्वारा यत्नपूर्वक श्वेतआककी कपासकी बत्ती बालकर वज्रवृक्ष (सेहुड) के पत्तोंसे काजर ग्रहणकर ॥४३॥

---

१ शंकरस्यच इति पाठः । २ बदरस्यदले इति पाठः ।

तेनांजनेनमनुजस्त्वदृश्योभवतिध्रुवम् ॥
सुकृष्णंचैवमार्जारंमारयित्वाचतुष्पथे ॥ ४४ ॥

उसके आंजनेसे अवश्यही मनुष्य अदृश्य होजाताहै अथवा चौराहेमें कालीबिल्लीको वधकर ॥ ४४ ॥

प्रोक्षणंकारयित्वातुदिनानांपंचविंशतिः ॥
तत्संगृह्यप्रयत्नेनक्षालयेच्छीतवारिणा ॥ ४५ ॥

पच्चीस दिनपर्यन्त उसे प्रोक्षण करै अर्थात् ग्रहण कर शीतल जलसे धोवै ॥ ४५ ॥

यदस्थिचश्रोत्रभेदीस्याद्ग्राह्यंयत्नतोभयम् ॥
पूजयित्वामहाकालींगोरोचनसमन्वितम् ॥ ४६ ॥

यदि अस्थि श्रोत्रभेदी हो तो यत्नसे ग्रहण कर गोरोचनसे महाकालीकी पूजा जप करै ॥ ४६ ॥

नकुलस्यतुपित्तेनभावयित्वाप्रपेषयेत् ॥
तद्वर्त्तितिलकादेवनरोदृश्योभवेद्ध्रुवम् ॥ ४७ ॥

उसे नौलेके पित्तकी भावना देकर पीसे उसकी बत्तीसे तिलक करनेसे अवश्य ही मनुष्य अदृश्य होजाताहै ॥ ४७ ॥

नृमांसंचशिवामांसंयत्नतोग्राहयेद्बुधः ॥
प्रथमंरजस्वलायाश्चरुधिरेणवटींकुरु ॥ ४८ ॥

मनुष्य और गीदडीका मांस यत्नसे ग्रहण करके प्रथम रजस्वला हुई स्त्रीके रुधिरसे उसकी वटिका बनावे ॥ ४८ ॥

त्रिलोहवेष्टितासातुमुखस्थादृश्यकारिणी ॥
कृष्णमार्ज्जारमुण्डेतुकृष्णगुंजांप्रवापयेत् ॥ ४९ ॥

चांदी तांबे अथवा सोनेसे मढकर उसे मुखमें रखनेसे मनुष्य

अदृश्य होजाताहै कालीबिल्लीके मुखमें काली चौंटली बोवे ॥४९॥

तत्फलम्वदनस्थंहिसाक्षाददृश्यकारकम् ॥
कोकायानयनंवामंत्रिलोहेनप्रवेष्टयेत् ॥ ५० ॥

उससे उत्पन्न हुआ उसका फल मुखमें रखनेसे मनुष्य अदृश्य होजाताहै कोयलका बायां नेत्र त्रिलोहसे वेष्टित कर ॥ ५० ॥

सावटीमुखमध्यस्थाअदृश्यंकुरुतेध्रुवम् ॥
दिवाभीतस्यनयनंत्रिलोहेनप्रवेष्टितम् ॥ ५१ ॥

वटी बनाय मुखमें रखनेसे प्राणी अदृश्य होजाताहै अथवा उल्लूका नेत्र चांदी सोने आदिसे मढकर ॥ ५१ ॥

मुखस्थंकुरुतेदृश्यंयथेच्छंविचरेन्महीम् ॥
अक्षेचैवानुराधायांवन्दांराक्षसवृक्षकाम् ॥ ५२ ॥

मुखमें रखनेसे मनुष्य अदृश्य होजाताहै फिर जहां इच्छाहो वहां विचरे, अनुराधानक्षत्रमें रोहितक वृक्षका वन्दा ग्रहणकर ॥ ५२ ॥

मुखेप्रक्षिप्यचनरोअदृश्यःस्यान्नसंशयः ॥
शाखोटस्यचवन्दाकंनक्षत्रेमृगशीर्षके ॥ ५३ ॥

मनुष्य मुखमें रखनेसे अदृश्य होजाताहै इसमें सन्देह नहीं मृगशिरनक्षत्रमें शाखोट वृक्षका वन्दा ग्रहणकरै ॥ ५३ ॥

गृहीत्वापानपात्रेणअदृश्योजायतेनरः ॥
भरण्यांतुसमागृह्यवन्दांकार्पाससम्भवाम् ॥ ५४ ॥

अर्थात् इसे पानपात्रद्वारा ग्रहण करनेसे मनुष्य अवश्यही अदृश्य होजाताहै इसमें सन्देह नहीं भरणीनक्षत्रमें कपासका वन्दा लेकर५४

हस्तेबध्वाह्यदृश्यःस्यात्स्वात्यांवानिम्बवृक्षजाम् ॥
पिबेदुत्तरषाढायामशोकवृक्षसंभवाम् ॥ ५५ ॥

हाथमें बांधनेसे मनुष्य अदृश्य होजाताहै अथवा स्वातीनक्षत्रमें

नीमका वन्दा ग्रहण करै अथवा उत्तराषाढमें अशोकवृक्षका वन्दा ग्रहण करै ॥ ५५ ॥

वन्दांतदाअदृश्यःस्यादश्विन्यांबिल्ववृक्षजाम् ॥
वन्दाकंवाकरेधृत्वाअदृश्योजायतेनरः ॥ ५६ ॥

इति अदृश्यकरणम् ॥

वा अश्विनीनक्षत्रमें बेलके पेडका वन्दा लावै और हाथमें धारण करनेसे मनुष्य अदृश्य होजाताहै ॥ ५६ ॥

इति अदृश्यकरणम् ॥

अथमृतसंजीवनी ॥

मृतसंजीवनींविद्यांप्रवक्ष्यामिसमासतः ॥
लिंगमंकोलवृक्षाधःस्थापयित्वाप्रपूजयेत् ॥ ५७ ॥

संक्षेपसे मृतसंजीवनी विद्याको कहताहूं । ढेरेके वृक्षके नीचे लिंगको स्थापन कर पूजाकरै ॥ ५७ ॥

नवंघटंचतत्रैवपूजयेल्लिंगसंनिधौ ॥
वृक्षंलिंगंघटंचैवसूत्रेणैकेनवेष्टयेत् ॥ ५८ ॥

और उन्हीके निकट नवीन कलश वा घटको स्थापन करके पूजन करै उस वृक्ष लिंग और घटको एकही सूत्रसे वेष्टित करै ५८॥

चतुर्भिस्साधकैर्न्नित्यंप्रणिपत्यक्रमेणतु ॥
एवंद्विद्विदिनंकुर्य्यादघोरेणसमर्चयेत् ॥ ५९ ॥

चार साधकोंसे नित्य प्रणाम करके दो दिन बराबर यह विधान कर अघोरमंत्रसे शंकरका आराधन करै ॥ ५९ ॥

पुष्पादिफलपाकांतंसाधनंकारयेद्बुधः ॥
फलानिपक्कान्यादायपूर्वोक्तंपूरयेद्घटम् ॥ ६० ॥

पुष्प फल पाकतक इस साधनको करे अर्थात् पक्के फल लाकर पूर्वोक्त घटको पूर्णकरै ॥ ६० ॥

तद्घटंपूजयेन्नित्यंगंधपुष्पाक्षतादिभिः ॥
तुषवर्ज्जन्ततःकुर्य्याद्बीजानांघर्षयेन्मुखम् ॥ ६१ ॥

और उस घटको नित्य गंध अक्षतसे पूजन करै और छुकले रहित बीजोंको मुखपर ढकदे ॥ ६१ ॥

तन्मुखेबृंहणंवृत्तंकिंचित्किंचित्प्रलेपयेत् ॥
विस्तीर्णमुखभागान्तःकुम्भकारकरोद्भवाम् ॥६२॥

और मुख वृद्धिमें किंचित् किंचित् लेप करे तथा कुम्हारके यहांसे बडे मुखका बर्तन लाय ॥ ६२ ॥

मृत्तिकांलेपयेत्तत्रतानिबीजानिरोपयेत् ॥
कुंडल्याकारयोगेनयत्नादूर्द्ध्वंमुखानिवै ॥ ६३ ॥

उसपर मृत्तिका लेपन कर उसपर बीजोंको रोपन करे अर्थात् कुंडलीके आकार बोवे ॥ ६३ ॥

शुष्कंतंताम्रपात्रोर्द्धंभाण्डंदेयमधोमुखम् ॥
आतपेधारयेत्तैलंग्राहयेत्तंचरक्षयेत् ॥ ६४ ॥

और जब वह सूख जाय तब उसपर तांबेका पात्र रखकर नीचेको उसका मुख कर दे आतपमें रखकर उससे तेल ग्रहण कर उसकी रक्षा करै ॥ ६४ ॥

मासार्द्धंचैवतत्तैलंमासार्द्धंतिलतैलकम् ॥
नस्यन्देयंमृतस्यैवकालदष्टस्यतत्क्षणात् ॥ ६५ ॥
(अथवा) पुंशुक्रंपारदेतुल्यंतेनतैलेनमर्दयेत् ।
नस्यंदेयंमृतस्यैकंकालदष्टस्यवाक्षणात् ॥ ६६ ॥

तत्कृत्वाजीव्यतेसत्यंगतेनापियमालयम् ॥
रोगापमृत्युसर्पादिमृतोजीवतिहिस्वयम् ॥
जीवमायातिनोचित्रंमहादेवेनभाषितम् ॥ ६७ ॥
पुष्यभास्करयोगेनगुडूचीमूलमाहरेत् ॥
कर्षमुष्णजलैःपीतोमृतेमृत्युहरोभवेत् ॥ ६८ ॥

आधा मासा यह तेल और आधे मासा तिलका तेल ग्रहण कर इनकी नास देनेसे कालरूपी राक्षसका काटा पुरुष जीवित होज़ाता है अथवा पुरुषका शुक्र पारा यह रस तेलमें मर्दन कर नास दे तो काल दुष्ट जीवित हो यमालयको गया अपमृत्यु तथा सर्पादिका काटा अच्छा होता है इसमें सन्देह नहीं यह महादेवजीने कहा है पुष्यनक्षत्रसे जब सूर्यका योग हो तब गिलोयकी जड लावै यह आठ कर्ष जलके साथ लेनेसे मृत्युका भय दूर होजाताहै ॥ ६८ ॥

ॐअघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वतःसर्व सर्वेभ्योनमस्तेरुद्ररूपेभ्यः॥उक्तयोगानामयंमंत्रः ॥

इति मृतसंजीवनी ॥

"ॐ अघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः ॥ उक्त योगोंका यही मंत्र है ॥

इति मृतसंजीवनी ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेभाषाटीकायां निधिदर्शन जनादिमृत्युसंजीवनीनामत्रयोदशोपदेशः ॥ १३ ॥

अथ विषनिवारणम् ॥

शम्भुनोक्तंसमासेनविषंस्थावरजंगमम् ॥
कृत्रिमंयोगजंचैववृश्चिकाद्यंतुसम्भवम् ॥ १ ॥

शिवजीने जो संक्षेपसे स्थावर जंगम कृत्रिम योगसे उत्पन्न तथा वृश्चिकादि विष कहा है ॥ १ ॥

क्रमाल्लक्षणमेतेषांमंत्रयुक्तंवदाम्यहम् ॥
नामवक्ष्येविषाणान्तुशम्भुनाकीर्त्तितंपुरा ॥ २ ॥

क्रमसे उनके लक्षण और मंत्र वर्णन करताहूं तथा उन विषोंके नाम कहताहूं जो पहले शिवजीने कहे हैं ॥ २ ॥

दरदोवत्सनाभश्चमुस्तकंपुष्करंविषम् ॥
क्रूरंशठंकर्मठंचहरिद्रंकालकूटकम् ॥ ३ ॥

उनमें दरद वत्सनाभ मुस्तक पुष्कर क्रूर शठ कर्मठ हरिद्र कालकूट३

इन्द्रबीजंचैत्रबीजंहरितंगालवंविषम् ॥
शृंगीकर्कटशृंगीचमेषशृंगीहलाहलम् ॥ ४ ॥

इंद्रबीज चित्रबीज हरित गालवविष शृंगी काकडाशिंगी मेढा- शिंगी हलाहलविष ॥ ४ ॥

शाकूटंरक्तशृंगीचह्यञ्जनंपुण्डरीककम् ॥
संकोचंमधुपाकंचरोहिणंमेदुरन्तथा ॥ ५ ॥
पंचविंशतिभिर्भेदैर्विज्ञेयंस्थावरंविषम् ॥
एतन्मध्येह्यतिक्रूरंसंकोचंकालकूटकम् ॥ ६ ॥

शक्तक रक्तशृगी अंजन पुण्डरीक संकोच मधुपाक रोहिण मेदुर यह पच्चीस नामका स्थावरविष जान्ना चाहिये इनमें संकोचक और कालकूट विष बडा तीक्ष्णहै ॥ ६ ॥

भृंगीमुस्तंवत्सनाभंपंचमंतुविषाद्विषम् ॥
एषान्देहप्रविष्टाणांशृणुलक्षणमुच्यते ॥ ७ ॥

भृंगी मुस्त वत्सनाभ विष पांचवां विषसे विषहै और देहमें प्रविष्टहुए विषोंका लक्षण कहताहूं सुनो ॥ ७ ॥

वान्तिर्मूर्च्छातिसारंचभ्रांतिश्शूलंचकम्पनम् ॥
कासश्वासौतीव्रदाहौलक्षयेद्गद्गदस्वरम् ॥ ८ ॥

उद्दान्त मूर्च्छा अतिसार भ्रान्ति शूल कम्पा खांसी स्वास तीव्रदाह गदगदस्वर होना यह विष खायेहुएके लक्षणहैं ॥ ८ ॥

पुत्रंजीवफलामज्जांशीततोयेनपेषयेत् ॥
भोजनेचांजनेपानेलेपैःसर्वविषापहम् ॥ ९ ॥

जियापोजेकी मींग शीतलजलके साथ पीसकर भोजन पान लेपन अंजनमें सब प्रकारके विष दूर करतीहै ॥ ९ ॥

स्थावरंजंगमंक्रूरंकृत्रिमंयोगजंतथा ॥
निष्कमात्रंनसन्देहःकालदष्टोपिजीवति ॥ १० ॥

स्थावर जंगम कृत्रिम योगज विष यह एक निष्क उपरोक्त औषधीके साथ सेवन करनेसे जाते रहतेहैं बहुत क्या ! इसके प्रताप से कालदष्टभी जीवित होताहै ॥ १० ॥

शाड्वलंटंकणंतुत्थंकट्फलंरजनीवचा ॥
नरमूत्रेणसंपीत्वाएकैकन्तुविषंहरेत् ॥ ११ ॥

शाड्वल शुद्ध सुहागा तूतिया कट्फल हलदी वच यह मनुष्यके मूत्रसे पीस एक एक विषको दूर करते हैं ॥ ११ ॥

समूलपत्रांसर्पाक्षींतथैवदेवदालिकाम् ॥
गिरिकर्ण्याश्चवामूलंनरमूत्रेणपूर्ववत् ॥ १२ ॥

पत्ते जडके सहित सहदेई और देवदाली अथवा विष्णुक्रान्ताकी जड़ मनुष्यके मूत्रसे पूर्ववत् पीसकर ॥ १२ ॥

त्रिकटुंदेवदालिंचनस्येसर्वविषापहम् ॥
ब्रह्मदंडीयमूलंतुमधुनासहभक्षयेत् ॥ १३ ॥

वा त्रिकुटा देवदाली इनको पीसकर नास लेनेसेभी सब विष दूर होजाते हैं अथवा ब्रह्मदंडीकी जड़ मधुके सहित भक्षण करै ॥ १३ ॥

श्वेतांकोलस्यमूलंतुमुखस्थेतिलकेथवा ॥
मुखस्थैरण्डमूलम्वाछायाशुष्कंविषापहम् ॥ १४ ॥

अथवा श्वेतअंकोलकी जड मुखमें रखनेसे अथवा तिलक करनेसे अथवा छायामें सुखाई अंडकी जड मुखमें रखनेसे विष दूर करती है ॥ १४ ॥

टंकणंदेवदालिंचजलैःपानेविषापहम् ॥
नीलसर्पस्यपुच्छन्तुकृकलासस्यपुच्छकम् ॥ १५॥

सुहागा देवदाली (घघरवेल) जल और पानमें देनेसे विषको दूर करनेवालीहै नीले सांपकी पुच्छ और घिरघटकी पूंछ ॥ १५ ॥

ताम्रेणवेष्टितंकृत्वामुद्रिकांतांचधारयेत् ॥
तयास्पृष्टजलंपीतंस्थावरंजंगमंहरेत् ॥ १६ ॥

ताम्बेसे लपेट मुद्रिका बनाय हाथमें धारणकरै तो इसका स्पर्श किया जल पान करनेसे स्थावर जंगम विष दूर होजांता है ॥ १६ ॥

मंत्र-आतरथाकीयातरथाश्वातोहातेडपजीलोवृक्षमुंच चुलुकरपापियोसिंदूरसावाणीकालकूटविषश्रीगोरक्षेरवाणीमुखेदिलेहयेअमृतवाणीविषखाउविषजारोविषकरोतिभरविषुराहिआछेत्रिदशरईश्वरमहादेवेरआज्ञागोरक्षेरवाणी ॥ सिन्दूरसावाणीकालकूटविषशरीरमध्येहयापानीश्रीगोरक्षेरआज्ञा॥२॥ खेदायगुरुआदमसिखआमुकारिकान्देनाहीकालकूटविष ३महादेवेरआज्ञागोरक्षेरवाणीकालकूटविषशरीरमध्येहयापानीकालकूटविषदृष्टिहन २ ॐपाणी । मंत्राभ्यु

क्षितंविषंमंत्रेणवारत्रयमभिमंत्रितंभक्षयेत्॥ यदिकिं चित्तथापिविक्रियतेतर्हिचतुर्थमंत्रेणवारत्रयमभिमंत्र येत् ॥ जलवारत्रयंगंडूषमात्रपेयम् ॥

श्लोक–भूनागसत्वसंजातांमुद्रिकांधारयेत्करे ॥
नतस्याक्रमतेसत्यंविषंस्थावरजंगमम् ॥ १७ ॥

मंत्र–आतरथाकी याथरथा इलाता हारत उपजीले वृक्षमुजि चलुक चिजा पिजो सिन्दूर सारणी कालकूट विष शरीरमध्ये हयापानी श्रीगोरक्षेर आज्ञा ॥ विशाखा विषाजारो विषाकरो भर विषहरिजाक्षे त्रिदशे ईश्वर महादेवेर आज्ञा गोरक्षेर वाणी सिन्दूर सारवाणी कालकूट विष शरीरमध्ये हयापानी' इसमंत्रसे विष खायेहुएके मुखमें तीन वार मंत्र पढकर जलदे और जो कुछ विकार किया होय तो चारवार मंत्र पढकर तीनवार अभिमंत्रित कर कुल्ले मात्र जलपान करनेसे विष दूर होजायगा गण्डूषपदी और भू-नागके सत्वकी मुद्रिका हाथमें धारण करनेसे स्थावर जंगम विष इसको आक्रमण नहीं करसकताहै ॥ १७ ॥

ततस्पृष्टोदकपानेनाविषंसर्वंविनश्यति ॥
शिरीषबन्धकंग्राह्यंरेवत्यांचन्दनान्वितम् ॥ १८ ॥

तथा इसीका स्पर्श किया जलपान करनेसे सब प्रकारके विष नाश होजातेहैं और जब रेवतीनक्षत्रमें चन्द्रमा होतो शिरसका वन्दा वा आक लावे ॥ १८ ॥

तद्घृष्टंमर्दितंगात्रेतस्यांगेविषनाशनम् ॥
वराहगोधानकुलशशकुक्कुटपित्तिकम् ॥ १९ ॥

उसको घिसकर शरीरमें मलनेसे विष नाश होताहै शूकर गोय नौला खरगोश कुत्ता सबका विषनाश होताहै ॥ १९ ॥

श्वेतायागिरिकर्ण्याश्चफलमूलंविपेषयेत् ॥
पानेसर्वविषंहंतिमृतोप्युत्तिष्ठतेक्षणात् ॥ २० ॥

श्वेत विष्णुक्रान्ताके फल और मूल दोनोंको पीसले इसके पान-करनेसे सब विष दूर होकर मृतक पुरुष भी उसी समय उठ बैठताहै ॥ २० ॥

नाम्नाचामृतयोगोयंरुद्रेणाभाषितःपुरा ॥
पणवंपटहंचैवह्यनेनैवप्रलेपयेत् ॥ २१ ॥

यह अमृतयोग प्रथम शिवजीने कहाहै पणव और बाजेपर इसीका लेप करै ॥ २१ ॥

मृतोपिविषयोगेनश्रुत्वावाद्यंप्रबुध्यते ॥
श्वेतापराजितामूलंपीत्वादुग्धेनमानवः ॥ २२ ॥

विषसे मेरा हुआ इस योगसे बाजेको सुनकर जाग उठेगा श्वेत अपराजिताकी जड दूधके साथ पीसकर पान करनेसे ॥ २२ ॥

स्थावरंचविषंहंतिउदरस्थंनसंशयः ॥
ससिंधुकांजिकंपीत्वास्थावरादिविषंहरेत् ॥ २३ ॥

उदरमें स्थित स्थावर विष दूर होता है इसमें संदेह नहीं सेंधा कांजीको पीसकर स्थावरविष जाता रहता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ २३ ॥

ॐनमोभगवतेउड्डामरेश्वरायकुंचितामृतमर्चतजटा यठःठःस्वाहा ॥ अनेनसर्वौषधमभिमंत्रयेत् ॥

इतिस्थावरविषनिवारणम् ॥

मंत्र 'ओंनमो भगवते उड्डामरेश्वराय कुचितामृतमर्चतजटाय ठःठः स्वाहा' इससे सब औषधियोंको अभिमंत्रित करै ॥

इति स्थावरविषनिवारणम् ॥

अथसर्पविषनिवारणम् ॥

जातीनांनामरूपंचजंगमानामिहोच्यते ॥
ब्राह्मणाःश्वेतवर्णास्युःक्षत्रियारक्तवर्णकाः ॥ २४ ॥

अब जंगमविषकी जाति और स्वरूप कहते हैं-ब्राह्मण श्वेतवर्ण और क्षत्रिय लालवर्ण ॥ २४ ॥

वैश्यास्तुपीतवर्णाश्चकृष्णवर्णास्तुशूद्रकाः ॥ २५॥

वैश्य पीतवर्ण शूद्र कृष्णवर्ण हैं ॥ २५ ॥

ॐमेघमालेधिमालेहरहरविषवेगहाहाहहासवारिहंअं वेलम्बेसर्वविषनाशिनीमहामायेह्रूंह्रूंलंसःठःठःस्वाहा जः जः जः सर्वविषनाशिनीमेघमालानामाविद्या ॥ ॐ प्रौंठः नीलकंठायस्वाहाॐनमोभगवतिरक्तांगिरक्तलो चनेकपिलजटेकपिलशरीरेकट्कट्कहकहभंजभंज शूलाग्रपाणिउग्रचण्डतपेमहातपेकृष्णेअतिकृष्णेइ दंमानुषंशरीरमनुप्रविश्य भ्रम भ्रम भ्रामय २ नृत्य २ बहुरूपेविलासिनिभक्तेकृष्णांगीपूरय २ ऽवे शय २ विश्वरूपिणीरक्तपाह्रिरुद्रोज्ञापयातिह्रूंफट् ठः ठः एषास्वास्थावेषाविद्याॐनमोभगवतेपाश्वयक्षा यह्रीं २ ह्रूं २ धेनु २ कंप २ पुराणंदष्ट्वामावेशय २ स्वाहा ॥

अनन्तःकुलिकश्चैववासुकीशंखपालकः ॥
तक्षकश्चमहापद्मःकर्कोटःपद्मएवच ॥
कुलनागाष्टकंह्येतेतेषांचिह्नंशिवोदितम् ॥ २६ ॥

अनन्त कुलिक वासुकी शंखपालक तक्षक महापद्म कर्कोटक पद्म यह आठ कुलनाग हैं इनके चिन्ह शिवजीने कहे हैं॥२६॥

श्वेतपद्ममनंतस्यमूर्ध्निपृष्ठेचदृश्यते ॥
शंखंशेषस्यशिरसिवासुकेःपृष्ठउत्पलम् ॥ २७ ॥

अनन्तनागके शिर और पीठमें श्वेत पद्म विराजमान होताहै शेषके शिरपर शंखका चिन्ह वासुकीके पृष्ठपर कमलका चिन्ह ॥ २७ ॥

त्रिनेत्रांकस्तुकर्कोटस्तक्षकःशशकांकितः ॥
ज्वलत्त्रिशूलचन्द्रार्द्धंशंखपालस्यमूर्द्धनि ॥ २८ ॥

कर्कोटक नागपर त्रिनेत्रका चिन्ह तक्षकपर मुष्टिका अंक शंखपालके शिरपर जलते हुए त्रिशूलका चिह्न है ॥ २८ ॥

राजवर्तिसमोबिन्दुर्महापद्मस्यपृष्ठतः ॥
पद्मपृष्ठेचदृश्यन्तेसुरक्ताःपंचबिन्दवः ॥ २९ ॥

पद्मकी पीठपर राजवर्तिकी समान बिन्दु होतेहैं पद्मनागकी पीठपर लाल पंचबिन्दु होते हैं ॥ २९ ॥

एवंयोवेत्तिजात्यादीन्नामबिन्दुंशिवोदितम् ॥
तस्यमंत्रौषधान्येवसिध्यन्तेनान्यथापुनः ॥ ३० ॥

इस प्रकार शिवके कहे नाम बिन्दु जाति आदिको जो जान्ताहै उसीको मंत्र औषधी सिद्ध होतीहै अन्यथा नहीं ॥ ३० ॥

दूरतस्तस्यसर्पाद्याःपतंतिगरुडंयथा ॥
कालाख्यानामतश्चिह्नंशिवेनोक्तंयथापुरा ॥ ३१ ॥

सर्पादि उससे ऐसे दूर रहते हैं जैसे गरुडसे, यह वार्ता पूर्वमें शिवने कही है ॥ ३१ ॥

ज्ञेयोदशविधोदंशोभुजंगानांभिषग्वरैः ॥

भीतोन्मत्तःक्षुधार्तश्चआक्रान्तोविषदार्पितः ॥ ३२॥

सर्पोंका दंश दशविधिका होता है ऐसा वैद्योंको जान्ना उचित है भीत उन्मत्त क्षुधार्दित आक्रान्त विषदर्पित ॥ ३२ ॥

आहारेक्षुःक्षुधार्तश्चस्वस्थानंपरिरक्षणे ॥
नवमोवैरिसन्धानोदशमःकालसंज्ञकः ॥ ३३ ॥

आहारकी इच्छामें भूखा अपने स्थानकी रक्षामें नवमा वैरि-संधान दशमां कालसंज्ञकहै ॥ ३३ ॥

उद्यानेजीर्णकूपेचवटशृंगाटचत्वरे ॥
शुष्केवृक्षेश्मशानेचप्लुक्षश्लेष्मातशिग्रुके ॥ ३४ ॥

बगीचेमें जीर्णकूपमें वट शृंगाट चौराहा सूखेवृक्ष स्मशानमें शेलुवृक्ष सहेंजनेमें ॥ ३४ ॥

देवतायतनागारेतथाचशाक[1]वृक्षके ॥
एषुस्थानेषुयेदष्टास्तेनजीवंतिमानवाः ॥ ३५ ॥

देवताओंके स्थानमें शाकवृक्षमें इतने स्थानोंमें जो काटेगये हैं वे मनुष्य जीवित नहीं होसकतेहैं ॥ ३५ ॥

भ्रूमध्येचाधरेमूर्ध्निशंखेनेत्रेभ्रुवौतथा ॥
ग्रीवाचिबुककंठेषुकरमध्येचतालुके ॥ ३६ ॥

भ्रूमध्य अधर (होठ) शिर शंख नेत्र दो भौं गरदन ठोडी कंठ हथेली ताल ॥ ३६ ॥

स्तनयोःसंधयोःकुक्षौलिंगवृषणनाभिषु ॥
मर्मसंधिषुसर्वत्रसर्पदष्टोनजीवति ॥ ३७ ॥

दोनों स्तनोंकी संधि कोख लिंग अण्ड वृषण नाभि सब मर्मकी संधियोंमें सर्पका काटाहुआ नहीं जीता है ॥ ३७ ॥

---

१ रसाले इति वा पाठः (आम)

रवौभौमेशनेर्वारेसर्पदष्टोनजीवति ॥
अष्टमीपंचमीपूर्णाअमावास्याचतुर्दशी ॥ ३८ ॥

रवि मंगल और शनिवारको सर्पकाटा नहीं जीताहै अष्टमी पंचमी पूर्णा अमावास्या चतुर्दशी ॥ ३८ ॥

अशुभास्तिथयःप्रोक्तास्सर्पदष्टोनजीवति ॥
कृत्तिकाश्रवणामूलंविशाखाभरणीतथा ॥ ३९ ॥

यह अशुभ तिथि हैं इनमें सर्पका काटा नहीं जीताहै कृत्तिका श्रवण मूल विशाखा भरणी ॥ ३९ ॥

पूर्वास्तिस्रस्तथाचित्राश्लेषाभेषुनजीवति ॥
मध्याह्नेसंध्ययोश्चैवंह्यर्द्धरात्रेनिशात्यये ॥ ४० ॥

तीनौ पूर्वा चित्रा श्लेषा इनमें काटा हुआ नहीं जीताहै मध्याह्न दिनरातकी संधि अर्धरात निशाके अवसान होनेमें ॥ ४० ॥

कालवेलावारवेलासर्पदष्टोनजीवति ॥
सर्पस्यतालुमध्येतुयोदन्तोंकुशसन्निभः ॥ ४१ ॥

यह कालवेला वारवेला इसमें सर्पसे काटा हुआ नहीं जीताहै सर्पके तालूमूलमें अंकुशकी समान एक दांत है ॥ ४१ ॥

विमुंचतिविषंघोरंतेनोयंकालसंज्ञकः ॥
चक्राकृतिश्चवादंशःपक्कजम्बूफलाकृतिः ॥ ४२ ॥

उसीमेंसे यह कालसंज्ञक घोर विषको त्यागताहै चक्रके आकार फनवाले और कमलके जामुनके फलके आकारवाले ॥ ४२ ॥

सुनीलःश्वेतरक्तोवात्रिदशोपिनजीवति ॥
स्रवेन्मूत्रपुरीषंवात्हच्छूलंछर्दिदाहकृत् ॥ ४३ ॥

नीलवर्ण श्वेत रक्तका काटा त्रिदशभी नहीं जीता है जिसका

मूत्र निकलने लगे हृदयमें शूल दाहहो वह नहींजीता है ॥ ४३ ॥

सानुनासिकयावाक्यंसंधिभेदमथापिवा ॥
ताम्राभंनेत्रयुगलमथवाकाकनीलकम् ॥ ४४ ॥

जिस्के गुनगुना शब्द संधिभेद होता है जिसके दोनों नेत्र ताम्र-वर्ण अथवा काककी समान नील वर्ण होजांय ॥ ४४ ॥

वियोगोदेवदष्टाख्यंतंविद्यात्कालपाशगम् ॥
सेचनादुदकेनांगेशीतलेनमुहुर्मुहुः ॥ ४५ ॥

यह दैवका वियोग है जान लेना कि यह कालपाशको प्राप्त है जिसके शरीरमें शीतल जल छिडकनेसे ॥ ४५ ॥

रोमांचोनभवेद्यस्यतंविद्यात्कालपाशगम् ॥
वेदनादंशमूलेवानष्टदंशोऽथवाभवेत् ॥ ४६ ॥

रोमांच न हों उसको कालपाशमें प्राप्तजानो जिसके दंशमें वेद-ना हो वा जिसने दंशमूल देखाहो ॥ ४६ ॥

तत्क्षणात्तीव्रदाहश्चसोपिकालेनभक्षितः ॥
सोमंसूर्य्यंयदादीप्तंनपश्यतिचतारकम् ॥ ४७ ॥

यदि जलन महादाह विसंज्ञाहो उसेभी कालसे भक्षित जानो जब चन्द्रमा सूर्य और दीप्तिमान तारोंको न देखै ॥ ४७ ॥

दर्पणेसलिलेवाथघृततैलेनवामुखम् ॥
नपश्येद्वीक्ष्यमाणोपिकालदष्टोनसंशयः ॥ ४८ ॥

तथा घृत तेल जलमें मुखकी परछाई जिसको न दीखै उसेभी निसन्देह कालका काटाहुआ जानो ॥ ४८ ॥

ज्ञात्वाकालमकालंचपश्चाद्भेषजमाचरेत् ॥
सर्पदंशेविषंनास्तिकालदष्टोनजीवति ॥ ४९ ॥

काल अकालको जानकर औषधी करनी चाहिये कारण कि, सर्पके काटेमें विष नहींहै, परन्तु जिसको काल काटले वह नहीं जीता है ॥ ४९ ॥

तस्यतत्रापिकर्त्तव्याचिकित्साजीवनावधिः ॥
रसदिव्यौषधीनान्तुप्रभावात्कालजिद्भवेत् ॥ ५० ॥

प्राणीके जीनेके निमित्त चिकित्सा करै रस मात्रा तथा औषधियोंके प्रभावसे काल जीता जाताहै ॥ ५० ॥

सूतकंगंधकन्तुल्यंटंकणंरजनीसमम् ॥
देवदाल्याद्रवैर्मर्त्यंदिनंनिष्कन्तुभक्षयेत् ॥ ५१ ॥

शोधा पारा गंधक बराबरले तथा हलदी और सुहागा बराबरले इसे देवदालीके रसमें युक्तकर प्रतिदिन एक कर्ष ले ॥ ५१ ॥

कालशैलाशनिर्नामरसःसर्वविषापहः ॥
नरमूत्रंपिबेच्चानुकालदष्टोपिजीवति ॥ ५२ ॥

यह बनाले इस रसका नाम काल शैलाशनिहै यह सब विषोंका हरनेवालाहै इसको मनुष्यके मूत्रके साथ लेनेसे कालका काटाभी जीताहै ॥ ५२ ॥

श्वेतापराजितामूलंदेवदालीयमूलकम् ॥
वारिणापेषितंनस्यंकालदष्टोपिजीवति ॥ ५३ ॥

श्वेतविष्णुक्रान्ताकी जड़ देवदालीकी जड़ जलमें पीस नास देनेसे कालका काटाभी जी सकताहै ॥ ५३ ॥

दधिमधुनवनीतंपिप्पलीशृंगवेरं
मरिचमपिचकुष्टंचाष्टमंसैधवंस्यात् ॥
यदिदशतिसरोषस्तक्षकोवासुकिर्वा
यमसदनगतस्यादानयेत्तत्क्षणेन ॥ ५४ ॥

दही शहत मक्खन पीपल अदरख कालीमिर्च कूट इनसे अठवां भाग सेंधा इनका सेवन करनेसे साक्षात् तक्षकका काटाभी क्षणमें मृत्युसे लौटि आताहै ॥ ५४ ॥

कटुकीमूशलीमूलंपीत्वातोयैर्विषापहम् ॥
वृश्चिकावीरणामूलंलेपात्सर्पविषापहम् ॥ ५५ ॥

अथवा कुटकी मूशलीकी जड़ जलके साथ पीनेसे विष दूर होजाता है वृश्चिकाली वा वीरनकी जड़का लेप करनेसे सर्पविष दूर होताहै।

वारिणाटंकणंपीतमथवार्कस्यमूलकम् ॥
सैंधवंवानृमूत्रेणप्रत्येकंविषनाशनम् ॥ ५६ ॥

जलके साथ सुहागा पीनेसे अथवा आककी जड़ पीनेसे अथवा मनुष्यके मूत्रसे सेंधा पीसकर पान करनेसे विष नाश होजाताहै॥५६

इन्द्रवारुणिमूलंतुशुक्लाचाथपुनर्नवा ॥
वंध्याककोंटकीमूलंमुशलीशिखिमूलकम् ॥ ५७ ॥

इन्द्रायणकी जड श्वेत पुनर्नवा वंध्या ककोंटकीकी मूली ताल-मूली अपामार्गकी मूली ॥ ५७ ॥

तंडुलोदकपानेनप्रत्येकंविषनाशनम् ॥
गोक्षीरैरजनीकुष्टंक्काथपानंविषापहम् ॥ ५८ ॥

यह प्रत्येक चावलके जलके साथ पान करनेसे विष दूर होता है अथवा गोखरू और दोनों हलदी कूट इनका काढाकर पीनेसे विष दूर होता है ॥ ५८ ॥

भृंगराजस्यमूलंतुत्रिशूलिन्यास्तुमूलकम् ॥
तोयैर्वातण्डुलीमूलम्प्रत्येकंविषजिद्भवेत् ॥ ५९ ॥

भांगरेकी जड़ त्रिशूलीनी (शिवलिंगी[1]) की जड़ अथवा

---

१ शिवलिंगी--औषधी ।

चौलाईकी जड़ जलके साथ पीनेसे विष हरतीहै चावलोंके जलके साथ प्रत्येक वस्तु विषहर होतीहै ॥ ५९ ॥

सोमराजीवचाचूर्णसकृद्गोमूत्रभावितम् ॥
चराचरविषघ्नंतन्मृतसंजीवनंपिबेत् ॥ ६० ॥

सोमराजी वचका चूर्ण इन दोनोंको एकवार गोमूत्रमें भावित करके दे तो यह चर अचरका विषनाशक साक्षात् मृतसंजीवनहै ॥ ६० ॥

कटुतुंब्युद्भवंमूलंसूक्ष्मंगोमूत्रपेषितम् ॥
छायाशुष्कवटीमूत्रैःपानैर्लेपैर्विषापहा ॥ ६१ ॥

कड़वी तूंबीकी जड़ एकवार गोमूत्रमें भावितकर इसकी वटी बनाय छायामें सुखाले यह वटी गोमूत्रके साथ पान करने वा लेपन करनेसे विष दूर करसकतीहै ॥ ६१ ॥

गोमूत्रैर्नरमूत्रैर्वापुराणेनघृतेनवा ॥
हरिद्रापानमात्रेणविषंहान्तिचराचरम् ॥ ६२ ॥

गोमूत्रसे वा नरमूत्रसे वा पुराने घृतसे हलदीके पानमात्रसे चर अचरका विष दूर होजाताहै ॥ ६२ ॥

दशवर्षात्परंसर्पिःपुराणमितिकथ्यते ॥
यदिसर्पविषार्तानांसर्वस्थानगतंविषम् ॥ ६३ ॥

दशवर्षमें घृत पुराना होजाताहै यदि सर्पादिका विष सब स्थानमें प्राप्त होगया हो तो ॥ ६३ ॥

गोक्षीरैरजनीक्वाथंपिबेत्सर्वविषापहम् ॥
हरिद्राकुष्टमध्वाज्यंभुक्तंसर्वविषापहम् ॥ ६४ ॥

गौके दूधसे हलदीका क्वाथ पीनेसे सब विषका हरने वालाहै हलदी कूट शहत घृत यह खानेसे सब विष दूर होतेहैं ॥ ६४ ॥

मूलन्तुश्वेतगुंजाया वक्रस्थंविषनाशनम् ॥
पुष्योद्धृतंतस्यमूलन्नस्येनाविषनाशनम् ॥ ६५ ॥

श्वेतचौंटलीकी जड मुखमें रखनेसे विष दूर होताहै पुष्यनक्षत्रमें उखाडी हुई इसीकी जडके नास लेनेसे विषका नाश करने वालाहै ॥ ६५ ॥

पाठाद्रवेणतन्मूलंपानेस्यात्कालकूटजित् ॥
अर्कमूलेनसंलिप्यदंशंविषहरंमहत् ॥ ६६ ॥

पाठके साथ उसी जड पान करनेसे कालकूटको जीतनेवाली है आककी जडके साथ इसीका लेप करनेसे सर्पका विष दूर होताहै ॥ ६६ ॥

रक्तचित्रेन्द्रगोपाभ्यांतथाविषविनाशकम् ॥
सर्पंहरितवर्णञ्चपुच्छाग्रेपाटयेच्छिरः ॥ ६७ ॥

लालचीता वीरबहूटी यहभी विषका नाश करनेवालीहै हरितवर्ण सर्पकी पूंछ काटले और शिर काटले इसे शोध सुखाले ॥ ६७ ॥

शुक्लंकृष्णंपृथक्कार्य्यंनस्यंसर्वविषापहम् ॥
शुक्लंशुक्लेदक्षिणांगेकृष्णंकृष्णेचवामके ॥ ६८ ॥

शुक्ल कृष्ण इनकी पृथक् नास लेनेसे सबप्रकारका सर्पविष दूर होजाताहै शुक्लको शुक्ल दक्षिण अंगमें और कृष्णको कृष्ण वाम अंगमें न्यास करै ॥ ६८ ॥

मृतसंजीवनंह्येतत्कालदष्टोपिजीवति ॥
तिक्तकोशातकीक्वाथंमध्वाज्यंसंयुतंपिबेत् ॥ ६९ ॥

यह मृतसंजीवन है इसके प्रयोगसे कालका काटाहुआभी जीता है कुड़ा झिमनीलताका काढा घृत शहतके साथ पीनेसे ॥ ६९ ॥

तत्क्षणाद्वमयेद्यस्तुविषयोगाद्विमुंचाति ॥
कटुकीजम्बुमूलंवातक्राम्लैर्वापिबेज्जलैः ॥ ७० ॥

तत्काल विषके संयोगसे छूट जाताहै कुटकी और जामुनवृक्षकी मूल तक्र और अम्ल पदार्थोंके साथ जलसे पिये ॥ ७० ॥

तत्क्षणाद्वमतेशीघ्रंविषयोगाद्विमुच्यते ॥
राजवृक्षत्वचंग्राह्यंशुक्लंकृष्णम्पृथक्पृथक् ॥ ७१ ॥

तो उसी समय वमन करनेसे विषके संयोगसे छूट जाताहै अमलतासवृक्षकी छाल ग्रहण करे जो शुक्ल और कृष्ण हों इनको पृथक् पृथक् ग्रहण करे ॥ ७१ ॥

शुक्लवृक्षेतुशुक्लान्तांचतुर्विंशतिभिःसह ॥
मरिचैःपाननिष्टस्यकृष्णेकृष्णत्वचंतथा ॥
पीत्वातैर्निर्विषोदष्टःकथितंहरमेखले ॥ ७२ ॥

धववृक्षमें शुक्ल छालको चौबीस पूर्ण दक्खिनी मिरचोंके साथ पान करै और कृष्ण मिरचोंमें कालीत्वचाको पीनेसे निर्विषहो जाताहै ऐसा हरमेखलामें कहाहै ॥ ७२ ॥

कुंकुमालक्तकंलोध्रंशिलाचैवाथरोचना ॥
गुटिकालेपनाद्धंतिविषंस्थावरजंगमम् ॥ ७३ ॥

कुमकुम लाख लोध मनशिला गोरोचन इनकी गुटिका बनाय लेप करै तो स्थावर जंगम सब प्रकारका विष दूर होजाताहै ॥ ७३ ॥

द्वेहरिद्रेशिलातालंकुंकुमंकुष्टंकंजलैः ॥
गुटिकालेपमात्रेणविषंहान्तिमहाद्भुतम् ॥ ७४ ॥

दोनों हलदी मनशिल ताल कुमकुम कूट(वा मोथा)जल इनकी गुटिका बनाय लेप करनेसे स्थावर जंगम विष दूर होताहै ॥७४ ॥

---

१ मुस्तकं इति वा पाठः (मोथा) ।

पूतीकरंजबीजस्यमज्जानंकारवेल्लजम् ॥
पिष्ट्वापिबेत्ससर्पिष्कंनिहन्तिनात्रसंशयः ॥ ७५ ॥

पूती करंजके बीजकी मींग करेली इनको पीसकर घीके साथ पान करै तो सर्व विष अवश्य दूर होते हैं इसमें सन्देह नहीं ॥७५॥

पिप्पलीमरिचंकुष्टंगृहधूमंमनःशिलाम् ॥
तालकंसर्षपाःश्वेतागवांपित्तेनलोडयेत् ॥ ७६ ॥

पीपल कालीमिर्च कूठ घरका धूम मनशिल हरताल सफेद सरसों यह गोपित्तके (वा गौके दूधके) साथ मिलावै ॥ ७६ ॥

गुटिकांजननस्येनपानाभ्याञ्जनलेपनात् ॥
तक्षकेणापिदष्टस्यनिर्विषीकुरुतेक्षणात् ॥ ७७ ॥

इसकी गुटिका बनाय अंजन और नास करे तो तथा पान करे तो वा लेप करै तो तक्षकका काटा हुआ भक्षणमात्रमें निर्विष होजाता है ॥ ७७ ॥

पथ्याक्षौद्रंमरीचंचपत्रंहिंगुशिलावचा ॥
जलेनगुटिकांनस्येत्कालदष्टोपिजीवति ॥ ७८ ॥

हरड शहत कालीमिर्च तेजपात हिंगु मनशिल वच इनकी गुटिका कर जलके साथ नास लेनेसे कालका काटाहुआभी जीवित होजाता है ॥ ७८ ॥

अश्वगंधामेघनादागोमूत्रंमहिषाक्षकाम् ॥
गृहधूमेनचालेपःशिरःकंठविषंहरेत् ॥ ७९ ॥

असगंध चौलाईकी जड़ गोमूत्र भैंसका मूत्र गृहधूम इनका लेप शिर और कंठका विष दूर करता है ॥ ७९ ॥

पंचांगमश्वगंधायाछागीमूत्रेणपेषयेत् ॥

---

१ गवांक्षीरेण लोडयेदिति वा पाठान्तरम् ।

लेपपानेनसन्देहोनानाविषविनाशनम् ॥ ८० ॥

असगंधका पंचांग छागके मूत्रसे पीसकर इसका लेप और पान करनेसे नाना प्रकारके विष नाश होजाते हैं ॥ ८० ॥

शिलाहिंगुवचाव्योषमभयात्वक्चपत्रकम् ॥
नस्येवासुकिदष्टस्यनिर्विषंशीतवारिणा ॥ ८१ ॥

मनशिल हिंगु वच सोंठ मिर्च पीपल हरड़की बकली तज तेजपात इनकी नास लेनेसे वासुकीका काटा हुआ ठंडे जलके सहित नास लेनेसे निर्विष होजाता है ॥ ८१ ॥

पुत्रजीवफलान्मज्जागवांक्षीरेणपेषयेत् ॥
लेपनांजननस्येनकालदष्टोपिजीवति ॥ ८२ ॥

जियापोतेके फलकी मींग गौके दूधसे पीसे उसके लेप अंजन और नाससे कालका काटाहुआभी जी जाताहै ॥ ८२ ॥

कृष्णधत्तूरमूलस्यचूर्णंग्राह्यंपलोन्मितम् ॥
करंजतैलकर्षेणवटींकृत्वातुधारयेत् ॥ ८३ ॥

कालेधतूरेकी जडका एकपल चूर्ण लेकर करंजके तेलसे काली वटी बनाय धरै ॥ ८३ ॥

जंबीरस्यरसैःपीत्वारौद्रीविषनिवारणम् ॥
लज्जालुमूलंनील्यामथामूलंस्वच्छेनवारिणा ॥८४॥

उसे जम्बीरीके रससे पिये तो कठिन विष नाश होजाताहै लज्जावन्तीकी जड अथवा नीली की जड़ स्वच्छ जलसे पीवै ॥ ८४ ॥

पीत्वारौद्रीविषंहंतिलेपाद्भुजाबलांततः ॥
गृहधूमंहारिद्रेद्वेसमूलंतन्दुलीयकम् ॥ ८५ ॥

पीनेसे महाविष और चौंटली खरैंटीके लेपन करनेसे भी सर्पका विष दूर होताहै घरका धुआं दोनों हलदी चौंलाईकी जड ॥ ८५ ॥

अपिवासुकिनादष्टःपिबेद्दधिघृतान्वितम् ॥
तन्दुलीयकमूलन्तुपीतंतंदुलवारिणा ॥ ८६ ॥

दधि और घीके साथ पीनेसे वासुकीका काटाहुआभी निर्विष होजाताहै चौलाई की जड़ चावलकी जडके साथ पीनेसे ॥ ८६ ॥

तक्षकेनापिदष्टस्यनिर्विषंकुरुतेध्रुवम् ॥
कुलिकंमूलनस्येनकालदष्टोपिजीवति ॥ ८७ ॥

तक्षकका काटाहुआभी क्षणमें निर्विष होजाताहै कोकिला-वृक्षकी जड़के नास लेनेसे कालका काटाभी जीताहै ॥ ८७ ॥

ॐआदित्यचक्षुषादृष्टःदृष्टोऽहंहरविषस्वाहा ॥
अनेनमंत्रेणोक्तयोगानामभिमंत्रयेत् ॥
अपराजितामूलन्तुघृतेनत्वग्गतंविषम् ॥
पयसारक्तगंहन्तिमांसगंकुष्टचूर्णतः ॥ ८८ ॥

'ॐ आदित्य चक्षुषा दृष्टः दृष्टोऽहं हर विषं स्वाहा' इस मंत्रसे पिछले कहे योगोंको अभिमंत्रित करै अपराजिताकी जड़ घृतसे युक्त पान करनेसे त्वचामें प्राप्त हुआ विष जाता रहता है और दूधके साथ पान करनेसे रक्तमें प्राप्त विष दूर होता है कुष्टके चूर्णके साथ मांसमें प्राप्त हुआ विष दूर होता है ॥ ८८ ॥

अस्थिगंरजनीयुक्तंमेदोगंलाङ्गलीयुतम् ॥
मज्जगांपिप्पलीयुक्तांचंडालीमूलसंयुताम् ॥
शुक्रगांहंतिनोचित्रंतस्माद्देयापराजिता ॥८९॥

हलदीसे युक्त हड्डीमें प्राप्त हुआ विष और कलिहारीकी जड़से मेदमें प्राप्त हुआ पीपलीसे मज्जामें प्राप्त हुआ और पंचगुगारिया की जडके साथ वीर्यमें प्राप्त हुआ विष दूर होताहै इस कारण अपराजिता देनी चाहिये ॥ ८९ ॥

---

१ जयन्ती।

इतिभावोभवेद्यस्यआत्मरूपमिदंजगत् ॥
तत्सर्वैर्विषकीटाद्यैर्भक्ष्यमाणोनबाध्यते ॥ ९० ॥

जो पुरुष ऐसा समझताहै कि, यह जगत् आत्मस्वरूपहै उस पुरुषको किसी कीटादिका विष व्याप्त नहीं होताहै ॥ ९० ॥

सद्यःसर्पेणदष्टस्यवामानामिकयाकृतः ॥
लेपःकर्णमलेनापिनृमूत्रैःसेचनेनवा ॥ ९१ ॥

जिस समय कोई काटे उसी समय बायें हाथकी अनामिका अंगुलीसे कानका मल लेपन करनेसे अथवा नरमूत्रसे सेचन करनेसे ॥ ९१ ॥

स्तम्भतेगरलंतेननोर्द्धंधावतिधातुषु ॥
वराहकर्णिकामूलंहस्तेबद्धंविषापहम् ॥ ९२ ॥

विष स्तंभित होजाताहै धातुओंमें फैलता नहीं अथवा असगंधकी जड हाथमें बांधनेसे विषकी हरनेवालीहै ॥ ९२ ॥

शिरीषपुष्पस्वरसैःसप्ताहंमरिचंसितम् ॥
भावितंसर्पदष्टानांपानेनस्येंजनंहितम् ॥
स्वच्छन्दभैरवीविद्याकथ्यतेविषनाशिनी ॥ ९३ ॥

शिरसके फूलके स्वरसमें सात दिन कालीमिरचको रख मिश्रीके साथ लेप करनेसे पान करनेसे आंजनेसे नस्यसे हितकारक है सर्पविष उतरताहै और स्वच्छन्दभैरवीविद्याको भी विषनाशनी कहाहै ॥ ९३ ॥

ॐनमोभगवतीस्वच्छन्दभैरवीकालकूटविषंस्फोटय २ विस्फारय २ खादय २ अवतारय २ नास्तिविषहालाहलविषकृत्तिमंविषंसंयोगविषह्यत्युग्राविषस्थावरविषजंगमविषकालचंचुयापराइष्टमंत्रस्तडदर्गा

यणइथयइथय ॐकालाय महाकालायकालमर्द्द
देवीअमृतगर्भदेविॐॐफट्फट्स्वाहाअनेनमंत्रेण
झाडयेत् ॥ सप्तधानवधाजलमभिमन्त्र्यतेनाभि
षिञ्चयतज्जलंपाययेच्चनिर्विषंस्यादियंस्वच्छन्दभैर
वीविद्याॐन्हूंन्हूंसंस्वःहंसः ॥
अनेनमंत्रेणाभिमंत्रितपानीयपानेनापिमार्ज्जनेनवानि
र्विषःस्यात् ॥ देवदारुचित्रकंचकरवीरार्कलांगली
मूलानिवारिणापिष्ट्वाकालदष्टहरम्पिबेत् ॥ ९४ ॥

'ओंनमो भगवती स्वच्छन्दभैरवी कालकूटविषं स्फोटय स्फोटय विस्फारय विस्फारय खादय २ अवतारय २ नास्ति विष॰हलाहल विष कृत्तिमंविषं संयोगेविष ह्यत्युग्र विष स्थावर-जंगम विषु काल चंचुपापरा इष्टमंत्र तडदर्पायण इथय इथय २ ओं कालाय महाकालाय कालमर्द्ददेवी अमृतगर्भदेवी ओंओं फट् फट् स्वाहा इसमंत्रसे झाड़दें सातवार अभिमंत्रितकर जलदे वा नौ वार पढकर देता निर्विष होजायगा यह स्वच्छन्दभैरवी विद्या है ओं न्हूंन्हूं संस्वःहंसः'इसमंत्रसे अभिमंत्रित जलके पानसे मार्जन से मनुष्य विषरहित होजाताहै ॥ देवदारू चीता कनेर आक कलिहारी इनकी जड जलसे पीसकर पीनेसे कालदष्टभी जीवित होताहै ॥ ९४ ॥

मंत्रौषधिप्रयोगेणयदिदष्टोनजीवति ॥
छेदयेत्तीक्ष्णशस्त्रेणदंशस्थानंभिषग्वरः ॥ ९५ ॥

जो काटाहुआ मंत्र औषधीके प्रयोगसे न जियै तो काटे हुए स्थानको तीक्ष्ण शस्त्रसे छेदन करदे ॥ ९५ ॥

स्थावरन्तुविषन्दद्याद्दष्टोदष्टेनहन्यते ॥

यस्तुसंरोषितःसर्पोधूमंवक्त्राद्विमुंचति ॥ ९६ ॥

अथवा उसको स्थावर विष दे क्योंकि, काटिसे काटाहुआ हनन होताहै और जो क्रोधित सर्प मुखसे धूम निकालताहो ॥ ९६ ॥

तुण्डाग्रेपिशितंभुक्त्वाबहुशस्तेनदंशितः ॥
अशक्यमगदैरन्यैर्विषेणैवचिकित्सयेत् ॥ ९७ ॥

उसके मुखके आगे मांस रखकर उसको बहुतवार कटवादे जो और औषधियोंसे अशक्य होतो यह देकर विशेष चिकित्सा करनी ॥ ९७ ॥

क्षीरक्षौद्रघृतैर्युक्तंद्विगुंजांपाययेद्विषम् ॥
विषेणलेपयेद्दंशंकालदष्टोपिजीवति ॥ ९८ ॥

दूध शहत घीके दो चौंटली भर विषदे और काटेहुएपर विषका लेप करे तो कालका काटाहुआ भी जीता है ॥ ९८ ॥

मृतसंजीवनंख्यातंनिर्गुंडीतगरंविषम् ॥
पिंडीतगरमूलञ्चपुष्येनोत्पाट्ययोजितम् ॥ ९९ ॥

यह मृतसंजीवननामसे विख्यात है निर्गुंडी तगर विष गंधक और तगर की मूल पुष्यनक्षत्रमें उखाडकर उसमें मिलावै ॥९९॥

दंशेदेयंमृतस्यापिदष्टोजीवतितत्क्षणात् ॥
सर्पदष्टोयदावीरस्तंसर्पंदशतेस्वयम् ॥ १०० ॥

जहां सर्पने काटा हो वहां यह वस्तु लगानेसे गुण होगा अथवा धीर पुरुष उस सर्पको स्वयं काट ले ॥१००॥

मुक्तोसौम्रियतेसर्पःस्वयंनिर्विषतांव्रजेत् ॥
यद्वातद्वाफलन्दन्तैस्सर्पभावेनभक्षयेत् ॥ १०१ ॥

तब यह छूटताहै सर्प मरजाता है और यह निर्विष होजाताहै अथवा सर्पकी भावनासे किसी फलको चबाले ॥ १०१ ॥

दन्तैर्वादंशयेद्भूमिंदण्डवत्पतितोनरः ॥
सर्पाभावेनसन्देहोनतस्यक्रमतेविषम् ॥ १०२ ॥

अथवा दंडकी समान गिरकर दांतोंसे पृथ्वीको काटे और सर्पकी भावना करै इसमें सन्देह नहीं उसको विष नहीं चढैगा ॥ १०२ ॥

अत्यंतविषयोगार्त्तंजलमध्येविनिःक्षिपेत् ॥ १०३ ॥
मूलंतन्दुलवारिणापिबतियःप्रत्यंगिरासंभवं
निष्पिष्टंशुचिभद्रयोगदिवसेतस्याहिभीतिःकुतः ॥
दर्पादेवफणीयदादशतितंमोहान्वितंमानवं
स्थानेतत्रसएवयातिनियतंचक्रीयमस्याचिरात् ॥१०४

अथवा जो अत्यन्त विषसे व्याकुलहो उसे जलमें डालदे अथवा श्वेतपुनर्नवाको चावलके पानीके साथ अच्छे मुहूर्त योगमें पीताहै उसको सर्पके काटनेका भय नहीं होता जो मोहसे सर्प मनुष्यको दंशित करताहै तो वह शीघ्रही उसकेस्थानमें यमराजके लोकको जाता है ॥ १०३ ॥ १०४ ॥

आषाढशुक्लपंचम्यांकट्यांशिरीषमूलकम् ॥
तन्दुलोदकपानेनसर्पदंशोनजायते ॥ १०५ ॥

आषाढशुक्ल पंचमीके दिन जो अपनी कमरमें शिरसकी जड़ बांधता है और तन्दुलका जलपान करता है उसको सर्पदंश नहीं होता है ॥ १०५ ॥

भ्रमाद्वादंशतेसर्पस्तदासर्पोविनश्यति ॥
पुष्येश्वेतार्कमूलन्तुश्वेतवर्षाम्बुमूलकम् ॥ १०६ ॥

और जो कदाचित् भ्रमसे सांप खाय तो वह सर्प नष्ट होजाता है पुष्यनक्षत्रमें श्वेतआककी जड़ और श्वेतपुनर्नवा (सोंठ) की जड़ लाकर ॥ १०६ ॥

संगृह्यपेयंतहक्षेस्नात्वातंदुलवारिणा ॥
सर्पभीतिविनाशार्थंप्रतिसम्वत्सरंनरैः ॥ १०७ ॥

स्नान कर तंदुलके जलके साथ पिये तो उसको कभी सर्पसे भय नहीं होता है ॥ १०७ ॥

मसूरनिम्बपत्राभ्यांखादेन्मेषगतेरवौ ॥
अब्दमेकंनभीतिःस्याद्विषात्तस्यनसंशयः ॥१०८॥

मेषके सूर्यमें एक मसूरको दो निम्बके पत्तोंके साथमें भक्षण करे तो एक वर्ष तक उसको सर्पसे भीति नहीं होती है ॥ १०८ ॥

कृकलासस्यदन्तांश्चश्वेतसूत्रेणवेष्टयेत् ॥
बाहौबध्वाविषंहंतिविषंभुक्तानबाध्यते ॥ १०९ ॥

घिरघटके दांत श्वेतसूत्रसे लपेट कर भुजामें बांधनेसे विष दूर होजाता है विष खानेपर भी बाधा नहीं होती ॥ १०९ ॥

सर्पवृश्चिकमूषाणांमुखस्तम्भःप्रजायते ॥
ॐशवरीकीर्त्तयसंजावसंजावस्वाहा ॥ ११० ॥

तथा सांप बिच्छू और चूहोंका मुख स्तंभित हो जाता है मंत्र है ॐ शवरी कीर्तयह संजाव संजाव स्वाहा ॥ ११० ॥

अनेनमंत्रेणहस्तेबंधयेत् ॥ पातालगरुडीमूलंलंब मानंगृहेस्थितम् ॥ दृष्ट्वागच्छन्तितेदूरंसर्पाद्या विषकीटकाः ॥ १११ ॥

इसमंत्रसे हाथमें बांधे ॥ छिरहिटाकी जड़ घरमें लाकर रखदेनेसे सर्पादि विषके कीडे उसे देखकर दूर पलायन करते हैं॥१११॥

ॐपुः सर्पकुलायस्वाहा ॥ वाअशेषसर्पकुलायस्वाहा अनेनसप्ताभिमंत्रितामृत्तिकागृहमध्येक्षिपेत्सर्पाःप लायन्ते ॥

'ॐ ह्रुः सर्पकुलाय स्वाहा' इसमंत्रसे सात वार अभिमंत्रितकर मट्टी घरमें डालदेनेसे सर्पादिक दूरसे पलायन करजाते हैं ॥

इति सर्पविषनिवारणम् ॥

अथ वृश्चिकविषनिवारणम् ॥

शिरीषबीजंगोमेदंदाडिमस्यतुमूलकम् ॥
अर्कक्षीरयुतंहंतिधूपोवृश्चिकजम्विषम् ॥ ११२ ॥

शिरसके बीज गोमेद दाडिमीकी जड़ आकका दूध इनकी धूप बिच्छूके विषको दूर करती है॥ १ ॥

मयूरपारावतकुक्कुटानांग्राह्यंपुरीषंसहभानुमूलैः ॥
धूपोनिहंत्याशुविषंसमस्तंचतुर्विधंवृश्चिकसर्पजातम्॥११३

मोर कबूतर मुरगा इनकी वीट और आककी जड़ लेकर धूप देनेसे चार प्रकारके बिच्छू सर्पादिके विषको दूर करती है॥११३॥

रजनीचूर्णधूपेनविषंवृश्चिकजंहरेत् ॥
वस्त्रेणाच्छाद्यगात्राणिधूपधूमञ्चपाययेत् ॥
दंशंचधूपयेच्छीघ्रंसर्वधूपेष्वयंविधिः ॥ ११४ ॥

हलदीका चूर्णकर उसकी धूप देनेसे बिच्छूका विष उतर जाता है ॥ ११४ ॥

तोयैर्वानागरंरम्यंपिबेद्वासैंधवंघृतम् ॥
अर्कधत्तूरमूलंवाजलपानेविषापहम् ॥ ११५ ॥

वस्त्रसे शरीर ढककर धूपका धुआं प्यावै धूप शीघ्रतासे दंश पर देनी चाहिये सब धूपोंकी यही विधि है अथवा जलके साथ सोंठको पान करै वा सैंधे और घृतको पान करै अथवा आक धतूरे की जडको जलके साथ पान करनेसे विष दूर होता है ॥ ११५ ॥

पुत्रजीवफलान्मज्जांपलाशोत्थांकरंजजाम्[1] ॥
मज्जातोयैःप्रलेपोयंहन्तिवृश्चिकजंविषम् ॥ १६ ॥

जियापोतेके फलोंकी मींग तथा ढाकको लेकर और करंजकी मींगको जलमें पीस लेप करनेसे बिच्छूका विष उतरता है ॥१६॥

हिंगुवाजललेपेनवृश्चिकोत्थंविषंहरेत् ॥
तिलमात्रंविषंखादेल्लेपाद्वानाशयेद्विषम् ॥ १७ ॥

हिंगु जलका लेप विच्छूके विषको दूर करता है अथवा तिलमात्र विष खाने वा लेप करनेसे विष उतरता है ॥ १७ ॥

घृतार्कदुग्धलेपेनयष्टयावाधूपितेनवा ॥
बीजपूरकमूलस्यलेपाद्वापिहरीतकी ॥ १८ ॥

अथवा घी और आकके दूध मुलैठीका लेप करनेसे वा धूप देनेसे अथवा बिजौरेकी जड़ हरडके साथ पीस लेप करनेसे ॥१८॥

लेपोजातीगुडाभ्याम्वाहारिद्रालेपनेनवा ॥
वृश्चिकस्यविषंहंन्तिप्रत्येकंनैवसंशयः ॥ १९ ॥

अथवा जाती गुड़ वा हलदीके लेपसे बिच्छूका विष दूर होजाता है इसमें संदेह नहीं ॥ १९ ॥

मातुलुंगस्यमूलन्तुरविवारेसमुद्धरेत् ॥
उत्तराभिमुखेनैवहूं (वा क्रूं) मंत्रोच्चारणात्स्पृशेत् १२०

मातुलुंगकी जड़ रविवारके दिन लावे और उत्तरको मुख कर 'हूं' मंत्रको उच्चारण कर उसे स्पर्श करे ॥ १२० ॥

वामांगेदक्षिणेदष्टेवामेदष्टेचदक्षिणे ॥
सप्तधामार्जनेनैवविषंवृश्चिकजंहरेत् ॥ २१ ॥

---

[1] कुरंजलमितिवापाठः ।

जो दहिने अंगमें काटा हो तो वाममें और वाममें काटा हो तो दक्षिणमें सातवार मार्जन करनेसे सर्पविष नष्ट होजाता है ॥ २१ ॥

असगंधीयमूलन्तुमूलंश्वेतपुनर्नवा ॥
रविवारेसमुद्धृत्यद्वाभ्यांवृश्चिकदंशकम् ॥ २२ ॥

असगंधकी जड़ श्वेत पुनर्नवाकी जड़ रविवारके दिन उखाड़कर इन दोनोंको बिच्छूने जहां काटा हो वहां ॥ २२ ॥

मार्जनेनविषंहन्यात्स्वहृशाह्यनुभावितम् ॥
कार्पासमूलंचर्वित्वाविषजित्कर्णफूत्कृते ॥ २३ ॥

मार्जन करे तो अवश्य विष उतर जाता है तथा कपासकी जड़ चबाकर कानमें फूक मारनेसे विष उतर जाता है ॥ २३ ॥

ग्राह्यंहंसपदीमूलंप्रातरादित्यवासरे ॥
मुखस्थंपूत्कृतंकर्णेविषंवृश्चिकजंहरेत् ॥ २४ ॥

हंसपदीकी जड़ रविवारके दिन प्रातःकालमें लावै उसे मुखमें रख कानमें फूक मारनेसे बिच्छूका विष उतर जाता है ॥ २४ ॥

ॐक्षःफट्स्वाहा ॥
अनेनापमार्जयेन्निर्विषोभवति ॥

'ओंक्षःफट्स्वाहा' इसमंत्रसे मार्जन करनेसे निर्विष होता है ।

---

१ 'आदित्यरथवेगेन विष्णोर्बाहुबलेनच । गरुडपक्षनिपातेन भूम्यां गच्छ महाविष ॥ ओं ठःठःठः जःजःजःओं श्रीपक्षयोगिपादाज्ञा इतिमंत्रः' दूसरामंत्र 'हिमवत्युत्तरे पार्श्वेकपिलोनामवृश्चिकः । तेनाहंमेषितोदूतोगच्छ गच्छमहाविष ॥ क्रींक्रीं स्वाहा डाकिनी स्वाहा फट्' इति ॥ इक्कीसवार दंशको छूकर कानमें जपै । अथवा 'शांखो मांखो मांहीं खौंहीं' अनेन गरुडमन्त्रेण वृश्चिकदष्टे करवीर काष्ठेनापोमार्जयेन्निर्विषो भवति ॥

औरभी तीन मंत्र लिखे हैं तीसरेसे कनेरकाष्ठसे जल मार्जन करै निर्विष होगा ॥

इति वृश्चिकविषनिवारणम् ॥

कानखजूरेकाविषनिवारण ॥

दिपकोच्छिष्टतैलंतुदंशस्थानेप्रलेपयेत् ॥ २५ ॥

दियेके बचे तेलको दंशपर लगावै अथवा गगलकी धूपदे पीछे आकके पत्ते लपेट बांधे विषछूटै ॥ २५ ॥

अथमूषकविषनिवारणम् ॥

शिलातालककुष्टञ्चभाव्यंनिर्गुंडिकाद्रवैः ॥
पानंमूषिकदष्टानान्दत्तंतीव्रविषंहरेत् ॥ २६ ॥

मनशिल हरताल कूट इनको निर्गुण्डीके रसमें भावित करके पान करनेसे मूसेका विष उतर जाता है ॥ २६ ॥

गृहगोधांसमादायपिष्ट्वातन्दुलवारिणा ॥
लेपादाखुविषंहंतिपिबेद्वाक्षीरपाचिताम् ॥ २७ ॥

घरकी गोधको लाकर चावलके जलसे पीस लेप करनेसे चूहे का विष शान्त होजाता है अथवा क्षीरको पाचित कर पीनेसे चूहेका विष शान्त होजाता है ॥ २७ ॥

सर्षपंकुंकुमंतक्रंसमभागंघृतम्पिबेत् ॥
विषंमूषिकदष्टानांशममाप्नोतितत्क्षणात् ॥ २८ ॥

सरसों कुमकुम मट्ठा यह समान भाग लेकर घृतके साथ पान करै तो उसी समय चूहेका विष उतर जाता है ॥ २८ ॥

चिंचाफलसमायुक्तंगृहधूमंपलार्द्धकम् ॥
पुराणाज्येनसप्ताहंलिहेदाखुविषंहरेत् ॥ २९ ॥

चिंचाफलके साथ आधे पल घरका धूम पीस सात दिन पुराने घृतके साथ चाटे तो चूहेका विष उतर जाता हैं ॥ २९ ॥

इति मूषकविषनिवारणम् ॥

अथश्वानविषनिवारणम् ॥

शिरीषस्यचबीजंवैस्नुहीक्षीरेणघर्षितम् ॥
तल्लेपेनवरारोहेनश्येत्कुक्कुरजंविषम् ॥ १३० ॥

शिरसके बीज थूहरके दूधमें पीसकर लेप करनेसे कुत्तेका विष दूर होजाताहै ॥ १३० ॥

गुडन्तैलार्कदुग्धञ्चलेपाच्छ्वानविषंहरेत् ॥
पिष्ट्वापामार्गमूलंचकर्षैकम्मधुनालिहेत् ॥ ३१ ॥

तथा गुड़ तेल और आकका दूध लेप करनेसे श्वानविष उतर जाताहै अथवा चिरचिटेकी जड पीस एक कर्ष शहतके साथ पीस चाटे ॥ ३१ ॥

श्वानदष्टविषंहंतिलेपात्कुक्कुरविष्ठया ॥
उन्मत्तश्वानदंष्ट्राणांकुमारीदलसैंधवम् ॥
सुखोष्णंबंधयेत्पिंडंत्रिदिनान्तेसुखावहम् ॥ ३२ ॥

वा कुक्कुकी विष्ठाका लेप करे तो कुत्तेका विष उतर जाताहै उन्मत्त कुत्तेके विषपर घीकुंआरका पत्ता सैंधा कुछ गरम कर तीन दिन बांधनेसे विष उतर जाताहै ॥ ३२ ॥

ॐहडवडकुत्ताखडवडदांत,कुत्तेकीबांधोसातोंडाढ
आवैनलोहूपाकैनघावकुत्तेकाविषउतरजाववीरहनुम
न्तकीदुहाईरामलछमनकीदुहाईपुरोमंत्रईश्वरोवाच ॥

इस मंत्रसे सातवार अभिमंत्रित कर कुत्तेके काटे हुएको खानेको गुडदे तो निर्विषहो ॥ इति श्वानविष निवारणम् ॥

अथमत्स्यभेकादिविषनिवारणम् ॥

शिरीषफलत्वक्क्षीरंपिबेद्भेकविषापहम् ॥
त्र्यूषमाज्यंमेघनादोभेकमत्स्यविषापहम् ॥ ३३ ॥

शिरसकी फली और मूल जलके साथ पीनेसे विष दूर होताहै सोंठ मिरच पीपल घृत चौलाई यह मेंडकका मत्स्यके विषका दूर करतीहै ॥ ३३ ॥

शृंगीमत्स्यविषंस्वेदाघृतचिक्कांसपिंडिताम् ॥ ३४ ॥

अथवा काकडासिंगी और घृतसे विष दूर होताहै ॥ ३४ ॥

अथ गोधाविषनिवारणम् ॥

गृहगोधाविषंहन्यात्काश्मीरीफलनस्यतः ॥
पिबेन्मधुसितायुक्तंगृहगोधाविषंहरेत् ॥ ३५ ॥

गंभारीके फलकी नास सेवनसे घरकी गोयका विष शान्त होजाताहै अथवा यही शहत और मिश्रीके साथ सेवन करनेसे घरकी गोयका विष दूर करताहै ॥ ३५ ॥

अथ व्याघ्रविषनिवारणम् ॥

वृकव्याघ्रशृगालाख्याभल्लूकद्विजवाजिनाम् ॥

---

१ भिंडीफलस्नुहीक्षीरं इति वा पाठः।

२ दाक्षिणात्य काश्मरीनाम हरकिसीरको कहते हैं।

रुधिरंस्रावयेद्दंशाद्दहेल्लोहशलाकया ॥ ३६ ॥

भेडिया व्याघ्र चीता गीदड रीछ गेंडा इनके काटने पर वहांका रुधिर निकाल डाले वा उस काटे स्थानपर लोहेकी शलाकासे जलादे ॥ ३६ ॥

लेपात्सर्पविषंहंतिमूलंश्वेतपुनर्नवा ॥

किमत्रबहुनोक्तेनतत्क्षणाद्विषनाशनम् ॥ ३७ ॥

अथवा श्वेत पुनर्नवाकी जडका लेप करनेसे विष दूर होताहै बहुत कहनेसे क्याहै! उसी समय विषनाश होता है ॥ ३७ ॥

विडंगस्यचपानेनव्याघ्रव्यालविषंहरेत् ॥

धुस्तूरपत्रतोयेनचूर्णत्रिकटुसम्भवम् ॥ ३८ ॥

बायविडंग वा विङ्कटके पानसे व्याघ्रका और व्यालका विष दूर होजाताहै धतूरेके पत्तोंका अर्क और त्रिकुटा ॥ ३८ ॥

उदरस्थंविषंहन्तिव्याघ्रव्यालसमुद्भवम् ॥

करंजतैललेपेनज्वालांव्याघ्रनखोद्भवाम् ॥ ३९ ॥

यह पान करनेसे व्याघ्रविष व्यालविष पेटमें प्राप्त होगया हो तो भी दूर होताहै अथवा करंजके तेलका लेप करनेसे व्याघ्रके नखोंकी ज्वाला शान्त होजाती है ॥ ३९ ॥

गोजिह्वामूलिकांपिष्ट्वाजलेनमधुनासह ॥

लेपोहिसर्वजन्तूनांनखतुण्डविषंहरेत् ॥ १४० ॥

गोजिह्वालताकी मूलिका शहत और जलके साथ पीस लेप करनेसे सब जन्तुओंके नख तुंडका विष दूर होजाताहै ॥ १४० ॥

तथानिम्बवचांचैवशमीवृक्षत्वचन्तथा ॥

उष्णोदकेनलेपस्यान्नखतुण्डविषापहः ॥ ४१ ॥

नीमवच शमीकी छाल इनका लेप गरम जलसे करै तो सब जीवोंके नख और मुख लगनेका विष दूर होजाताहै ॥ ४१ ॥

तथादारुहरिद्रायालेपोदन्तविषापहः ॥ ४२ ॥

इसी प्रकार देवदारु हलदीको पान करनेसे दांतोंका विष दूर होजाता है ॥ ४२ ॥

अथ कीटविषनिवारणम् ॥

आज्येनतन्दुलीमूलंतुलसीमूलिकापिवा ॥
तन्दुलोदकपानेनकीटकोत्थंविषंहरेत् ॥ ४३ ॥

घृतके साथ चौलाईकी जड़ तुलसीकी जड़ चावलके जलके साथ पान करनेसे कीटविष नष्ट होजाताहै ॥ ४३ ॥

लांगल्याःकटुतुंब्यावादेवदारुनिशापिवा ॥
मूलंबीजंकांजिकेनलेपःकीटविषापहः ॥ ४४ ॥

कलिहारी कडवी तूंबी देवदारु हलदी इनकी मूल बीज कांजीके साथ लेप करनेसे कीटविष दूर होजाताहै ॥ ४४ ॥

तिलंचसर्षपंकुष्टंबीजंकरंजसम्भवम् ॥
उद्वर्त्तनात्प्रलेपाद्वासर्वकीटविकारजित् ॥ ४५ ॥

तिल सरसों कूट करंजके बीज इसके उद्वर्तन वा लेपसे सब प्रकारके कीडोंका विष शान्त होजाताहै ॥ ४५ ॥

करंजबीजंसिद्धार्थतिलैर्लेपोविषापहः ॥
ऐरण्डतैललेपोवासर्वकीटविषापहः ॥ ४६ ॥

करंजके बीज सरसों तिल इनका लेप करनेसे विष दूर होताहै अथवा रण्डका लेप सब कीटोंको दूर करताहै ॥ ४६ ॥

निशादारुनिशाचैवमंजिष्ठानागकेशरम् ॥
एषांलेपोनिहंत्याशुविषंलूतादिसम्भवम् ॥ ४७ ॥

इति कीटविषनिवारणम् ॥

हलदी देवदारु मजीठ जागकेशर इनका लेप करनेसे लूतादिका विष दूर होताहै ॥ ४७ ॥

इति कीटविषनिवारणम् ॥

अथ सर्वजंन्तूनाम्विषनिवारणम् ॥

पुत्रजीवफलान्मंज्जांशीततोयेनपेषिताम् ॥
लेपनांजननस्यैस्तुपानाद्वानिष्कमात्रतः ॥ ४८ ॥

जियापोताके फलकी मींगी शीतल जलके साथ पीस लेप करने अंजन करनेसे वा एक निष्कमात्र पान करनेसे ॥ ४८ ॥

व्याघ्रमूषिकगोनासवृश्चिकादिविषंहरेत् ॥
दुस्सहंयदिपंचाशुविष्फोटंचविनाशयेत् ॥ ४९ ॥

व्याघ्र मूषक गोनास (सर्प) वृश्चिकादिका विष दूर होजाताहै यह दुस्सह विषसे उत्पन्न हुए विस्फोटक रोगकाभी नाश करताहै ॥ ४९ ॥

वंध्याककोंटकीकन्दंजलैःपिष्ट्वाप्रलेपयेत् ॥
सर्पमूषकमार्जारवृश्चिकादिविषंहरेत् ॥ १५० ॥

वन्ध्या ककोंटकीकी जड़ जलसे पीस लेप करनेसे सर्प चूहा विलाव वृश्चिकादिका विष दूर होजाताहै ॥ १५० ॥

अथोपविषाद्विषनिवारणम् ॥

स्नुह्यर्कोन्मत्तकश्चैवकरवीरश्चलांगली ॥
वज्रीजैपालकःकृष्णाकुष्टंगुंजातथैवच ॥ ५१ ॥

स्नुहि (थूहर) अर्क धतूरा कनेर लांगली (कलिहारी) हड़शंकरी जमालगोटे सुरमा कूट चौंटली ॥ ५१ ॥

महाकालश्चइत्याद्याःस्मृतास्तूपविषाबुधैः ॥

ससिंधुकांजिकंपीत्वासमस्तोपविषंहरेत् ॥ ५२ ॥

महाकाललता यह वस्तु उपविष हैं सेंधा कांजीके साथ पान करनेसे सम्पूर्ण उपविषोंकी शान्ति होती है ॥ ५२ ॥

करवीरविषंहंतिघृतेनापिहरीतकी ॥
निम्बपत्रंघृतंहन्तिघृतेनमधुपानतः ॥ ५३ ॥

घृत और हरडका सेवन करनेसे कनेरका विष शान्त हो जाता है नीमके पत्तेका घृतसे अथवा घृत और मधुपानसे दूर होजाता है ॥ ५३॥

अथ कृत्रिमविषनिवारणम् ॥

अनेकविषजीवानांचूर्णंह्युपविषैर्युतम् ॥
मिश्रितंनखकेशाद्यैर्लोहाद्यैश्चूर्णसंचयम् ॥ ५४ ॥

अनेक विषले जीवोंका चूर्ण अर्थात् उनके नखकेशादि मिलाकर तथा लोहादि चूर्णके सहित ॥ ५४ ॥

कृत्रिमंचविषंख्यातंपक्षान्मासाद्विबाधते ॥
आलस्यंकुरुतेजाडयंकासंश्वासम्बलक्षयम् ॥५५॥

सेवन करनेसे कृत्रिमविष नष्ट होता है पखवारे तथा महीनेके आगे भी उपाय न करे तो आलस्यके कारण कास श्वास होकर बलका क्षय होता है ॥ ५५ ॥

रक्तस्रावोज्वरःशोषःपीतचक्षुश्चलक्षयेत् ॥
मृतंसूतंमृतंस्वर्णंशुद्धंवैहेममाक्षिकम् ॥ ५६ ॥

रक्तस्राव ज्वर शोष नेत्रोंमें पीलापन होजाता है औषधी यह है कि, शोधा पारा सोना शोधी सोनामाखी ॥ ५६ ॥

त्रयाणांगंधकंतुल्यंमर्द्यंकन्याद्रवैर्दिनम् ॥
तच्चशुष्कंसिताक्षौद्रैर्मासमेकंलिहेत्सदा ॥ ५७ ॥

इन तीनोंकी तुल्य गंधक घी कुवारके रसमें एक दिन खरल करे उसको सुखाय मिशरी और शहतके साथ एक महीनेतक सदा चाटे ॥ ५७ ॥

वह्निमूलयुतंक्षीरंमनुष्यंगरनाशनम् ॥
पुत्रजीवफलान्मज्जांनिष्कमात्रंगवांपयः ॥ ५८ ॥

पीपलामूल दूधमें औटाय खायतो मनुष्यका विष नाश हो अथवा जियापोताके फलकी मींग एक निष्क और गौका दूध॥५८॥

पीत्वाचोग्रंगरंहन्यान्नानाकृत्रिमयोगजम् ॥
शठीपुष्करमूलंचपाच्यंपानरताविषम् ॥ ५९ ॥

पान करनेसे तीव्र कृत्रिम और योगजविष दूर होजाताहै कचूर पुहकरमूलसे अत्यन्त मद्यका विष दूर होता है ॥ ५९ ॥

तत्पिबेत्क्षीरपानेनगरतृष्णाज्वरापहम् ॥
क्षीरंमुद्गयुतंपथ्यंशाल्यन्नंपरमंहितम् ॥ १६० ॥

क्षीरके साथ सोंठ हर पान करनेसे कृत्रिमविष और ज्वर दूर होताहै वारंवार दूध मूग शालिअन्न यह इसपर पथ्य और परम हित है ॥ १६० ॥

गृहधूमंजलैःपिष्वातन्दुलीमूलतूलकम् ॥
कल्काच्चतुर्गुणंचाज्यंघृतात्क्षीरंचतुर्गुणम् ॥ ६१ ॥

घरका धुआं जलके साथ पीसकर तथा चौराईकी जड़ कपासकी मूलका कल्क कर कल्कसे चौगुना घृत मिश्री डालै उससे चौगुना दूध डालै ॥ ६१ ॥

घृतशेषम्पचेत्सर्वंपिबेत्सर्वगरापहम् ॥
समूलपत्रांसर्पाक्षींजलेनक्कथितांम्पिबेत् ॥ ६२ ॥

और पकावै जब रस जलजाय घृतमात्र शेष रहजाय तव

इसके खानेसे सर्वप्रकारके विष दूर होजाते हैं अथवा सर्पाक्षीके मूल और पत्तोंका लेप करनेसे वा क्वाथ कर पान करनेसे ॥ ६२ ॥

नरमूत्रैश्चवापिष्टाम्पिबेत्सर्वगरापहम् ॥
एलातालीशपत्राणीत्र्यूषणंजीरकंसमम् ॥ ६३ ॥

अथवा नरमूत्रके साथ पीसकर पान करनेसे सर्वविष दूर होता है इलायची तालीस पत्र सोंठ मिरच पीपल जीरा यह समान भागले ॥ ६३ ॥

चूर्णाद्द्विधासितायोज्याभुक्तागरहरंभवेत् ॥
पयसारजनीकुष्ठंमध्वाज्यंगृहधूमकम् ॥ ६४ ॥

चूर्णसे दूनी मिश्री मिलाय खानेसे विष दूर होताहै अथवा दूधके साथ हलदी कूट शहत घृत गृहका धूम ॥ ६४ ॥

तन्दुलीमूलसंयुक्तंकर्षंगरहरंलिहेत् ॥ ६५ ॥

चौलाईकी जड़के साथ कर्षमात्र सेवन करनेसे विष दूर होताहै ॥ ६५ ॥

इति कृत्रिमविषनिवारणम् ॥

अथ योगजविषनिवारणम् ॥

तैलकर्पूरजम्बीरसंयोगाद्योगजंविषम् ॥
समांशेनतुमध्वाज्यमेवंसयोगजंविषम् ॥ ६६ ॥
नारिकेलाम्बुकर्पूरसंयोगाद्योगजंविषम् ॥
मरिचन्तुंबिकामूलंयोगजंविषमेवतत् ॥ ६७ ॥

तेलकपूर और जम्बीरीके योगसे योगज विष होता है बराबर शहत और घीसे योगज विष होता है, नारियल जल कपूरके योगसे योगज विष होताहै और कालीमिर्च कडवी तूंबी-की जडके योगसे विष होता है विषम योगसे उत्पन्न विष हरती है ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

पुत्रंजीवफलेनैवरजनीमारनालकैः ॥
देवदालीनृमूत्रैर्वासर्पाक्षीचेन्दुवारुणी ॥ ६८ ॥

जियापोताके फलको लेकर जलके साथ पीसकर लेनेसे तथा हलदी कांजी और देवदाली मनुष्यके मूत्रके साथ सर्पाक्षी इन्द्रवारुणी ॥ ६८ ॥

गिरिकर्णीयमूलंवाप्रत्येकंविषजिद्भवेत् ॥
मध्वाज्यंकाकजंघायाद्रवैःविष्वापिषंहरेत् ॥ ॥
गिरिकर्णीनागपुष्पीमुण्डपानाद्विषंहरेत् ॥ ६९ ॥

अथवा गिरिकर्णी (अपराजिता) की जड यह प्रत्येक विषकी जीतने वाली है और मधु घृतके साथ काकमाचीका रस पीनेसे विष दूर होताहै तथा अपराजिता नागकेशर और मुण्डीके पानसे विष दूर होजाता है ॥ ६९ ॥

अथ भल्लातकविषनिवारणम् ॥

भल्लाततैलसम्पर्कात्स्फोटःसंजायतेनृणाम् ॥
नवनीतंतिलंपिष्ट्वातल्लेपेनतुतंजयेत् ॥ १७० ॥

भिलावे और तेलके सम्पर्कसे मनुष्यके शरीरमें फोडे होजातेहैं मक्खनके साथ तिलोंको पीस लगानेसे आराम हो जाताहै॥१७०॥

निम्बीपत्रप्रलेपाद्वातंजयेत्तत्पदेनवा ॥
भल्लातकस्यमूलस्यमृत्तिकाभिःप्रलेपनात् ॥१७१॥

अथवा नीमके पत्तोंका लेप करनेसे आराम होता है अथवा भिलावेकी जडका विष मृत्तिकालेपनसे जाता है ॥ १७१ ॥

तत्संजातविकारांश्चनाशयत्येवनिश्चितम् ॥१७२॥

इतिश्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेविषनिवारणं
नामचतुर्दशोपदेशः ॥ १४ ॥

---

१ काकमाच्या वा इति पाठः ।

यह मृत्तिका उस्से उत्पन्न हुए विकारोंको अवश्य नाश करती है ॥ १७२ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडित ज्वालाप्रसाद-
मिश्रकृतभाषाटीकायां विषनिवारणन्नाम
चतुर्दशोपदेशः ॥ १४ ॥

अथ यक्षिणीसाधनम् ॥

सर्वासांयक्षिणीनांतुध्यानंकुर्य्यात्समाहितः ॥
भगिनीमातृपुत्रीस्त्रीरूपन्तुल्यंयथेप्सितम् ॥ १ ॥

यक्षिणीका साधन करै तो सावधान होकर करना चाहिये इसमें सावधानी होनेसे सिद्धि होती है भगिनी माता पुत्री स्त्री इनको एक दृष्टिसे तुल्य देखै ॥ १ ॥

भोज्यंनिरामिषंचान्नंवर्ज्यंताम्बूलभक्षणम् ॥
उपविश्यदिनादौचप्रातःस्नात्वानकंस्पृशेत् ॥ २ ॥

निरामिष अन्न खाना चाहिये ताम्बूलका भक्षण न करै अजिनवस्त्र पर बैठे प्रातःकाल स्नान कर किसीको स्पर्श नकरै ॥ २ ॥

नित्यकृत्यन्तुकृत्वाचस्थानेनिर्जनकेजपेत् ॥
यावत्प्रत्यक्षतांयांतियक्षिण्योवांछितप्रदाः ॥ ३ ॥

और अपनी नित्य क्रिया करके निर्जन स्थानमें जप करे जबतक प्रत्यक्ष होकर मनवांछित न दे बराबर जप करता रहे ॥ ३ ॥

जपेल्लक्षद्वयंमंत्रंश्मशानेनिर्भयोमुनिः ॥
दशांशंगुग्गुलुंसाज्यंहुत्वातुष्यतिविभ्रमः ॥ ४ ॥

निर्भय और मौन होकर श्मशानमें दो लक्ष मंत्रका जप करे और इसका दशांश हवन घृत और गूगलका करे ॥ ४ ॥

पंचाशन्मानुषाणाञ्चददातिभोजनंसदा ॥

ॐह्रींवांविभ्रमरूपेएहि २ भगवतिस्वाहा ॥
ॐह्रींविभ्रमरूपेविभ्रमंकुरुएह्येहि भगवतिस्वाहा
शंखलिप्तपटेदेवींगौरवर्णांधृतोत्पलाम् ॥
सर्वालंकारिणींदिव्यांसमालिख्यार्चयेत्ततः ॥ ५ ॥

तो यह प्रसन्न हो ५०० मनुष्योंको सदा भोजन देती है 'ॐवां विभ्रमरूपे एहि२भगवति स्वाहा,ॐह्रीं विभ्रमरूपे विभ्रमं कुरु एह्येहि २ भगवति स्वाहा' शंखलिप्त स्थानपर देवीको इस प्रकार लिखे कि, कमलधारण किये गौरवर्ण सम्पूर्ण अलंकारयुक्त दिव्यमूर्ति बनाकर अर्चन करे ॥ ५ ॥

जातीपुष्पैस्सोपचारैःसहस्रैकंततोजपेत् ॥
त्रिसंध्यंसप्तरात्रन्तुततोरात्रिषुनिर्जपेत् ॥ ६ ॥

और षोडशोपचारसे चमेलीके फूलोंसे पूजन करे और एक सहस्र मंत्र जपे सात दिनतक तीनों संध्याओंमें इसी प्रकार जप करे फिर रात्रिमें भी इसी प्रकार जपे ॥ ६ ॥

अर्द्धरात्रेगतेदेवीसमागत्यप्रयच्छति ॥
पंचविंशतिदीनारान्प्रत्यहंतोषितासती ॥ ७ ॥

तो आधीरातके समय आकर देवी प्रत्यक्ष दर्शन देती है और नित्य प्रति पच्चीस दीनारोंको संतुष्ट करने पर नित्य प्रदान करती है

ॐह्रींकनकनकमैथुनाप्रियेरतिप्रियेस्वाहा (२)

'ॐ ह्रीं कनकनकमैथुनाप्रिये रतिप्रिये स्वाहा' (२)

एकलिंगंमहादेवंत्रिसंध्यंपूजयेत्सदा ॥
धूपंदत्त्वाजपेन्मंत्रंत्रिसंध्यंत्रिसहस्रकम् ॥ ८ ॥

तीनों संध्याओंमें सदा एकलिंग महादेवका पूजन करै और धूप देकर तीनों संध्याओंमें तीन सहस्र मंत्र जपे ॥ ८ ॥

---

१ कर्पूरांगामिति वा पाठः ।

मासमेकंततोयातियक्षिणीसुरसुन्दरी ॥
दत्त्वार्घ्यंप्रणमेन्मंत्रीब्रूतेसात्वंकिमिच्छसि[1] ॥ ९ ॥

ऐसा एक महीने जप करनेसे सुरसुन्दरी यक्षिणी आनकर प्राप्त होतीहै उसे अर्घ्य देकर प्रणाम करे जब वह कहै क्या इच्छा है ॥९

देविदारिद्र्यदग्धोस्मितन्मेनाशंकरीभव ॥
ततोददातिसातुष्टावित्तायुश्चिरजीवितम् ॥ १० ॥

तब कहै मैं दारिद्र्यादिसे युक्त हूं मेरे दारिद्र्यका नाश करो तब वह प्रसन्न होकर विजय आयु और चिरकालतक जीवन-प्रदान करतीहै ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं आगच्छ २ सुरसुन्दरिस्वाहा (३)
कुंकुमेनसमालिख्यभूर्जपत्रेसुलक्षणाम् ॥
प्रतिपत्तिथिमारभ्यपूजांकृत्वाजपेत्ततः ॥ ११ ॥

' ओं ह्रीं आगच्छ २ सुरसुन्दरि स्वाहा (३) ' यह मंत्र भोज पत्रपर कुमकुमसे लिखै शुक्ल प्रतिपदासे पूजा आरंभकर जप करै ॥ ११ ॥

त्रिसंध्यंत्रिसहस्रन्तुमासान्तेपूजयेन्निशि ॥
सञ्जपेदर्द्धरात्रन्तुसमागत्यप्रयच्छति ॥
दीनाराणांसहस्रैकंददातिपरितोषिता[2] ॥ १२ ॥

तीनों संध्याओंमें तीन सहस्र जपकरै एक महीनेके उपरान्त रात्रिमें पूजन करै जप करनेसे अर्धरात्रिमें आनकर मनोरथ पूर्ण करतीहै प्रसन्न होकर एक सहस्र दीनार देतीहै ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं अनुरागिणिमैथुनप्रियेस्वाहा (४)
ध्यात्वाजपेत्ततोरात्रौसागरस्यतटेशुचिः ॥

---

१ मत्यक्षामितिवापाठः । २ मत्यहमितिवापाठः ।

लक्षजापेकृतेसिद्धिर्दत्तेसागरश्चेटकः ॥
रत्नत्रयंतथाभोज्यंसौम्योमन्त्रीसुखीभवेत् ॥१३॥

'ॐ अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा (४)' इसमंत्रको ध्यान करके पवित्र होकर सागरके किनारे जपे तो सिद्ध होनेसे सागर चेटक तीन रत्न बडे मोलके देताहै भोजन देताहै सौम्य रहनेसे मंत्री सुखी भी होताहै ॥ १३ ॥

ॐभगवन्समुद्रदेहिरत्नानिजलवासोह्रींनमोस्तुतेस्वाहा ५
त्रिपथेतुवटस्थानेरात्रौमंत्रीजपेत्स्वयम् ॥
लक्षत्रयंततःसिद्धादेवीचवटयक्षिणी ॥ १४ ॥

'ॐ भगवन् समुद्र देहि रत्नानि जलवासो ह्रीं नमोस्तुते स्वाहा'५ त्रिमार्गमें वटके नीचे रात्रीमें इस मंत्रको जपे तीन लक्ष जप करनेसे सिद्ध होकर देवी वटयक्षिणी ॥ १४ ॥

वस्त्रालंकारकंदिव्यंरसंसिद्धंरसायनम् ॥
दिव्यांजनन्तुसातुष्टासाधकायप्रयछति ॥ १५ ॥

ॐह्रींवटवासिनियक्षकुलपताकेवटयक्षिणिएह्येहिस्वाहा (६)
ॐवटवृक्षंसमारुह्यलक्षमेकंजपेन्मनुम् ॥
ततस्सप्ताभिमंत्रेणकांजिकैःक्षालयेन्मुखम् ॥
मासत्रयंजपेद्रात्रौवरंयच्छतियक्षिणी ॥
रसंरसायनंदिव्यंक्षुद्रकर्मह्यनेकधा ॥ १६ ॥

वस्त्र दिव्यअलंकार रससिद्धि और रसायन दिव्य अंजन प्रसन्न होकर साधकके निमित्त देती है 'ॐ ह्रीं वटवासिनि यक्षकुलपताके वटयक्षिणि एह्येहि स्वाहा' (६) ॐ वटके वृक्षपर चढकर एक लक्ष मंत्र जपकर सात वार अभिमंत्रित कर कांजीसे मुख धो डाले

१प्रसूतेइतिवापाठः ।

रात्रिमें तीन महीने जपे तो यक्षिणी वर देती है और इस दिव्यरसायन अनेक क्षुद्रकर्म देती है ॥ १६ ॥

सिद्धानिसर्वकार्याणिनान्यथाशंकरोऽब्रवीत् ।।
ॐनमश्चन्द्राद्यावाकर्णकारणक्लींस्वाहा ॥
ॐनमोभगवतेरुद्रायचंडवेगिनेस्वाहा (७)

और सब कर्म सिद्ध हो जाते हैं इसमें अन्यथा नहीं ऐसा शंकरने कहा है ॥ ' ॐ नमश्चंद्राद्यावाकर्णकारण क्लीं स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय चंडवेगिने स्वाहा' (७)

मंत्रद्वयस्यैकैवासिद्धिः ॥
चिंचावृक्षतलेलक्षंमंत्रमावर्त्तयेच्छुचिः ॥
शतपुष्पोद्भवैःपुष्पैःसघृतैर्होममाचरेत् ॥ १७ ॥

इन दोनों मंत्रमें कोई एक जपनेसे सिद्धि होती है यह मंत्र इमली वृक्षके नीचे बैठ कर पवित्र होकर जपे, इसीके वा सोंफके पत्र पुष्पोंसे घृतके साथ हवन करे ॥ १७ ॥

विशालाचततोतुष्टारसदिव्यंरसायनम् ॥
ॐऐंविशालेत्रांत्रींक्लींस्वाहा ॥
अथवा ॐऐंविशालेक्रींह्रींत्रींक्लींक्रींस्वाहा (८)
नरास्थिनिर्मितामालागलेपाणौचकर्णके ॥ १८ ॥

और विशाला (इन्द्रवारुणीको) पीसकर पूजे ' ॐ ऐं विशाले त्रां त्रीं क्लीं स्वाहा ' (८) मनुष्यकी अस्थिसे बनी माला गले हाथ और कर्णमें धारण करनेसे ॥ १८ ॥

धारयेज्जपमालांचतादृशींतुश्मशानतः ॥
लक्षमेकंजपेन्मंत्रंसाधकोनिर्भयश्शुचिः ॥ १९ ॥

और उसी प्रकार श्मशानके स्थानकी जपमाला धारण करनेसे साधक निर्भय होकर पवित्रतासे एक लक्ष मंत्र जपै ॥ १९ ॥

ततोमहाभयायक्षीप्रयच्छतिरसायनम् ॥
तस्यभक्षणमात्रेणपर्वतानंपिचालयेत् ॥ २० ॥

तब यह महाभया यक्षी सिद्धि और रसायन देतीहै उसके भक्षणमात्रसे पर्वतों को चलानेकी सामर्थ्य होजातीहै ॥ २० ॥

वलीपलितनिर्मुक्तश्चिरंजीवीभवेन्नरः ॥ २१ ॥

और वलीपलितसे निर्मुक्त होकर मनुष्य चिरंजीवी होताहै २१

ॐह्रींत्रांमहाभयेक्लींस्वाहा (९)
वा ॐक्लींमहाभयेक्लींस्वाहा ॥

शुक्लपक्षेजपेत्तावद्यावत्संदृश्यतेविधुः ॥
प्रतिपत्पूर्वपूर्णांतंनवलक्षमिदंजपेत् ॥ २२ ॥
अमृतंचंद्रिकादत्तंपीत्वाजीवोमरोभवेत् ॥ २३ ॥

'ओं ह्रीं त्रां महाभये क्लीं स्वाहा' (९) शुक्लपक्षमें तबतक वहां जपकरै जबतक चन्द्रमा दीखतारहै प्रतिपदासे पूर्णातक नौ लक्ष इसका जप करे तब चन्द्रिकाके दिये अमृतको पान करनेसे अमर होजाताहै ॥ २३ ॥

ॐह्रींचन्द्रिकेहंसःक्रींक्लींस्वाहा (१०)
जप्यंमासत्रयंरक्तकम्बलासाप्रसीदति ॥
मृतकोत्थापनेकुर्य्यात्प्रतिमांचालयेत्तथा ॥ २४ ॥

'ओं ह्रीं चन्द्रिके हंसः क्रीं क्लीं स्वाहा'(१०)इसको तीन महीने जपने से लालकम्बला प्रसन्न होतीहै इससे मृतक उत्थापन और प्रतिमा-चालन कर सकताहै ॥ २४ ॥

ॐह्रींरक्तकम्बलेमहादेविमृतकमुत्थापयप्रतिमाञ्चा
लयपर्वतान्कंपय २ लीलयनीलयविहस २ हूं हूं(११)

अष्टोत्तरशतंजप्त्वायत्किंचित्स्वादुभोजनम् ॥
तद्बलिंदीयतेतस्यैवटाधोमासमेकतः ॥ २५ ॥

ॐ ह्रीं रक्तकम्बले महादेवि मृतकमुत्थापय प्रतिमां चालय पर्वतान्कंपयर नीलयरविधस २ हूं हूं(११)इसको एक सो आठ जप कर जो कुछ अपने निमित्त स्वादु भोजन है उसकी बलि वटके नीचे उसके निमित्त दे ऐसा एक मास पर्यन्त करे ॥ २५ ॥

ततोदेवीसमागत्यहस्ताद्गृह्णातिभोजनम् ॥
तत्रैवसावरन्दत्तेनित्यंसांनिध्यकारकम् ॥ २६ ॥

तब देवी आनकर अपने हाथसे उसका भोजन ग्रहण करती है और नित्य समीप रहती है ॥ २६ ॥

अतीतानागतंकर्मस्वस्थास्वस्थंब्रवीतिसा ॥
प्रयत्तःपर्वतान्सर्वांश्चालयत्येवतत्क्षणात् ॥ २७ ॥

अतीत अनागत कर्मको स्वस्थ होकर वह कह देती है, जिससे सब पर्वतोंकोभी चलायमान कर सकता है ॥ २७ ॥

ॐकारमुखेविद्युज्जिह्वे[1] । ॐहूंचेटकेजयजयस्वाहा (१२)
पूर्वमेवायुतंजप्त्वाकृष्णकन्याभिमंत्रितः ॥
हस्तपादप्रलेपेनसुप्तेवक्तिशुभाशुभम् ॥
त्रैलोक्येयादृशीवार्त्तातादृशंकथयेत्फलम् ॥२८॥

'ॐकारमुखे विद्युजिह्व ॐ हूंचेटके जय जय स्वाहा' (१२) पहले यह मंत्र दश सहस्र जप करके कृष्णकन्यासे अभिमंत्रित कर हाथ पांवको लेप करके सोनेसे शुभ अशुभ त्रिलोकमें जो वार्ता है उसका फलाफल कहती है ॥ २८ ॥

---

१ ओंसुमुखेविद्युज्जिह्वओंहूं चेटकेश २ स्वाहा इति वा पाठः ।

ॐह्रींसःनमोभगवतिकर्णपिशाचिनिचण्डवेगिनि
वदवदस्वाहा (१३)
अथवा ॐक्लींसनामशक्तिभगवतिकर्णपिशाचिनि
चण्डरोपिणिवदवदस्वाहा ॥
मृद्गोमयैर्लिपेद्भूमिंकुशांस्तत्रसमास्तरेत् ॥
पंचोपचारनैवेद्यैर्देवदेवींप्रपूजयेत् ॥ २९ ॥

'ॐ ह्रीं सः नमो भगवति कर्णपिशाचिनि चण्डवेगिनि वद वद स्वाहा' (१३) मिट्टी और गोबरसे पृथ्वीको लीपकर बहु कुश बिछावै और पंचोपचारनैवेद्यसे देव देवीका पूजन करे ॥ २९ ॥

अक्षसूत्रंकरेधृत्वापूर्वमेवायुतंजपेत् ॥
सूर्यकोटिसमांध्यात्वारात्रौपाणितलंजपेत् ॥
अर्द्धरात्रेगतेदेवीवार्त्तांवक्तिशुभाशुभाम् ॥ ३० ॥

अक्षसूत्र (रुद्राक्षमाला) हाथमें रखकर पहले दश सहस्र जपै कोटिसूर्यकी समान प्रकाशमानका ध्यानकरे आधीरातके समय देवी सोनेपर शुभ अशुभ कहती है ॥ ३० ॥

ॐह्रींआगच्छ२चामुंडेश्रींस्वाहा (१४)
रोचनेकुंकुमैःक्षीरैःपद्मचाष्टदलंलिखेत् ॥
नीरंध्रेभूर्जपत्रेचमायाबीजंदलेदले ॥ ३१ ॥

'ओं ह्रीं आगच्छ २ चामुण्डे श्रीं स्वाहा (१४) गोरोचना कुमकुम दूधसे आठ दलका कमल लिखै छिद्ररहित भोजपत्रपर माया-बीज प्रत्येक दल पर ॥ ३१ ॥

लीखित्वाधारयेन्मूर्ध्निइमंमंत्रंततोजपेत् ॥
पूर्वमेवायुतंजप्त्वाचैवंकुर्य्यात्प्रयत्नतः ॥

---

१ सप्ताहं वा इति पाठः ।

अतीतानागतंसर्वंस्वप्नेवदतिदेवता ॥ ३२ ॥

लिखकर शिरपर धारणकर १०००० इस मंत्रको जपै सात दिन पर्यन्त यत्नसे इस कार्यको करे तो सोतेमें भूत भविष्य वर्तमान तीनों कालकी बात कहतीहै ॥३२॥

ॐह्रींचिंचिपिशाचिनिस्वाहा (१५)

अलाबुमूलिकांपुष्येतथासर्पाक्षिमूलिकाम् ॥

ग्राह्याभिमंत्रितायत्नाद्रक्तसूत्रेणवेष्टयेत् ॥

मूर्ध्निबद्धातथासुप्तेवदत्येवशुभाशुभम् ॥ ३३ ॥

'ओं ह्रीं चिंचि पिशाचिनि स्वाहा (१५) पुष्यनक्षत्रमें कडवी तूंबीकी मूल तथा सर्पाक्षिकी मूलको ग्रहणकर लालसूत्रसे वेष्टनकरे इसे शिरपर रखनेसे सम्पूर्ण शुभाशुभ कथन करतीहै ॥ ३३ ॥

ॐनमोभगवतेरुद्रायकर्णपिशाचायस्वाहा (१६)

लक्षमेकञ्जपेन्मंत्रंवटवृक्षतलेशुचिः ॥

बंधूककुसुमैःपश्चान्मध्वाज्यैःक्षीरमिश्रितैः ॥ ३४ ॥

'ॐनमो भगवते रुद्राय कर्णपिशाचाय स्वाहा (१६) पवित्र होकर वटके वृक्षके नीचे एक मंत्र जपै पीछे बंधूक (दुपहरियाका) के फूल मधु घृत दूध मिलाकर ॥ ३४ ॥

दत्तेधूपेदशांशेनजुहुयात्पूर्णयान्वितम् ॥

ततःसिद्धाभवेद्देवीविचित्रावांछितप्रदा ॥ ३५ ॥

कुंडमें दशांश धूप दे हवन करे तब देवी सिद्ध होकर विचित्र जयकी देनेवालीहै ॥ ३५ ॥

ॐविचित्रेविचित्ररूपेसिद्धिंकुरु २ स्वाहा (१७)

जपहोमयोरयंमंत्रः ॥

प्रविश्यनगरस्यांतंलक्षसंख्यंजपेच्छुचिः ॥

पद्मपत्रैःकृतोहोमोघृतोपेतैर्दशांशतः ॥ ३६ ॥

'ॐ विचित्रे विचित्ररूपे सिद्धिं कुरु२ स्वाहा'(१७) यह जप और होमका मंत्र है प्रवेश नगरके अन्तमें एक लक्ष मंत्र जपै कमल-पत्र घृतसे दशांस हवन करै ॥ ३६ ॥

प्रयच्छत्यंजनंहंसीयेनपश्यतिभूनिधिम् ॥
सुखेनतंचगृह्णातिनाविघ्नैःपरिभूयते ॥ ३७ ॥
ॐहंसिहंसिजनेह्रींक्लींस्वाहा (१८)
ॐनमोहंसिनिहंसगतेमांस्वाहाइतिवा ॥
लक्षसंख्यंजपेन्मंत्रंराजद्वारेशुचिःस्थिरः ॥
सक्षीरैर्मालतीपुष्पैर्घृतहोमोदशांशतः ॥ ३८ ॥

ऐसा करनेसे हंसी अंजन देती है जिस्से पृथ्वीका खजाना दीखता है और वह सुखपूर्वक ग्रहणकर ऐश्वर्य से पूर्ण हो जाता है विघ्न नहीं होते 'ॐ हंसिहंसिजने ह्रीं क्लीं स्वाहा नमो हंसिनि हंस-गते मां स्वाहा' चाहै यह मंत्र पढै(१८)पवित्र हो स्थिरतासे राजद्वार में एक लक्ष मंत्र जपै दूध मालतीके फूल और घृतसे दशांश हवन करे ॥ ३८ ॥

मदनायक्षिणीसिद्धिगुटिकांसंप्रयच्छति ॥
तयामुखस्थयादृश्याश्चिरस्थायीभवेन्नरः ॥ ३९ ॥

तो मदनयक्षिणी सिद्ध होकर गुटिकाप्रदान करती है उसको मुखमें रखनेसे मनुष्य अदृश्य और चिरस्थायी होता है ॥ ३९ ॥

ॐऐंमदनेमदनाविद्रावणेअनंगसंगमंदेहिदेहि२क्लींक्लींस्वाहा(१९)

लक्षसंख्यंजपेन्मंत्रंपलाशतरुजेन्धनैः ॥
मधुनाज्यैःकृतहोमेकालकर्णीप्रसीदति ॥ ४० ॥

'ओं ऐं मदने मदनाविद्रावणे अनंगसगं देहिदेहि क्लींक्लीं स्वाहा'(१९) यह मंत्र एक लक्ष ढाकके पेड़के नीचे बैठकर जपे और शहतसे होम करे तो कालकर्णी प्रसन्न हो जाती है ॥ ४० ॥

सैन्यधारास्त्रबंधंचगतिस्तंभकरीभवेत् ॥
सततंतांस्मरेन्मंत्रीविविधैश्वर्य्यकारिणीम् ॥ ४१ ॥

प्रसन्न होकर सैन्यधारा अस्त्रबंध और गतिको स्तंभ करतीहै मंत्र जान्नेवाला अनेक ऐश्वर्य करने वाली भगवतीको निरन्तर स्मरण करै ॥ ४१ ॥

ॐह्रींक्लींकालकर्णिकेठःठःस्वाहा (२०)
स्वगृहेसंस्थितोरक्तैःकरवीरप्रसूनकैः
लक्षमावर्त्तयेन्मंत्रंहोमंकुर्याद्दशांशतः ॥ ४२ ॥

'ओं ह्रीं क्लीं कालकर्णिके ठःठःस्वाहा'(२०) अपने घरमें स्थित लाल कनेरके फूलोंसे अर्चन करे और लक्षमंत्र जप करके उसके दशांश हवन ॥ ४२ ॥

होमेकृतेभवेत्सिद्धिर्लक्ष्मीनाम्नीचयक्षिणी ॥
रसंरसायनंदिव्यंविधानंचप्रयच्छति ॥ ४३ ॥

करनेसे लक्ष्मी नाम यक्षिणी सिद्ध होजातीहै इसे दिव्य रसायन और विधान को प्रदान करती है ॥ ४३ ॥

ॐऐंलक्ष्मींश्रींकमलधारिणींकलहंसीस्वाहा (२१)
रक्तमाल्याम्बरोमंत्रंचतुर्द्दशीदिनेजपेत् ॥
ततःसिद्धाभवेद्देवीशोभनाभोगदायिनी ॥ ४४ ॥

'ओं ऐं लक्ष्मींश्रीं कमलधारिणी कलहंसी स्वाहा (२१) लाल माला और वस्त्र धारण कर यह मंत्र चतुर्दशीके दिन जपै तब शोभना भोगदायिनी देवी प्रसन्न होजातीहै ॥ ४४ ॥

ॐअशोकपल्लवाकारांकरतलेशोभनींश्रींक्षःस्वाहा (२२)
पुण्याशोकतलंगत्वाचन्दनेनसुमण्डलम् ॥
कृत्वादेवींसमभ्यर्च्यधूपन्दत्वासहस्रकम् ॥ ४५ ॥

'ओं अशोकपल्लवाकारांकरतले शोभनीं श्रींक्षःस्वाहा (२२) पवित्र अशोकवृक्षके नीचे जाकर चन्दनसे सुन्दर मण्डलकर देवीको पूज धूप दे ॥ ४५ ॥

मंत्रमावर्तयेन्मासंनक्तभोजीनरस्तदा ॥
रात्रौपूजांशुभांकृत्वाजपेन्मंत्रंनिशार्द्धके ॥ ४६ ॥

सहस्र मंत्र सदा जपै रात्रिके समय भोजनकरै रात्रिमें अच्छी प्रकार पूजाकर अर्धरात्रिके समय मंत्र जपै ॥ ४६ ॥

नटींदेवीसमागत्यनिधानंरसमंजनम् ॥
ददातिमंत्रिणेमंत्रंदिव्ययोगंचनिश्चितम् ॥ ४७ ॥

तब नटी देवी प्राप्त होकर निधियुक्त रस अंजन मंत्रीको देतीहै और दिव्य योग तथा मंत्र देतीहै यह निश्चयहै ॥ ४७ ॥

ॐह्रींक्रींनटिमहानटिसरूपवतिस्वाहा (२३)
स्रक्सुगंधिगृहस्थानेचन्दनेनसुमंडलम् ॥
कृत्वाहस्तप्रमाणेनपूजयेत्तत्रपद्मिनीम् ॥ ४८ ॥

'ओं ह्रीं क्रीं नटि महानटि स्वरूपवति स्वाहा (२३) माला सुगन्ध द्रव्य और चन्दनसे अपने स्थानमें सुंदर मंडल बनावे एक हाथके प्रमाणमें मण्डल बनाय उसमें पद्मिनीका पूजन करै ॥ ४८ ॥

धूपंसगुग्गुलुंदत्वाजपेन्मंत्रसहस्रकम् ॥
मासमेकन्ततःपूजांकृत्वारात्रौपुनर्जपेत् ॥ ४९ ॥

गुग्गुलुसहित धूप देकर एक सहस्र मंत्र जपै इस प्रकार एक महीने पूजाकर रात्रिमें फिर जप करै ॥ ४९ ॥

अर्द्धरात्रेगतेदेवीसमागत्यप्रयच्छति ॥
निधानंदिव्ययोगंचतस्मान्मंत्रीसुखीभवेत् ॥ ५० ॥

आधीरात बीतने पर देवी आनकर निधि और दिव्य योग देती है उससे मंत्र जपने वाला सुखी होता है ॥ ५० ॥

---

१ वस्त्रं च इति वा पाठः ।

ॐह्रीं (वाक्रीं) पद्मिनीस्वाहा (२४)

'ओंह्रीं पद्मिनी स्वाहा' (२४)

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकायां यक्षिणीसाधनन्नाम पंचदशोपदेशः ॥ १५ ॥

अथवीर्यस्तंभनवाजीकरणादिरसस्यप्रयोगसिद्ध्येरसादिशोधनम् ॥

पलान्न्यूनंनकर्तव्यंरससंस्कारमुत्तमम् ॥
सद्योच्चारणमंत्रेणरसराजस्यपूजनम् ॥ १ ॥
ॐअघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः ॥
सर्वतःसर्वसर्वेभ्योनमोस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॥ २ ॥

एक पलसे न्यून पारेका संस्कार न करे और सद्योच्चारणमंत्रसे रसराजका पूजन करे ॥ १ ॥ ओं अघोरेत्यादि मंत्र है ॥ २ ॥

कुमार्य्याश्चनिशाचूर्णैर्दिनंसूतंविमर्दयेत् ॥
पातयेत्पातनायंत्रेसम्यक्शुद्धोभवेद्रसः ॥ ३ ॥

घीकुवार और हलदीके चूर्ण से एक दिन पारेको खरल करे और पातनायंत्रसे उसको पातन करे तो भली प्रकारसे शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥

अथवाहिंगुलात्सूतंग्राहयेत्तन्निगद्यते ॥
पारिभद्ररसैःपेष्यंहिंगुलंयाममात्रकम् ॥ ४ ॥

अथवा हिंगुलमेंसे पारा निकाले उसके निकालने की विधि कहते हैं निम्बके रसमें एक पहर हिंगुलकी डलीको खरल करे ॥ ४ ॥

जम्बीराणांद्रवैर्वाथपात्यंपातालयंत्रके ॥

तंसूतंयोजयेद्योगेसप्तकंचुकवर्जितम् ॥ ५ ॥

अथवा जम्बीरी नीबूके रसमें खरल कर पातालयंत्रसे पातन करे तो सात कैंचलीसे वर्जित हुए उस पारेको कार्यमें प्रयुक्त करे ॥५॥

सूतस्यदशमांशन्तुगंधंदत्वाविमर्दयेत् ॥
जंबीरोत्थद्रवैर्यामंपात्यंपातालयंत्रके ॥ ६ ॥

पारेसे दशमांश गंधक जलाकर खरल करे तथा जंभीरीके रसमें एक पहर मर्दन कर पातालयंत्रमें पातन करे ॥ ६ ॥

पुनर्मर्द्यंपुनःपात्यंसप्तवारंविशुद्धये ॥
इत्येवंशुद्धयःख्यातास्तासामेकांतुकारयेत् ॥ ७ ॥

इति रसशोधनम् ॥

इस प्रकार फिर मर्दन कर फिर पातन करे सात वार विशुद्धिके निमित्त कृत्य करे इस प्रकार शुद्धि कही है इनमें कोई एक करे ॥ ७ ॥

इति रस सोधनम् ॥

अथ पातालयन्त्रम् ॥

उपर्यापोह्यधोवह्निर्मध्येचरसपिष्टिका ॥
क्रमादग्निर्विदध्यात्तत्पातनायंत्रमुच्यते ॥ ८ ॥

इति पातालयंत्रम् ॥

ऊपर जल नीचे अग्नि बीचमें रसकी पोटली रक्खै, क्रमसे अग्नि दे पातन करे पीछे चित्र दिया है ॥ ८ ॥

इति पातालयंत्रम् ॥

अथ रसमारणम् ॥

मुक्तंसर्वस्यसूतस्यतत्तखल्वेविमर्दनम् ॥

अजाशकृत्तुषाग्निन्तुभूगर्तेत्रितयंक्षिपेत् ॥ ९ ॥
तस्योपरिस्थितंखल्वंतप्तखल्वमिदंभवेत् ॥
खल्वंलोहमयंशस्तंपाषाणोष्णमथापिवा ॥ १० ॥
अजीर्णंचाप्यबीजंवायःसूतंघातयेन्नरः ॥
ब्रह्महासदुराचारोमंत्रद्रोहीमहेश्वरि ॥ ११ ॥

सब प्रकार पारेको तप्त खल्वमें मर्दन करना श्रेष्ठ कहा है बकरीकी मसेंगन तुषाग्निसे तीन दिन पृथ्वीके गर्तमें पाचित करे, उसके ऊपर लोहेका खरल रक्खै यह तप्त खल्व कहलाता है, अच्छा खरल लोहे का है, वह न होतो पाषाणकाभी उत्तम है विना जीर्ण किये अर्थात् अबीज और अजीर्ण पारा जो मनुष्य घाते करता है, हे महेश्वरि ! वह ब्रह्महत्या करनेवाला दुराचारी और महाद्रोही है ॥ ११ ॥

रामठंपंचलवणंतथाक्षारचतुष्टयम्॥
त्रिकटुंशृंगवेरंचमातुलुंगरसप्लुतम् ॥ १२ ॥
पिंडमध्येरसंदत्वास्वेदयेत्सप्तवासरान् ॥
सारनालेतुमृद्भाण्डेग्रासार्थीजायतेध्रुवम् ॥ १३ ॥
एतदेवरसंयत्नाज्जंबीरद्रवसंयुतम् ॥
दिनैकंधारयेद्धर्मेमृत्पात्रेवामृतोभवेत् ॥ १४ ॥
ग्रासंतत्रैवदातव्यंस्वर्णशुद्धिःशनैःशनैः ॥
चतुष्षष्ट्यादितुल्यांशंदेयंजीर्णञ्चचालयेत् ॥१५॥

हींग और पांचोंनोन चारों खार सोंठ मिरच पीपल अदरख मातुलुंग (बीजपूर बिजौरे) के रससे पीस इसको एक अंगुल के

---

१ जारण ।

गाढे स्वच्छ कपड़ेमें लेप कर उसके मध्यमें पारेको रख कर सात दिन स्वेदन (औटावे) संस्कार करे और फिर मट्टीके बरतनमें रख कांजीके साथ ग्रास स्वीकार करता है इस प्रकारसे यत्नपूर्वक उस रसको जंबीरीके रसमें खरल कर एक दिन धूपमें सुखाय फिर मट्टीके बरतनमें सुवर्ण के शुद्ध ग्रास शनैः२ देने चाहिये और चौसठवा भाग शुद्ध सुवर्णका दे अर्थात् ॥ १५ ॥

चतुष्षष्ट्यंशकंचादौद्वात्रिंशत्तदनन्तरम् ॥
पुनर्विंशतिमंग्राह्यंद्विरष्टंद्वादशंक्रमात् ॥ १६ ॥

पहले चौंसठ मिलाकर पीछे बत्तीस मिलाकर फिर सोलह फिर बारह क्रमसे ग्रास देकर खरल करे ॥ १६ ॥

अष्टमांशंचतुर्थंवाप्यर्द्धंचैवसमांशकम् ॥
प्रतिग्रासेतप्तखल्वेदिनमम्लेनमर्दयेत् ॥ १७ ॥

फिर आठवां अंश चौथा अंश आधा अथवा बराबर दे, प्रति ग्रासको तप्त खरलमें अम्ल वर्गके साथ एक दिन खरल करे ॥१७॥

तंक्षिपेच्चारणायंत्रेजंबीरंनीरसंयुतम् ॥
तद्यंत्रंधारयेद्धर्मेदिनंस्याज्जारितोरसः ॥ १८ ॥

जंबीरीके रसके सहित उसको चारणायंत्रमें डाले और उसको धूपमें रक्खे तो एक दिनमें रस बने ॥ १८ ॥

तंछागक्षीरगोमूत्रस्नुक्क्षीराम्लैःप्रलेपिते ॥
दृढवस्त्रेबहिर्बध्वामृद्घटेस्वेदयेद्बुधः ॥ १९ ॥

फिर उसको छाग गोमूत्र थूहरके दूध अम्ल वर्गसे लिप्त करके वस्त्रमें दृढ बांधकर मृत्तिकाके घटमें स्वेदन करे ॥ १९ ॥

कांजिकाक्षारमूत्रैर्वादोलायंत्रेत्वहर्निशम् ॥
तमुद्धृतंरसंदाविखल्वेसंशोधयेत्क्षणात् ॥ २० ॥

कांजी क्षार और गोमूत्रके साथ दोलायंत्रमें एक दिनरात स्थित करे फिर उसमेंसे रसको निकाल कर खरलमें शुद्ध करे॥२०॥

संमर्द्यपूर्ववत्खल्वेयंत्रेलिप्तपुटेपुनः ॥
क्रमेणानेनदेवेशित्रिभिर्ग्रासैःप्रजीर्यते ॥ २१ ॥

फिर पूर्ववत् खरल करे और वस्त्र आदिमें लपेट कर पुट दे, हे देवी ! इस क्रमसे तीन ग्रासोंसे जीर्ण हो जाता है ॥ २१ ॥

यावत्तेनयदातस्मात्तावत्तेनविमर्दयेत् ॥
प्रतिग्रासेतप्तखल्वेयथाशक्त्याचजारयेत् ॥ २२ ॥

जबतक ठीक नहो बराबर मर्दन करता रहै और प्रतिग्रासमें तप्त खरलमें यथाशक्ति जलावे ॥ २२ ॥

तंजीर्णंमारयेत्सूतंमारणंकथ्यतेद्रवैः ॥
(?) अंचद्भिःपिष्ट्वाखल्वेविमर्दयेत् ॥ २३ ॥
सूतंगंधकसंयुक्तंदिनान्तेतान्निरोधयेत् ॥
पुटयेद्भूधरेयंत्रेदिनान्तेतत्समुद्धरेत् ॥ २४ ॥

उस जीर्ण हुए सूतको मारे, अब द्रवद्वारा उसका मारण कहते हैं-उसको रसोंके साथ खरलमें डालकर घोटे पारे और गंधककी कजली कर पुट देकर भूधरयंत्रमें पचानेसे पारा मर जायगा अथवा ॥ २४ ॥

कृष्णधत्तूरतैलेनसूतोमर्द्योनियामकम् ॥
दिनैकंतत्पचेद्यंत्रेकच्छपाख्येनसंशयः ॥ २५ ॥

एक पैसे भर सिद्ध पारेमें काले धतूरेका रस डालकर एक दिन घोटे एक दिन नियामक औषधी (बंदालका रस आकका दूध कबूतरकी वीट गोली हंसपादिका रस इन्द्रायन के फलका रस) इनमें घोटे पीछे गोला बनाय कच्छपयंत्रमें रख आंच दे तो ॥२५॥

मृतःसूतोभवेत्सद्यःसर्वरोगेषुयोजयेत् ॥

रसगंधंसमंमर्द्यंदिनंनिर्गुण्डिकाद्रवैः ॥ २६ ॥

निः सन्देह पारा मरे इस्से सबीज निर्बीज पारा मरता है इसे सबरोगोंमें दे पारे और गंधक को एकदिन निर्गुण्डीके रसमें मर्दन कर ॥ २६ ॥

चक्रमूषान्वितेध्मातैर्भस्मसूतंभवेत्पलम् ॥
टंकणंमधुलाक्षाचकुर्णागुंजायुतोरसः ॥ २७ ॥
मर्दयेद्भृंगजंद्रावैर्दिनैकंचांधयेत्पुनः ॥
ध्मातोभस्मत्वमाप्नोतिशुद्धःस्फटिकसन्निभः॥२८॥

मूषामें रख कर फूकनेसे पारेकी भस्म हो जायगी सुहागा शहत लाख पीपल चौंटली भांगरा इनके रसमें पारेको खरल कर एक दिन अंधरा करे फिर फूक देनेसे शुद्ध स्फटिककी समान भस्म होती है ॥ २८ ॥

द्विपलंसूतराजस्यपलैकंगंधकस्यच ॥
मर्दयेन्मार्कवद्रावैर्दिनमेकंनिरन्तरम् ॥ २९ ॥

दोपल पारा दोपल गंधक इनको निरन्तर एक दिन भांगरे के रसमें मर्दन करे ॥ २९ ॥

रुध्वातद्भूधरेयंत्रेदिनैकंमारयेत्पुटात् ॥
इत्येवंजारितेसूतेमारणंपरिकीर्तितम् ॥ ३० ॥

और भूधरयंत्रमें उसको एक दिन पुटित कर मारे इसप्रकार जारित पारेका मारण कहा है ॥ ३० ॥

अथवाग्रासयोग्यंतुनिहन्यात्सान्वितंरसम् ॥
सूतकंघनसत्वंचमर्दयेत्कंगुणीद्रवैः ॥ ३१ ॥

अथवा ग्रासयोग्य रसको (पारेको) कंगुणीद्रवसे मर्दन करे ॥ ३१ ॥

दिनैकंगोलकंतच्चशोषयेदातपेखरे ॥
गर्भयंत्रगतंपाच्यात्रिदिनंहितुषाग्निना ॥ ३२ ॥

इसप्रकार एक दिन मर्दन कर उसका गोला बनाय तीक्ष्ण धूपमें सुखावै फिर गर्भयंत्रमें रखकर तीन दिन तुष अग्निसे पचावै ॥३२॥

करीषाग्नौदिवारात्रौपचेत्तद्भस्मतांनयेत् ॥
सूतंस्वर्णंव्योमशंखंसमंरंभाद्रवैर्दिनम् ॥ ३३ ॥
मर्दयेद्बीजसंयुक्तंचार्षिचारणयंत्रके ॥
सर्वकैर्मूलिकाद्रावैर्दिनमेकन्तुमर्दयेत् ॥ ३४ ॥

एक दिनरात करीष (उपले; गोबर सूखा) अग्निमें पचावै तो पारेकी भस्म होजायगी पारा सुवर्ण अभ्रक केलेका रस और बीज इनके साथ मर्दन करै तथा चारणयंत्रमें पारेको मूलिका रसोंके साथ एक दिन मर्दन करै ॥ ३४ ॥

गर्भयंत्रगतंपाच्यंम्रियतेपूर्ववद्रसः ॥
ब्रह्मदंडीमेघनादोचित्रकंकटुतुम्बिका ॥ ३५ ॥
वज्रवल्लीबलाकन्यात्रिकुटार्कस्नुहीपयः ॥
कंदोरंभाचनिर्गुंडीलाजाजातीजयंतिका ॥ ३६ ॥

और गर्भयंत्रमें रखकर पारेको पचावै तो वह पूर्ववत् मरजाताहै ब्रह्मदण्डी चौलाई चीता कडवी तूंबी वज्रवल्ली खरैंटी घीकुवार सोंठ मिर्च पीपल आक थूहरका दूध रंभाकंद निर्गुण्डी लाजा (लज्जावंती) जाती जयन्ती ॥ ३६ ॥

विष्णुक्रान्ताहस्तिशुण्डीदद्रुघ्नोभृंगराट्पटुः ॥
गुडूचीलांगलीनीरक्षणाकालीव्यहोरगा ॥ ३७ ॥

विष्णुक्रान्ता हाथीशुण्डी पमाड और भांगरा पितपापडा गिलोय कलिहारी सुगंधवाला नीली कटसरैया पीपल सर्पाक्षी ॥ ३७ ॥

काकमाचीचदन्तीचएतापारदमारकाः ॥
व्यस्ताःसमस्तावासर्वादेयाह्यष्टदशाधिकाः
उक्तस्थानेप्रयोक्तव्यारसराजस्यसिद्धये ॥ ३८ ॥

काकमाची दन्ती यह सब समस्त वा पृथक् २ पारेकी मारनेवाली अठारह मूलिका हैं रसराजकी सिद्धिके निमित्त निज कथित स्थानमें प्रयोग करनी चाहिये ॥ ३८ ॥

अथ गर्भयंत्रप्रकारः ॥

चतुरंगुलदीर्घातुमृन्मयीदृढमूषिका ॥
अंगुलामध्यविस्तारेवर्तुलंकारयेन्मुखम् ॥ ३९
लोनस्यविंशतिर्भागाएकोभागस्यगुग्गुलुः ॥
सुश्लक्ष्णंपेषयित्वातुतोयंदत्वापुनःपुनः ॥ ४० ॥
मुखालेपंततःकुर्याद्रसंतत्रविनिःक्षिपेत् ॥
अंधयित्वापुटंदेयंगर्भयंत्रमिदंभवेत् ॥ ४१ ॥

गर्भयंत्रप्रकार–चार अंगुल दीर्घ और तीन अंगुल चौडी मिट्टीकी दृढ मूष बनावे उसका गोल मुख करै, लोनके वीसभाग गूगल एक भाग महीन पीस मूषापर दृढलेप करै लवणादि मिट्टीमें प्रथम पारेकी पिट्ठी रक्खै पीछे मुख बंदकर लेप करै पीछे जमीनमें गढा खोदकर तुषाग्निसे मंद मंद स्वेदन करै तो एक दिनरात्रि वा तीनरात्रिमें पारा भस्म होवे यह गर्भयंत्रविधान है ॥ ४१ ॥

इति रसमारणम् ॥

अथ हिंगुलशुद्धिः ॥

मेषीक्षीराम्लवर्गाभ्यांदरदंचघर्मभावितम् ॥
सप्तवारंप्रयत्नेनशुद्धिमायातिनिश्चितम् ॥ ४२ ॥

हिंगुलको भेड़के दूध और अम्लवर्गकी घर्ममें सात भावना देनेसे हिंगुल शुद्ध होता है ॥ ४२ ॥

इति हिंगुलशुद्धिः ॥

अथ गंधकशुद्धिः ॥

शुक्लपक्षसमच्छायोनवनीतसमप्रभः ॥
मसृणःकठिनःस्निग्धःश्रेष्ठोगंधकउच्यते ॥ ४३ ॥

शुक्लपक्षकी समान छायावान् मक्खनकी समान कान्तिमान् एकसा कठिन और चिकना श्रेष्ठगंधक होता है ॥ ४३ ॥

साज्यंभाण्डेपयःक्षिप्त्वामुखंवस्त्रेणवेष्टयेत् ॥
तत्पूर्वंचूर्णितंगंधंक्षिप्त्वातस्योपरिन्यसेत् ॥ ४४ ॥
कपालमेकमुत्तानंगंधकस्यावियोगितत् ॥
दुग्धभाण्डंन्यस्यभूमौदेयमूर्ध्वंपुटंलघु ॥ ४५ ॥

घी डालकर और दूध डालकर उस हांडीका मुख वस्त्रसे ढकदे आमलासार गंधक १६ तोले पीसकर घीमें गलावै गलनेपर वस्त्रपर डालदे गंधक उस वस्त्रसे टपककर दूधमें जम जायगी ॥४४॥४५॥

ततःक्षीरेद्रुतंगंधंशुद्धंयोगेषुयोजयेत् ॥
गंधंघृतेविपक्तव्यंयावत्तैलनिभंभवेत् ॥ ४६ ॥

तब उस दूधसे निकली हुई शुद्ध गंधकको कार्यमें लावै गंधकको घृतमें तबतक पकावै जबतक कि, वह तेलकी समान हो जाय ॥ ४६ ॥

वस्त्रेणान्तरितंकृत्वाचालयेत्रिफलाम्भसि ॥
एवंगंधकशुद्धिःस्यात्ततोयोगेषुयोजयेत् ॥ ४७ ॥

उसे फिर वस्त्रमें छानकर त्रिफलेके जलमें डालदे इस प्रकारसे गंधक शुद्धकर योगोंमें लगाना उचित है ॥ ४७ ॥

इति गंधकशुद्धिः

अथ अभ्रकशुद्धिः ॥

कृष्णःपीतःश्वेतरक्तोयोग्योयोगरसायने ॥
पिनाकंदर्दुरंनागंवज्रंचेतिचतुर्विधम् ॥ ४८ ॥

काला पीला श्वेत लाल अभ्रक रसायनके योग्यहैं, पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र यह चार भेद काले अभ्रकके हैं ॥ ४८ ॥

पिनाकाद्यास्त्रयोवर्ज्यावज्रंयत्नात्समाहरेत् ।
मुंचत्यग्नौचनिक्षिप्तःपिनाकोदलसंचयम् ॥ ४९ ॥

इनमें पिनाकादि तीन त्यागन करके वज्र अभ्रकको यत्नसे ग्रहण करै, पिनाक अभ्रक अग्निमें डालनेसे दलसंचय अर्थात् पत्तोंको छोडता है ॥ ४९ ॥

अज्ञानाद्भक्षणात्तस्यमहादुःखप्रदोभवेत् ॥
दर्दुरोग्नौविनिःक्षिप्तःकुरुतेदर्दुरध्वनिम् ॥ ५० ॥

इसको अज्ञानसे खानेसे महादुखदायक कुष्ठ होता है, दर्दुर अभ्रक अग्निमें डालनेसे मेडककीसी ध्वनि करता है ॥ ५० ॥

तच्चभक्षणमात्रेणनानारोगंप्रयच्छति ॥
नागश्चाग्निस्थितःसद्यःफूत्कारंचविमुंचति ॥ ५१ ॥

उसके खानेसे अनेक रोग होते हैं, नाग अभ्रक अग्निमें डालनेसे अग्निवत् फूत्कार करताहै ॥ ५१ ॥

सचदेहगतोनित्यंव्याधिंकुर्याद्भगंदरम् ॥
वज्राभ्रकंतुवह्नौचनकिंचिद्विक्रियांव्रजेत् ॥ ५२ ॥

वह खानेसे भगन्दर रोग होता है, वज्राभ्रक अग्निमें रखनेसे कुछ भी विकारको प्राप्त नहीं होता है ॥ ५२ ॥

तस्माद्वज्राभ्रकंयोज्यंव्याधिवार्धक्यमृत्युजित् ॥
धमेद्वज्राभ्रकंवह्नौयावदग्निनिभंभवेत् ॥ ५३ ॥

इस कारण व्याधि बुढापा मृत्युका दूर करनेवाला वज्राभ्रक प्रयुक्त करे, उसको अग्निमें फूंके जब यह अग्निकी समान होजाय५३

गोक्षीरेचततःसेच्यंगोक्षीरेचपुनःपुनः ॥
भिन्नपात्रेचतत्कृत्वामेघनादद्रवाम्बुना ॥ ५४ ॥

तब इसपर गौका दूध वारंवार छिडके अर्थात् इसमें बुझावै फिर इसे अलग रख चौलाईके रसमें ॥ ५४ ॥

भावयेदष्टयामंचजायतेदोषवर्जितम् ॥
अथवाभ्रस्यभागौद्वौमुस्ताचैकंजलैस्सह ॥ ५५ ॥

आठ पहर भावना दे तो दोषवर्जित होता है अथवा अभ्रक दो भाग मोथेका और जलका एक भाग यह ॥ ५५ ॥

त्रिदिनंस्थापयेत्पात्रेततःसूक्ष्मंप्रपेषयेत् ॥
एतदभ्रकचूर्णन्तुनिस्तुषंव्रीहिसंयुतम् ॥ ५६ ॥

तीन दिन पात्रमें स्थापन कर फिर सूक्ष्म पीसले वह अभ्रकका चूर्ण भूसी रहित जौके सहित ॥ ५६ ॥

वस्त्रेणबध्वासारनालेभांडमध्येविमर्दयेत् ॥
हस्ताभ्यांस्वयमायातियावदम्लंतुरेणुताम् ॥ ५७ ॥

उसको वस्त्रमें बांध कांजीके साथ पात्रमें मर्दन करै हाथसे तब तक मलै जब तक वह सर्वथा चूर्ण होजाय ॥ ५७ ॥

अदोषाभ्रगतंशुद्धंशुष्कंधान्याभ्रकंभवेत् ॥
धान्याभ्रकंरविक्षीरेरविमूलद्रवैश्चवा ॥ ५८ ॥

तब वह दोषरहित शुभ्र अभ्रक होती है धान्यअभ्रककी आकके दूधमें वा आककी जडके रसमें ॥ ५८ ॥

दिनमर्धंपुटेपाच्यात्सप्तधैनंमृतंभवेत् ॥
धान्याभ्रकस्यभागैकंद्वौभागौटंकणस्यतु ॥ ५९ ॥

आधेदिन पुट देकर पाचित करै तो ऐसा सातवार करनेसे अभ्रक मरता है धान्याभ्रकका एक भाग सुहागा दो भाग ॥ ५९ ॥

पिष्ट्वातदंधमूषायांरुद्ध्वातीव्राग्निनाधमेत् ॥
स्वभावशीतलंचूर्णंसर्वयोगेषुयोजयेत् ॥ ६० ॥

दोनोंको पीस अंधमूषामें रख धान्याभ्रक बंदकर तीव्र अग्नि दे जब स्वांगशीतल होजाय तब निकाल चूर्णकर सब योगोंमें दे ॥ ६० ॥

इतिअभ्रकशुद्धिः ॥

अथामृतीकरणम् ॥

सर्वेषांघातितानान्तुअमृतीकरणंशृणु ॥
त्रिफलोत्थकषायस्यपलान्यादायषोडश ॥ ६१ ॥

अब सबका अमृतीकरण सुनो, त्रिफलेका काढा सोलह पल ॥ ६१ ॥

गोघृतस्यपलान्यष्टौमृताभ्रस्यपलान्दश ॥
एकीकृत्वालोहपात्रेपाचयेन्मृदुवह्निना ॥ ६२ ॥

गौका घी आठ पल अभ्रक दश पल यह सब एकत्र कर कढाईमें मृदु अग्निसे पकावै ॥ ६२ ॥

द्रवैर्जीर्णंसमादायसर्वयोगेषुयोजयेत् ॥ ६३ ॥

जब रस जल जाय अभ्रकमात्र शेष रहे तब सब योगोंमें युक्त करे ॥ ६३ ॥

इति अमृतिकरणम् ॥

अथ अभ्रकसत्वपातनम् ॥

चूर्णीकृतंगगनपत्रमथारनाले
धृत्वादिनैकमथशोष्यचसूरणस्य ।
भाव्यंरसस्तदनुमूलरसेकदल्या-
वेदांशटंकणयुतंशफरीसमेतम् ॥ ६४ ॥

अभ्रकके चूर्णको एक दिन कांजी और एक दिन जमीकंदके रसमें भिजोदे पीछे केलाकंदके रसमें भावनादे चतुर्थांश सुहागा और छोटी मछली मिलाय ॥ ६४ ॥

पिंडीकृतंतुबहुधामहिषीमलेनसंशोष्यकोष्टगतमाशु धमेद्धताग्नौ ॥ भस्त्रीद्वयेनचततोवमतेहिसत्वंपाषाणधातुगतभात्रनसंशयोस्ति ॥ ६५ ॥

इति अभ्रकसत्वपातनम् ॥

भैंसके गोबरके साथ छोटी छोटी गोली बनावै फिर धूपमें सुखाय कोष्टिकामें रख बंकनाल धौंकनीसे महा अग्नि देवै तो सत्व निकले यह महारसायन जारण योग्य तथा सब रोगोंको दूर करे है॥ ६५॥

इतिअभ्रकसत्वपातनम् ॥

अथ मनःशिलाशुद्धिः ॥

जयन्तीभृंगराजोत्थंरक्तागास्तिरसःशिलाम् ॥ ६६ ॥
दोलायंत्रेपचेद्यामंयामंछागोत्थमूत्रकैः ॥
क्षालयेदारनालेनसर्वयोगेषुयोजयेत् ॥ ६७ ॥

हलदी भाँगरा अगस्तिया इनके साथ मनशिलको दोलायंत्रमें छागमूत्रके साथ एक पहरतक पकावै तो शुद्धहो पीछे कांजीसे प्रक्षालन कर सब योगोंमें प्रयोगकरै ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

इति मनःशिलाशुद्धिः ॥

अथ हरतालशुद्धिः ॥

तालकंपोटलींबध्वासचूर्णकांजेकेक्षिपेत् ॥
दोलायंत्रेणयामैकंततःकूष्माण्डजेरसे ॥ ६८ ॥

हरतालको चूर्णकर पोटली बांध कांजीमें डालदे और एक पहर तक दोलायंत्रमें पचावै फिरपेठेके रसमें ॥ ६८ ॥

तिलतैलेपचेद्यामंयामंचित्रफलाजलैः ॥
एवंयंत्रेचतुर्याममंपाच्यंशुद्धयतितालकम् ॥ ६९ ॥

तिलके तेलसे एक पहरतक पकावै फिर एक पहर त्रिफलाजलसे पाचित करै तो चार पहरमें हरताल शुद्ध होजाता है ॥६९॥

इति हरतालशुद्धिः ॥

अथ तुत्थशुद्धिः ॥

विष्ठयामर्दयेत्तुत्थंमार्जारककपोतयोः ॥
दशांशंटंकणंदत्वापाच्यंमृदुपुटेतुयः ॥ ७० ॥

तुत्थको बिलाव और कबूतरकी बीटमें मर्दन करै उससे दशमां हिस्सा सुहागा डालकर मृदु पुटमें पचावै ॥ ७० ॥

पुटंदद्यापुटंक्षौद्रेदेयंतुत्थाविशुद्धये ॥

तथा इसकी शुद्धिके निमित्त दही और शहतकी पुट देनी चाहिये ॥ इति तुत्थशुद्धिः ॥

अथ कसीसशुद्धिः ॥

घर्मेंशुध्यातिकाशीशंदिनंजंबीरभावितम् ॥ ७१ ॥

एक दिन जंभीरीके रसमें भावना देकर धूपमें सुखावै तो शुद्ध होवै ॥ ७१ ॥

शंखनाभंचसंदग्ध्वाभाव्यमम्लेनसप्तधा ॥
प्रक्षाल्यंग्राहयेत्तावच्छुद्धिमायातिनान्यथा ॥ ७२ ॥

शंखनाभि (नाभिशंख) को जलाकर सातवार अम्ल पदार्थसे भावना देकर प्रक्षालन करै तो शुद्ध हो जाताहै इसमें सन्देह नहीं ॥ ७२ ॥

इतिकाशीशशंखनाभिशुद्धिः ॥

अथ शातकुंभादिधातुशोधनम् ॥

मृत्तिकामातुलुंगाम्लैःपंचवासरभाविता ॥
सभस्मलवणैर्हेमशोधयेत्पुटपाकतः ॥ ७३ ॥

पांच प्रकारकी मृत्तिका जम्बीरी अम्ल इनसे पुटपाकद्वारा सुवर्णको शोधे (?) ॥ ७३ ॥

वल्मीकमृत्तिकाधूमंगैरिकंचेष्टिकापटुः ॥
इत्येतामृत्तिकाःपञ्चजम्बीरैरारनालकैः ॥ ७४ ॥

बँबईकी मिट्टी धूम्र गेरू और ईंट यह पांच मृत्तिका जम्बीरीनीबूके रस और कांजीमें खरल कर ॥ ७४ ॥

पिष्ट्वालिप्तंस्वर्णपत्रंपुटेनपरिशुध्यति ॥
नागेनटंकणेनैवधूमेशुध्यातिरौप्यकम् ॥ ७५ ॥

उसके द्वारा स्वर्णके पत्तोंपर लेपकर पुटपाक करनेसे सुवर्ण भले प्रकारसे शुद्ध होजाताहै रूपा, वंग और सुहागेके साथ गलानेसे शुद्ध होता है ॥ ७५ ॥

खटिकालवणंतक्रैरारनालैश्चपेषयेत् ॥
तेनलिप्तंताम्रपत्रंतप्तंतप्तंनिषेचयेत् ॥ ७६ ॥

खडिया और सैंधानोंनको तक्र और कांजीमें पीसकर तांबेके पत्रोंपर लेप कर वारंवार आगमें तपाकर शुद्धकरै ॥ ७६ ॥

खदिरारनालतक्रान्तनिर्गुण्डीचविशुद्धये ॥
रोहणंराजवंचैवतृतीयंचपुटीरकम् ॥
इतितीक्ष्णंत्रिधातंचशोधयेद्योगसिद्धये ॥ ७८ ॥

खैर तथा कांजी मट्ठा और निर्गुण्डी राजवृक्ष रोहिण और पुटीरकका प्रयोग करना चाहिये इस प्रकार तीक्ष्ण त्रिधातको सिद्धकर योगोंमें लगावै ॥ ७८ ॥

अथ तुत्थटंकणंकाचलोहशोधनम् ॥

शशरक्तेनसंलिप्तंत्रिवारंचाग्निपाचितम् ॥
तुत्थटंकणकाचैर्वाधामितंशुद्धिमृच्छति ॥ ७९ ॥

तीनबार रक्तवर्गकी भावना देकर तीनबार अग्निमें पचावै बार बार लेपकर अग्निमें रखनेसे नीलाथोथा सुहागा काच यह तापसे शुद्ध होता है (?) ॥ ७९॥

अथवालोहचूर्णन्तुगोमूत्रैःषड्गुणैःपचेत् ॥
प्रक्षालयेदारनालैःशोष्यंशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ ८० ॥

अथवा लोहचूर्ण छः गुने गोमूत्रमें पकाकर पीछे कांजीसे प्रक्षालन कर धूपमें सुखानेसे शुद्ध होता है ॥ ८० ॥

सर्वेषांमतेमारणम् ॥

शुद्धसूतंसमंस्वर्णंखल्वेकुर्याच्चगोलकम् ॥
अधोर्द्धंगंधकंदत्वासर्वतुल्यंनिरुध्यच ॥ ८१ ॥
त्रिंशद्वनोपलैर्देयंपुटान्येवचतुर्दश ॥
निरुत्थंजायतेभस्मगंधंदेयंपुनःपुन ॥ ८२ ॥

शुद्ध पारेके समान सोना लेकर खरल करे गोली बनावै उससे आधा गंधकका चूर्ण गोलेके नीचे धर गोलेको मूषामें रख

वीस वनकी उपलियोंके द्वारा चौदह बार पुट देनेसे स्वर्णकी भस्म बन जाती है हरेक पुटमें गंधकका चूर्ण देताजाय ॥८१॥ ८२ ॥

रौप्यंपत्रंचतुर्भागंगंधंभागेनलेपयेत् ॥
जंबीरनीरपिष्टेनपंचविंशद्वनोपलैः ॥ ८३ ॥

चार भाग चांदीके पत्र एक भाग गंधक जम्भीरी नींबूके रसमें खरल कर उन पर लेप करे फिर संपुटमें रख ॥ ८३ ॥

बध्वात्रिभिःपुटेपच्याद्गंधंदेयंपुनःपुनः ॥
म्रियतेनात्रसन्देहस्तत्तत्कर्मणियोजयेत् ॥ ८४ ॥

उपलोंकी अग्निके द्वारा हरेक पुटमें गंधक देकर तीन बार पुटपाक करे अवश्य चांदीकी भस्म हो जायगी फिर कार्यमें लावे ॥ ८४ ॥

ताम्रतुल्येनगंधेनह्यम्लपिष्टेनलेपयेत् ॥
कंटवेधीकृतंपत्रमंधायित्वापुटेपचेत् ॥ ८५ ॥

तांबेके कंटकवेधी पत्र लेकर उसकी बराबर गंधकके कांजीमें खरल कर उसको ताम्बेके पत्रोंपर लपेटे, फिर उन कंटकवेधी तांबेके पत्रोंको गजपुटमें पचावे ॥ ८५ ॥

उद्धृत्यचूर्णयेत्तस्मिन्पादांशंगंधकंक्षिपेत् ॥
जम्बीरैरारनालैर्वापिष्ट्वाबध्वापुटेपचेत् ॥ ८६ ॥

फिर महीन पीस चूर्ण करले इसके उपरान्त चौथा भाग गंधक मिलाय जम्भीरीनींबू कांजीमें पृथक् पृथक् पीस कर गंधक मिलाय ॥ ८६ ॥

एवंचतुःपुटैःपाच्यंगंधंदेयंपुनःपुनः ॥
मातुलुंगद्रवैःपिष्ट्वापुटमेकंप्रदापयेत् ॥ ८७ ॥

चार पुटदे और जंबीरीके रसमें पीस कर वा बिजौरेके रसमें पुट दे तो पुटपाक करनेसे भस्म होजाती है ॥ ८७ ॥

अथास्यदोषहरणम् ॥

सितशर्करयाप्येकंपुटंदेयंमृतंभवेत् ॥
मृतंताम्रंतुजम्बीरैर्यामंखल्वेविमर्दयेत् ॥ ८८ ॥

एक भाग तांबा और दो भाग पारा इनको जम्भीरीके रसमें खरल कर खांड मिला तीन वार पुटपाक करनेसे तांबेकी भस्म हो जाती है ॥ ८८ ॥

तद्गोलंसूरणेक्षिप्त्वारुध्वासर्वंचलेपयेत् ॥
शुष्कंगजपुटेपाच्यंनिर्दोषंसर्वरोगहृत् ॥ ८९ ॥

मरे ताम्रको जम्बीरीके रसमें एक पहर खरल कर गोला बनावै उसको जिमीकंदके बीचमें धर गजपुटमें पचानेसे सर्व रोगों की हरनेवाली भस्म हो जाती है ॥ ८९ ॥

नायंपचेत्पंचपलादर्वागूर्द्धंत्रयोदश ॥
आदौमंत्रस्तथाकर्मकर्तव्यंमंत्रउच्यते ॥ ९० ॥
ॐअमृतोद्भवायस्वाहा ॥

लोह मारण ॥ लोहमारण श्रेष्ठ कर्म है इससे प्रथम इसको करे पांच पलसे तेरह पल पर्यन्त लोहेको लेकर ॥ ९० ॥
ॐ अमृ० मंत्रको पढ कर मर्दन करे ॥ इति मर्दनमंत्रः ।

ॐअमृतोद्भवायस्वाहा ॥
अनेनमंत्रेणलोहस्यतत्साधकस्यरक्षाकर्तव्याॐनम
श्चण्डचक्रपाणयेस्वाहायक्षसेनाधिपतयेसुरगुरुम
हाविद्याबलायस्वाहाअनेनमंत्रेणबलिंदत्वाततःकुर्यात् ॥
दन्तीपत्रद्रवंतस्यांलोहचूर्णंदिनोदये ॥
घर्मेधार्यंदिनंकांसेद्रवंदेयंपुनःपुनः ॥ ९१ ॥

दूसरेसे साधककी रक्षा ॐ नमश्च० इस मंत्रसे बली दे ॥ दन्तीके पत्तोंके रसमें लोहेका चूर्ण खरल कर तीन दिन धूपमें रक्खे बार बार द्रवदे ॥ ९१ ॥

रुध्वाशरावौपुटेपाच्यंप्रातर्द्रवैश्चभावयेत् ॥
एवमष्टविधंकुर्यात्त्रिविधंम्रियतेतुयः ॥ ९२ ॥

मृतस्यलक्षणम् ॥

मध्वाज्यंमृतलोहञ्चरौप्यंसंपुटकेक्षिपेत् ॥
रुद्ध्वाध्मातेतुसंग्राह्यंरौप्यंचेत्पूर्वमानकम् ॥ ९३ ॥

जब लोहा मरजाय तब शरावसंपुटमें रख पचानेसे लोहा मर जाताहै इसप्रकार आठ दिन करनेसे लोहा मर जाताहै॥९२॥९३॥

अथ शोधनम् ॥

तदालोहंमृतंविद्यादन्यथासाधयेत्पुनः ॥
गंधकंतुल्यकंलोहंतुल्यंखल्वेविमर्दयेत् ॥ ९४ ॥

मृतलक्षण शहत घी और मृत लोहको रूपेके सम्पुटमें रख मुख बंद कर अग्नि जलानेसे लोहभस्म हो जाती है यदि न होतो फिर पुटपाक करे (शोधनम्) गन्धक और मृत लोहेको खरलमें डालकर ॥ ९४ ॥

दिनैकंकन्यकाद्रावैरुध्वागजपुटेपचेत् ॥
इत्येवंसर्वलोहानांकर्तव्यंस्यान्निरुत्थनम् ॥ ९५ ॥

एकदिन घीकुवारके रसमें मर्दन करे फिर गोला बनाय सम्पुटमें रख गजपुटमें पचावे इस प्रकार सब लोह शुद्ध हो जाते हैं ॥९५॥

अथास्यामृतीकरणम् ।

घृततुल्यंमृतंलोहंलोहपात्रगतंपचेत् ॥
जीर्णेघृतेसमादाययोगवाहेषुयोजयेत् ॥ ९६ ॥

अमृतीकरण ॥ घृत और लोहेकी भस्मकी बराबर लेकर लोहेके बासनमें पकावे जब घी जीर्ण होजाय तब उतारले यह योगवाही योगोंमें प्रयोग करे ॥ ९६ ॥

इति लोहमारणम् ॥

अथ भूनागसत्वम् ॥

सद्योभूनागमादायक्षालयेच्छिथिलंबुधः ॥
अथवाकुक्कुटंवीरंकृत्वामंदिरमाश्रितम् ॥ ९७ ॥
मलमूत्रंगृहीतेनसदम्बुप्रथमांशकम् ॥
आलोड्यटंकंमध्वाज्यैर्घर्मेसर्वार्थमादरात् ॥ ९८ ॥
मुंचेत्तुताम्रवत्सत्वमेतद्भूनागसत्वकम् ॥

इति नागवर्गः ॥

प्रथम भूनागको लाकर जो की वर्षाकालमें ताम्रभूमिमें हुआ हो उसको क्षालित करके अथवा देवकरुड कनेर मिलाकर वा मुरगेकी वीटके साथ उसको मिलाकर अथवा मलमूत्रके साथ जल मिलाय तत्कालके जलसे उसके चुर्णको शहत घृतमें मिलाय धूपमें धर दे फिर मर्दन कर पंकनालमें रख फूके तो तांबेके समान सत्व निकले ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

इति नागवर्गः ॥

अथ लवणम् ॥

सामुद्रंसैंधवंकाचंचुल्लिकाचसुवर्चलम् ॥
मूलिकानवक्षारश्चज्ञेयंलवणपंचकम् ॥ ९९ ॥

समुद्रलवण सेंधा काच चूलिका काला नमक मूलिका नवक्षार पांच लवण जान्ने ॥ ९९ ॥

इति लवण ॥

अथ क्षाराः ॥

त्रिक्षारष्टंकणक्षारोयवक्षारश्चस्वर्ज्जिका ॥ १०० ॥

सुहाग जवाखार और सज्जीखार यह तीन क्षार हैं ॥१००॥

इति क्षाराः ॥

अथ वृक्षक्षारः ॥

तिलापामार्गकदलीपलाशःशिग्रुपौंड्रकौ ॥

मूलकार्द्रकचित्राश्चसर्वमंतःपुटेपचेत् ॥ १०१ ॥

अथ वृक्षक्षार॥तिल चिरचटा केला ढाक सहेंजना पौंड्रक मूली अद्रक चीता यह पृथक् पृथक् अन्तःपुटमें पचावे ॥ १०१ ॥

समालोड्यजलैर्बध्वावस्त्रग्राह्यमधोर्जलम् ॥

शोधयेत्पाचयेदग्नौमृद्भाण्डेनतुतज्जलम् ॥

ग्राह्यंक्षारावशेषन्तुवृक्षक्षारमिदंस्मृतम् ॥ १०२ ॥

और जलमें अच्छी प्रकार आलोडित कर वस्त्रमें ग्रहण कर छानले और उस जलको शोधन कर अग्निमें पचाय मिट्टीके बरतनमें रक्खे फिर जो शेष रहै वह जो क्षार है यह वृक्षक्षार जानो ॥ १०२ ॥

इति वृक्षक्षारः ॥

अथ विडः ॥

मूलिकार्द्रकवह्नीनांक्षारंगोमूत्रयोजितम् ॥

वस्त्रपूतंजलंग्राह्यंगंधकंतेनभावयेत् ॥ १०३ ॥

सप्तवारंखरेघर्मेबीजोयंहेमजारणे ॥

कन्याहयारिधत्तूरद्रवैर्भाव्यंतुगंधकम् ॥ १०४ ॥

शतवारंखरेघर्मेबीजोयंहेमजारणे ॥

गंधकंशंखचूर्णम्वागोमूत्रैःशतभावितम् ॥
वीजोयंजारणेश्रेष्ठोवीजानांद्रावणेहितः ॥ १०५ ॥

मूली अद्रक चीता इनको गोमूत्रसे पीस वस्त्रसे छानले उसमें गंधककी भावना दे इस प्रकार सातवार कर कठिन धूपमें रखदे यह सुवर्णके जारण करनेका बीज है गंधक और शंखके चूर्णको सौवार गोमूत्रसे भावना दे यह हेमजारणमें श्रेष्ठबीज बीजोंके द्रावणमें हितकारक है ॥१०३॥१०४॥१०५ ॥

इति बिडः ॥

अथ अम्लवर्गः ।

जम्बीरंनागरंगश्चमातुलुंगाम्लवेतसम् ॥
चांगेरीचणशुक्रश्चअम्लवर्गःप्रकीर्तितः ॥ १०६ ॥

जम्भीरीनींबू नागरंग मातुलुंगी अम्लवेत चांगेरी चण शुक्र यह अम्लवर्ग है ॥ १०६ ॥

इति अम्लवर्गः ॥

अथ वज्रमूषा ॥

वल्मीकीमृत्तिकाभागंगवास्थितुषभस्मनोः ॥
भागंरसस्समादायवज्रमूषाविरच्यते ॥ १०७ ॥

अथ वज्रमूषानिर्माणविधि । तिनकोंकी राख दो भाग बेम्बकी मट्टी एक भाग रस एक भाग लेकर अर्थात् लोहेका मैल एक भाग ले बकरीके दूधसे पीसकर दृढ मूषा बनावे धूपमें सुखा ले

---

१ कसूम खैर लाख मजीठ लालचंदन सहेंजना दुपहरिया कपूरगंधि सोनामाखी यह रक्तवर्ग है ॥

उपरोक्त कल्क लेपन कर मुख बंद करे यह वज्रमूषा है इसमें उत्तम पारेकी भस्म होती है ॥ १०७ ॥

इति वज्रमूषा ॥

अथ दीर्घायुष्यकरणम् ॥

नीमकी छाल ४ मासे नीमकीजड़ ५ नीमकेफूल ५ हरिद्रा ७ त्रिकुटा २ बेलकीजड़ १ । २५ श्वेतचीता १ मासे अजवायन १ तोला लवण ४ मासे यह सब एकत्रकर तत्ते पानीसे वस्त्रमें शोध ले तीन मासेकी गोली बनाकर प्रति दिन एक गोली खाय तीनसौ साठ वर्ष जिये:

पहले महीने अग्निकी प्रबलता दूसरे महीने व्याधिनाश तीसरेमें पुष्टि चौथेमें जनैकदृष्टि पांचवेमें सुन्दरता छठेमें कोकिलास्वर सातवेमें पलितनाश आठवेमें वज्रकाय नौवेमें निद्रानाश दशवेमें यशवृद्धि ग्यारहवेमें श्रुतिधर बारहवेमें सर्वसिद्धिः ॥

"ॐस्वस्तिनानंदग्रामात् नानंदग्रामात् नानंदग्रहात् नानंदविग्रहात् नानंदकोनामभिक्षुः एकाहिकव्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिक नित्यज्वर मासिक वार्षिक द्विवार्षिक डाकिनी कृत्या वातिक पैत्तिक श्लैष्मिक सन्निपातादीन् सर्वज्वरान् समादिशति भवद्भिःप्रहितराजादेश श्रवणयत्रदर्शनात् श्रीअमुकस्य शरीरे मुहूर्तमपि न स्थातव्यं ज्वर रेरे फट् २ हूं स्वाहा ॥ मारीच २ अमुकस्य ज्वरं हर २ स्वाहा"

इदं पत्रं लिखित्वा शिरसि बद्धं सर्वज्वरान् हन्ति यह पत्र लिख शिरपर बांधनेसे सब ज्वर दूर होते हैं

इति दीर्घायुष्यकरणम् ॥

इति श्रीपार्वतीपुत्रनित्यनाथविरचितेकामरत्नेपण्डितज्वाला-
प्रसादामिश्रकृतभाषाटीकायां रसादिशोधनं
नाम षोडशोपदेशः ॥ १६ ॥

शुभमस्तु ॥

सम्वत गुणशर अंग विधु, पौष कृष्ण गुरुवार ॥
सकल कामप्रद पंचमी, मन इच्छा दातार ॥ १ ॥
पूर्णकियो शुभग्रंथ यह, भाषा तिलकबनाय ॥
लखहिंसजनहियलहहिं मुद, काम अर्थको पाय ॥ २ ॥
कामरत्न सबकामप्रद, सेवहिं जो करिनेम ॥
ते पावहिं सुख संपदा, बढहि वंशमें क्षेम ॥ ३ ॥
वसत राम गंगा निकट, नगर मुरादाबाद ॥
तहां रहत हरिभजनरत, द्विज ज्वालाप्रसाद ॥ ४ ॥
तिन भाषाटीका कियो, गौरि गिरिशमनाय ॥
भक्तन सुखदायक सदा, जनकी करैं सहाय ॥ ५ ॥

इति कामरत्नं समाप्तम् ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना, खेतवाड़ी–मुंबई.

परिशिष्ट भाग.

पुरसुन्दरी मनोहारी कलावती कामेश्वरी रक्तकरी पद्मिनी नटी अनुरागिणी यह आठ यक्षिणी हैं। ॐ आगच्छ पुरसुंदरी स्वाहा इतिमंत्रः यह पढ घर जाय गूगलकी धूप देकर तीनों संध्याओंमें उपरोक्त मंत्र सहस्रवार जपे तो एक महीनेमें आतीहै. उस समय चन्दन जलसे अर्घ्य दे. इसके तीन भाव हैं माता, भगिनी, पत्नी, जो माताका भावकरै तौ वस्त्र द्रव्य रस रसायन देती है. भगिनी भावमें भी पूर्ववत् वस्त्र देती है यदि भार्या होतौ तौ महाऐश्वर्य आश्चर्य करती है इन सबको पूजन करै इसमें दूसरे के साथ शयन तथा मैथुन न करै जो करै तौ नाश होता है मनोहरी ध्यान कहते हैं. ॐ आगच्छ मनोहरि स्वाहा इस मंत्रको पढ नदीतटमें मंडल कर अगर धूप देकर महीने भरतक पूजन करै सहस्रजपकरै जब आवै तब चन्दन अर्घ्य दे. फूल वाटिकामें एक चित्तसे अर्चन करै आधीरातमें अवश्य आती है. आतेही कहै सभाग्य दे तब सौ अशरफी प्रतिदिन देती है.

अथ कलावती साधनम्

ॐ ह्रीं कलावती मैथुनप्रिये आगच्छ स्वाहा ॥ वट वृक्षके नीचे मद्यमांस देकर सुराकी प्रार्थना सहित जपे. सात दिन तक आधीरातको सर्वालंकार से भूषित परिवार सहित जब आती है भार्या होतीहै बारहजनोंको वस्त्रालंकार भोजन देती है आठफल दिनमें देती है.

कामेश्वरी साधनम्.

ॐ ह्रीं आगच्छ कामेश्वरी स्वाहा ॥ इसकी भोजपत्रपर गोरोचनसे प्रतिमा लिखे देवीका पूजन करै शय्यामें चढकर एकमास सहस्रमंत्र प्रतिदिन जपे मासान्तमें देवीकीपूजाकरे घृतमधुयुक्त प्रतिरात्र दे मौन हो जपकरै आधीरातको अवश्य आती है आनेपर इच्छा करै तो भार्या होती है. शयनमें दिव्य अलंकारोंको छोडकर चली-

जातीहै. इसमें परस्त्रीसे मैथुन न करै.

अथ रतिकरी साधनम्

ॐ ह्रीं आगच्छ रतिकरी स्वाहा॥ अथ पटमें चित्ररूपसे लिखकर कनक वस्त्रालंकारसे भूषितकर कमल हाथमें लिये कुमारीको पूजन करै गूगल धूपदे आठ सहस्र जपकरै मासान्त पर्यंत पूजाकर घृतधूपदे तव आधी रातको आकर प्राप्त होती है. स्त्री भावसे कामना करै भार्या होती है. साधककी स कुटुम्बरक्षा करती है. दिव्य कामनावाले भोजनको देती है.

अथ पद्मिनी साधनम्.

ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनी स्वाहा॥ अपने घरमें मंडलकर शिवकरे गूगुल धूप देकर एक सहस्र जपकरै पूर्णमासीको विधिपूर्वक पूजाकर जपै आधीरातको आती है. कामना करनेसे भार्या होती है. सव कामार्थ सिद्धि करती है रस रसायन सिद्धि द्रव्य देती है.

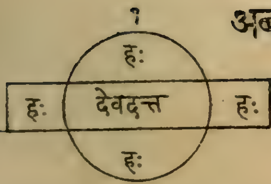
अथ नटी साधनम्.

ॐ ह्रीं आगच्छ नटी स्वाहा॥ अशोक वृक्षके नीचे जाय मांस उपहार गंध पुष्प धूप दीपादि वलि देकर सहस्र जपकरे तो एक महिनेमें अवश्य आती है. आनेपर यदि माता होतौ कामिक भोजन देती है वस्त्र सुवर्णसो देती है. भगिनी होतौ सौयोजनसे लक्ष्मी ला देती है. वस्त्र अलंकार भोजन रसायन देती है. जो स्त्री होतौ दिव्य रसायन आठ दिन स्थित हो देती है.

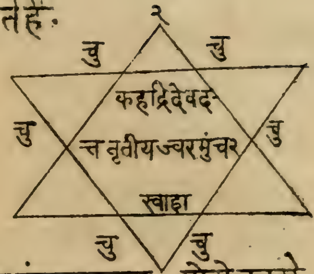
अथ अनुरागिणी साधनम्

ॐ ह्रीं आगच्छ अनुरागिणी स्वाहा॥ कुमकुमसे यह मंत्र लिखै भूर्जपत्रपर और प्रतिदिन गंधादिसे पूजनकर सहस्र जपकरै तीनोंकालमें एक महिना पूजाकर घृत दीपदे सम्पूर्ण रात्रि जपकरै एक महिनेमें अवश्य आती है. और सव पूर्ववत्. इतिद्वाविंशद्यक्षिणी साधनम्॥

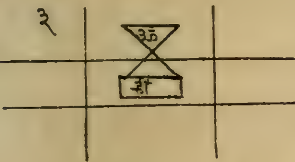
अब कुछ यन्त्र लिखते हैं:



यह यंत्र गोरोचन लाल चन्दनसे भूर्जपत्रपर लिख कंठमे बांधै तौ कंठमाला जायः



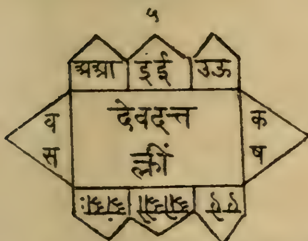
यह यंत्र कुमकुम गोरोचनसे भूर्जपत्रपर लिखै कंठमे बांधनेसे तिजारी नष्ट होती है.



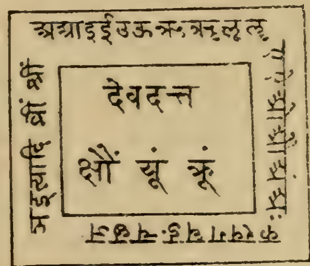
कुमकुम गोरोचनसे भूर्जपत्रमें जिसको लिखकर दे निश्चय उसका सौभाग्य होता है.

उलु	मुलु
घलु	एलु

गोरोचन कुमकुमसे भूर्जपत्रपर लिखकर धान्य राशीमें स्थापन करनेसे कीटादि दोष नहीं होते हैं.



यह यंत्र कुमकुम गोरोचनसे लिख बांधेतौ बंध मोक्षण होता है

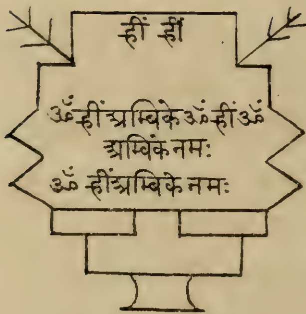


कुमकुम भूर्जपत्रपर लिख रखनेसे राजावशमें होना है.



यह यंत्र मिष्ट रसपान रससे भूर्जपत्रपर लिख कपोल मध्यमें जबतक रक्खे तबतक निश्चय वीर्यस्तंभन होता है.

८



यह चन्दन कर्पूर लेपदेकर दर्भाङ्कुर मूलनाम यंत्र लिखकर वलयोकार करै ॐ सिद्धोलिंन मः ॐ शं सोलिंनमः ॐ यं शोलिंनमः ॐ कं कोलिंनमः ४ ॐ खिद खिद विंद विंद जोलीन महानमद २ महाधरणवर्णेनेनमः सर्वसुखदाराय धरण मडतो रोमाधरण ॐ ह्रीं अम्बिके ॐ ह्रीं अम्बिके नमः इतियंत्र मध्ये लिखित्वा पश्चात् ॐ अम्बे अम्बाले अम्बिके अवतारय ठः ठः स्वाहा इसमंत्रसे ३६००० छतीस सहस्रजपनेसे सिद्धि होती है फिरजपकर २१ चमेलीकेफूल यंत्रपर अम्बिकाकी मूर्तिपर रक्खैतो दीपमें प्रसन्न मुखी दीखती है कुमारीके मुखसे अम्बिकादेवी शुभाशुभ कहती है. फिर अम्बिके देवी हूं हूं ह्रीं क्षौं यूं ह्रीं पढकर बिसर्जन करै. ॥

९

ईशान		पूर्व		आग्नेय
	अं अः ल क्षः	अआ क खगघङ	इई चछजझञ	
उत्तर	ॐ श्रौं श ष स ह ४		ऋ ॠ तथदधन	दक्षिण
	ए ऐ यरल व ४	उऊ पफबभम	ऌ ॡ तथदधन	
वायव्य		पश्चिम		नैऋत्य

यह यंत्र कुमकुम भूर्जपत्रपर लिख दक्षिण भुजामें धारण करै तो सर्वार्थ सिद्धि देता है शुभम्

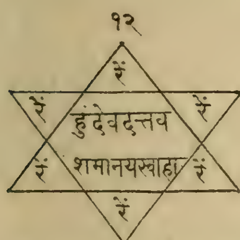
समाप्तम् पंचदशोपदेशान्तर्गत परिशिष्टम् ॥ ॥

१०

रुंतुरुं	रुंतुरुं	रुंतुंरुं
रुंतु रुं	देवदत्त वशमान यस्वाहा	रुंतु रुं
रुंतुरुं	रुंतुंरुं	रुंतुंरुं

इस यंत्रको भोजपत्रपर लिखै लाल चन्दनसे घी और शहतमें तीन रात्रि-स्थापन करै वह वशीभूत होताहै.॥

१२



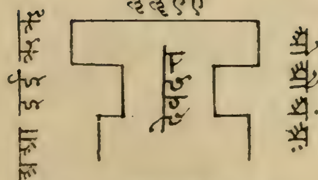
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसकानाम लिखकर सदा फूलोंके वृक्षके नीचे स्थापन करै इससे रातको प्लावित करै वहवशमें होताहै.

१४

खन २ देवदत्त वशंकुरु स्वाहा

गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख लाल सूत्रसे बांध मुखमें डाल जिसे देखै वह वशमें होताहै.

११



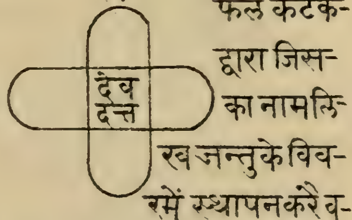
यह यंत्र गोरोचनसे भूर्जपत्रपर लिख पृथ्वीमें गाडनेसे शत्रुवशमें होताहै.

१३

ह्रीं देवदत्तवशमानय स्वाहा

अनामिका अंगुलीके रक्तसे गोरोचनसे जिसकानाम लिखै मधुमें स्थापन करै वह वशमें होताहै.

१५

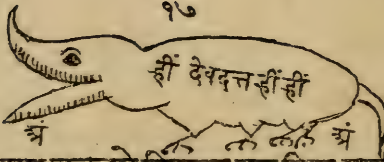


फल कंटकद्वारा जिसका नाम लिख जन्तुके विवरमें स्थापनकरै वह त्रिभुवनको भी वशीभूत कर सक्ता है.

१६

अमुकवश मानय

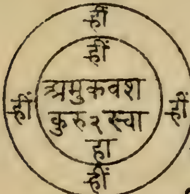
गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसकानाम लिख मधुमें स्थापन करैवह वशीभूत होताहै.



लालचन्दनसे जिसका नाम लिख पानी-में स्थापनकरे वह वशमें होजाता है·



गोरोचनसे भोजपत्रमें साध्यकाना-म लिखवाहु कं-ठमें धारणकरै वह शत्रुवशमें होताहै·



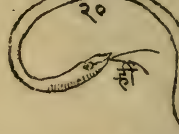
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसकानाम लिख मधुमें स्थापनकरैवह वशमें होता है·
इति सर्वजन वशीकरणम्



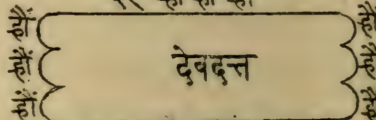
कुमकुम गोरोचनसे-भोजपत्र-पर जिसका नाम लिखभु जामें धारणकरै तो सौभाग्य और स्त्रीवशमें होती है·



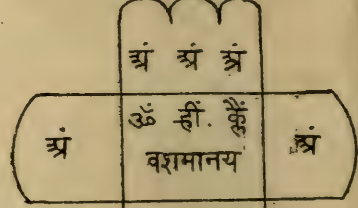
चमेलीके फूलऔर आकके दूधसे भोजपत्रपर लिख भुजामें धारणकरैवह वशमें होताहै·



गोरोचनकुम-कुमसे भूर्जप-त्रपर जिस-का नाम लिख सूत्रसे लपेट रक्खे तो सब दुष्ट वशमें होते हैं·



गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसकानाम लिख देवतास्थानमें स्थापनकरैवह वशमें होता है·



गोरोचनसे भोजपत्र परसाध्यका नामलि-खमधुके मध्यमें स्थापनकरैवह वशमें हो-

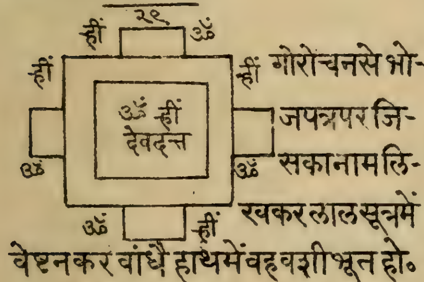


अनामिका रक्तसे भोजपत्रपर लिखबाहु कंठमें धारणकरे वशीभूत होताहै·

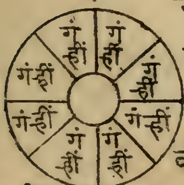
२७

ॐ तारे ॐ तारे ॐ तारेस्वाहा	ॐ तारे ॐ तारे ॐ तारेस्वाहा	ॐ तारे ॐ तारे ॐ तारेस्वाहा
ॐ तारे ॐ तारे ॐ तारेस्वाहा	ॐ तारे ॐ तारे ॐ तारेस्वाही	ॐ तारे ॐ तारे ॐ तारेस्वाहा
ॐ तारे ॐ तारे ॐ तारेस्वाहा	ॐ तारे ॐ तारे ॐ तारेस्वाहा	ॐ तारे ह्रीं तारे ॐ तारेस्वाहा

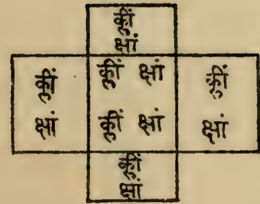
गोरोचन कुमकुम कर्पूरसे भोजपत्रसे जिसका नाम लिखकर घृत मधुमें स्थापनकर तीनदिन लाल फूलसे पूजन करै राजा वशमें हो॰



गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसकानाम लिखकर लालसूत्रमें वेष्टनकर बांधै हाथमें वह वशीभूत हो॰



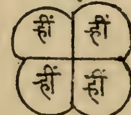
गोरोचनसे यह चक्र लिखकर जिसके नामसे कंठवाहूवा वस्त्रके अचलमें बांधे शत्रुकी समानभी वह हो वशीहोताहै·



कुमकुम गोरोचनसे अनामिका अगस्तके साथ राजा के नामको लिख खैरको अंगारेसे ताप दे वशमें होता है·



गोरोचनसे भोजपत्रपर लिखकर खैरके अंगारेसे तीनसंध्याओंमें तपावै उर्वशीभी बल पूर्वक आजाय·

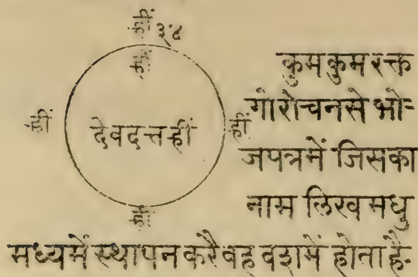


गोरोचनसे तथा कुमकुमसे जिसकानाम लिख घृतमधुमें स्थापनकरै वह वशमें हो·इतिवशीकरणम्

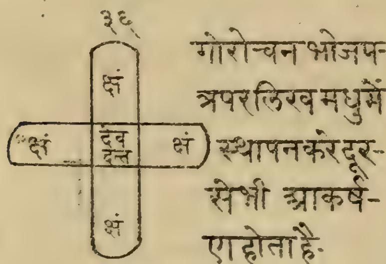
३२

सःदेवदत्तसः

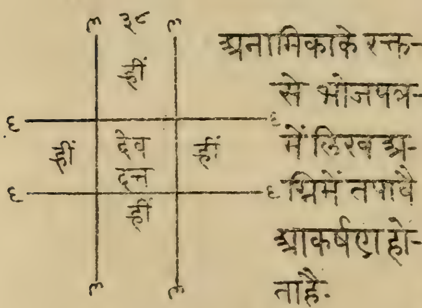
कुमकुम रक्त गोरोचनसे लिखकर धारणकरै सौभाग्य होताहै. घृतमें स्थापनकरनैसे वश होताहै.



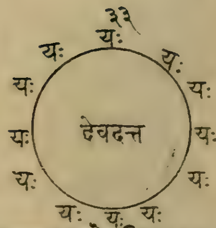
कुमकुम रक्त गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम लिख मधु मध्यमें स्थापन करै वह वशमें होताहै.



गोरोचन भोजपत्र ऊपर लिख मधुमें स्थापनकरै दूरसे भी आकर्षण होताहै.

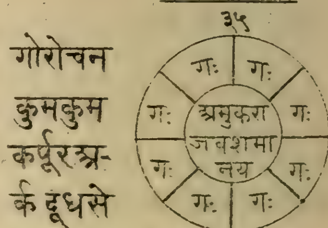


अनामिकाके रक्तसे भोजपत्रमें लिख अग्निमें तपावै आकर्षण होताहै.



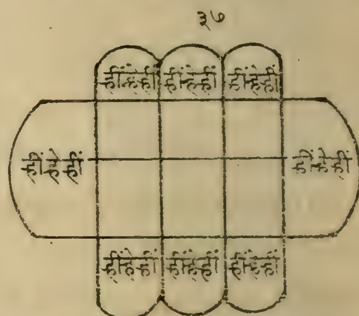
गोरोचन कुमकुमसे जिसकानाम भोजपत्रपर लिखकर घृत मधुमें स्थापन करै पृथ्वीमें रहै - आकर्षण होता है.

३५

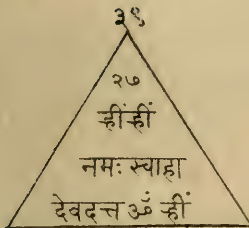


गोरोचन कुमकुम कर्पूर अर्कके दूधसे साध्यकानाम लिखकर घृतमधुमें स्थापनकर तीन दिन लाल फूलसे पूजनकरै वह राजा वशमें होताहै.

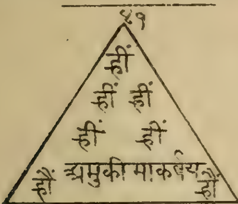
३७



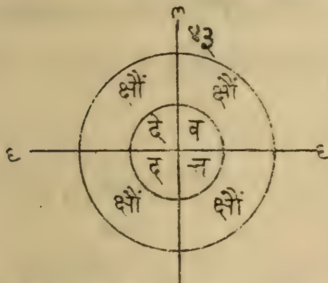
गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम लिखकर मधुमें स्थापन करै आकर्षण होताहै.



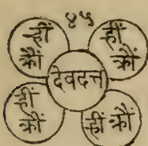
अनामिका रक्तसे हाथमें लिख रा-
त्रिमें जपै संध्यामें आकर्षण हो॰



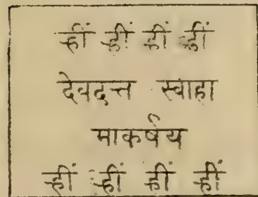
गोरोचन कुमकुमसे भोजपत्र पर
जिसका नाम लिख मोम घीमें स्थापन-
कर तपावै वह स्त्री आकर्षित होती है·



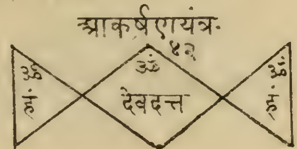
गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम
लिख मधुमें स्थापन करै सौ योजनसे
आकर्षित होता है·



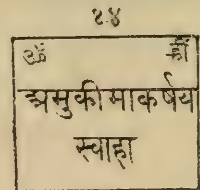
कुमकुम गोरोचनसे
भोजपत्रमें लिख मोम-
सेलपेटखैरके अंगारे
सेतपावै वहशीघ्रआक-
र्षित होता है·



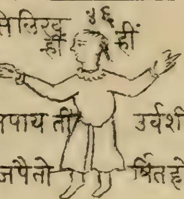
लालचन्दन और अपने रुधिरसे
भोजपत्र पर जिसका नाम लिख
घरमें स्थापन करै वह आकर्षित
होता है·



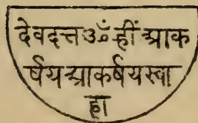
अपने रुधिरसे जिसका नाम लि-
खकर कागमें बांधकर छोडदे
वह शीघ्र आकर्षित होता है·



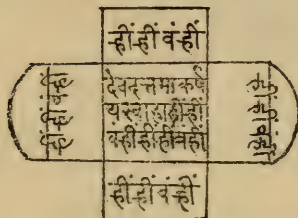
गोरोचनसे भोजपत्रमें जि-
सका नाम लिखकर घीमें स्था-
पन करै वह स्त्री दूरसे आकर्षि-
त होती है·



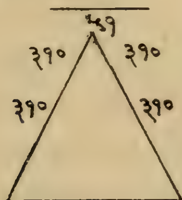
गोरोचनसे लिख
करखैरके
अंगारौंपरतपाय तौ उर्वशीभी आक-
नौकालमें जपैतो र्षितहोती है·



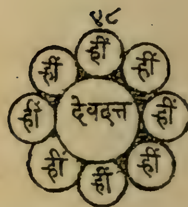
गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसकानाम लिख मधु मध्यमें स्थापन करे उसे सौ योजनसे आकर्षित करता है·



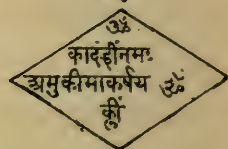
धतूरेके पत्तेके रससे और गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसकानाम लिख कस्वीरकी नलिकामें स्थापनकरे खैरके अंगारसे तपावै सौ योजनसे भी आकर्षित होती है.



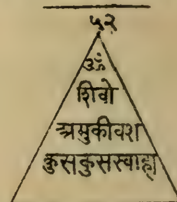
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नामलिख पानीमें स्थापित करै वह आकर्षित होता है·



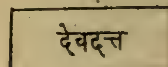
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नामलिख घृतमें स्थापन करैवह आकर्षित होता है·



अनामिका उंगलीके रक्तसे वाम हाथमें लिख हृदयमें रखकर जपै रात्रिमें शय्यापर आजाय· इति आकर्षणे द्वितीय देशः



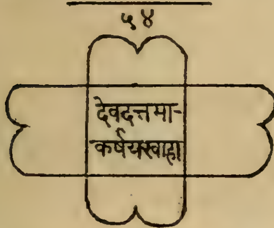
अनामिकाके रक्तसे वाम हाथमें लिख रात्रिमें मनमें जप करै आकर्षण होता है·



गोरोचनसे भोजपत्रमें जिस-

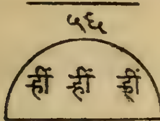
का नाम लिख शिखामें धारण करै सौभाग्य होता है. जयहोती है.

५४



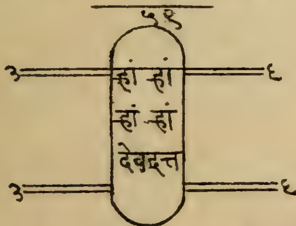
गोरोचन चन्दनसे भोजपत्र-पर जिसकानाम लिख शहतमें डाल नलिकामें रख पृथ्वीमें गाडदे तौ स्त्री शीघ्र आकर्षित होती है.

५६



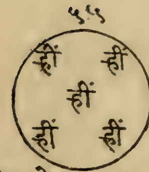
भोजपत्रपर गोरोचनसे जिसकानाम लिख भुजा कंठ शिखामें धारण करै संग्राम में जय होती है.

५९



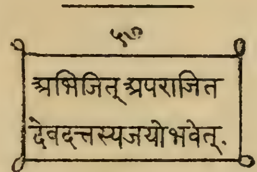
गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख भोजपत्रमें स्थापन करै तौ युद्धमें जय होती है.

५५



गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसकानाम लिख भुजवा कंठमें धारणकरै संग्राममें जय होती है. यह महामाहेश्वरी विद्या है.

५७



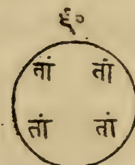
शिला पट्टमें हरताल से लिखकर जिसकानाम लिख नीचेको मुखकर रखदे वह जयी होता है.

५८

	१	२६	१	२४
	८	२७	२०	१५
	२४			
	२९			

गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख भुजामें बांधै संग्राममें जय होती है.

६०

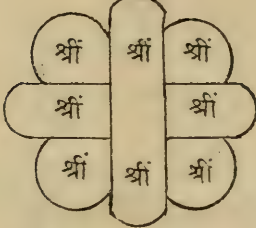


गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख भुजा कंठमें धारणकरै संग्राममें जय होती है.

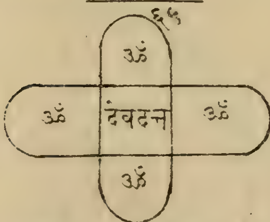
६१

३ॐ	क्षः	३ॐ
क्षः	३ॐ	क्षः
	देव	दत्त

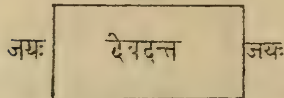
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिखकर मधु मध्यमें स्थापन करै जय होती है.



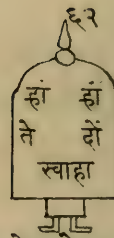
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिखकर रणकरै राज्य कुलमें देनाचाहिये· व्यवहारमें जय होती है·



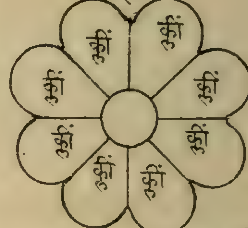
गोरोचनसे कुमकुमसे राजाका नाम लिख भुजामें धारणकरै जय होनी है·



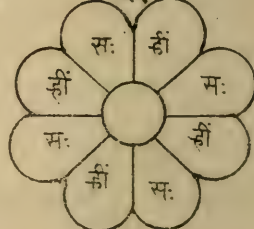
लाखके रससे जिसकानाम लिख



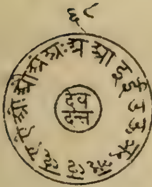
गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख भुजामें धारण करै सर्वत्र जय होती है·



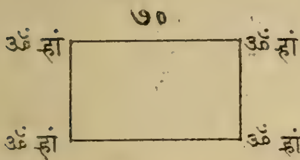
दान्तृशक्ति
गोरोचन और अनामिकाके रक्तसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख घृतमें स्थापन करै दाता होताही अदातापन छूटजाता है·



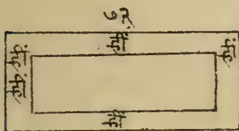
कुमकुमा रक्तक गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख भुजा कंठमें· धारण करै सौभाग्य होना है·



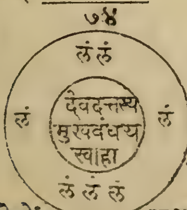
गोरोचनसे जिसका नाम लिख शहत-में स्थापन करै सौभाग्य होताहै.



गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख दू-धमें स्थापन करै क्रोधित हुआ प्रसन्न होता है. इतिक्रुद्धप्रसाद.

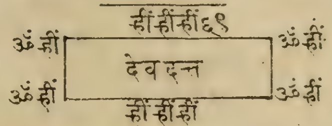


गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख मधुमें स्थापन करै सौभाग्य होताहै.

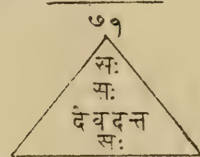


हरिताल हलदीसे साध्यका नाम लिखदो-सि कौरोमें स्थापनकर पूजन कर नीचेको मुखकर स्थापन करै मुख स्तंभन होताहै.

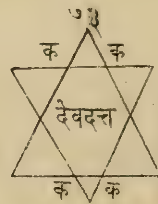
मधुके मध्यमें डाले सौभाग्य होताहै.



तालपत्रमें कंटकसे लिख कर्दम-में स्थापन करै तौ क्रोधी पुरुष प्रसन्न होता है.



कुमकुम गोरोचन लाखसे जि-सकानामलिख वाजीकर शरीर में धारण करै सौभाग्य होताहै. इति सौभाग्य०

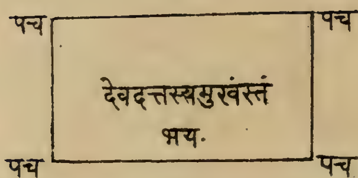


कुमकुम गोरोचनसे जिसकाना-मलिख मधुमें स्थापन करै तो सौभाग्य हो०



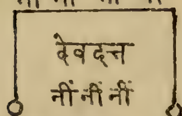
गोरोच-नऔर अनामि-

७६

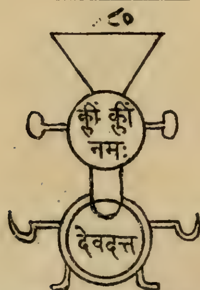


यह लिख ऊषा मध्य ईशान कोएमें स्थापन करै उसका मुखस्तंभन होता है·

७८

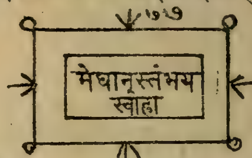


साध्यके पैरोंकी धूरि और हरतालसे दोनोंमें नामलिख वरतनमें स्थापन कर श्मशानमें गाडदे बंधन होता है·

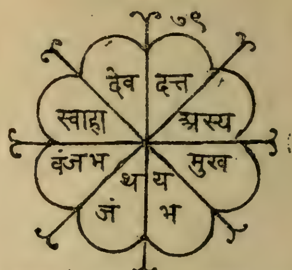


शिलापट्टमें हलदीसे जिसका नाम लिख नीचे मुखकर स्थापन करै उसका मुखबंधन होताहै·

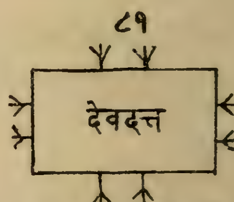
कारकसे भूर्जपत्रपर जिसकानामलिख शहतमें स्थापन करै अदाता दाता होता है·



दोईंटे संपुटकर उसपर श्मशान अंगारसे लिख स्थापन करै मेघोंको स्तंभन करता है·

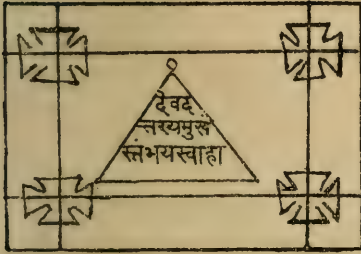


किसी भीतपर जिसकानाम लिखै उसका मुखबंध होता है·



साध्यके चरणकी धूलि हरितालके साथ मिलाय भोजपत्रपर लिख पादलमध्यमें साध्यके दोनो हाथ भांडमें लिखसूत्रकरधर देतो हाथ स्तंभन हो अर्थात् किसीको कुछ नहीं देताहै·

८२



हलदीसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिखकर द्रुमके नीचे स्थापित करै स्तंभित होता है·

८४



पीतसूत्र पीत द्रव्यसे भोजपत्रपरलिख मोमसेलपेटै जलसे पूर्ण घटस्थापन करै अग्निस्तंभनकरै इदं अग्निस्तंभनम् पूर्णपात्रेपतितम्

८६

	ह्रीं सः	ह्रींसः	ह्रीं सः	
ह्रींसः	ह्रीं सः	ह्रींसः	ह्रीं सः	ह्रींसः
	ह्रींसः	ह्रींसः	ह्रीं सः	

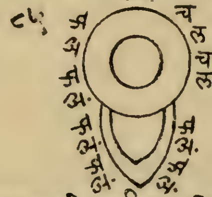
गोरोचनसे कुमकुम और लाखसे भोजपत्रमें लिखतत्तीसरैयामें बंदकरै तो दिव्यस्तंभन हो·

८३



तालपाटमें हाथीको लिख हाथीकादांत उखाड मट्टीका हाथी बनावै इससे हाथीआदिसब ॐस्तंभनहोतेहै·

८५



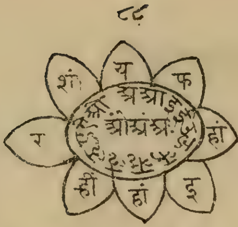
पीत द्रव्यसे कर्पटपर लिख मोमसेलपेट पूजैतो जलस्तंभन होताहै·

८७

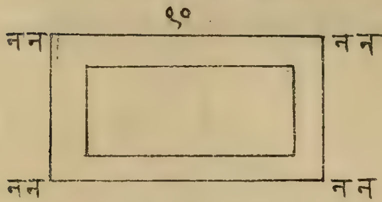
ह्रां	ह्रां	ह्रां	ह्रां	ह्रां
ह्रां	ह्रां	ह्रां	ह्रां	ह्रां
ह्रां	ह्रां	ह्रां	ह्रां	ह्रां
ह्रां	ह्रां	ह्रां	ह्रां	ह्रां



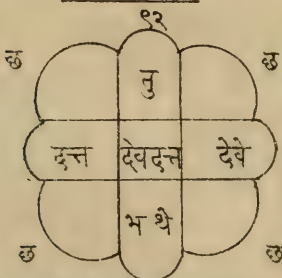
यह पीतद्रव्यसे पटपर लिख मोमसेवेष्टित कर जलमें स्थापित करै उससेजलस्तंभन होता है· इतवारके दिन शिरसकी जड़लाय माथेपर तिलक करै जलसे धिस तिलक करे.



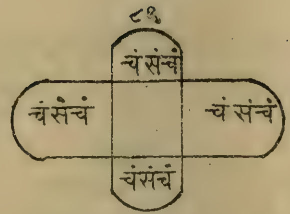
गोरोचन कुमकुमसे टेसूके फूलके रसके सहित भोजपत्रपर लिख दूधके घडेमें रक्खै सब दिव्य स्तंभ होते हैं.



हलदी और हरतालसे भोजपत्रपर लिख निर्जनमें स्थापन करै त्रिभुवन स्तंभन कर सकता है.



गोरोचनसे जिसका नाम लिख सिकोरेमें स्थापन करै उसका स्तंभन होता है.



गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख निर्जनमें स्थापन करै त्रिभुवन स्तंभन करता है.

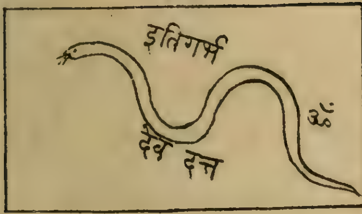


गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख शिकारेमें स्थापन करै उसका स्तंभन होता है.



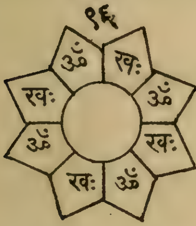
गोरोचनसे जिसका नाम लिखे और कँपावै वह स्तंभित होता है. (कालीकंकाली अमुकं स्तंभय स्वाहा) इस मंत्रसे साध्यका नाम हृदयमें रखकर छूकर वा दर्शनकर

९४



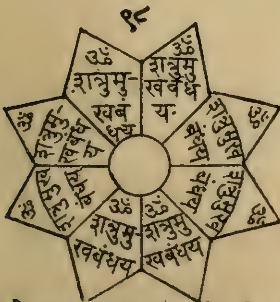
अनामिकाके रक्तसे भोजपत्र पर लिख पृथ्वीमें गाडदे गर्भस्तंभन होगा.

९६



लालद्रव्यसे भोजपत्रपर लिखै मधुमें स्थापन करे दुष्टभी मोहित होजाता है.

९८

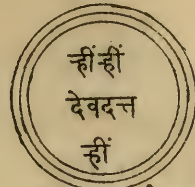


गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसकानाम लिखकर भुजामें बांधै उसको मोह होता है.

जपै शीघ्र स्तंभित होता है.

इतिमनुष्य स्तंभनम्.

९५



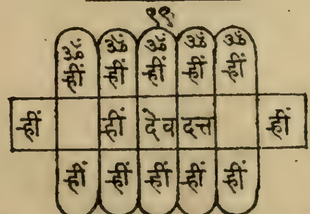
कुमकुम गोरोचनसे अनामिकारक्तसे जिसका नाम लिख भुजामें बांधै उसै मोहित करता है.

९७

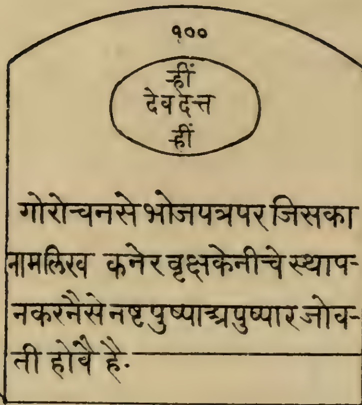


गोरोचनसे जिसकानाम लिख भोजपत्रमें पुष्पादि खण्डसे पूजन कर स्थापन करे उससे दुष्ट मोहित होता है.

९९



गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम लिख भुजा कंठमें धारण करें दुर्भगा सुभगा हो गर्भरक्षा हो.

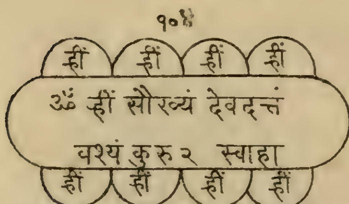


गोरोन्चनसे भोजपत्रपर जिसका नामलिख कनेर वृक्षकेनीचे स्थापनकरनैसे नष्ट पुष्पाच्रपुष्पार जोवती होवै है·

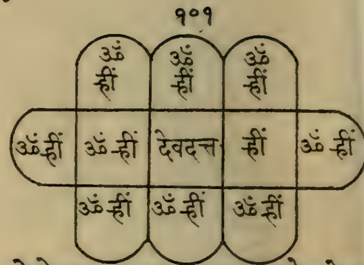
१०२



पीले रससे गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नामलिख भुजामें धारण करै वंध्या पुत्रिणीहो· निश्चयपुत्रहो·



· भोजपत्रमें गोरोचनसे जिसका नाम लिख कोषमें धारण करै दुर्भगा सुभगा होती है·

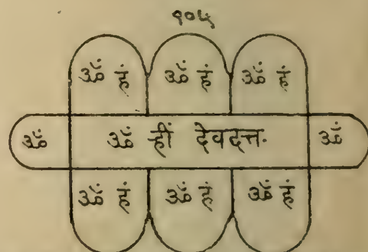


गोरोचन कुमकुम लाखसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख पंचामृतमें स्थापनकरै वंध्या गर्भिणीहो पुत्रवती हो गर्भरक्षा होय यहसत्य है·

१०३

०८	०१	३४	२९
३०	३३	०४	०५
०२	०७	२८	३५
३२	३१	०९	०३

गोरोन्चनसे भोजपत्रपर लिखबाहु कंठ कमरमें धारणकरनेसे वंध्यापुत्रिणी होती है·



गोरोचन कुमकुम लाखसे जिसका नाम लिख पंचामृतमें स्थापन करै तो काकवंध्या प्रसूती गर्भवती होती है

१०६

ॐ ह्रीं ॐ क्रौं	ॐ ह्रीं ॐ क्रौं
ॐ ह्रीं	ॐ ह्रीं
ॐ ह्रीं देवदत्त ॐ ह्रीं	
ॐ ह्रीं ॐ	ॐ ह्रीं ॐ
क्रौं ॐ ह्रीं	क्रौं ॐ ह्रीं

गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका ामलिख हाथमें धारणकरै दु- र्भगा सुभगाहो काकवंध्या प्रसू- ी होती है.

१०८

	ॐ ह्रं	ॐ ह्रं	ॐ ह्रं	
ॐ	ॐ ह्रीं	देवदत्त ह्रीं		ॐ
	ॐ ह्रं	ॐ ह्रं	ॐ ह्रं	

गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख धारणकरै अपुत्रिका पुत्रवाली- ृत् वत्स जीववत्सा ऋतुवती र्भवती सौभाग्यवती होनी है.

११०

	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	
ह्रीं	ॐ ह्रीं सौ रव्य देवदत्तस्य वश्यं कुरु कुरु स्वाहा			ह्रीं
	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	

गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसकानाम लिखकर कोखमें धारणकरै दुर्भगा सु- भगा होनी है.

१०७

	ह्रीं क्षः	
ह्रीं क्षः		ह्रीं क्षः
	ह्रीं क्षः	

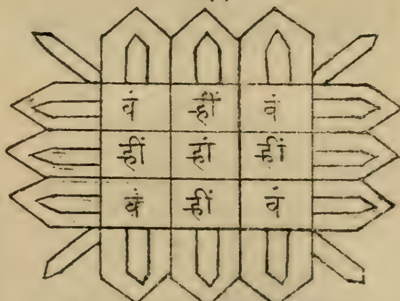
कुमकुमसे भोजपत्रपर लिख स्त्रियोंके हाथमें बांधै तो जीव पुत्रिणी हो.

१०९



गोरोचनसे कुमकुम लाख रंगसे जिसका नाम लिख पंचामृतमें- स्थापन करै मृतवत्सा पुत्रिणी होती है.

१११



गोरोचन कुंकुमसे भोजपत्रपर जिसकानाम लिखकर कंठ शिरमें धारणकरै मृतअपत्या वंध्या अपुत्रिणीकेसब अरिष्टदूर होते हैं ज्वरनाश होता है.

११२

०८	०१	२२	१९
१९	२२	०४	०५
०२	०७	१७	१४
२१	२०	०९	०३

यह यंत्र गोरोचनसे भोजपत्रपरलिख वालकके कंठमें बांधे वालकका रोनाथमजाय·

११४



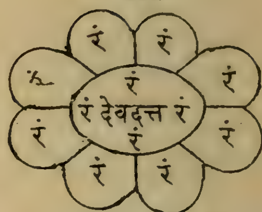
गोरोचन और कुमकुमसे भोजपत्रपर लिख धारणकरै महारक्षा होती है यह गणपति विद्या है·

११६

ॐ	ह्रं	ॐ
ह्रं	ॐ ह्रं देवदत्त	ह्रं
ॐ	ह्रं	ॐ

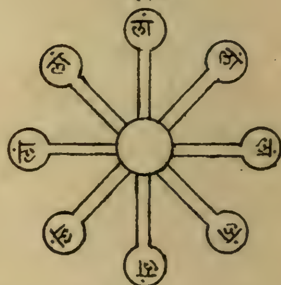
गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख धारणकरै सब उपद्रवोंसे रक्षा होती है·

११३



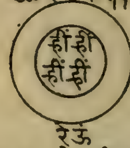
यह यंत्र गोरोचनसे लिखकर धारणकरनेसे वैश्वानर मुखी रक्षावालकोके सब ग्रह नाशिनी है यह वालग्रहोंसे तिरस्कृतहु ओंकोपरम रक्षा है·

११५



गोरोचनसे भोजपत्र पर लिख धारणकरै तो ज्वर पिशाच डाकिनी कुग्रह अपस्मार आदि शीघ्र नाश हो जाते हैं· इसमें (लं) बीज है·

ॐ रे ठ रा ११७



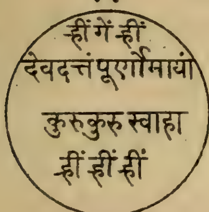
गोरोचन कुमकुमसे भोजपत्रपर लिखवाहुवा कंठमें धारणकरै डाकिनी प्रेतबाधा ज्वर नाश हो· अमृत विजया विद्या है·

११८

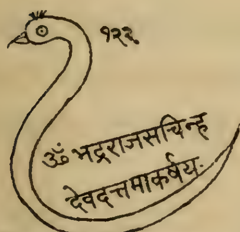
हीं	हीं	हीं
हीं	देवदत्त	हीं
हीं	हीं	हीं

गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसकानामलिख धारणकरै उसके सवज्वरनाश होते है·

१२०



गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख दक्षिण भुजामें धारणकरै तौ क्षेमऔर रक्षा हो·



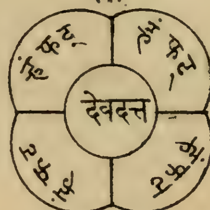
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख इस विद्यासे अभिमंत्रितकर ९ सुखनामापिशाचीअमुकंहत २ पच २ शीघ्रंवशमानयस्वाहा करसंपुटमें स्थापनकर जपै वंधनसे छूट जायगा·

११९



गोरोचन कुमकुमसे भोजपत्रमें लिख भुजामें धारणकरै अपमृत्यु दूर हो· मृत्युंजयायनमः यह सिद्धिदायक है·

१२१



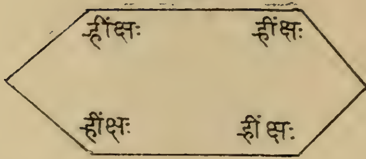
श्मशानके अंगारसे श्मशानके चैलवस्त्रसे लिखकर उसस्थानमें रखदे एक रात्रिमें उच्चाटन होता है·

१२३



काकऔर उल्लूके रक्तसे जिसकानाम लिखकर कौएके गलेमें बांध छोडदे तौ देवताओंकाभी उच्चाटण होजाय यह सत्य है·

१२४



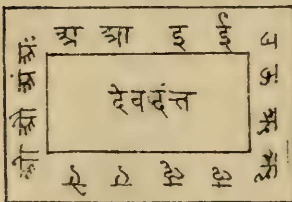
यह गोरोचनसे भोजपत्रपर-लिख ग्रीवाया शिखामें धारण करै निश्चय बंधनसे मुक्ति हो.

१२६



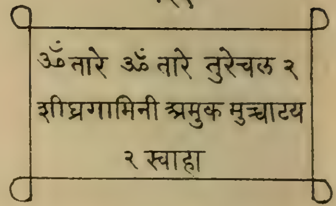
हलदी हरतालसे शिलापट्टपर-लिख अधोमुख धरदे वंधनसे मुक्त होगा.

१२८



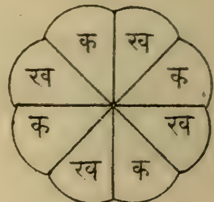
गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख शिखामें बांधनेसे मुक्त वंधन होगा.

१२५



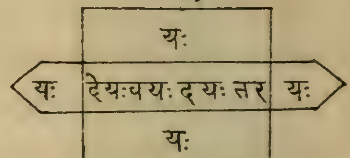
श्मशानके वस्त्र विष और राई धतूरा लवण निम्वसे साध्यका नाम लिख श्मशानमें गाडनेसे उसका उच्चाटन होता है. संदेह नहीं. ॐ तारे ॐ तारे ॐ तुरे-स्वाहा यह मंत्र है.

१२७



वहडेके पत्रोंके रससे भोजपत्र-पर जिसकानाम लिख खरसूत्रमें-स्थापनकरै उसका उच्चाटन होताहै.

१२९



वहडेके पत्रकेरसमें भोजपत्रसे जिसकानाम लिख खरसूत्रमें डा-

१३०

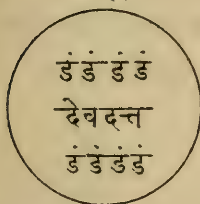
ता

ॐ देवदत्तस्य निगडं स्फोटय २

तुरु

गोरोचन कुमकुमसे भोजपत्रपरलिख शंख संपुटमें स्थापन कर त्रिकाल संपूज्य शिरमें धारणकरै निगडभंजन होगा.

१३२



हरतालसे पीपलकेपत्रपर लिखनेसे उसका उच्चाटन होता है.

१३४

देवदत्त

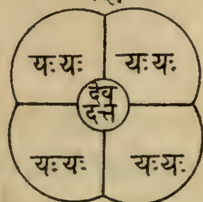
यः यः

यः यः

रक्तसे ध्वजपीठपर लिखकर काकके गलेमें बांधकर काकको छोडदे उसका उच्चाटन होता है.

लतपावै शीघ्र उसका उच्चाटन होता है

१३१



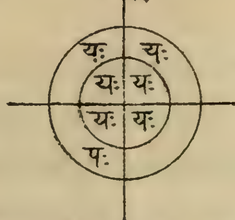
उलूकके रुधिरसे ध्वजवस्त्रमें पक्षलेखन्यास लिखकर गलेमें कागके बांध छोडे उच्चाटन होगा.

१३३



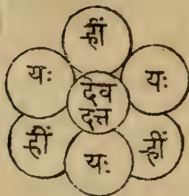
उद्भ्रान्त पत्रमें ध्वजवस्त्रमें कौएके रक्तसे जिसका नाम लिख कौएके गलेमें बांध पश्चिम दिशामें प्रेषण करै उसका उच्चाटन होगा.

१३५



वहेडेके पत्तोंके रसमें भोजपत्र-

१३६



भोजपत्रपर काक उलूकके रुधिरसे लाक्षा रससे जिनदोका नाम लिख विषमें स्थापनकरै उनका विद्वेषण होगा.

१३८

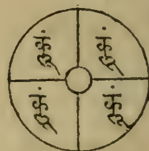


विष और धतूरेके जलसे कौआ और उलूक लिखै इनका जैसा वैर है वैसा हो. ॐ देवदत्तयज्ञदत्तयोस्तुस्वाहा एक घरमें नित्यजपकर लिखे भोजपत्रपर विद्वेषण होगा.

तथा विष और बिडालके रुधिरसे श्मशानके अंगारसे जिनका नाम लिखका कोलूकीय यादृशंवैरंतादृशं वैरं देवदत्तयज्ञदत्तयोर्भवतुस्वाहा काक उलूक भोजपत्रपर लिखै विद्वेषण होगा.

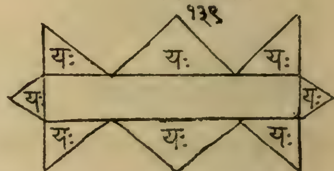
से जिसका नाम लिखकर गधेके मूत्रमें डाल तपावै उसका उच्चाटन होगा.

१३७



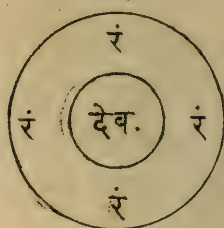
आकके पत्तेके रसमें भोजपत्रपर जिसका नाम लिखकर मधुमें स्थापन करै उसका उच्चाटन होगा.

१३९



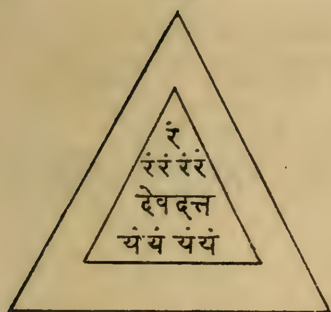
बहेडेके रसवा खर मूत्रसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिखै उसका उच्चाटन हो.

१४०



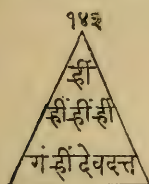
चीतेके फूलके रससे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख आककी

१४१



कपिलाके दूधसे साध्यकानामलिखकर कहीं गुप्तस्थानमें रक्खै तो ज्वर हो.

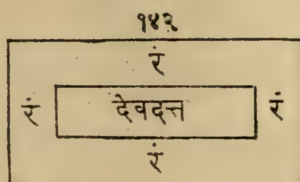
१४३



नीमके रससे यंत्रपर लिख गाडै तो शत्रुका गात्र संकोचन हो.

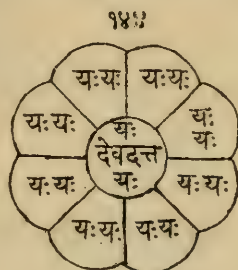
नलिकामें स्थापन करै उसे ज्वर हो.

१४२



चित्रक पुष्पके रससे भोजपत्रपर लिख आककी नलिकामें रखनेसे तत्काल ज्वर होता है.

१४४

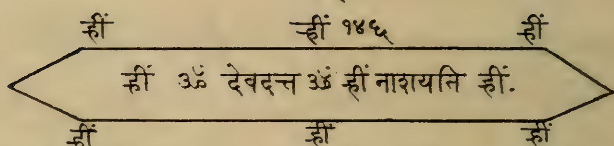


मृतपिधान कर्पटमें लिख रक्तसे लिख वायव्य दिशामें डालनेसे वैरी भ्रमता है.

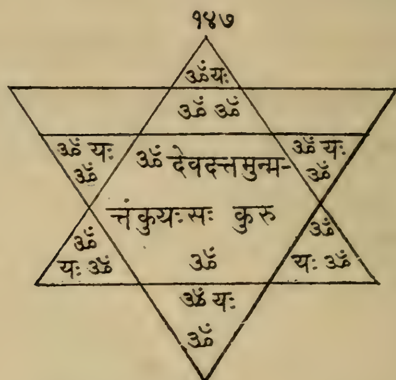
१४५

	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं सां ह्रीं ह्रीं	ह्रीं
(सां		ॐ	ह्रीं दें ॐ ह्रीं व ॐ ह्रीं द ॐ ह्रीं त ॐ ह्रीं	सां
	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं सां ह्रीं ह्रीं	ह्रीं

सहेंजनाविष और रुधिर राईको एकत्रकर जिसका नाम लिख सहेंजनेकी नलिकामें डालकर तपावै वह ज्वरसे ग्रहीत होता है. अथवा उपरोक्त वस्तुओंमें राईभी मिलावै अनुभव किया है.



गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख पात्रमें रख दूधसे प्लावितकर जलमें डालदे शत्रुकी शांति हो.



धतूरेके रस और काकके रुधिरसे उद्भ्रान्तपत्रपर लिख नीमकी शाखामें वायव्य दिशामें धारण करै तौ उन्मत्त होयह अनुभव किया- है सत्य है.

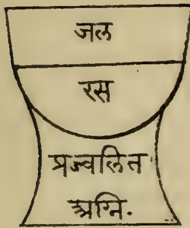


भोजपत्रसे इष्टवा हरिद्रा हरितालसे जिसकानाम लिख मद्धन्न स्थापन करैवह नष्टहो निकालनेसे स्वस्थहो.

मंत्रऔर यंत्र दोनोहीके करनेसे-शीघ्रसिद्धि होती है. निजनिज-विधिके मंत्रविधिसे समझलेना.

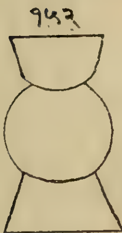
१४९

पातालयंत्र

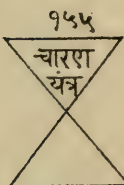


दोलायंत्र.

१५२



१५५



मट्टीके पात्रमें.

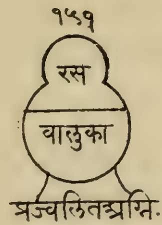
१५०

स्वस्वाहारहृभ्याम्

साध्यके रक्तसे शत्रुकानाम भोजपत्रपर लिख सिकोरेमें डाल ज्वलित अग्निमें स्थापन करै उसीसमय शत्रु नष्ट हो.

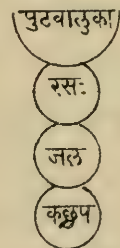
वालुकायंत्र

१५१

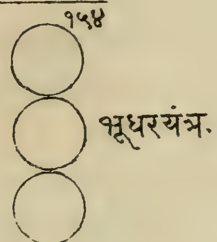


१५३

कच्छपयंत्र.



१५४



इतिकामरत्नम्।

सूचीपत्र.

नाम वैद्यक ग्रंथाः।	कि.रु.आ.	ट.म.रु.आ.
हारीतसंहिता भाषाटीका सहित	२-०	०-८
अष्टांगहृदय (वाग्भट्ट) भाषाटीका अत्युत्तम वैद्यक ग्रंथ-भिषग्वरोंके देखने योग्य	८-०	०-१२
रस रत्नाकर भाषाटीका समेत	५-०	०-१०
बृहन्निघंटु रत्नाकर भाषाटीका प्रथम भाग	३-०	०-६
बृहन्निघंटु रत्नाकर भाषाटीका द्वितीयभाग	३-०	०-६
बृहन्निघंटु रत्नाकर भाषाटीका तृतीयभाग	३-८	०-८
बृहन्निघंटु रत्नाकर भाषाटीका चतुर्थभाग	२-८	०-५
बृहन्निघंटु रत्नाकर भाषाटीका ५।६ छपता है	०	०
बृहन्निघंटु रत्नाकर-सप्तम अष्टम भाग- अर्थात् शालग्राम निघंटु भूषण (अनेक देशदेशांतरीय संस्कृत हिन्दी, बंगला, महाराष्ट्री, गौर्जरी, द्राविड़ी तैलंगी, औत्कली, इंग्लिश, लैटिन, फारसी, अरबी भाषाओंमें सर्व औषधोंके नाम और गुणोंका वर्णन औषधियोंके चित्रोंसमेत	८-०	१-४
रस राजसुन्दर भाषाटीकासह	३-४	०-८
पथ्यापथ्य भाषाटीका	०-१२	०-१॥
शार्ङ्गधर निदानसह भाषाटीका पं० दत्तराम-चौबे मथुरानिवासीका बनाया	३-०	०-६
चिकित्साखंड भाषाटीका प्रथम भाग	४-०	०-८
चिकित्साक्रम कल्पवल्ली संस्कृत काशिनाथकृत भिषग्वरोंके देखने योग्य	२-८	०-८
माधवनिधान उत्तम भाषाटीका ग्लेज	२-०	०-४
रफ	१-१२	०-४
अंजननिदान भाषाटीका अन्वयसहित	०-८	०-१
हंसराज निदान भाषाटीका	१-०	०-२

नाम	कि·रु·आ·	ट·म·रु·आ·
चर्य्या चंद्रोदय भाषाटीका (व्यंजन बनानेका)..	१-८	०-३
योग तरंगिणी (बहुतही उत्तम)............	२-०	०-४
राजवल्लभ निघंटु भाषाटीका..................	१-८	०२
वैद्यक परिभाषा प्रदीप भा० टी० (वैद्योपयोगी) औषधियोंकी योजनामें तौल, मान, और बदला तथा वर्ग चूर्ण आदि कोंकी योजनाका वर्णन.....	०-१२	०-१॥·
वैद्यरत्न भाषाटीका (सर्व रोगोंकी चिकित्सा उत्तमप्रकारसे वर्णन किया है................	०-१४	०-२
वैद्य वल्लभ भाषाटीका (चिकित्सा उत्तम)...	०-६	०-॥
कुटुम्ब चिकित्सा........................	१-०	०-१
वीर सिंहावलोकन ज्योतिष शास्त्रादि कर्मविपाक चिकित्सावर्णन........................	१-१२	०-४
योग चिंतामणि भाषाटीका दत्तराम चौबे कृत	१-४	०-४.
तथा रफ कागजकी......................	१-०	०-२
लोलिंबराज वैद्यजीवन संस्कृतटीका और भा०टी०	१-०	०-२
नाडी दर्पण (नाडी देखनेमें अत्यंत उत्कृष्ट)	०-६	०-१
अनुपानदर्पण भाषाटीका सहित............	०-१०	०-१
बालबोध पाकावली........................	०-३	०-॥
कूटमुद्गराख्यसटीक	०-३	०-॥
कालज्ञान भाषाटीका......................	०-३	०-॥
वैद्य रहस्य भाषाटीका......................	२-०	०-४
रस मंजरी भाषाटीका (सब प्रकारके रस बनाने और धातू फूकनेकी क्रिया)...........	१-०	०-२
शरीर पुष्टि विधान भाषा (शरीर पुष्ट करनेकी रीति)	०-६	०-॥
पाक प्रदीप बाजीकरण भा० टी०	०-८	०-१
आयुर्वेद सुषेण भाषाटीका................	०-१४	०-२
कूट मुद्गर भाषाटीका....................	०-३	०-॥
वङ्गसेन (कलकत्ता)	५-०	०-१२

नाम. किं.रु.आ.

सुश्रुत संहिता- प्रथम सूत्रस्थान सान्वय सटिप्पणी स परिशिष्ट भाषाटीका ३-८

और ॰ खण्डणी क्रमशः मुद्रित होते हैं।

कुमारतंत्र रावण कृत भाषाटीका ०-८

बालतंत्र भाषाटीका (इसमें बालकोंको डाकिनीशाकिनी छुड़ानेके यंत्रमंत्र तथा पोषण चिकित्सा वंध्या यत्न आदि विषय वर्णित हैं यह पुस्तक सभी गृहस्थोंको रखना योग्य है १-०

शालग्रामौषधशब्दसागर अर्थात् आयुर्वेदीय औषधिकोष २-०

बोपदेव शतक वैद्यक भाषाटीका समेत ०-५

अर्क प्रकाश भाषाटीका रावणकृत (इसमें सब औषधियोंके गुण व अर्क निकालनेकी क्रिया है १-०

ज्ञान भैषज्य मञ्जरी भाषाटीका वैद्यक ०-४

मदनपाल निघंटु भाषाटीका २-८

विष चिकित्सा दर्पण ०-४

वैद्यक भाषा।

चिकित्सा धातुसार भाषा ०-६

रसराज महोदधि भाषा प्रथम भाग वैद्यक यूनानी हिकमत और यूनानी दवा और फकीरोंकी जडी बूटी और सन्तोंकी पुस्तकोंका संग्रह है ....

रस राज महोदधि दूसरा भाग (उपरोक्त सर्वालंकारों समेत छपकर तय्यार है ....

अमृत सागर कोश सहित हिंदुस्थानी भाषामें सर्व देशोपकारक २-४

डाक्टरी चिकित्सासार (अं.दे.वै.) ०-१०


UTL AT DOWNSVIEW
D RANGE BAY SHLF POS ITEM C
39 12 24 06 08 005 8